श्री दुर्गार्चन रहस्यम्

भाषा टीका



प० शिवस्वरूप याज्ञिक

श्री गंगाये नमः श्री सरस्वत्यै नमः श्री राधाकृष्णाय नमः

श्री

दुर्गा अर्चन रहस्यम्

भाषा टीका

इस पुस्तक में श्री दुर्गा सप्तसती का सम्पूर्ण पाठ का विधान दिया गया है।



संकलितः पं० शिवस्वरूप 'याज्ञिक'

भाष्कर प्रयाग, भटवाडी, उत्तरकाशी

मूल्य 250/

प्रकाशकः

बी.एस. प्रमिन्दर

दिल्ली-51

मुख्य वितरकः

कर्मसिंह अमरसिं

पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार, हरिद्वार

प्रकाशक :
बी.एस. प्रमिन्दर प्रकाशन
दि्ल्ली-५१

मुख्य वितरक :
कर्मसिंह अमरसिंह
पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार
हरिद्वार-उत्तरांचल
फोन-01334-225619

नवीन संस्करण सन् 2007

संकलित:
पं० शिवस्वरूप 'याज्ञिक'

मूल्य 250/

SHRI DURGA ARCHAN RAHASYAM



अनुक्रमणिका

निवेदन

परात्पर ब्रह्म का आदि संकल्प 'एक हूँ अनेक हो जाऊ' जो सृष्टि की उत्पत्ति का मूल कारण है, यही आद्य-शक्ति है। यही आद्य शक्ति समस्त प्राणियों में सर्वरूप से विद्यमान है-

वर्तते सर्वभूतेषु शक्तिः सर्वात्मना नृपः।
शववच्छक्ति हीनस्तु प्राणी भवति सर्वदा।।

जो धर्मात्माओं के घर लक्ष्मी रूप से, दुरात्माओं के यहां निर्धनता रूप से, विशुद्ध अन्तः करण वाले पुरुषों के हृदय में बुद्धि रूप से, सज्जनता में श्रद्धा रूप से तथा कुलीन मनुष्यों में लज्जा रूप से विराजमान रहती है उस महामाया भगवती दुर्गा को मैं प्रणाम करता हूँ।

देवी का स्वरूप ही सब देवों का शक्ति समूह है और यही शक्ति देवताओं की रक्षार्थ नित्या होने पर भी उत्पन्न होकर दैत्यों से देवताओं की रक्षा करने का वचन देती है।

इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति।
तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरि संक्षयम्। (दु.स.११/५५)

माँ दुर्गा की आराधना से आद्यकाल से देवताओं, असुरों को अपने अभीष्ट की प्राप्ति हुई है। शास्त्रों में कहा है-

आराध्या परमा शक्तिः सर्वैरपि सुरासुरैः।
नातः परतरं किञ्चिदधिकं भुवन त्रये।। (दे.भा.१/९/८७।)

अर्थात् समस्त देवता, दानव परम शक्ति की आराधना करते हैं, इससे बढ़कर तीनों भुवनों में कुछ भी श्रेष्ठ नहीं है जिससे शक्ति की उपासना करने वाला स्वयं शक्तिरूप हो जाता है क्योंकि शक्ति ही सन्ध्या, सावित्री तथा परम जननी रूप सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को धारण कर उत्पत्ति पालन तथा अंत में सब जीवों का संहार करने वाली है।

शक्ति की उपासना करने वाला कल्याणमयी बुद्धि तथा उत्तमगति को प्राप्त करता है क्योंकि जहां भोग है, वहां मोक्ष नहीं, जहां मोक्ष है, वहां भोग नहीं, फिर भी शक्ति साधकों के लिए दोनों एक साथ सुलभ हैं। अर्थात् शक्ति साधक विभिन्न भोगों को भोगता हुआ परम

पद मोक्ष का अधिकारी हो जाता है-

यत्रास्ति मोक्षो नही तत्र भोगो
यत्रास्ति भोगो नही तत्र मोक्षः।
श्री सुन्दरी सेवन तत्पराणां
भोगञ्च मोक्षञ्च करस्थ एव॥

इस प्रकार मनुष्य जन्म पाकर शास्त्रोक्त विधि से शक्ति का पूजन कर मनुष्य सुख के भागी बन, सभी बाधाओं से मुक्त होकर, धन, धान्य, पशु, पुत्र आदि सम्पत्ति से सम्पन्न हो मुक्त हो जाता है। भगवान शंकर पार्वती से दुर्गा सप्तशती स्तोत्र की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं।

नातः परतरं स्तोत्रं किंचिदस्ति वरानने।
भुक्ति मुक्ति प्रदं पुण्यं पावनानां च पावनम्॥

-प्रयोगसार एंवं वाराहीतंत्र।

उसी आद्य शक्ति दुर्गा की उत्पत्ति तथा माहात्म्य वेद व्यास जी ने मार्कण्डेय पुराण के अंतर्गत सम्पूर्ण वर्णन सात सौ श्लोकों में किया है। इन सात सौ श्लोकों का पाठ ही प्राणी मात्र के लिए सुख और समृद्धि देने वाला है।

इस सप्तशती की कई पुस्तकें आज उपलब्ध हैं परन्तु प्रस्तुत पुस्तक में दुर्गापाठ के साथ पूजन विधान, गणपति पूजन, संकल्प, वरुण पूजन, पुण्याहवाचन, ब्राह्मण वरण, ॐकार पूजन, सप्तघृतमातृका पूजन, षोड्श मातृका पूजन, वसु पूजन, नान्दी श्राद्ध, नवग्रह पूजन, सर्वतो भद्र पूजन, यंत्र देवता स्थापन, प्रतिमा पूजन, प्रतिष्ठा, दुर्गा पूजन, नवकन्या पूजन, पुस्तक पूजन आदि अनेक पूजन के साथ हवन, कुण्ड पूजन, अग्नि स्थापन, देवताओं के हवन के साथ दुर्गा याग विधान से पूर्णाहूति पर्यन्त तथा अनेक स्तोत्र आदि विषयों का समावेश करने से पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। जिससे साधकों के लिए यह पुस्तक और उपयुक्त हो गई है। इस पुस्तक द्वारा विधि विधान से दुर्गा अर्चन करने वाले ब्राह्मणों, विद्यार्थियों, पाठकों एवं पुरोहित कार्य करने वालों को अवश्य ही परम उपयोगी पुस्तक प्राप्त हो जाएगी, इस पुस्तक से साधारण मनुष्य भी दुर्गा पूजन,

दुर्गापाठ और हवन कर अपने अभीष्ट को प्राप्त कर सकेगा।

शक्ति के रहस्यों की थाह लेना असंभव कार्य है। फिर भी 'जिमि पिपिलिका सागर थाहा' समान यह मेरा लघु प्रयास मात्र ही है, जिससे साधक लाभान्वित हो सके।

इस पुस्तक के निर्माण में मैं अपने समस्त सहयोगी विद्वानों का आभार प्रकट करता हूं और उन विद्वानों का पुनः आशीर्वाद चाहता हूँ जिन्होंने मेरे द्वारा लिखी 'सम्पूर्ण पूजन रहस्यम्' 'सम्पूर्ण हवन रहस्यम्', 'सम्पूर्ण ग्रह नक्षत्र शान्ति', 'अन्त्येष्टि कर्म रहस्यम्', 'षोड्श संस्कार' आदि पुस्तकों को हाथों हाथ स्वीकार किया।

विद्वद् वृन्द! नर धर्मानुसार त्रुटि के लिए क्षमा करते हुए भूल सुधार कर मुझे सूचना देने की कृपा करें तथा अपने विचारों से अवगत करेंगे। जिससे मैं पुनः इस पुनीत कार्य के लिए तत्पर रह सकूं।

रामनवमी · आपका ही
चैत्र २०६० पं. शिवस्वरूप 'याज्ञिक'
भाष्कर प्रयाग भटवाडी टकनौर उत्तरकाशी
दूरभाष ०१३७४–२४४४२४ उत्तरांचल प्रदेश

'समर्पण'

दुर्गे स्मृता हरसि भीति मशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभांददासि।
दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणी का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्र चित्ता॥

हे माँ दुर्गे आप स्मरण मात्र से ही सब जीवों का भय निवारण करती हैं और स्वस्थ मनुष्यों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें परम कल्याणकारी बुद्धि देती हैं। हे दुःख, दरिद्र और भयहारी देवी! आपका चित्त परोपकार के निमित्त सदैव द्रवित रहता है, ऐसा दूसरा कौन है।

दुर्गा देवी के चरणों में सादर समर्पित

पं. शिवस्वरूप 'याज्ञिक'

"सम्मति पत्रम्"

##卐 श्री राधा माधवाभ्यां नमः ॐ 卐

भास्कर प्रयाग स्थितानां महाभागानां शिवस्वरूप 'याज्ञिक' महोदयानां विभिन्न पुस्तकानां प्रकाशनं दृष्टवा आद्योपान्त पठित्वा च अतीव प्रसन्ना स्मा। वयं एतानि पुस्तकानि सामान्य विदुषां कृते कर्मकाण्ड छात्राणां अतीव सरल सरस सुबोध शैल्यां प्रकाशितानि सन्ति। एतेषां प्रकाशनं श्री सनातन धर्म प्रसारकानां कृते लाभकारी भविष्यति। भविष्यमेऽपि श्रीमान् याज्ञिक महोदयाः एवमेव नूतन पुस्तकानां प्रकाशनं करिष्यन्ति सनातन धर्म प्रसारे योगदानं प्रदास्यन्ति इति आशास्महे पुनः एकवारं प्रकाशनाय वर्धापनानि। श्री 'याज्ञिक' महोदयाः श्रीमन्नारायण कृपाया धर्मार्थ काममोक्षवर्ग चतुष्टय प्राप्नोतु।

विभिन्न ग्रन्थ लेखकाः, लब्धख्याति महोदयाः।
उत्तराखण्डे दिव्यन्ति, शिव स्वरूप 'याज्ञिकाः'॥

शुभाकांक्षी

जगद्गुरु शंकराचार्य जयंती
वैशाख शुक्ला पंचमी २०६०

पं. देवीदयाल आचार्य 'धर्माचार्य'
११०८/१६ सरस्वती गली
शिवकालोनी जिन्द हरियाणा

"सम्मति पत्रम्"

भारत में छपने वाली सम्पूर्ण कर्मकाण्ड की पुस्तकों में अग्रणी पं. शिवस्वरूप 'याज्ञिक' द्वारा प्रकाशित पुस्तकें जनमानस, साधारण ब्राह्मणों, विद्यार्थियों के लिए वरदान सिद्ध हो रही हैं।

आपने इन पुस्तकों का प्रकाशन करवा कर जनमानस के प्रति बहुत बड़ा उपकार किया है। भारत ही नहीं अपितु विदेशों में भी बसे हिन्दुओं के लिए ये पुस्तकें अत्यन्त उपयोगी हैं। आपके द्वारा प्रकाशित समस्त पुस्तकें संग्रहणीय एवं उपयोगी हैं। इतने सरल रूप से पुस्तकें छपवाने के लिए कोटिशः शुभकामनायें।

गंगा दशहरा
ज्येष्ठ २०६०

पं. मानस रंजन, पंडा
अढगड़ कटक
ओरिशा

"श्री दुर्गा-सप्तशती संक्षिप्त कथा"

मनु के राज्याधिकार में 'सुरथ' नामक एक चैत्रवंशीय राजा हुए। शत्रुओं ने जब उनका राज्य, खजाना, सेना छींन ली तब वे शान्ति प्राप्ति हेतु मेधा ऋषि के आश्रम में पहुंचे। इसी समय पुत्र, स्त्री से निकाले गये 'समाधि' नाम के एक वैश्य से उनकी भेंट हुई। राजा और वैश्य दोनों मेधा ऋषि के निकट पहुंचे और उन्हें प्रणाम कर पूछा- 'महाराज! कृपाकर बताइये कि जिन विषयों में द्वेष देखकर भी ममतावश हम दोनों का मन उनमें लगा रहता है क्या कारण है कि ऐसा मोह नष्ट नहीं हो रहा है।

ऋषि ने कहा-'राजन! महामाया ज्ञानियों के चित्त को बलात् खींचकर मोहग्रस्त बना देती है। ऐसा सुनकर राजा ने उस महादेवी के विषय में प्रश्न किया। ऋषि ने कहा-वे भगवती 'नित्या' है, उनसे सारा विश्व व्याप्त है। वे जब देवों के कार्य हेतु अविर्भूत होती है, तब उन्हें 'उत्पन्ना' कहा जाता है। राजा और वैश्य के पूछने पर ऋषि ने उन्हें उस महाशक्ति के तीन चरित्र जो सप्तशती में वर्णित है बताए, जो इस प्रकार है-

"प्रथम चरित्र"

प्रलय के पश्चात् शेषशय्या पर योगनिद्रा में निमग्न भगवान् विष्णु के कर्ण-मल से मधु और कैटभ नाम के दो असुर उत्पन्न हुए और वे भगवान विष्णु की नाभि कमल पर स्थित ब्रह्मा को खाने के लिए उद्यत हुए, तब ब्रह्मा ने भगवती योगनिद्रा की स्तुति करते हुए उनसे तीन प्रार्थनाएं की-१. भगवान विष्णु को जगा दीजिए, २. उन्हें असुरों के संहारार्थ उद्यत कीजिए, ३. उन असुरों को विमोहित कर श्री भगवान द्वारा उनका वध करवाईये। तब महाशक्ति ने ब्रह्मा को दर्शन दिया। भगवान श्री विष्णु योगनिद्रा से उठकर उन असुरों से युद्ध करने लगे।

दोनों असुरों को योगनिद्रा द्वारा मोहित कर दिए जाने पर उन्होंने भगवान से वर मांगने को कहा। अन्त में उसी वरदान के अनुसार वे भगवान विष्णु द्वारा मृत्यु को प्राप्त हुए।

"मध्यम चरित्र"

प्राचीन काल में महिषासुर नामक एक महाबली असुर ने जन्म लिया। उसने अपने पराक्रम से इन्द्र, सूर्य, चन्द्र, यम, अग्नि, वरुण, वायु आदि देवताओं को पराजित कर स्वयं इन्द्र बन गया तथा अन्य देवताओं को उसने स्वर्ग से निकाल दिया। स्वर्ग से वंचित देवताओं ने ब्रह्मा के साथ भगवान विष्णु और शिव के पास पहुंच कर अपनी करुण कथा सुनाई। देवताओं की करुण कथा सुनकर भगवान विष्णु के मुख से एक तेज प्रकट हुआ। तत्पश्चात् ब्रह्मा, सूर्य, चन्द्र, आदि देवों के शरीरों से भी तेज निकला और वे तेज एकत्रित होकर एक दिव्य देवी के रूप में परिणत हो गया।

ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा अन्य प्रमुख देवताओं ने उस दिव्य देवी को अपने-अपने अस्त्र-शस्त्र प्रदान किए। उस समय देवी अट्टहास करने लगी, जिससे त्रैलोक्य कांपने लगा, इस शब्द को सुनकर असुरराज अपने अन्य असुरों को साथ ले शब्द की ओर दौड़ पड़ा। असुर ने जब देवी को देखा तो वह युद्ध करने लगा, देवी और उनके वाहन सिंह द्वारा करोड़ों असुरों का नाश हुआ। देवी के हाथों असुर के प्रमुख सेनानी चिक्षुर, चामर, उदग्र कराल, वाष्कल, ताम्र, अन्धक, असिलोमा, उग्र, उग्रवीर्य, महाहनु विडाल, महासुर आदि मृत्यु को प्राप्त हुए। तब महिषासुर महिष, हस्ती मनुष्य आदि का रूप धारण करने लगा और भगवती से युद्ध करते हुए अंत में मारा गया। अपने समस्त शत्रुओं के मारे जाने पर प्रसन्न हो देवताओ ने महाशक्ति की स्तुति की और वर मांगा कि 'हम लोग जब जब दानवों द्वारा विपद्ग्रस्त हों, तब-तब आप हमें आपदाओं से विमुक्त करें तथा

आपके इस चरित्र को पढ़ने सुनने वाला प्राणी सम्पूर्ण सुख-ऐश्वर्य से सम्पन्न हो जाए।'' 'तथास्तु' कहकर महाशक्ति ने देवताओं को इच्छित वरदान दिया और स्वयं तत्काल अन्तर्धान हो गयी।

"उत्तर चरित्र"

पूर्व काल में शुम्भ और निशुम्भ नामक दो महापराक्रमी दैत्य हुए। उन्होंने इन्द्र का राज्य और यज्ञ का भाग तक छीन लिया। वे दोनों सूर्य, चन्द्र, कुबेर, यम, वरुण, पवन और अग्नि के अधिकारों के अधिपति बन बैठे। तब समस्त देवता हिमालय पर पहुंचकर करुणार्द्र हृदय से मां भगवती की अनेक रूपों से प्रार्थना करने लगे। भगवती पार्वती के रूप में प्रकट हुई, उन्होंने देवताओं से पूछा-आप लोग किसकी स्तुति कर रहे हैं, इसी समय पार्वती के शरीर से 'शिवा' निकली और कहने लगी- शुम्भ निशुम्भ से पराजित होकर स्वर्ग से निकाले गए ये देवता मेरी स्तुति कर रहे हैं। पार्वती के शरीर से निकलने के कारण अम्बिका 'कौशिकी' कहलायी और उनके निकल जाने से पार्वती कृष्णवर्णा हो गयी तथा 'काली' नाम धारण कर हिमालय पर रहने लगी।

परम सुन्दरी अम्बिका को जब शुम्भ निशुम्भ के भृत्य चण्ड मुण्ड ने देखा तो दोनों ने जाकर शुम्भ से उसके अतुल सौन्दर्य की प्रशंसा की। शुम्भ ने चण्ड मुण्ड की बात सुनकर सुग्रीव नाम के दूत को देवी के पास भेजा और उस सुन्दरी को ले आने को कहा। दूत देवी के पास जाकर मधुर वाणी में शुम्भ के ऐश्वर्य की प्रशंसा करते हुए उनसे विवाह करने की सलाह दी। देवी ने कहा-जो मेरे बल, दर्प को नष्ट कर मुझे युद्ध में पराजित करेगा। मैं उसी से विवाह करूंगी यह मेरी अटल प्रतिज्ञा है। सुग्रीव ने शुम्भ के पास पहुंचकर भगवती अम्बिका की प्रतिज्ञा कह सुनायी। असुर ने क्रोधित होकर देवी को पकड़कर लाने के लिए असुर धुम्रलोचन को भेजा, किन्तु देवी के

हुंकार मात्र से ही वह भस्म हो गया।

पुनः असुर राज ने चण्ड मुण्ड को भारी सेना के साथ भगवती कौशिकी को पकड़कर लाने के लिए भेजा। तब उसके सिर से भयानक काली देवी प्रकट हुई और काली ने उनका सेना सहित नाश कर दिया और चण्ड मुण्ड का शिर काटकर अम्बिका के पास ले आयी, इस कारण उनका नाम चामुण्डा हुआ।

इसके पश्चात शुम्भ ने दैत्यों की सेना, कम्बुकुल के दैत्य, कोटिवीर्य, धूम्रवंश, कालक नाम, आदि दैत्यों को भगवती को पकड़ने के लिए भेजा तब उस समय ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, कार्तवीर्य, नृसिंह, इन्द्र की शक्तियां भी उस युद्ध स्थल पर पहुंची। उन देवशक्तियों के साथ महादेव जी भी आकर चण्डिका रूप अम्बिका से बोले-इन असुरों को शीघ्र मार कर मुझे तृप्त करो। इसके बाद चण्डिका देवी के शरीर से एक शक्ति प्रकट हुई और महादेव से बोली कि आप जाकर शुम्भ और निशुम्भ से पाताल जाने को कहो और देवताओं का यज्ञभाग वापस करो या युद्ध में मृत्यु को प्राप्त हो जाओ। इस प्रकार शिव को दूत बनाकर भेजने से देवी का एक नाम 'शिवदूती' कहलाई। शिव के कहने पर भी असुर युद्ध के लिए युद्धस्थल में आ डटे। भगवती ने देव शक्तियों की सहायता से दैत्यों का संहार प्रारंभ किया। भगवती की आज्ञा से चामुण्डा ने रक्तबीज के रक्त को पी लिया। रक्तबीज मृत्यु को प्राप्त हुआ। तत्पश्चात निशुम्भ भगवती से युद्ध करने लगा और भगवती के हाथों मारा गया।

अब क्रोधित हो शुम्भ ने भगवती से कहा-औरों का सहारा लेकर युद्ध करती हो, ऐसा तुझे अभिमान है। भगवती बोली ये सब मेरी ही शक्तियां हैं और ये सब मुझमें ही विलुप्त हो जाएंगी, ऐसा कह सब शक्तियां भगवती में ही प्रविष्ट हो गई और शुम्भ भी भगवती के पराक्रम से मारा गया। देवताओं ने प्रसन्न होकर अम्बिका की स्तुति की। अंत में प्रसन्न होकर देवी बोली-संसार का उपकार

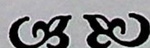
करने वाला वर मांगिए। देवों ने कहा-हमारे शत्रु जब जब उत्पन्न हों आप उनका नाश कर हमें आश्वस्त करें। भगवती आद्यशक्ति ने 'एवमस्तु' कहा और भविष्य में सात बार भक्तों की रक्षा के लिए अवतार लेने की कथा तथा दुर्गा चरित्र के लिए पाठ का महात्म्य वर्णन करके अर्न्तधान हो गयीं।

"उपसंहार"

भगवती की उत्पत्ति और प्रभाव के तीन चरित्र की कथा सुनकर मेधा ऋषि ने राजा सुरथ और समाधि वैश्य को भगवती की उपासना करने का आदेश दिया। दोनों ने तीन वर्ष तक मां भगवती की कठोर आराधना की। अन्त में भगवती ने प्रसन्न होकर राजा सुरथ को पुनः उनके राज्य की प्राप्ति तथा वैश्य को ज्ञान प्राप्ति का वरदान दिया। उस वरदान के प्रभाव से राजा सुरथ सूर्य से उत्पन्न होकर सावर्णि नाम मनु हुए।

उपरोक्त कथा के अध्ययन से जो ज्ञान प्राप्त हुआ, संसार के मनुष्य उससे अवश्य सीख लें। जैसे मेधा ऋषि को आत्म ज्ञान हुआ तो मुक्त हुए, वैश्य ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष को प्राप्त हुआ, सुरथ राजा ने कर्म किया तो दुबारा राज्य की प्राप्ति की। देवता भी जब भोग के प्रति आसक्त होते हैं। तो उन्हें स्वर्ग से बहिष्कृत होना पड़ता है। ब्रह्मा जब शरणागत हुए तो उन्हें अभय प्राप्त हुआ, राक्षसों को जब तमोगुण, अहंकार, काम, क्रोध, दर्प, बल, ममत्व की प्राप्ति हुई तो नाश को प्राप्त हुए इसलिए हमें भी तमों गुण, अहंकार, काम, क्रोध , का त्याग कर, ज्ञान प्राप्त कर फल की इच्छा न करते हुए संसार में कर्म करना चाहिए।

"इति सप्तशती संक्षिप्त कथा"



॥ कामना पूर्ति के लिए पाठ संख्या ॥

उपद्रव शान्ति के लिए तीन पाठ, पीड़ा शान्ति के लिए पांच पाठ, ग्हाभय में सात, शान्ति प्राप्ति के लिए नौ, राजा को वश में करने के लिए ग्यारह, सुख व लक्ष्मी प्राप्ति के लिए पन्द्रह, पुत्र प्राप्ति, पौत्र प्राप्ति व धन-धान्य के लिए सोलह, राजभय नाश के लिए सत्रह, उच्चाटन के लिए अठारह, वनभय नाश के लिए बीस, बन्धन भय से मुक्ति के लिए पच्चीस। असाध्य रोग नाश के लिए शत्रु नाश, त्रिविध उत्पात नाश के लिए, व्याधि नाश के लिए, महासंकट के प्राप्त होने पर, राज पक्ष से भय या राज्य विस्तार के लिए एक सौ पाठ, सम्पूर्ण मनोरथ की प्राप्ति तथा सौ अश्वमेघ के फल की प्राप्ति के लिए दुर्गा शप्तशती के एक हजार पाठ करने का विधान वाराही तंत्र में कहा है।

पाठ करने के अवसर पर कर्ता को यदि मृतक सूतक या जननाशौंच हो जाए तो समस्त घट स्थापन आदि कर्म ब्राह्मण के द्वारा ही करावे, इसी प्रकार रजस्वला स्त्री भी पूजा आदि कर्म अन्य के द्वारा ही करावे परन्तु कर्ता उपवास आदि शरीरसाध्य नियमों को स्वयं करे। इस प्रकार पाठ करने से कर्ता के समस्त रोग, भय, व्याधी, उपद्रवों, ग्रह, भय आदि नष्ट होकर कर्ता सुखमय जीवन को प्राप्त कर लेता है। ऐसा शास्त्रों का वचन है।



"नवरात्र काल"

चैत्रऽश्विने तथाऽऽषाढे माघे कार्यो महोत्सवः।
नवरात्रे महाराज पूजाकार्याः विशेषतः॥
आश्विने मधुमासे वा तपो मासे शुचौ यथा।
चतुर्षु नवरात्रेषु विशेषात्फलदायकम्॥

(देवी भागवत)

अर्थात् नवरात्र का पर्व प्रतिवर्ष चार बार आता है। चैत्र, आश्विन, आषाढ और माघ मास में।

इन महीनों में शुक्ल प्रतिपदा[1] से नवमी तक आश्विन मास में विजयादशमी तक नवरात्र पाठ करने से सम्पूर्ण फलों की प्राप्ति होती है। नवरात्र में अष्टमी या नवमी को हवन करना शुभ होता है तथा शतचण्डी, सहस्र चण्डी सर्वथा की जा सकती है इसके लिए उत्तरायण और दक्षिणायन, गुरु, शुक्र के अस्त का विचार आवश्यक नहीं है।

नवरात्र दुर्गा माता के नव विद्या होने के कारण नौ दिन में ही पूर्ण करने का विधान है। अतः वर्ष में चार बार नवरात्र तथा शतचण्डी सहस्र चण्डीपाठ कभी भी अपनी सुविधा के अनुसार किया जा सकता है।

---

१. नवरात्र निर्णय-

अमायुक्तो न कर्तव्या प्रतिपच्याण्डिकार्चने।
मुहूर्तमात्र कर्तव्या द्वितियादि गुणान्विता। (कात्यायन)

घटस्थापन विचार-

वैधृतो पुत्रनाशस्याच्चित्रायां धननाशनम्।
तस्मान्न स्थापयेत् कुम्भं चित्राया वैधृतो तथा॥

दुर्गा सप्तशती पाठ व पूजन के सामान्य नियम

दुर्गा सप्तशती के पाठ के साथ पहले कवच अर्गला कीलक का पाठ और अन्त में तीनों रहस्यों का पाठ होना अत्यावश्यक है, परन्तु एक दिन में कई पाठ करने हों तो कवच अर्गला कीलक का पाठ कर सप्तशती के कई पाठ करें। अंत में तीनों रहस्यों का पाठ करें।

दुर्गासप्तशती के प्रारंभ और अंत में बीजमंत्र का अधिक से अधिक जप करें, न हो सके तो कम से कम दो बार 108 मंत्र जाप अवश्य करे।

दुर्गा पाठ के अध्याय के अंत में 'इति' कहने से धननाश 'वध' कहने कुलनाश तथा 'अध्याय कहने से वाचक का नाश होता है। अतः अध्याय के अंत में ॐ जय जय मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी महात्म्ये सत्या, सन्तु (यजमानस्य कामाः) जगदम्बार्पण मस्तु" ऐसा बोलकर जल छोड़ दें।

दुर्गा सप्तशती के पाठ करते समय अध्याय के मध्य पाठ का विराम नहीं करना चाहिए। यदि विराम हो जाय तो फिर से अध्याय को प्रारंभ कर पाठ करना चाहिए। पाठ करते हुए पुस्तक को किसी आधार पर रखकर ही पाठ का प्रारंभ करना चाहिए क्योंकि अज्ञानवश पुस्तक हाथ में लेकर पाठ करने से पाठ के आधे फल की ही प्राप्ति साधक को मिलती है। न मन में पाठ करें। वाणी से ही पाठ फलदायक होता है:-

अज्ञानात्स्थापिते हस्ते पाठे ह्यर्धफलं ध्रुवम्।
न मानसे पठेत्स्तोत्रं वाचिकं तु प्रशस्यते॥

पाठ करते समय जोर-जोर से पाठ करना, जल्दी-जल्दी पाठ करना, शिर हिलाकर पाठ करना, अपने हाथकी लिखी हुई पुस्तक का पाठ करना निषेध कहा है, इस लिए जोर जोर से पाठ न कर धीरे-धीरे पाठ करें तथा आसन पर पाठ कर्ता पुस्तक बांच कर ही पाठ करें। पाठ से पूर्व पांच उपास्य देवताओं की पूजा भी अवश्य करें।

'आदित्यं गणनाथं च देवीरुद्रं च केशवम्।
पंच देवत्वमित्युक्तं सर्व कर्मसु पूजयेत्।।

पाठ वाणी के द्वारा शुद्ध उच्चारण करते हुए प्रेमपूर्वक मीठे स्वर में स्थिर चित्त हो पाठ करें। मन से किया हुआ पाठ और वाणी द्वारा किया गया जप निष्फल हो जाता है कुलार्णव तंत्र में कहा गया है-

'मनसा यः स्मरेत्स्तोत्रं वचसा वा मनु जपेत्।
उभयं निष्फलं देवि! भिन्न भाण्डोदकं यथा।।

पाठ करने से पूर्व और पाठ के बाद पुस्तक को प्रणाम अवश्य करें। इससे पाठकर्ता को शीघ्र ही फल की प्राप्ति होती है।

शतचण्डी सहस्र चण्डी का दशांश हवन सप्तशती के ७०० मंत्रों से, नर्वाण मंत्र से या **नमो देव्यै महा०** इन मंत्रों से भी किया जा सकता है। यदि पाठ सम्पुटित हो तो सम्पुटित पाठ में हवन सप्तशती के ७०० मंत्रों से ही किया जाता है हवन में सम्पुट नहीं लगाया जाता है। नवरात्र में हवन अष्टमी या नवमी को किया जाता है। सात्विक दुर्गा भक्तों को नवमी के दिन कूष्माण्ड, नारियल, इक्षुदण्ड, नींबू और उड़द आदि की बलि देनी चाहिए।

नवरात्र, शतचण्डी और सहस्र चण्डी पाठ में उत्तरायण, दक्षिणायन गुरु शुक्र के अस्त का भी विचार अनावश्यक है। शतचण्डी, सहस्र चण्डी में ९ अथवा १०० कन्याओं का पूजन प्रत्येक दिन करना चाहिए अथवा एक एक कन्या की प्रत्येक दिन वृद्धि कर पूजन करना चाहिए।

दुर्गा देवी का विसर्जन नवमी तथा दशमी दोनों ही दिन किया जा सकता है। वस्तुतः दुर्गा का विसर्जन दशमी को ही प्रातःकाल करना चाहिए।

दुर्गा देवी का पूजन श्रद्धा से करें क्योंकि बिना श्रद्धा के किया हुआ हवन, दिया हुआ दान, तपा हुआ तप तथा किया हुआ शुभ कर्म न इस लोक में लाभदायक है और न मृत्यु के उपरान्त।

अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत्।
असदित्युच्यते पार्थ न चतत्प्रेत्य नो इह।। -गीता

इसलिए जो भी पाठ चाहे नवरात्र हो शतचण्डी हो या सहस्र चण्डी हो, श्रद्धा के साथ किया जाय तो किया हुआ पाठ इस लोक में सुख देने वाला तथा अंत में मोक्ष देने वाला हो जायेगा। स्तोत्र पाठ करते हुए पाठ के अंतिम श्लोक का दो बार पाठ करना चाहिए।

स्तोत्रे संहितायां च अन्त्यश्लोकं पठेत् द्विधा।।
(रुद्रयामलतंत्र)

दुर्गा पाठ करने से सब पाप नष्ट हो जाते है :-

सप्त जन्मार्जितैर्घोरैर्ब्रह्महत्यासमैरपि
पाठ मात्रेण मंत्राणां मुच्यते सर्व किल्विषै।।

अतः यत्नपूर्वक किया गया दुर्गा पाठ सात जन्मों में किऐ गये ब्रह्महत्या सदृश घोर पातकों एवं समस्त कल्मषों से मुक्त करने वाला हो जाता है तथा दुर्गा पाठ समस्त मनोवांछित फलों को देने वाला हो जाता है।

"देवी की पूजा के उपचार"

देवी पूजन में चौसठ उपचारों का वर्णन आता है। चौसठ उपचार न हो सके तो पूजन निम्न उपचारों से करें-

१. अठारह उपचार-१. आसन, २. स्वागत, ३. अर्घ्य, ४. पाद्य, ५. आचमन, ६. स्नान, ७. वस्त्र, ८. यज्ञोपवीत, ९. आभूषण, १०. गन्ध, ११. पुष्प, १२. धूप, १३. दीप, १४. नैवैद्य, १५. दर्पण, १६. माला, १७. अनुलेपन, १८. नमस्कार।

२. सोलह उपचार-१. अर्घ्य, २. पाद्य, ३. आचनम, ४. स्नान, ५. वस्त्र, ६. आभूषण, ७. गंध, ८. पुष्प, ९. धूप, १०. दीप, ११. नैवैद्य, १२. आचमन, १३. ताम्बूल, १४. स्तवपाठ, १५. तर्पण, १६. नमस्कार,

३. दश उपचार-१. अर्घ्य, २. पाद्य, ३. आचमन, ४. स्नान, ५. वस्त्र निवेदन, ६. गंध, ७. पुष्प, ८. धूप, ९. दीप, १०. नैवैद्य,

४. पांच उपचार-१. गन्ध, २. पुष्प, ३. धूप, ४. दीप, ५. नैवेद्य।

"शतचण्डी प्रयोग"

(मंत्रमहोदधि)

साधक के कल्याण के लिए शतचण्डी विधान निम्न है-राज्योपद्रव, दुर्भिक्ष, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, शत्रुकृत, चक्रभय आदि समस्त विघ्नों के नाश के लिए शतचण्डी विधान करना श्रेष्ठ है। शतचण्डी विधान से रोग, शत्रु आदि भी नष्ट हो जाते हैं। अतः दुर्गा या शिव मंदिर में या अपने ही घर में एक सुन्दर मण्डप का निर्माण कर वन्दनवार ध्वजा आदि से उसको सुसज्जित कर मण्डप के अंतर्गत पश्चिम या मध्य भाग में होम कुण्ड का निर्माण करें, यजमान जितेन्द्रिय, कुलीन, सत्यवादी, लज्जा, दयावान, दुर्गापाठ करने हेतु दश ब्राह्मणों का वरण कर प्रत्येक दिन उनका यथोचित पूजन करे। ब्राह्मण प्रत्येक दिन आवाहित देवताओं का पूजन करते हुए प्रथम दिन सब ब्राह्मण एक एक, दूसरे दिन दो दो, तीसरे दिन तीन तीन, चौथे दिन चार चार पाठ (१०+२०+३०+४०=१००) कर पांचवे दिन होम, दशांश पूर्णाहूति तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोजन की व्यवस्था करें। नवदिन की शतचण्डी के भी दस ब्राह्मणों का वरण करें। पाठ ऐसे समय प्रारम्भ करें कि एक सौ पाठ अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी पूर्णिमा तिथि को पूर्ण हों। पाठ के समय प्रत्येक ब्राह्मण एक एक हजार नवार्ण मंत्र का जप भी करें इस प्रकार शतचण्डी प्रयोग करने वाला मनुष्य राज्य, धन, यश, पुत्र आदि समस्त वस्तुओं को प्राप्त करता है तथा उसके समस्त उपद्रव नष्ट हो जाते हैं।

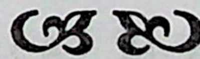
"इति शतचण्डी प्रयोग"

"यव वपन"

नवरात्र, शतचण्डी, सहस्र चण्डी, लक्षचण्डी अथवा देवी याग में यव वपन[१] का बहुत महत्व है। इसके लिए यव (जौ) को प्रातः काल पानी में भिगो दे, यंत्र के पास बांस की डलिया अथवा भूमि पर मिट्टी फैलाकर उसके ऊपर भीगे हुए यव छिड़क दें। यव के ऊपर पुनः मिट्टी डाल दें, वरुण पूजन के समय एक मिट्टी के कलश का भी पूजन करें। कलश पूजन के बाद श्रीफल युक्त इस मृत्तिका कलश को यव की मिट्टी के ऊपर स्थापित कर देवें, प्रत्येक दिन पूजन के समय इस कलश की भी पूजा करते रहें। पूर्णाहूति के दिन देवी पूजन के लिए हरियाली[२] तैयार हो जाएगी।

यवान्वै वापयेत्तत्र जलकुंभ समान्वितान्।
तत्र संस्थापयेत्कुम्भं विधिना मंत्रपूर्वम्।।

।।इति यव वपन।।



---

१. यव वपन-

यजमानाभिवृद्ध्यर्थअङ्कुराणि परिक्षयेत्।
सम्यगूर्द्धव प्ररूरानि कोमलानि सितानि च।

यवांकुर से फल ज्ञान-

अवृष्टि कुरुते कृष्णं धूम्रात्रं कलहं तथा।
अपूर्ण जननाशं च दुर्भिक्षं श्यामलांकुरम्।
तिर्यग्गते भवेद्व्याधिः कुब्जेशत्रुभयं तथा।
अशुभेचांकुरे जाते शान्ति होमं समाचारेत्त।।

(सिद्धांत शेखर)

"नवदुर्गाध्यान"

१. शैलपुत्री दुर्गाध्यान-

वन्दे वाञ्छित लाभाय चन्द्रार्धकृतशेखराम् ।
वृषारूढां शूलधरां शैलपुत्रीं यशस्विनीम् ॥१॥

२. ब्रह्मचारिणीदुर्गाध्यान-

दधाना करपद्माभ्यामक्षमालाकमण्डलू ।
देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा ॥२॥

३. चन्द्रघण्टादुर्गाध्यान-

अण्डजप्रवरारूढा चण्डकोपार्भटीयुता ।
प्रसादं तनुजा मह्यं चन्द्रघण्टेति विश्रुता ॥३॥

४. कूष्माण्डादुर्गाध्यान-

सुरासम्पूर्णकलशं रुधिराप्लुतमेव च ।
दधाना हस्तपद्माभ्यां कूष्माण्डा शुभदास्तु मे ॥४॥

५. स्कन्ददुर्गाध्यान-

सिंहासनगता नित्यं पद्माञ्चितकरद्वया ।
शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी ॥५॥

६. कात्यायनीदुर्गाध्यान-

चन्द्रहासोज्ज्वलकरा शार्दूलवरवाहना ।
कात्यायनी शुभं दद्याद् देवी दानवघातिनी ॥६॥

७. कालरात्रीदुर्गाध्यान-

करालरूपा कालाब्जसमानाकृतिविग्रहा ।
कालरात्रिः शुंभदद्याद् देवी चण्डाट्टहासिनी ॥७॥

८. महागौरीदुर्गाध्यान-

श्वेतेवृषेसमारूढा श्वेताम्बरधरा शुचिः ।
महागौरी शुभं दद्यान्महादेव प्रमोददा ।८।।

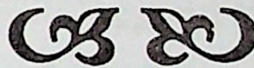
९. सिद्धिदात्रिदुर्गाध्यान-

सिद्धगन्धर्वयक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि ।
सेव्यमाना सदाभूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी ।।९।।

नवदुर्गा प्रार्थना-

सर्वशक्ति महामाये दिव्यज्ञान स्वरूपिणि ।
नवदुर्गेजगन्मातप्रणमामि मुहुर्मुहु ।।१०।।

"इति नवदुर्गा ध्यान"



"गणेश स्मरणम्"

यजमान पूर्व मुख हो पत्नी को दक्षिण[1] में बिठाकर कार्य की निर्विघ्नतया सिद्ध होने के लिए प्रत्येक पूजन कार्य में पहले गणेश जी का ध्यान[2] एकाग्र मन से करें जिससे कार्य की सिद्धि अवश्य ही तुरंत हो जायेगी।

"श्री गणेशाय नमः"

यं ब्रह्म वेदान्त विदो बदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथाऽन्ये।
विश्वोद्गते कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो बिघ्नविनाशनाय॥१॥
सर्वस्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं।
प्रस्यन्दन्मद गन्धलुब्ध मधुपव्यालोलगण्डस्थलं॥
दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरं।
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदंकामदम्॥२॥
श्वेतांग श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगन्धैः,
क्षीराब्धौ रत्नद्वीपैः सुरतरुविमले रत्नसिंहासनस्थाम्।
दोर्भिः पाशां कुशाब्जा भयवरमनसं चन्द्रमौलिंत्रिनेत्रं,
ध्यायेछान्त्यर्थ- मीशं गणपतिममलंश्रीसमेतं प्रसन्नम्॥

॥ गंगा ध्यानम् ॥

अभिनवविसवल्ली पादपद्मस्यविष्णो-
र्मदनमथनमौलेर्मालती पुष्पमाला॥

---

१. व्रतेबन्धे विवाहे च चतुर्थी सहभोजने।
व्रतेदाने मखे श्राद्धे पत्नी तिष्ठति दक्षिणे

२. सर्व कार्येषु ये मर्त्याः पूर्षमेन गणाधिपम्।
स्मरिष्यन्ति न वै तेषां कार्यहानिर्भविष्यति। (प्रभासखण्डे)

जयति जयपताका काप्यसौ मोक्षलक्ष्म्याः

क्षपित कलिकलंका जाह्नवी नः पुनातु।१॥

गांग वारिमनोहारि मुरारी चरणच्युतम्।

त्रिपुरारि शिरश्चारि पापहारि पुनातु माम्॥२॥

गंगा पूजन-

ॐ इमं मे गंगे यमुने सरस्वती सतद्रु स्तोमं स च तां परुष्ण्या असिक्न्या मरुद्वृधः वितस्तया जीकीये श्रुणुह्या सुषोमया॥

गंगाजल का पूजन कर गंगाजल के पात्र से कर्मपात्र में जल भर कर अभिमंत्रित करें-

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।

नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

॥ पंचगव्य सम्मेलन॥[१]

गोमूत्र-

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि।

धियोयोनः प्रचोदयात्॥१॥

गोमय-

ॐ गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।

इश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥२॥

---

१. पंचगव्य बनाने की मात्रा-

पलमात्रंतु गोमूत्रं अंगुष्ठार्धान्तुगोमयम्।

क्षीरं सप्तपलं ग्राह्यं दधि त्रीपलमीरितिम्॥

सर्पित्वेकपलंदेयउदकंपल मात्रकम्।

सर्वमेतत्ताम्रपात्रे स्थितं कुर्याद्यथा विधि॥

दूध-

आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्।
भवावाजस्य सङ्गथे।।३।।

दधि-

ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः।
सुरभिनोमुखा करत्प्रण आयू ꣳ षितारिषत्।।४।।

घी-

ॐ तेजोऽसि शुक्क्रमस्यमृतमसि धामनामासि
प्रियं देवानामनाधृष्टंदेवयजनमसि।।५।।

जल-

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्ब्बाहुभ्यांपूष्णो हस्ताभ्याम्।।६।।

कुशा[1] से पंचगव्य हिला देवे पश्चात् प्रोक्षण करें।

प्रोक्षण मंत्र-

ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्ता नऽऊर्जे दधातन्। महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उ शतीरिव मातरः तस्माऽ अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपोजन यथा च नः।।

प्राशन मंत्र-

यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके (तावके)।
प्राशनात्पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिबेन्धनम् ।।

आचमन-

ॐ अच्युताय नमः स्वाहा।। ॐ केशवाय नमः

१. कुशाः काशास्तथा दूर्वा यव पत्राणि ब्रीहय।
बिल्वजा पुण्डरीकाश्च कुशाः सप्त प्रकीर्तिताः।। (सृष्टिखण्डे)

स्वाहा।। ॐ नारायणाय नमः स्वाहा।। हस्तप्रक्षालन- ॐ माधवाय नमः स्वाहा।।

पवित्री धारण-

दाहिने हाथ की अनामिका में पवित्री धारण[१] कर बाये हाथ में जल लें। दाहिने हाथ की अनामिका अंगूठा से जल अभिमंत्रित करें।

अभिमंत्रण मंत्र-

ॐ अपवित्रः पवित्रोर्वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षः स बाह्याभ्यन्तरः शुचि।।

प्रोक्षण मंत्र-

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

शिखाबन्धन-

ॐमानस्तोके तनयेमानऽआयुषिमानोगोषु मानोऽअश्वेषुरीरिषः।
मानो वीरानूरुद्रभामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।।

उपरोक्त मंत्र से शिखा बन्धन कर बायें हाथे में भस्म अभिमंत्रित करें।

भस्म अभिमंत्रण[२]

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात्।

---

१. चतुर्भिदर्भा पिजुलै ब्राह्मणस्य पवित्रकान्।
एकैक न्यून मुद्दिष्टं वर्णे वणे यथा क्रमम् (मार्कण्डेय)

२. भस्म अभिमंत्रण
प्रातः ससलिलं भस्म मध्याह्ने गन्ध मिश्रितम्।
सायाह्ने निर्जल भस्म एवं भष्म विलीपयेत्।। (पारस्कर गृह्ये)

भस्मधारण-

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्।
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्॥

प्राणायाम मंत्र-

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ ॐ आपो ज्योति रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुव स्वरोम्॥

पूरक, कुम्भक, रेचक क्रम से उपरोक्त मंत्र को तीन बार पढ़े।

भूतशुद्धि [१]

पीली सरसों बायें हाथ में रख दाहिने से अभिमंत्रित करें।

अभिमंत्रण मंत्र-

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूताभूमि संस्थिता। ये भूता विघ्न कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

सरसो को दिशाओं में फेंक दें-

ॐ प्राच्चै नमः (पूर्व में) ॐ अर्वाच्यै नमः (दक्षिण में) ॐ प्रतीच्यै नमः (पश्चिम में) ॐ उदीच्यै नमः (उत्तर में) ॐ ऊर्ध्व ब्रह्मणे नमः (ऊपर) ॐ अधः (भूमि) अनन्ताय नमो नमः। पश्चात् दिशाओं में गन्धाक्षत आदि देवें- **ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषा ँ सहस्र योजने वधन्वानितन्मसि॥**

---

१. भूतशुद्धि विनायेनः क्रीयते यज्जपादिकम्।
तत्सर्वं निष्फलं प्रोक्तं तस्मातां पूर्व माचरेत्।

प्रार्थना-

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन यज्ञकर्म समारभेत् ॥

॥ आसन पूजनम् ॥

विनियोग-

अस्य श्री आसन मंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः॥

जल छोड़ दें।

पूजन-

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म स प्रथाः॥ पृथिव्यै नमः। आधार शक्ते नमः। कूर्मासनाय नमः कमलासनाय नमः॥

प्रार्थना-

पृथिवी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां भद्रे पवित्रं कुरु चासनम्॥



सूर्य पूजन[१]

भूमि पर त्रिकोण गन्ध से बनाकर उसके ऊपर ताम्र अर्घ्य रख जल से भर देवें। अक्षत छोड़ें। दश कलात्मने धर्मप्रद वह्निमण्डलाय नमः द्वादश कलात्मने अर्थ प्रद सूर्य मण्डलाय नमः षोडश कलात्मने कामप्रद चन्द्रमण्डलाय नमः। सं सत्वे नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः। पं परमात्मने नमः।।

रक्त पुष्प तथा रक्त अक्षत हाथ में रख भगवान सूर्य का ध्यान करें-

नमो नमस्तेऽस्तु सदा विभावसो।
सर्वात्मने सप्त हयाय भानवे।।
अनंत शक्तिर्मणि भूषणेन।
ददस्व भक्तिं मम मुक्ति भव्याम्।

आवाहन-

आवाहयेतं द्विभुजं दिनेशं सप्ताश्ववाहं द्युमणि ग्रहेशं।
सिन्दूरवर्ण प्रतिमाव भासं भजामि सूर्यं कुलवृद्धि हेतवः।।

अर्घ्य-

नमः सहस्त्र किरण सर्वव्याधि विनाशन।
गृहाणार्घ्य मयादत्तं संज्ञया सहितो रवे।।
नमो भगवते तुभ्यं नमस्ते जातवेदसे।
दत्तमर्घ्यं मया भानो त्वं गृहाण नमोस्तु ते।।

पूजन-

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्न मृतं मर्त्यंच।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

---

१. सूर्यार्घ फल
यावन्नदीयतेचार्घ्यो भाष्कराय महेश्वरि।
तावन्न पूजये द्विष्णो शङ्करं वा सुरेश्वरीम्। (गन्धर्व तंत्रे)

ॐ आदित्याय नमः। ॐ रवये नमः॥ ॐ भानवे नमः॥

भगवान सूर्य को गन्ध अक्षत पुष्प धूप दीपक नैवेद्य चढ़ाकर सूर्य मुद्रा दिखावे-

मुद्राप्रदर्शन-

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्राद्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षꣳसूर्य्यऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥

प्रार्थना-

सप्ताश्वं समारुह्य अरुण सारथि उत्तमम्।
श्वेतपद्म धरं देवं त्वां सूर्यं प्रणमाम्यहम्॥१॥
एक चक्र रथो यस्य दिव्य कनक भूषितः।
सः मे भवतु सुप्रीतः पद्म हस्त दिवाकरः॥२॥

अर्घ्य के पात्र में शेष जल का छींटा पूजन सामग्री पर लगावे-

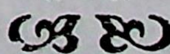
ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे दधातनः। महेरणाय चक्षसे योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः तस्माँऽअरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः॥

अर्घ्य के दिये जल को आंखों पर लगाये-

मंत्र-

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ श्रृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शत मदीनाः श्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥

"इति सूर्य पूजनम्"



"घण्टा पूजनम"[१]

पूजन मंत्र-

सुपर्णोऽसि गरुत्माँस्त्रिवृत्ते गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोम आत्मा छन्दा ꣳ स्यङ्गानि यजू ꣳ षि नाम। साम ते तनुर्वाम देव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः। सुपर्णोऽसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत॥

ॐ भू र्भुवः स्वः घण्टास्थ गरुड़ाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पं समर्पयामि। पूजन कर घण्टा बजा देवे-

वादनमंत्र-

आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम्।
सर्वभूतहितार्थाय घण्टानादं करोम्यहम्॥

घण्टा बजाकर बायें भाग में रख देवें।

॥ शंख पूजनम् ॥

पूजन मंत्र-

ॐ अग्निरिषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम्॥

ॐ भू भुर्वः स्वः शंखस्थ देवतायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धक्षतानि समर्पयामि॥

गन्धाक्षत पुष्पादि चढ़ाकर शंख बजा देवें।

शंख वादन-

पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि।
तन्नो शंख प्रचोदयात् ॥

१. घण्टी कब बजायें- स्नाने धूपे तथा दीपे नैवेद्ये भूषणे तथा।
घण्टानादं प्रकुर्वितं तथा नीराजनेऽपि च॥

शंख बजाकर पुष्पासन के ऊपर रख देवें।

शंख प्रार्थना-

यस्य नादेन दैत्यानां बलहानिरजायत।
देवानां ववृधे तेजो यात्यधर्मश्च शंखयम्॥

॥ धूपपात्र पूजनम् ॥

पूजन मंत्र-

ॐ ऋताषाडऋत धामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयौऽप्यसरसो मुदोनाम। स न ऽ इन्द्रं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा॥

गन्धर्व देवाय धूपपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतं पुष्पं समर्पयामि।

धूप पात्र को गन्धक्षतादि चढ़ा देवें।

॥ दीपक पूजनम ॥[1]

पूजन मंत्र-

ॐ अग्निर्ज्योति ज्योतिष्मान् रुक्मो वर्चसा वर्चस्वान्। सहस्रदा ऽअसि सहस्रा:ऽत्वा॥

दीपक नाथ भैरवाय नमः॥

दीपक को गन्ध अक्षत पुष्पादि चढ़ाकर प्रार्थना करें-

प्रार्थना-

भो देव दीप रूपस्त्वं कर्मसाक्षीह्यविघ्नकृत।
यावत्कार्य समाप्तिः स्यातावदत्र स्थिरौ भव॥

---

१. दीपक रखने का स्थान

घृत दीपं दक्षिणेतु तैलदीपं तु वामतः।
वामतस्तु तथा धूपम अग्रेवा ननु दक्षिणे॥

तीक्ष्ण द्रष्टं महाकाय कल्पान्ते दहनोपम्।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

॥ ब्राह्मण पूजनम् ॥[१]

पूजन मंत्र-

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन ऽ आवः। सबुध्न्या ऽ उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः॥१॥

ॐ ब्राह्मण मद्य विदेयं पितृमन्त पैतृमत्य मृषिमाषेय ᳪ सुधातु दक्षिणम्। अस्मद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातार माविशत्॥२॥

नमः ब्रह्मण्य देवाय गौ ब्राह्मण हिताय च।
जगद्हिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥३॥

उपरोक्त मंत्रों से ब्राह्मण का अर्घ्य गन्ध अक्षत पुष्प आदि से पूजन करके प्रार्थना करें-

प्रार्थना-

यदर्चनं कृतं विप्रं तवविष्णुस्तद् रूपिणः।
प्रार्थना मम दीनस्य विष्णवेतु समर्पणम्॥१॥
देवाधीनं जगत्सर्वं मंत्राधीनं च देवता।
ते मंत्र ब्राह्मणाधीनं तस्मात् ब्राह्मण देवता॥२॥

---

१. ब्राह्मणादि पूजन फल-
देव गो विप्र वृद्धानां गुरुणां चैव पूजनम्।
आयुष्यं वृद्धिदं पुण्यमलक्ष्मी कलिनाशनम्॥

२. ब्राह्मण लक्षण- शान्ताः सन्त सुशीलाश्च सर्वभूतहिते रताः।
क्रोधं कर्तुं न जानान्ति एतद् ब्राह्मण लक्षणम्॥

॥ यजमान तिलक ॥

पुरुष तिलक[१] मंत्र-

ॐ युञ्जन्ति ब्रध्नं मरुषं चरन्तं परि तस्थुषः। रोचन्ते रोचनादिवि॥ युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसारथे। शोणा धृष्णू नृवा हसा॥

स्त्री तिलक मंत्र-

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्या वहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्म ऽइषाणसर्वलोकम्म ऽ इषाण॥

बालक तिलक मंत्र-

यावत् गंगा कुरुक्षेत्रे यावत् तिष्ठति मेदिनी।
यावत् रामकथा लोके तावत् जीवतु बालकाः॥

कन्या तिलक मंत्र-

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन्।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकांकाम्पीलवासिनीम्॥

विधवा तिलक मंत्र-

ॐ तद् विष्णोः परमं पद ँ सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्॥ त्रीणिपदा धारयन्॥ धर्मवती विष्णुव्रती भव॥

---

१. तिलक धारण फल-

अनुलेपस्तृषामूर्च्छादुर्गंध श्रमदाहजित्।
सौभाग्य तेजस्त्वग्वर्ण प्रीत्योजोबलवर्द्धन॥
(वृह. चर्या चन्द्रोदये)
श्राद्धे यज्ञे जपे होमे वैश्वदेवे सुरार्चने।
घृत त्रिपुण्ड पूतात्मा मृत्युञ्जयति मानवाः॥

॥ शान्ति पाठ ॥

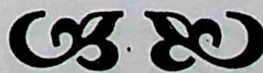
यजमान पुष्प हाथ में रख कुल देवताओं का स्मरण करें-

ॐ आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धा सोअपरीतास उद्भिदः। देवानो यथा सदमिद् वृधे ऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे॥१॥ देवानां भद्राः सुमतिर्ऋजूयतां देवाना ॐ रातिरभिनो निवर्तताम्। देवाना ॐ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न ऽ आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥२॥ तान्पूर्वयानि विदाहूमहे वयं भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्। अर्य्यमणं वरुण ॐ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥३॥ तंनो वातो मयो भुव्वातुभेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौ। तदग्रावाणः सोमसुतो भयोभुव-स्तदश्विना श्रृणु तन्धिष्ण्यायुवम्॥४॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषानो यथा वेदसाम सद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥५॥ स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाविश्व वेदाः स्वस्तिनस्ता- क्ष्योंऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु॥६॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्नि जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह॥७॥ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरै रंगैस्तुष्टुवा ॐ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितंयदायुः॥८॥ शतमिन्नु शरदोऽअन्ति देवा यत्रानश्चक्रा जरसन्तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति

मानो मध्यारीरिषतायुर्ग्गन्तोः॥९॥ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्ष-मदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवा ऽ अदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जातम- दितिर्ज्जनित्वम्॥१०॥ तं पत्नि भिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे अधिरोचने दिवः ॥११॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ऀ शान्तिः पृथिवी शान्ति रापः शान्ति रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व्वं ऀ शान्तिः शान्ति रेव शान्तिः सा मा शान्ति रेधि ॥१२॥ यतोयतः समीहसे ततो नो ऽअभयं कुरु शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥१३॥ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव॥१४॥ गणानान्त्वा गणपति ऀ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ऀ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ऀ हवामहे ब्वसोमम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥१५॥ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्॥ १६॥ सुशान्ति र्भवतु ॥

यजमान पुष्पों को भगवान गणेश जी को चढ़ावें।

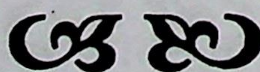
॥ इति शान्ति पाठ॥



॥ चतुर्दश नमस्कार ॥

ॐ श्रीमन्नमहागणाधिपतये नमः॥१॥
ॐ लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः॥२॥
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः॥३॥
ॐ वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः॥४॥
ॐ शची पुरन्दराभ्यां नमः॥५॥
ॐ मातृ पितृ चरणकमलेभ्यो नमः॥६॥
ॐ इष्ट देवताभ्यो नमः॥७॥
ॐ कुल देवाताभ्यो नमः॥८॥
ॐ ग्राम देवाताभ्यो नमः॥९॥
ॐ स्थान देवाताभ्यो नमः॥१०॥
ॐ वास्तु देवाताभ्यो नमः॥११॥
ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः॥१२॥
ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः॥१३॥
ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतयेनमः॥१४॥

॥ इति चतुर्दश नमस्कार ॥



।। गणेश स्मरणम् ।।

यजमान रक्तपुष्प रक्त अक्षत एवं दूर्वा हाथ में रख गणेश जी का ध्यान करें-

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलोगज कर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।१।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रोगजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।२।।
विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।३।।
शुक्लाम्बर धरं देवं शशिवर्ण चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये।।४।।
अभिप्सितार्थ सिद्ध्यर्थ पूजितो यः सुरासुरै।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।५।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम।।६।।
अनन्याश्चिन्तयन्तो मा ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेम वहाम्यहम्।।७।।
स्मृते सकल कल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं ब्रजामि शरणं हरिम्।।८।।
सर्वेष्वारंभ कार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः।

---

१. पूजा में वर्जनीय पदार्थ-

नाक्षतैअर्चयेत् विष्णु न तुलस्यां गजाननः।
न दूर्वया पूजयेत् दुर्गा विल्व पत्रेश्च भाष्करम्।।

(ज्ञानमालायाम)

देवा दिशंतु नः सिद्धि ब्रह्मेशान जनार्दनाः॥९॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजय।
येषांमिन्दिवरस्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥१०॥
विनायकं गुरु भानु ब्रह्माविष्णुमहेश्वरान्।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्व कार्यार्थ सिद्धये॥११॥
सर्वदा सर्व कार्येषु नाऽस्ति तेषांऽमंगलम्।
येषा हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः॥१२॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदैव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदैव लक्ष्मिपते ते ऽघ्रियुगंस्मरामि॥१३॥
वक्रतुण्ड! महाकाय! कोटि सूर्य समप्रभ!।
निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा॥१४॥
विश्वेशं माधवं ढुण्डिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
ट दे काशी गुहा गंगा भवानिमणिकर्णिकाम्॥१५॥
सर्वमंगल मांगल्ये! शिवे! सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि! नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१६॥

वेदी पर स्थापित सुवर्ण चांदी अथवा गोमय-पूगीफल निर्मित गणेशाम्बिका को दूर्वाक्षंत पुष्प अर्पण कर दें॥



॥संकल्प॥

यजमान दाहिने हाथ में जल अक्षत तिल द्रव्य रखे पश्चात आचार्य संकल्प कहे-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे श्री गंगायमुनयोः......... दिग्भागे षष्ठि संवत्सराणां मध्ये..........[1] नाम संवत्सरे अमुकायने......... ....ऋतौ............मासे........ पक्षे......... तिथौ........वासरे. ...... नक्षत्रे.......... राशिस्थितेचन्द्रे........... राशि स्थिते सूर्ये.............राशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु यथायथा-राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गुणगण विशेषण-विशिष्टायां शुभपुण्य तिथौ.................. गोत्र........... शर्मा (वर्मा गुप्तः)ऽहं मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवी प्रीतिद्वारा सर्वपापक्षय पूर्वक दीर्घायुर्विपुल धनधान्य पुत्रपौत्राद्यनविच्छन्न सन्ततिवृद्धि पूर्वकं मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा कृत कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक समस्तपाप क्षयार्थ सदाभीष्ट सिद्ध्यर्थं च महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती पूजनं करिष्ये। तदंगत्वेन गणपति पूजनं स्वस्ति पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारा पूजनं नान्दीश्राद्ध ग्रह पूजनं आवाहित देवतास्थापनं च करिष्ये॥

॥ इति संकल्प ॥

---

१. रिक्त स्थान पर सम्वत्, अयन, ऋतु, मास आदि का नाम उच्चारण करें

''गणेश पूजनम्''[१]

गणेश जी का निम्न मंत्रों से ध्यान-आवाहनादि करें-

ध्यान-

श्वेतांगं श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगन्धैः,
क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरुतरु विमले रत्नसिंहासनस्थम्।।
दोर्भिः पाशाकुशाब्जाअभयवरमनसां चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रम्।
ध्यायेच्छांत्यर्थमीशं गणपतिममलं श्री समेतं प्रसन्नम्।।

भगवान श्री गणेश का ध्यान करते हुए पुष्प अर्पण कर दें।

आवाहन-

हे हेरम्ब! त्वमेह्येहि अम्बिकात्र्यम्बकात्मज।
सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्ष्य लाभपितुः पितः।।१।।
नागस्य नागहार त्वं गणराज चतुर्भुजम्।
भूषितः स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांकुश परस्वधैः।।२।।
आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थ च मम क्रतो।
इहागत्य गृहाणत्वं पूजां यागं च रक्षमे।।३।।

विनियोग-

गणानान्त्वेति मंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषि यजुश्चछन्दो।
गणपतिर्देवता गणपत्यावाहनेपूजने विनियोगः।।

ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ँ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्।।

---

१. पूजन जप होमफल-

पूजायां लभते पूजां जपात् सिद्धिर्न शंशय।
होमेन सर्वसिद्धिस्यात्तस्मात्त्रितयमर्चयेत्।। (भविष्य पुराण)

आवाहन मुद्रा गणेशअम्बिका को दिखावे।

प्रतिष्ठापन-

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाजस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमं तन्नोत्वरिष्ठंयज्ञ ँ समिमन्दधातु। विश्वेदेवा सऽइह मादयन्तामो ३ प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्व मर्चायै मामहेति च कश्चन ॥

गणेशाम्बिका के प्रतिष्ठापन के लिए प्रतिमाओं का स्पर्श करें।

आसन-

ॐ वर्मोऽस्मि समानामद्युतामिव सूर्यः।
इमं तमभित्तिष्ठामि यो मां कश्चाभिदासति॥
रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्।
आसनं च मयादत्तं गृहाण परमेश्वर॥

आसन अर्पण कर दें।

पाद्य-

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि॥
गंगोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्य संयुतम्।
पाद प्रक्षालनार्थाय दत्तं च प्रतिगृह्यताम्॥

गणेश अम्बिका को पादप्रक्षालनार्थ जल अर्पण कर दें।

अर्घ्य-

ॐ धामन्ते विश्वं भुवनमाधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि।
अपामनीके समिथे यऽआभृतस्तमश्याम मधुमन्तं तऽ ऊर्मिम्॥

स्वर्णपात्र स्थित तोयं गन्धपुष्पफलान्वितम्।
सहिरण्यं ददाम्यर्घ्यं गृहाण परमेश्वर!॥

गणेश अम्बिका को अर्घ्य समर्पण कर दें।

आचमन-

ॐ इमम्मे वरुण श्रुधिहवमद्या च मृडय। त्वाम-वस्युराचके।

नानातीर्थसमायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्।
आचमनार्थ मयादत्तं गृहाण परमेश्वर!।।

आचमनार्थ गणेश अम्बिका को जल अर्पण कर दें।

दुग्ध स्नान-

ॐ पयः पृथिव्याम्पय ऽ ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमयार्पितम्।।

दुग्ध से गणेश अम्बिका का स्नान करें। पुनः आचमन।[१]

दधि स्नान-

ॐ दधि क्राव्णो ऽअकारिषंजिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्रण ऽआयू ँ षितारिषत्।।
पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानीतं मयादेव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

गणेश अम्बिका का दधि से स्नान कर पुनः जल से स्नान करवायें।

---

१. पुनराचमनीयम्-

उच्छिष्टोप्य शुचिर्वापि यस्यस्मरण मात्रतः।
शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम्।
(स्नानवस्त्रोपवीतान्तेऽपितत्स्मृतम्।।

घृत स्नान-

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्बस्य धाम। अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।।

नवनीत समुत्पन्नं सर्वसन्तोष कारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

गणेश अम्बिका का स्नान घी से कर देवें। पुनः आचमन जल से स्नान करावें।

मधु स्नान-

ॐ मधुव्बाता ऽ ऋतायतेमधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधु नक्त मुतोषसो मधुमत्पार्थिव ॐ रजः मधु द्यौरस्तुन नः पिता। मधुमान्नो व्वनस्पति र्मधुमाँ। अस्तु सूर्यः माध्वी र्ग्गावो भवन्तु नः।।

तरुपुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

गणेश अम्बिका को मधु से स्नान करवाकर पुनः आचमन जल से स्नान करावें।

शर्करा स्नान-

ॐ अपा ॐ रसमुद्वयस ॐ सूर्येसन्त ॐ समाहितम्। अपा ॐ रसस्य यो रस स्तं व्वोगृह्णा म्युत्तममुपयाम गृहीतो सीन्द्रायत्वा जुष्टं गृह्णामेषते योनि रिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।

इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

पंचामृत स्नान [१]–

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सो देशेभवत्सरित्॥
पंचामृतमयाऽनीतं पयोदधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गणेश अम्बिका को पंचामृत से स्नान करवा पुनः जल से स्नान करावें।

उद्वर्त स्नान–

ॐ गन्धर्वस्त्वा व्विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः
नाना सुगन्धद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्।
उद्वर्तनं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

गणेश अम्बिका को आचमन जल से स्नान करावें।

शुद्ध स्नान–

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालोमणिवालस्त ऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणस्तेरुद्राय पशुपतये कर्णायामा ऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥

कावेरी नर्मदावेणी अलकनन्दा सरस्वती।
गंगा च यमुना तोयं स्नानार्थं मयार्पितम्॥

गणेश अम्बिका को शुद्ध जल से स्नान करावें।

---

१. पंचामृत–
घृतंक्षीरं तथानीरं शर्करा मधु संयुतम्।
पंचामृतमितिख्यातं प्रत्येकन्तु पलम्पलम्॥

वस्त्र-

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरुथमा दयत्स्वः।
वासो ऽ अग्ने विश्वरूप ॐ संव्ययस्व विभावसो॥
शीतवातोष्ण-संत्राणं लोकलज्जा निवारणे।
देहं लंकारणार्थाय वासांसी प्रतिगृह्यताम्॥

गणेश अम्बिका को वस्त्र चढ़ाकर पुनः आचमन जल चढ़ा देवें।

यज्ञोपवीत-

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मयादत्तं गृहाण परमेश्वर॥

गणेश अम्बिका को यज्ञोपवीत चढ़ाकर आचमन जल छोड़ दें।

चन्दन-

ॐ त्वांगन्धर्वाऽ अखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥
श्री खण्डचंदनं दिव्यं केशरादि समन्वितम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

गणेश अम्बिका को चन्दन लगायें।

सिन्दूर-

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूधनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा ऽ अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं कीर्तिवृर्द्धनम्।
सुखदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥
गणेश अम्बिका को सिन्दूर लगायें।

अक्षत-

अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रियाऽअधूषत।
अस्तोषतस्वभानवो विप्रा न विष्ट्ठयामतीयोजान्विन्द्रतेहरी
अक्षताश्च सुरश्रेष्ठं कुंकमाक्ता सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥
गणेश अम्बिका को कुंकम युक्त अक्षत लगायें।

पुष्प-

ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वाऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः॥
सुमाल्यानि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पूजार्थं पुष्पाणिं प्रतिगृह्यताम्॥

दूर्वा-

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च॥
दूर्वान्कुरान् सुहरितान् ऽमृतान्मंगल प्रदान्।
आनीतास्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर॥
गणेश अम्बिका को दूर्वा के अंकुर समर्पण करें।

सौभाग्य द्रव्य-

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुँज्यायाहेतिम्परिबाधमानः।

हस्तघ्नो विश्वावयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ँ सम्परिपातुविश्वतः॥

नानापरिमलैद्रर्व्यै निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीर नामकं चूर्ण गन्ध चारु प्रतिगृह्यताम्॥

गणेश अम्बिका को अबीर गुलाल, हरिद्रा आदि सौभाग्य द्रव्य चढ़ावे।

धूप-

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्वयं वयं धूर्वामः देवानामसि वह्नितम ँ सस्नितमं पप्रितमं ज़ुष्टतमं देवहूतमम्॥

वनस्पतिरसोद् भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्व देवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥

गणेश अम्बिका को धूप दिखायें।

दीप-

ॐ चन्द्रमा ऽ अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि।
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृह ँ हरिरेति कनिक्रन्दत॥
साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह॥

गणेश अम्बिका को दीपक दिखाकर हाथ धो लें।

नैवेद्य-

ॐ ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ।
अप्सु क्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्॥

घृतपक्व हविष्यान्नं पायसं च शकर्करम्।
नानाविधं च नैवेद्यं गृह्यतां परमेश्वर॥

गणेश अम्बिका को नैवेद्य अर्पण कर एक आचमन जल छोड़कर हाथ धो लें।

ऋतुफल-

ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः
बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व ँ हसः॥
इदं फलं मया देव स्थापितं पुरस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

गणेश अम्बिका को ऋतुफल अर्पण कर देवें।

ताम्बूल-

ॐ उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णं न वेरनुवाति प्रगर्धिनः। श्येनस्येव ध्रजतोऽअङ्कसंपरि दधिक्राव्णः सहोर्जा तरित्रतः स्वाहा॥

पूगीफल महाद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
एलादिचूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

गणेश अम्बिका को ताम्बूल अपर्ण कर देवें।

दक्षिणा-

यद्दतं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः।
तदग्निर्वैश्‍व कर्मणः स्वर्देवेषुनो दधत्॥
हिरण्य गर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

गणेश अम्बिका को द्रव्यदक्षिणा समर्पण कर दें।

नीराजन-

ॐ आरात्रि पार्थिव ँ रजः पितुरप्प्रायिधामभिः। दिवः सदा ँ सिबृहतीवितिष्ठस ऽ आत्वेषं वर्त्तते तमः॥

कदली गर्भसंभूतं कर्पूरं च प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्यमे वरदो भव।।

गणेश आम्बिका को कर्पूर आरति दिखावें।

विशेषार्घ्य-

रक्षरक्ष गणाध्यक्ष रक्षत्रैलोक्य रक्षक।
भक्तानाऽभयंकर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।
द्वैमातुर कृपासिंधो षाण्मातुराग्रज प्रभो।
वरद त्वं वरं देहि वांच्छितं वांच्छितार्थद।।
अनने सफलार्घ्येण फलदोस्तु सदा मम।।

गणेश अम्बिका को जल, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, दक्षिणा युक्त विशेषार्घ्य अर्पण कर देवें।

प्रार्थना-

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय,
गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।१।।
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय,
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय,
भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते।।२।।

नमस्तेब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः,
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः॥३॥
विश्वरूप स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे,
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक॥४॥
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुंदरेति,
भक्ति प्रियेति सुखदेति वरप्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति,
तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव॥५॥
लम्बोदर! नमस्तुभ्यं सततं मोदक प्रिय!।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

॥ इति गणेश पूजनं सम्पूर्णम्॥



॥ वरुण कलश पूजनम् ॥

कलश स्थापना के लिए छिद्र रहित, सुन्दर, स्वर्ण अथवा ताम्र कलश लें और शुद्ध भूमि पर चन्दन से अष्टदल कमल बनाकर यजमान भूमि का स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र पढ़ें-

भूमिस्पर्श-

ॐ मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः॥

अष्टदल के ऊपर धान्य अथवा चावल रखें-

धान्य स्थापना-

ॐ औषधयः समवदंत सोमेने सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ँ राजन् पारयामसि॥

धान्य के ऊपर कलश को स्थापित कर देवें-

कलश स्थापना-

ॐ अजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विदवः। पुनरुर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्षोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयि॥

स्थापित वरुण के कलश को जल से भर देवें।

जल-

ॐ वरुणस्योस्तं भनमसि वरुणस्य स्कंभसर्जनीस्त्थो वरुणस्य ऽऋतसदन्यसि वरुणस्य ऽऋत सदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद॥

कलश में सुगन्धित खस चन्दनादि डाल दें।

---

१. सर्वोषधि-

कुष्टंमासी हरिद्रेद्वे मुरा शैलेय चन्दनम्।
वच चम्पकमुस्ते च सर्वोषध्यो दशस्मृताः।

गन्ध प्रक्षेपण-

ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाँ बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्द्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥

कलश में धान्य रख देवें-

धान्य प्रक्षेपण-

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानायत्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्वा महीनां पयोऽसि॥

कलश में जटामासी, वच, कूट, शिलाजीत, हल्दी, दारूहल्दी, चन्दन, चम्पक, मोथा इन सर्वोषधियों को डाल देवें।

सर्वोषधि-

ॐ या औषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगंपुरा।
मनैनु वभ्रूणामह ँ शतं धामानि सप्त च॥

कलश में दूर्वा के अंकुर डाले।

दूर्वांकुर-

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च॥

कलश में गूलर, बड, पीपल, आम और जामुन के वृक्षों के पत्ते डाल देवे-

पंचपल्लव[१]-

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
गोभांजइत्किलासथ यत् सनवथ पुरुषम्॥

---

१. पंच पल्लव- **अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोध पल्लवाः।**
पंचभंगा इतिरख्याता सर्व कर्मसु शोभनाः॥

हाथी स्थान, घुड़साल, बाम्बी, चतुष्पथ, तालाब, राजद्वार और गोशाला, (अभाव में गंगा रेत) की मृतिका कलश में डाल देवे-

सप्तमृत्तिका-

ॐ स्योना पृथिवि नो भवा नृक्षरा निवेशनी यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥

कलश में कुशा डाल देवे-

कुशा-

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णाव्यो सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्॥

पूगीफल को कलश में डाल देवे-

पूगीफल-

ॐ याः फलीनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणिः। बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व ॐ हसः।

कलश में सुवर्ण वज्रमणि, नील, पद्मराग, मोती (पंचरत्न) डाल देवें-

पंचरत्न[१]-

ॐ परिवाजपतिः कवि रग्निर्हव्यान्यक्रमीत्।
दधद्रत्नानि दाशुषे॥

कलश में सुवर्ण अथवा द्रव्य दक्षिणा डाल देवे-

---

१. पंचरत्न-

कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम्।
एतानि पंचरत्नानि रत्नशास्त्र विदो विदुः॥

दक्षिणा-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम्॥

चावलों से भरे पात्र को कलश के ऊपर रख देवें-

पूर्णपात्र-

ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज ॐ शतक्रतो॥

कलश को मौली (कलावा) बांध देवें-

वस्त्र-

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरुथमा सदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूप ॐ संव्ययस्व विभावसो॥

नारियल (श्रीफल) को वस्त्र लपेट कलश के ऊपर स्थापित करें-

श्रीफल स्थापन-

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण॥

एक आचमन जल लेकर वरुण कलश के पूजन के लिए विनियोग छोड़े।

विनियोग-

ॐ तत्वायामिति शुनषेफ ऋषि त्रिष्टुप्छन्दो वरुणो देवता वरुणावाहने पूजने विनियोगः।

जल छोड़ कर कलश में वरुण देवता का आवाहन निम्न मंत्र से करें-

आवाहन-

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ँ समा न आयुः प्रमोषीः।। ॐ भूर्भुवः स्वः अस्मिन् कलशे वरुणं सांग सपरिवारं आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।

वरुण कलश का पूजन निम्न प्रकार करें-

आसनार्थेऽक्षतान् समर्पयामि। (अक्षत)
पादयो पाद्यं समर्पयामि। (पाद्य)
हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। (अर्घ्य)
आचमनं समर्पयामि। (आचमन)
पंचामृत स्नानं समर्पयामि। (पंचामृत)
शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। (शुद्धजल)
वस्त्रं समर्पयामि। (वस्त्र)
आचमनं समर्पयामि। (आचमन)
यज्ञोपवीतं समर्पयामि। (यज्ञोपवीत)
आचमनं समर्पयामि। (आचमन)
गन्धं समर्पयामि। (गन्ध)
अक्षतान् समर्पयामि। (अक्षत)
पुष्पं समर्पयामि। (पुष्प)
धूपमाघ्रापयामि। (धूप)
दीपं दर्शयामि। (दीपक)
नैवेद्यं निवेदयामि। (नैवेद्य)
पुनः आचमनं समर्पयामि। (आचमन)
ताम्बूल पूगीफलं समर्पयामि। (पानसुपारी)
कृतायाः पूजायाः षाद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।
(द्रव्य दक्षिणा चढ़ा देवे)

प्रार्थना-

देव दानव-संवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ! विधृतो विष्णुना स्वयम्॥१॥
त्वत्त्वोये सर्व तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिता॥२॥
शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः स-पैतृकाः॥३॥
त्वयितिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फल प्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!॥
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा॥४॥
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमंगलाय।
सुपाश हस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।
पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनी जीव नायकं।
यावत्कार्य समाप्तिस्या तावत्वं सन्निधोभव॥

॥ इति कलश पूजनं सम्पूर्णम् ॥



॥ पुण्याह वाचनम् ॥

उत्तराभिमुख ब्राह्मण तथा पूर्वाभिमुख यजमान बैठे। यजमान ब्राह्मणों का निम्न मन्त्रों से पूजन करें। ब्राह्मण आशीर्वाद देवे-

यजमान-

ॐ शिवा आपः सन्तु। यजमान ब्राह्मणों को जल देवे।

ब्राह्मण- ॐ सन्तु शिवाः आपः। ब्राह्मण जल लेवें।

यजमान- ॐ सौमनस्य मस्तु। ब्राह्मणों को यजमान पुष्प देवे।

ब्राह्मण- ॐ अस्तुसौमनस्यम्। ब्राह्मण पुष्प लेवे।

यजमान- ॐ अक्षता पान्तु। यजमान अक्षत देवे।

ब्राह्मण- ॐ मांगल्यमस्तु। ब्राह्मण अक्षत लेवे।

यजमान- ॐ गन्धाः पान्तु। यजमान ब्राह्मणों को गन्ध देवे।

ब्राह्मण- ॐ आयुस्मस्तु। ब्राह्मण गन्ध लेवे।

यजमान- ॐ पुष्पाणि पान्तु। यजमान पुष्प देवे।

ब्राह्मण- ॐ सोश्रियमस्तु। ब्राह्मण पुष्प लेवे।

यजमान- ॐ ताम्बूलानिपान्तु। यजमान ताम्बूल देवे।

ब्राह्मण- ॐ एश्वर्य मस्तु। ब्राह्मण ताम्बूल लेवे।

यजमान- ॐ दक्षिणाः पान्तु। ब्राह्मणों को यजमान दक्षिणा देवे।

ब्राह्मण- ॐ बहुधनं चास्तु। ब्राह्मण दक्षिणा लेवे।

पुनः यजमान ब्राह्मणों को प्रणाम कर प्रार्थना करें।

यजमान- श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं चास्तु॥

ब्राह्मण- तथास्तु॥ (ऐसा ही हो)

यजमान- यत्कृत्वा सर्व वेद यज्ञ क्रिया कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोकारमादिकृत्वा ऋग्यजुः

सामाथर्वणाशीर्वचनम् वह्वर्षिभिः। समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये॥

ब्राह्मण- वाच्यताम्॥

यजमान- व्रत नियम तपः स्वाध्याय क्रतुदमदानविशिष्ठानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्॥

ब्राह्मण- समाहित मनसः स्मः॥

यजमान- प्रसीदन्तुः भवन्तः॥

ब्राह्मण- प्रसन्नास्मः॥

ततो यजमानः अवनिकृत जानुमण्डलः कमल मुकुल सदृश अंजलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना सुवर्ण (ताम्र) कलशं धारयित्वा भूमौ स्थापिते पात्रद्वये प्रथमपात्रे किञ्चित्उदकं पातयेत् तथा ब्राह्मण वदेयुः॥

अर्थात् इसके पश्चात् यजमान उकडू बैठकर दोनों हाथों को कमल के समान अंजली बनाकर हाथों पर कलश रखें तथा कलश को शिर से लगावे। ब्राह्मण दो पात्रों में जल रखे, प्रथम पात्र के जल से सपरिवार यजमान को छीटें लगावे-

ब्राह्मण-

ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवं कर्मास्तु। ॐ धर्म समृद्धिरस्तु। ॐ कर्म समृद्धिरस्तु। ॐ वेद समृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्र समृद्धिरस्तु। ॐ पुत्रपौत्र समृद्धिरस्तु। ॐ धनधान्य समृद्धिरस्तु। ॐ इष्टसम्पदस्तु।

दूसरे पात्र के जल को ब्राह्मण यजमान के ऊपर घुमाकर बाहर की ओर छीटे लगावे-

ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। ॐ यत्पापमरोगऽशुभम-ऽकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु॥

पुनः प्रथम पात्र के जल से ब्राह्मण यजमान को छीटें लगावे-

ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरेकर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यताम्। ॐ तिथिकरण मुहूर्त नक्षत्र ग्रह लग्नादि देवताः प्रीयन्ताम्। ॐ दुर्गा पांचाल्यौ प्रियन्ताम्। ॐ अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्र पुरागो मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरी पुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ वशिष्ठ पुरोगाः ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धति पुरोगाः पतिव्रताः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्म पुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। आदित्यपुरोगाः सर्वेग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणश्च प्रीयन्ताम्। ॐ अम्बिका सरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रियेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयेताम्। ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती सिद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकारी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तो विघ्नविनायकौ प्रियेताम्। ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वाः इष्ट देवताः प्रीयन्ताम्॥

पुनः द्वितीय पात्र के जल को ब्राह्मण यजमान के ऊपर घुमाकर निम्न मंत्र से बाहर छिड़कें-

ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः। ॐ हताश्च परिपंथिनः। ॐ हताश्च विघ्न कर्तारः। ॐ शत्रवः पराभवंयांतु। ॐ

शाम्यन्तु घोराणि। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्त्वीतयः।।

पुनः प्रथम पात्र के जल से ब्राह्मण यजमान के मस्तक में जल के छींटे लगावे-

ॐ शुभानि वर्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा औषधयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु। ॐ शिवा अथितयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्।।

ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो व्यर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पन्ताम्।।

ॐ शुक्रांऽङ्गारक-बुध-बृहस्पति-शनैश्चर-राहू-केतु सोम सहिता:आदित्यपुरोगा:सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्।

ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्। ॐ पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।। ततौ यजमानः कलशं भूमौ निधाय प्रथम पात्रीय जलेन यजमानस्य सपरिवास्य शिरः संमृज्य द्वितीय पात्रजलं एकान्ते पातयेत्।।

यजमान कलश को भूमि में रखे, ब्राह्मण प्रथम पात्र के जल से यजमान का सपरिवार अभिषेक करे, दूसरे पात्र के जल को एकान्त में गिरा देवे।

यजमान प्रार्थनापूर्वक ब्राह्मणों से कहे-

ब्राह्मं पुण्यं महर्द्यंच सृष्ट्युत्पादनकारकम्।
वेदबृक्षोद् भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः।।
भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य[1] (दुर्गापूजनाख्यस्य)
कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।।

ब्राह्मण-

ॐ पुण्याहं पुण्याहं पुण्याहम्।।
पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहिमा।।

यजमान-

पृथिव्यामुद् धृतायान्तु यत्कल्याणं पुराकृतम्।
ऋषिभिः सिद्ध गन्धर्वैस्तत कल्याणं ब्रुवन्तु नः।।
भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य दुर्गापूजना-
ख्यस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।।

ब्राह्मण-

ॐ कल्याणं कल्याणं कल्याणम्।।

ॐ यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः ब्रह्मराजन्याभ्यां ॐ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुपमादौ नमतु।।

यजमान-

सागरस्य च या लक्ष्मीमहालक्ष्म्यादिभिः कृताः।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां तामृद्धि ब्रुवन्तु नः।।

---

१. यहां क्रियमाण यज्ञ, पूजन, पाठ आदि कर्म के नाम का उच्चारण करें।

भो ब्राह्मणाः! मयाक्रियमाणस्य दुर्गापूजनाख्यस्य कर्मणः ऋद्धि भवन्तो ब्रुवन्तु॥

ब्राह्मण-

ॐ ऋद्ध्यताम् ऋद्ध्यताम् ऋद्ध्यताम्॥

ॐ सत्रस्य ऽ ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृताऽअभूम।

दिवं पृथिव्याऽअध्यारुहामाविदाम देवान् स्वर्ज्योतिः॥

यजमान-

स्वस्तिस्तुया विनाशाख्या नित्यं मंगलदायिनी।

विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्ति ब्रुवन्तु नः।

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य दुर्गापूजनाख्य कर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु॥

ब्राह्मण-

ॐ आयुष्मते स्वस्ति, आयुष्मते स्वस्ति आयुष्मते स्वस्ति॥

ॐ स्वस्ति न ऽ इन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्तिनःपूषा विश्ववेदाः स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टिनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

यजमान-

समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका।

हरिप्रिया च मांगल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः। मयाक्रियमाणस्य दुर्गापूजनाख्यस्य कर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु॥

ब्राह्मण-ॐ अस्तु श्री अस्तु श्री अस्तु श्री॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि

रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णं निषाणामुंमऽइषाण सर्वलो- कंमऽइषाण।।

आरती- पतिपुत्र वाली सौभाग्यवती (अथवा) ब्राह्मण, इस समय सत्पत्नीक यजमान की आरती उतारें, इस समय आचार्य निम्न मंत्र पढ़ता जाय-

ॐ अनाधृष्टाः पुरस्तादग्रेराधिपत्यऽआयुर्मेदाः।
पुत्रवती दक्षिणतऽइन्द्रस्याधिपते प्रजां मे दाः।
सुषदा पश्चाद्देवस्य सवितुराधिपत्ये चक्षुर्मे दाः।
आश्रुतिरुत्तरतो धातुराधिपत्ये रायस्पोषं मे दाः।
विधृतिरुपरिष्टाद् बृहस्पते राधिपत्यऽ ओजो मे दाः।
विश्वाभ्यो मा ना ष्ट्राभ्यस्पाहि मनोरश्वासि।।

दक्षिणा दान संकल्प-

अद्यः कृतैतपुण्याहवाचन कर्मणः सांगता सिद्धयर्थ तत्सम्पूर्णफल प्राप्त्यर्थं च पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति हिरण्यादि दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजेत्।।

।। इति पुण्याहवाचनम् ।।



॥ ब्राह्मण वरण ॥[१]

आचार्यादि को उत्तर मुख बैठाकर स्वयं यजमान पूर्वाभिमुख रहता हुआ आचार्यादि का स्पर्श करता हुआ संकल्प पढ़े-

ॐ अद्यैत्यादि० (देश काल का नाम लेते हुए) **अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्माहं अमुक राशैः** (यजमान अपने नाम, गोत्र, राशि का उच्चारण करें) **अमुक गोत्रोत्पन्नममुक शर्माणं ब्राह्मणमस्मिन् दुर्गापूजनकर्मणि एभिर्गन्धाक्षत ताम्बूल मुद्रिका आसनकमण्डलुवासोभिः** (अथवा) **द्रव्यदक्षिणाया आचार्यादि (ब्रह्मत्वेन ऋत्विकत्वेन) कर्मकर्तु युष्मानहं वृणे॥** (आपका वरण कर रहा हूँ।)

आचार्य आदि ब्राह्मण कहे- **ॐ वृतास्मः॥**

हमारा वरण हो चुका है।

यजमान प्रार्थना करे-

आचार्य प्रार्थना-

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् आचार्यो भव सुव्रतः॥१॥

बह्मा प्रार्थना-

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा वेद शास्त्र विशारदः।
तथा त्वं यज्ञेस्मिन्ब्रह्मा --भव द्विजोत्तम॥२॥

---

१. वरण द्रव्य
भोजनं भोजनाधारंछत्रोपानत्कमण्डलुः।
आसनं वसनं मुद्राकर्णभूषोपवीतकम्॥
एतद्दशविधं देयं पात्र वस्त्रांगुलीयकम्।
पादाभावे त्रयं देय पात्र वस्त्रांगुलीयकम्॥ (रुद्रकल्पे)

ऋत्विक प्रार्थना-

ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन्।
यूयं तथा मे भवितुमृत्विजोऽर्हथ सत्तमा ॥३॥

यजमान आचार्य, ब्रह्मा, ऋत्विको को वरण द्रव्य तथा द्रव्य दक्षिणा देवे तथा आचार्य यजमान के हाथ में [१] रक्षाबन्धन तिलक कर देवे।

मंत्र-

ॐ आयुष्यं वर्चस्य ँ रायस्पोषमौद्भिदम्। इद ँ हिरण्यं वर्चस्वज्जैत्रायाविशतादुमाम्। न तद्रक्षा ँ सिन पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथम ँ ह्येतत् यो विभर्त्ति दक्षिणायण ँ हिरण्य ँ सदेवेषु कृणुते दीर्घमायुः। समनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः॥

ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्य ँ शतानीकाय सुमनस्य मानाः। तन्मऽआबध्नामि शतशारदायायुष्मान् जरदष्टिर्य्यथासम्॥

॥ इति ब्राह्मण वरणम् ॥

॥ ॐकार पूजनम् ॥

आवाहयाम्यहं देवमोकारं परमेश्वरम्।
त्रिमात्रं त्र्यक्षरं दिव्यं त्रिपदञ्च त्रिदेवकम्॥
त्र्यक्षरं त्रिगुणाकारं सर्वाक्षर मयं शुभम्।
त्र्यणवं प्रणवं हंसं स्त्रष्टारं परमेश्वरम्॥

---

१. **पत्नी वाम करे सूत्रं वद्धं सौख्यं धनागमन्।**
बहु सम्पति आरोग्यं रक्षार्थे कंकणं शुभम्॥

ॐ भूभुर्व स्वः भगवन् ओंकार। इहागच्छ इह तिष्ठ॥

ॐ कार में ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र का पूजन-

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरुस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेनऽआवः। सबुध्न्याऽउपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्।
समूढ़ मस्य पा ँ सुरे स्वाहा॥

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ कार स्थित ब्रह्म, विष्णु रूद्र का पूजन गन्ध अक्षतादि से कर प्रार्थना करें-

ॐ कार बिन्दु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ॐ काराय नमो नमः।

॥ सप्तघृत मातृका पूजनम् ॥

ध्यान-

या श्री स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः।
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धि ॥
श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा।
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥

स्थापन-

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णंनिषाणामुं मऽइषाण सर्वलोकं मऽइषाण॥

ॐ श्रिये नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः ॐ धृत्यै नमः। ॐ मेधायै नमः। ॐ स्वाहायै नमः। ॐ प्रज्ञायै नमः। ॐ

सरस्वत्यै नमः॥

सप्त घृत मातृकाओं का पूजन गन्ध अक्षत पुष्प धूप दीपक नैवैद्य से करके दक्षिणा अर्पण करें।

प्रार्थना-

श्रीलक्ष्मीधृर्तिमेधा स्वाहा प्रजा सरस्वती।
मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तेता घृतमातरः॥

॥ इति घृतमातृका पूजनम् ॥

॥ षोडश मातृका पूजनम्॥

मातृका स्थापन-

ध्यान- ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिकाह्येता वृद्धो पूज्यास्तु षोडश॥

प्रतिष्ठापन-

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीद सदन् मातरं पुरः।
पितरं च प्रयन्त्स्वः॥

ॐ गणपतये नमः ॥ ॐ गौर्ये नमः ॥
ॐ पद्मायै नमः ॥ ॐ शच्चै नमः ॥
ॐ मेधायै नमः ॥ ॐ सावित्र्यै नमः ॥
ॐ विजयायै नमः ॥ ॐ जयायै नमः ॥
ॐ देव सेनायै नमः ॥ ॐ स्वधायै नम॥
ॐ स्वाहायै नमः॥ ॐ मातृभ्यो नमः ॥
ॐ लोकमातृभ्यो नमः॥ ॐ धृत्यै नमः ॥

ॐ पुष्ट्यै नमः ।। ॐ तुष्ट्यै नमः ।।
ॐ कुलदेवतायै नमः ।।

ॐ गौर्याद्याषोडष मातृका देव्येभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतं पुष्पं धूपदीप नैवेद्यं द्रव्यदक्षिणां च समर्पयामि।

प्रार्थना- ॐ ब्रह्माणी कमलेन्दु सौम्यवदनां माहेश्वरी लीलया।
कौमारी रिपुदर्प नाशनकरी चक्रायुधा वैष्णवी।।
वाराही घनघोर घुरघुरुमुखी चैन्द्रि च व्रजायुधा।
चामुण्डा गणनाथ रुद्र सहिता रक्षन्तु मां मातरः।।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं दधध्वं मातरो मम।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः।।

।। इति षोडश मातृका पूजनम्।।

।। अष्ट वसु पूजनम् ।।

वसोः पवित्रमिति मंत्रस्य प्रजापति ऋषिः सविता देवता जगती छन्दः वस्वावाहने पूजनै विनियोगः

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारं देवस्त्वा सावितापुनातु। वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामधुक्षः।।

ॐ ध्रुवाय नमः।।१।। ॐ धराय नमः।।२।।
ॐ सोमाय नमः।।३।। ॐ आपाय नमः।।४।।
ॐ अनिलाय नमः।।५।। ॐ अनलनाय नमः।।६।।
ॐ प्रत्यूषाय नमः।।७।। ॐ प्रभासाय नमः।।८।।
ध्रुवाद्यष्टवसवे नमः आवाहयामि स्थापयामि।।

अष्टवसुओं का नाम मात्र से आवाहन स्थापन कर गन्ध

अक्षत पुष्प धूप दीपक नैवेद्य दक्षिणा से पूजन कर देवे।

प्रार्थना- **दिव्यवस्त्रा दिव्यदेहा दिव्य माला विभूषिता।**
वसवोऽष्टौ महाभागाः वरदाः सन्तु मे सदा॥

॥ इति अष्ट वसु पूजनम् ॥

॥ नान्दी श्राद्धम्[1]॥

देवताओं तथा पितरों का ध्यान-

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमोनमः॥
श्राद्धकाले गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्।
मनसा च पितृन्ध्यात्वा नान्दी श्राद्धं समारभे॥

नान्दी श्राद्ध में विश्वेदेवा के लिए एककुशा, मातृपक्ष के लिए तीन कुशा, पिता पक्ष के लिए तीन कुशा, मातामही पक्ष के लिए तीन कुशा, मातामह पक्ष के लिए तीन कुशा अथवा दूर्वा पत्तों में रख मन में गया, गदाधर भगवान पितरों का ध्यान करते हुए संकल्प कहे-

ॐ तत्सदद्य० मासोत्तमेऽमुकमासे अमुकपक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे अमुक कर्मांगीभूतं ब्राह्मणयुग्म-भोजन पर्याप्तान्ननिष्क्रयीभूत- यथा-शक्ति-हिरण्येन नान्दीमुख-श्राद्धमहं करिष्ये॥

---

१. **रजो दोष जनना शौचादि संभावनाय नान्दीश्राद्धस्यपकृष्णा-नुष्ठानेदिनावधिः**
एक विंशतिहर्यज्ञे विवाहेदश वासराः ।
त्रिषट्चौलोपनयने नान्दिश्राद्धं विधियते॥
(दशदिनाद्यति क्रमे पुनर्नान्दी श्राद्ध मित्यर्थात् सिद्धम्) (कर्मठगुरौ)।

ॐ सत्यवसु संज्ञका विश्वेदेवा नान्दीमुखाः ॐ भूभूर्व स्वः पाद्यः स्वाहा नामयं च वृद्धि॥ ॐ अमुक गोत्राः मातृ पितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुखाः ॐ भूभूर्वः स्वः इदं वः पाद्यं स्वाहा नामयं च वृद्धि॥

ॐ अमुक गोत्राः पितृ पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूभूर्वः स्वः इदं वः पाद्यं स्वाहा नामयं च वृद्धि॥

ॐ अमुक गोत्राः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः पत्नीसहिताः नान्दीमुखाः॥ ॐ भूभुर्वः स्वः इदं वः पाद्यं स्वाहा नामयं च वृद्धि॥

उपरोक्त विश्वेदेवा, मातृपक्ष, पितृपक्ष, नाना, नानी पक्ष को आसन देवे पुनः कहें-

एष वो गन्धः, इमे अक्षताः, इमानि पुष्पाणि, अयं धूपः, अयं दीपः, इमे वाससीः, इदं यज्ञोपवीतं॥

इस प्रकार सब पितरों का पूजन कर नमस्कार करें-

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः॥

आमान्न संकल्प-

अद्यैत्यादि० सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवा नान्दीमुखाः ॐ भूभुर्वः स्वः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्यन्तं दास्यमानं मन्नं यथाशक्ति सोपस्करं स्वाहा नामयं च वृद्धिः युग्म भोजन आमान्नं नैवेद्यं तन्निष्क्रियं दक्षिणां च दातु समुत्सृजेत्॥

प्रार्थना-

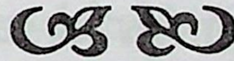
माता पितामहि चैव तथैव प्रपितामही।
पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः।।
मातामहस्तत्पिता च प्रमातामहकादयः।
एते भवन्तु सुप्रीता प्रयच्छन्तु च मंगलम्।।

ॐ विष्णवे नमः ॐ विष्णवे नमः ॐ विष्णवे नमः।।

विसर्जन-

ॐ वाजेवाजेऽवत वाजिनो धनेषु विप्राऽअमृताऽऋतज्ञा।
अस्यमध्वः पिबतं मादयद्धवं तृप्ता यात पथिभिर्द्देवयानैः।।
अनेन कर्मणाः नान्दीमुख देवताः प्रीयन्ताम् न मम।।

।। इति नान्दी श्राद्धम्।।



॥ नवग्रह पूजनम्॥

नवग्रहों में ग्रह अधिपति सूर्य का पूजन वर्तुलाकृति, अर्ध चन्द्राकृति सोम, त्रिकोण मंगल, बाणाकार बुध, चतुष्कोण बृहस्पति, पंचकोण शुक्रं, धनुराकार शनि, शूर्पाकार राहू, ध्वजाकार निर्माण कर केतु का पूजन करें। पूजन निम्न क्रम से करें-

सूर्य पूजन-

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्॥सूर्याय नमः॥

चन्द्र पूजन-

ॐ इमं देवाऽ असपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते जैष्ठ्याय मंहते ज्यानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुख्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽवी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा॥ चन्द्राय नमः॥

भौम पूजन-

ॐ अग्निमूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽ अयम। अपा ँ रेता ँ सिजिन्वति॥ भौमाय नमः॥

बुध पूजन-

उद्बुध्य स्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्तेऽध्युतरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ बुधाय नमः॥

गुरु पूजन-

ॐ बृहस्पते ऽअतियदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्क्रतु

मज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋतप्प्रजात् तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ गुरुवे नमः॥

शुक्र पूजन-

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा ब्व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु॥ शुक्राय नमः॥

शनि पूजन-

ॐ शं नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्र वन्तु नः॥ शनैश्चराय नमः॥

राहू पूजन-

ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदावृधः सखा। कयाशचिष्ठयाऽवृत्ता। राहवे नमः॥

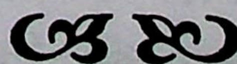
केतु पूजन-

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्य्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ केतवे नमः॥

ग्रहों के साथ अष्ट योगिनी का पूजन भी करें-

ॐ मंगलायै नमः। ॐ पिंगलायै नमः।
ॐ धान्यायै नमः। ॐ भ्राम्रिकायै नमः।
ॐ भद्रिकायै नमः। ॐ उल्कायै नमः।
ॐ सिद्धायै नमः। ॐ शंकटायै नमः।

नवग्रहों का पूजन गन्धाक्षत पुष्प, धूप, दीपक नैवेद्य दक्षिणा आदि से कर देवें॥



।। अधिदेवता स्थापन ।।

ॐ रुद्राय नमः। ॐ उमायै नमः।।
ॐ स्कन्दाय नमः। ॐ विष्णवे नमः।।
ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ इन्द्राय नमः।।
ॐ यमाय नमः। ॐ कालाय नमः।।
ॐ चित्रगुप्ताय नमः।।

अधिदेवताओं का पूजन गन्धाक्षत पुष्पादि से कर देंवे।

।। प्रत्यधिदेवता स्थापन ।।

ॐ अग्नये नमः। ॐ अद्भ्य नमः।।
ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ विष्णवे नमः।।
ॐ इन्द्राय नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः।।
ॐ प्रजापतये नमः। ॐ सर्पेभ्य नमः।।
ॐ ब्रह्मणेभ्य नमः।।

प्रत्यधिदेवताओं का पूजन गन्ध अक्षतादि से कर देवें।

।। पंचलोकपाल देवता स्थापन ।।

ॐ गणपतये नमः।। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ वायवे नमः।।
ॐ अन्तरिक्षाय नमः। ॐ अश्विभ्यां नमः।।

पंचलोकपाल देवताओं का पूजन गन्ध अक्षत पुष्पं धूप दीप नैवेद्य आदि से कर देंवे।

।। दशदिग्पाल देवता स्थापन।।

ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः।।
ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः।।

ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः।।

ॐ धनदाय नमः। ॐ ईशानाय नमः।।

ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अनन्ताय नमः।।

सूर्यादि नवग्रहों के साथ अधिदेवता, प्रत्याधिदेवता, पंचलोकपाल देवता, दश दिक्पाल, देवताओं का पूजन, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक नैवेद्य दक्षिणा से कर प्रार्थना करें-

प्रार्थना

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदाविं सन्मगलं मंगल।
सद्बुद्धिञ्च बुधौ गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनि।।
राहुर्वाहु बलंकरोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिम्।
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः।।

आयुश्च विद्या च तथा सुखंच धर्मार्थलाभौ बहुपुत्रतां च।
शत्रु क्षयं राजसु पूज्यता च तुष्टा ग्रहाः क्षेम करा भवन्तु।।
ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारि भानुः शशि भूमि सुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्र शनि राहु केतु सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु।।
यत् कृतं पूजनं देवः भक्ति श्रद्धा विवर्जितम्।

परिगृह्णातु तत्सर्वं सूर्याद्या ग्रहनायकाः।।
आदित्यादि ग्रहा सर्वे नाना वर्णे पृथग्विधा।
सुप्रसन्नाः प्रयच्छन्तु सौभाग्यं मम सर्वदाः।।
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्ति हीनं तवार्चनम्।
यत् पूजितं मया देवः क्षम्यतां ग्रह देवता।।

।। इति नवग्रह पूजनम् ।।



।।सर्वतोभद्रदेवतास्थापनम्।।

एक समचौरस वेदी पर सर्वतो भद्र का निर्माण कर कलश स्थापित कर ब्रह्मादि देवताओं का आवाहन करें-

१. **मध्ये कर्णिकायाम्-**

ॐ भूभुर्वः स्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि (आवाहयामि स्थापयामि सब देवताओं के नाम का उच्चारण करने के बाद कहता रहे)

२.उत्तरेवाप्याम्-ॐ भू० सोमाय नमः सोमं.........।

३.ईशन्यां खण्डेन्दौ-ॐ भू० ईशानाय नमः।

४.पूर्ववाप्याम्- ॐ भू० इन्द्राय नमः।

५.आग्नेयां खण्डेन्दौ-ॐ भू० अग्नये नमः।

६.दक्षिणेवाप्याम्- ॐ भू० यमाय नमः।

७.नैर्ऋत्यां खण्डेन्दौ- ॐ भू० निर्ऋतये नमः।

८.पश्चिमे वाप्याम्- ॐ भू० वरुणाय नमः।

९.वायव्यां खण्डेन्दौ- ॐ भू० वायवे नमः।

१०. वायु-सोमयोर्मध्ये- ॐ भू० अष्टवसुभ्यो नमः।

११. सोमेशानयोर्मध्ये- ॐ भू० एकादश रुद्रेभ्यो नमः।

१२. ईशानेन्द्रमध्ये- ॐ भू० द्वादशादित्येभ्यो नमः।

१३. पूर्वाग्नयोर्मध्ये- ॐ भू० अश्विभ्यां नमः।

१४. अग्नि यममध्ये- ॐ भू० विश्वेदेवेभ्यो नमः।

१५. यम-निर्ऋति मध्ये- ॐ भू० सप्त यक्षेभ्योनमः।

१६. निर्ऋति-पश्चिम मध्ये- ॐ भू० अष्टकुल नागेभ्योनमः।

१७. वरुण-वायु मध्ये-ॐ भू० गन्धर्वप्सरसे नमः।

१८. ब्रह्म-सोममध्ये- ॐ भू० स्कन्दाय नमः।
१९. स्कन्दोत्तरतः- ॐ भू० वृषभाय नमः।
२०. वृषवोत्तरे- ॐ भू० शूलाय नमः।
२१. तदुत्तरे- ॐ भू० महाकालाय नमः।
२२. ब्रह्मेशानमध्ये-ॐ भू० प्रजापतिभ्यो नमः।
२३. ब्रह्मेन्द्र मध्ये- ॐ भू० दुर्गायै नमः।
२४. तत्पूर्वे- ॐ भू० विष्णवे नमः।
२५. ब्रह्माग्निमध्ये- ॐ भू० स्वधायै नमः।
२६. ब्रह्म-यम मध्ये- ॐ भू० मृत्युरोगेभ्यो नमः।
२७. ब्रह्म-निर्ऋतिमध्ये- ॐ भू० गणपतये नमः।
२८. ब्रह्म-वरुण मध्ये- ॐ भू० अद्भ्यो नमः।
२९. ब्रह्मण वायु मूले- ॐ भू० मरुद्भ्यो नमः।
३०. ब्रह्मणपाद मूले- ॐ भू० पृथिव्यै नमः।
३१. तदुत्तरे- ॐ भू० गंगानदीभ्यो नमः।
३२. तदुत्तरे- ॐ भू० सप्त सागरेभ्यो नमः।
३३. कर्णिका परिधौ- ॐ भू० मेरवे नमः।
३४. ततः वाह्यपरिधौ सोमादि क्रमेण- ॐ भू० गदायै नमः।
३५. ईशान्याम्- ॐ भू० त्रिशूलायै नमः।
३६. पूर्वे- ॐ भू० वज्राय नमः।
३७. आग्नेयाम्- ॐ भू० शक्तये नमः।
३८. दक्षिणे- ॐ भू० दण्डाय नमः।
३९. नैर्ऋत्याम्- ॐ भू० खड्गाय नमः।
४०. पश्चिमे- ॐ भू० पाशाय नमः।
४१. वायव्याम्- ॐ भू० अंकुशाय नमः।

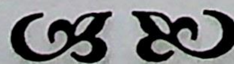
४२. तद्वाह्ये रक्तपरिधौ सोमादि क्रमेण-ॐ भू० गौतमाय नमः।
४३. ईशान्याम्- ॐ भू० भारद्वाजाय नमः।
४४. पूर्वे- ॐ भू० विश्वामित्राय नमः।
४५. आग्नेयाम्- ॐ भू० कश्यपाय नमः।
४६. दक्षिणे- ॐ भू० जमदग्नये नमः।
४७. नैर्ऋत्याम्- ॐ भू० वशिष्ठाय नमः।
४८. पश्चिमे- ॐ भू० अत्रये नमः।
४९. वायव्याम्- ॐ भू० अरुन्धत्यै नमः।
५०. तद्बाह्ये कृष्णपरिधौ-पूर्वे- ॐ भू० एन्द्र्यै नमः।
५१. आग्नेयाम्- ॐ भू० कौमार्यै नमः।
५२. दक्षिणे- ॐ भू० ब्राह्मयै नमः।
५३. नैर्ऋत्याम्- ॐ भू० वाराह्यै नमः।
५४. पश्चिमे- ॐ भू० चामुण्डायै नमः।
५५. वायव्ये- ॐ भू० वैष्णव्यै नमः।
५६. उत्तरे- ॐ भू० माहेश्वर्यै नमः।
५७. ईशान्याम्- ॐ भू० वैनायक्यै नमः।

सर्वतोभद्र देवताओं का पूजन गन्ध अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक, नैवेद्य, दक्षिणा से कर लेवे।

प्रार्थना-

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥

॥ इति सर्वतोभद्र देवता पूजनम्॥



॥ अष्ट सिद्धि पूजन ॥

ॐ अणिम्ने नमः॥१॥ ॐ महिम्ने नमः॥२॥ ॐ गरिम्ने नमः॥३॥ लघिम्ने नमः॥४॥ ॐ प्राप्त्यै नमः॥५॥ ॐ प्राकाम्यै नमः॥६॥ ॐ ईशितायै नमः॥७॥ ॐ वशितायै नमः॥८॥

अष्ट सिद्धियों का पूजन गन्ध अक्षतादि से कर लेवें।

॥ अष्ट लक्ष्मी पूजन॥

ॐ आद्यलक्ष्यै नमः॥१॥ ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः॥२॥ ॐ सौभाग्य लक्ष्म्यै नमः॥३॥ ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः॥४॥ ॐ कामलक्ष्म्यै नमः॥५॥ ॐ सत्य लक्ष्म्यै नमः॥६॥ ॐ योग लक्ष्म्यै नमः॥७॥ ॐ भोग लक्ष्म्यै नमः॥८॥

अष्ट सिद्धियों का पूजन गन्ध अक्षतादि से कर लेवें।

॥ श्री यंत्रस्थ देवतास्थापनम् ॥

मध्य में बिन्दु उसके बाहर त्रिकोण पुनः षट्कोण का निर्माण कर वृत्त बनावे उसके ऊपर आठ दल, पुनः वृत्त और उसके ऊपर चौबीस दल बनावे उसके बाहर चार द्वार का जो यंत्र बना है उसके ऊपर अक्षत डालते हुए पीठ पूजा करें-

बिन्दु मध्ये-

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे श्री महाकाली महालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिणी श्री त्रिगुणात्मिका दुर्गादेवतायै नमः। श्री महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती दुर्गादेवतामावाहयामि स्थापयामि।

विन्दोः परितो-गुरुचतुष्टयमावाहयेत्- गुरुवे नमः

आवाहयामि स्थापयामि। आ.स्था. सब नामों के बाद उच्चारण करते हुए अक्षत वेदी पर डालते जायें।

परात्पर गुरुवे नमः। परमेष्ठिगुरुवे नमः। गुरुपंक्तये नमः।

षडंगम्- ॐ ऐं हृदयाय नमः। ह्रीं शिर से नमः।

क्लीं शिखायै नमः। चामुण्डायै कवचाय नमः।

विच्चे नेत्रत्रयाय नमः। मूलेन अस्त्राय नमः।

त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन क्रमेण-

स्वरया सह विधात्रे नमः। श्रिया सह विष्णवे नमः। उमया सह शिवाय नमः।।

दक्षिणे-हुं सिंहाय नमः। वामे हुं महिषाय नमः।

षट्कोणे- ॐ ऐं नन्दजायै नमः। ॐ ह्रीं रक्तदन्तिकायै नमः। ॐ क्लीं शांकभर्यै नमः। ॐ दुं दुर्गायै नमः। ॐ हुं भीमाय नमः। ॐ ह्रीं भ्रामर्यै नमः।।

अष्टपत्रे-ॐ ऐं ब्राह्मयै नमः। ॐ ह्रीं माहेश्वर्यै नमः।। ॐ क्लीं कौमार्यै नमः। ह्री वैष्णव्यै नमः हुं वाराह्यै नमः। ॐ क्ष्यौ नारसिह्यै नमः। ॐ लं एन्द्रयै नमः। स्फ्रैं चामुण्डायै नमः।।

चतुर्विंशतिदले- ॐ विं विष्णुमायायै नमः।

ॐ चें चेतनायै नमः। ॐ बुं बुद्ध्यै नमः।

ॐ निं निद्रायै नमः। ॐ क्षुं क्षुधाय नमः।

ॐ छां छायायै नमः। ॐ शं शक्त्यै नमः।

ॐ तृं तृष्णायै नमः। ॐ क्षां क्षान्त्यै नमः।

ॐ जां जात्यै नमः। ॐ लं लज्जायै नमः।

ॐ शां शान्त्यै नमः। ॐ श्रं श्रद्धायै नमः।

ॐ कां कान्त्यै नमः। ॐ लं लक्ष्म्यै नमः।
ॐ धृं धृत्यै नमः। ॐ वृं वृत्यै नमः।
ॐ श्रुं श्रुत्यै नमः। ॐ स्मृं स्मृत्यै नमः।
ॐ दं दयायै नमः। ॐ तुं तुष्ट्यै नमः।
ॐ पुं पुष्ट्यै नमः। ॐ मां मातृभ्यो नमः।
ॐ भ्रां भ्रान्त्यै नमः।।

भूपुरे कोण चतुष्टये आग्नेयादि कोणे-

ॐ गं गणपतये नमः। ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः।
ॐ बं बटुकाय नमः। ॐ यां योगिन्यै नमः।

पूर्वादिदिक्षु-

ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ धनदाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अनन्ताय नमः।

तद्बहि :-

ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्त्ये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अङ्कुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलायै नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः।

तद्बहिः-

ॐ वज्रहस्तायै गजारुढायै कादम्बरी देव्यै नमः।
ॐ शक्तिहस्तायै अजवाहनायै उल्कादेव्यै नमः।
ॐ दण्ड हस्तायै महिषारुढायै करालीदेव्यै नमः।
ॐ खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षी देव्यै नमः।

ॐ पाश हस्तायै मकरवाहनायै श्वेताक्षी देव्यै नमः।
ॐ अंकुश हस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षी देव्यै नमः।
ॐ गदा हस्तायै सिंहारुढायै यक्षिणी देव्यै नमः।
ॐ शूल हस्तायै वृषभ वाहनायै कालीदेव्यै नमः।
ॐ पद्म हस्तायै हंस वाहनायै सुरज्येष्ठा देव्यै नमः।
ॐ चक्र हस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञी देव्यै नमः।।

नाम मात्र का उच्चारण कर यंत्र में यंत्रस्थ देवताओं का पूजन गन्ध अक्षत पुष्प, धूप, दीपक, नैवेद्य दक्षिण से कर देवें-

प्रार्थना-

सर्वमंगल मंगल्यै! शिवे! सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके! गौरि! नारायणि! नमोऽस्तु ते।।

।। इति यंत्र पूजनम् ।।

" भैरव पूजन"

माँ दुर्गा का अनुचर होने के कारण भैरव का पूजन नवरात्रों के अवसर पर अत्यन्त आवश्यक है। भैरव का पूजन करने से साधक कष्ट रहित हो जाता है। भूत-प्रेत की बाधायें दूर हो जाती हैं। साधक ऐश्वर्य प्राप्ति कर दैहिक, दैविक और भौतिक दुःखों से मुक्त हो जाता है।

"भैरव ध्यान"

१. तामस ध्यान-

ध्यायेन्नीलाद्रि कांतिं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशम्।
दिग्वस्त्रं पिंगकेश डमरू हस्त सृणिं खड्गपाशाभयानि।।
नागं घण्टां कपालं करसरसिरूहैर्विभ्रतं भीमदष्ट्रम्।

दिव्याकल्पं त्रिनेत्रंमणिमयविलसत्किंकिणीनूपुराढ्यम्।

२. राजस ध्यान-

उद्यद्भाष्कर सन्निभंत्रिनयनं रक्तांगरागस्रजम्।
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः॥
नीलग्रीवमुदार भूषणयुतं शीतांश खण्डोज्ज्वलम्।
बन्धू कारुण वाससं भयहरं देवं सदाभावये॥

३. सात्विक ध्यान-

बन्दे बालं स्फटिक सदृशं कुण्डलोद्भासिताङ्गम्।
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किंकिणीनूपुराढ्यै॥
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रम्।
हस्ताग्राभ्यां बटुक सदृशं शूलदण्डोपधानम्॥

भैरव का पूजन गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य से कर दक्षिणा चढ़ा देवें।

सर्व मनोकामना पूर्ण करने वाला भैरव मंत्र-

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धाहरण कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं।

प्रार्थना-

कर कलित कपालः कुंडली दण्डपाणि।
स्तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती॥
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतु।
जयति बटुकनाथ सिद्धिदः साधकानाम्॥

॥ इति भैरव पूजनम्॥



खड्गपूजन मंत्र

खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णोगर्दभस्तर-क्षुस्तेरक्षसामिंद्राय सूकरः सि ँ हो मारुतः कृकलासः पिप्पकाशकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः॥

खड्ग का पूजन गन्ध अक्षत पुष्प धूप दीप आदि से कर खड्ग में कलावा बांध कर दुर्गा की मूर्ति के पास स्थापित कर देवें।

वाहन सिंह पूजन-

ॐ व्रजनख द्रष्ट्रायुधाय सिंहाय हुँ फट् नमः॥

दुर्गा के वाहन सिंह का पूजन गन्ध अक्षत पुष्प धूप दीपक आदि से कर देवें।

॥दुर्गा प्रतिमा प्राण प्रतिष्ठा॥

अद्येत्यादि० शुभपुण्य तिथौ ममात्मनः श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं मम सकल कुटुम्बानां क्षेम आयु आरोग्य एश्वर्याभिवृद्ध्यर्थ सकलकामना सिद्ध्यर्थ दुर्गामूर्तिनां प्राण प्रतिष्ठां करिष्ये॥

आचार्य दुर्गा की प्रतिमा पर घी लगाकर जल की धारा लगवाये स्वयं अग्न्युत्तारण के मंत्र पढ़े-

ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परिव्ययामसि। पावको अस्मभ्य ँ शिवोभव॥१॥ ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययासि। पावको अस्मभ्य ँ शिवोभव॥२॥ ॐ उपज्जमनुप वेतसेऽवतर नदीष्वा। अग्नेपित्तमपामम्मि मण्डूकि ताभिरागहि सेम नो यज्ञं पावकव्वर्णं ँ शिवं कृधि॥३॥

ॐ अपामिदं न्ययन ॐ समुद्रस्य निवेशनम्। अन्यास्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य ॐ शिवोभव॥४॥ ॐ अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान् वक्षि यक्षिच॥५॥ स नः पावक दीदिवोऽअग्नेदेवाँऽइहावह। उपयज्ञ ॐहविश्च नः य ॥६॥ पावकयायश्चितयत्न्या कृपा क्षामन् रुरु चऽउषसो न भानुना। तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रणऽआ यो घृणे न त तृषाणो ऽ अजरः॥७॥ ॐ नमस्ते हरसे शोचिते नमस्ते ऽअस्त्वर्चिषे। अन्यांस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्य ॐ शिवोभव॥८॥ ॐ नृषदे वेडप्सुषदे वेड् वर्हिषदे वेड् वनसदे वेट् स्वर्विदे वेट्॥९॥ ये देवा देवाना यज्ञिया यज्ञियाना ॐ संवत्सरीणमुप भागमासते। आहुता दो हविषो यज्ञेऽ अस्मिन्त्स्वयं पिवन्तु मधुनो घृतस्य॥१०॥ ये देवा देवे स्वधि देवत्वमायन्ये ब्रह्मणः पुरऽ एतारो ऽ अस्य। येभ्यो नऽ ऋते पवते धाम किञ्चन ते दिवो न पृथिव्या ऽ अधि स्नुषु॥११॥ ॐ प्राणदा ऽअपानदा व्यानदा व्वर्चोदा वरिवोदाः। अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्य ॐ शिवोभव॥१२॥

इस प्रकार अग्न्युत्तारण कर प्राण प्रतिष्ठा का विनियोग करें-

विनियोग-

ॐ अस्य श्री प्राण प्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्म विष्णु रुद्राः ऋषयः ऋग्यजुः सामाथर्वाणि छन्दासि क्रिया मय वयुः प्राणाख्या देवता आं बीजं ह्रीं शक्ति क्रौं कीलकम् अस्यां नूतन मूर्तौ प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः॥

स्वर्ण निर्मित प्रतिमा को बाये हाथ में रख दाहिने हाथ की हथेली से ढककर बीजमंत्रों को पढ़कर प्राणप्रतिष्ठा करें।

ॐ आं ह्रीं क्रौ यं रं लं वं शं षं सं क्षं हंसः।।
अस्य मूर्तीनां प्राणाइह तिष्ठन्तु।
ॐ आं ह्री क्रौ यं रं लं वं शं षं सं क्षं हंसः।।
अस्य मूर्तीना सर्वेन्द्रियाणि तिष्ठन्तु।
ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं क्षं हंसः।।
अस्य मूर्तीनां वाङ्मनस्त्वक्चक्षु श्रोत्रजिह्वा घ्राण पाणिपाद पायुपस्थानि इहागत्य चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।।
अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।१।।
आगच्छ वरदे देवि! दैत्यदर्प निषूदिनि।
पूजा गृहाण सुमुखी! नमस्ते शंकर प्रिये।।२।।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तन्नो त्वरिष्ठं यज्ञ ॐ समिमन्द धातु।। विश्वेदेवा स इह मादयन्ता ३मो प्रतिष्ठ।। एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रे तेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठतं भवति।।

प्रतिष्ठा कर १६ मंत्र श्री सूक्त से स्नान करवा आचार्य मूर्ति को गायत्री मंत्र सुनावे।

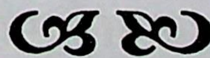
प्रार्थना-

एह्येहि दुर्गे! दुरितौघ नाशिनि ।
प्रचण्ड-दैत्योघ-विनाशकारिणि ।
उमे महेशार्द्ध-शरीर धारिणि ।
स्थिरा भव त्वं मम यज्ञ कर्मणि ।।

।। इति दुर्गा प्राण प्रतिष्ठा सम्पूर्णम्।।

॥ महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती ध्यान ॥

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः।
शंख संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्॥
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां।
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥१॥
अक्षस्त्रकपरशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुःष्कुण्डिकां।
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्॥
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां।
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥२॥
घण्टाशूलहलानि शंखमुसले चक्रं धनुः सायकं।
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्॥
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनु भजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥३॥
महाकाली महालक्ष्मीर्महाशक्ति सरस्वती।
त्रिशक्तिर्नाम विख्याता त्रिर्देवीभ्यो नमोनमः ॥४॥



॥ दुर्गा पूजन ॥

अग्न्युतारण की हुई प्रतिमा को अथवा दुर्गा मूर्ति को वेदी के ऊपर रख[1] हाथ में रक्त पुष्प लेकर भगवती दुर्गा का ध्यान करे-

ध्यानम्-

ॐ सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः।
शंखचक्रधनुः शरांश्चदधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता॥
आमुक्तांगद हारकंकणरणत्काञ्चीरणन्नू पुरा।
दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला॥१॥
या माया मधुकैटभ प्रमथिनी या माहिषोन्मूलिनी।
या धूम्रेक्षण चण्डमुण्डमथिनी या रक्तबीजासिनी॥
शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलिनी या सिद्ध लक्ष्मीपरा।
सा दुर्गा नवकोटि मूर्ति सहिता मां पातु विश्वेश्वरी॥२॥

रक्त पुष्प देवी पर चढ़ा देवे।

आवाहन-

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥
संसार जननीं सत्यां कामदां करुणाकराम्।
अनन्त शक्ति सम्पन्ना दुर्गामावाहयाम्यहम्॥

---

१. देवी प्रतिमा स्थापन दिशा विचार-

याम्यास्या सुभदा दुर्गा पूर्वास्या जय वर्द्धिनी।
पश्चिमाभिमुखी नित्यं न स्थाप्या सौम्यदिग्मुखिम्।
श्री सूक्तेन सुभक्त्याऽथदेवि संपूजयिष्यति।
सप्तजन्मान्तरण्येव न भविष्यतिसोऽधनः (नागरखण्डे)

दुर्गा देवी पर अक्षत डाल आवाहन करें।

आसन-

ॐ तामं ऽ आवह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥
रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यंकरं शुभम् ।
आसनं च मयादत्तं गृहाणं परमेश्वरी ॥

माँ दुर्गा को सुवर्ण का अथवा पुष्प आसन अर्पण कर दें।

पाद्य-

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद-प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥
उष्णोदकं निर्मलं च सर्व सौगन्ध्य संयुतम्।
पाद प्रक्षालनार्थाय गृहाण जगदम्बिका॥

शुद्ध जल को पैर धोने के लिए अर्पण करें।

अर्घ्य-

कां सोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामाद्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥
स्वर्ण पात्र स्थितं तोयं गन्धपुष्प फलान्वितम्।
सहिरण्य ददाम्यर्घ्यं गृहाण परमेश्वरी॥

अर्घ्य में जल भर गन्ध पुष्प फल दक्षिणा सहित अर्पण करें।

आचमन-

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं
श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये
अलक्ष्मिर्मे नश्यतां त्वां वृणो मि॥

सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्।
स्नानार्थ मया दत्तं गृहाण परमेश्वरी॥

आचमन जल सुंगन्धियुक्त कर अर्पण कर देवें।

पयस्नान-

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥
कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं तव हेतुश्च पयस्नानं मयार्पितम्॥

दुर्गा देवी को स्नान के लिए पय चढ़ाकर आचमन जल अर्पण कर देवें।

दधि स्नान-

ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्यव्वाजिनः।
सुरिभ नो मुखा करत्प्रणऽआयूꣳषितारिषत्॥
पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देवि! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवती दुर्गा देवी को दही से स्नान करवाकर पुनः जल से स्नान करवायें।

घृत स्नान-

ॐ घृतं घृत पावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्यहविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश ऽआदिशोविदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा॥

नवनीत समुत्पन्नं सर्वसन्तोष कारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।

भगवती दुर्गा देवी को घी से स्नान करवाकर पुनः जल

से स्नान करवायें।

मधु स्नान-

ॐ मधु व्वाता ऽ ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्तोषधीः।। मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधु द्यौ रस्तु नः पिता।। मधुम्मान्नोव्वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्य्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।

वृक्ष पुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

दुर्गा देवी का मधु से स्नान कर पुनः जल से स्नान करवायें।

शर्करा स्नान-

ॐ अपा ँ रसमुद्वयस ँ सूर्य्ये सन्त ँ समाहितम्। अपा ँ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युतममुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनि रिन्द्रायत्वा जुष्टतमम्।।

इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका ।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

दुर्गा देवी को शर्करा से स्नान करवा पुनः जल से स्नान करवायें।

पंचामृत स्नान-

आदित्यवर्णेतपसोऽधिजातोवनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ विल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च वाह्य अलक्ष्मीः।।

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत् सरित्।

पयोदधि घृतं चैव मधु च शर्करा युतम्।
पंचामृतं मयाऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दुर्गा देवी को पंचामृत से स्नान करवा पुनः जल से स्नान करवायें।

गन्धोदक स्नान-

गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥
मलयाचल सम्भूतं चन्दनाऽगरुसम्भवम्।
गन्धोदक मया देवि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दुर्गा देवी को गन्ध, जल से स्नान करवा पुनः जल से स्नान करवायें।

उबटन-

ॐ अ ॐ शुना ते अ ॐ शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽ अच्युतः॥
नाना सुगन्धि द्रव्यं च चन्दनं रजनी युतम्।
उद्वर्तनं मया दतं स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम्॥

भगवती दुर्गा को उबटन करवा पुनः जल से स्नान करवाये॥

शुद्ध स्नान-

ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाः। श्येतः श्येताक्षोऽरुणते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽअवलिप्ता रौद्द्रा नभो रूपाः पार्जन्याः॥

कावेरी नर्मदा वेणी चन्द्रभागा सरस्वती।
गंगा च यमुना ऽ सां वाः स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दुर्गा देवी को तीर्थो के जल से शुद्ध स्नान करवायें।

वस्त्र-[१]

उपैतु मां देव सखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिंददातु मे।।
सर्वभूषादिके सौम्ये लोकलज्जा निवारिणे।
मयोपपादिते तुभ्यं गृहाण परमेश्वरी।।

दुर्गा देवी को वस्त्र अर्पण कर एक आचमन जल छोड़ दें।

कज्जल-

चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्ये सुभगेशान्तिकारिके।
कर्पूरज्योतिरुत्पन्ना गृहाण परमेश्वरी।।

दुर्गा देवी की आंखों में कज्जल लगायें।

सुगन्धि द्रव्य-

चन्दनागरु कपूर्र कुंकुमंरोचनं तथा ।
कस्तूर्यादि सुगन्ध्या च सर्वांगेषु विलेपनम्।।

दुर्गा देवी का इत्र आदि सुगन्धि द्रव्यों से विलेपन कर देवें।

अबीर गुलाल-

अबीर गुलालं परिद्रव्यै निर्मितं चूर्णउत्तमम्।
अबीर नामक चूर्णं गन्धचारूपगृह्यताम्।।

दुर्गा देवी को अबीर गुलाल चूर्ण चढ़ा देवें।

---

१. देवताओं के वस्त्र-

पीतं विष्णौ सितं शम्भो रक्तांविघ्नार्कशक्तिषु।
सच्छिद्रंमलिनं जीर्णं त्यजेतैलादि दूषितम्।।

आभूषण–

स्वभाव सुन्दरांगायै नानादेवाश्रये शुभा।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यस्तव अर्च्चयै।।

दुर्गा देवी को नाना प्रकार के आभूषण अर्पण कर देंवे।

हार कंकण–

हार कंकण केयूर मेखला कुण्डलादिभि।
रत्नाढ्यं कुण्डलोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम्।।

दुर्गा देवी को हार कंकण आदि अर्पण कर देवें।।

गन्ध–

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।
श्रीखण्ड चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं महादेवी चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

दुर्गादेवी को गन्ध लगावें।

अक्षत–

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रियाऽअधूषत ।
अस्तोषत स्वभानवो व्विप्रा न विष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।।
अक्षतान् निर्मलान् शुद्धान् मुक्तामणि समन्वितान्।
गृहाणेन महादेवी देहि मे निर्मलां मतिम्।।

दुर्गा देवी को अक्षत लगा देवे।

पुष्प–

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्री श्रयतां यशः।।

मन्दार-पारिजातादि- पाटली केतकानि च।
जाति-चम्पक-पुष्पाणि गृहाण परमेश्वरी।
(दुर्गा देवी को नाना प्रकार के पुष्प अर्पण करें)

पुष्प माला-

कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भ्रम कर्दम।
श्रियंवासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।
पद्म शंखज-पुष्पादि शतपत्रैर्विरर्चितम्।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाणत्वं सुरेश्वरि।।

दुर्गा देवी को पुष्पमाला अर्पण कर देवें।

धूप-

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वसमे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।
दशांग-गुग्गुलं धूपं चन्दनाऽगरु संयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या गृहाण परमेश्वरी।।

माँ दुर्गा को धूप दिखायें।

दीपक-

आर्द्रां पुष्पकरिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्यमयिं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।
साज्यं वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेशि त्रैलोक्य तिमिरापह।।

दुर्गा देवी को दीपक दिखाये।।

नैवेद्य-

आर्द्रां यः करिणीं यष्टीं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।

अन्नं चतुर्विधं स्वादु-रसैः षड्भि समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ति मे ह्यचलां कुरु॥

दुर्गा देवी को नैवेद्य अर्पण कर एक आचमन जल छोड़ देवें।

दक्षिणा-

हिरण्य गर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विद्येम॥

पूजाफल समृद्ध्यर्थ तवाग्रे स्वर्णमीश्वरी।
स्थापितं तेन मे प्रीत्या पूर्णान् कुरु मनोरथान्॥

ताम्बूल-

ताम्य आवह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोदास्याऽश्वान् विन्देयपुरुषानहम्॥
पूगीफल महाद्दिव्यं नागवल्लि-दलैर्युतम्।
एलादि चूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ऋतुफल-

ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पाणिः।
बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व ॐ हसः॥
फलेन फलितं देवि त्रैलोक्यं स चराचरम्॥
तस्मात् फल प्रदानेन पूर्णासन्तु मनोरथाः॥

मां दुर्गा को फल चढ़ाये।

क्षत्र-

ॐ ध्रुवाऽसि ध्रुवोऽयं यजमानोऽस्मिन्नाय्यतने प्रजया पशुभिभूर्यात । घृतेन द्यावा पृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्य छाया।

दुर्गा को छत्र डुलाये।

चामर-

अहाव्यग्ने हविरास्ये ते स्रुचीव घृतं चम्बीव सोमः।
वाजसनि ॐ रयिमस्मे सुवीरं प्रशस्तं धेहि यशसं बृहन्तम्॥

चामर ढुलायें।

दर्पण-

ॐ रजता हरिणीः सीसा युजो युजन्ते कर्मभिः।
अश्वस्य वाजिनस्त्वचि सिमाः शम्यन्तु शम्यन्तीः॥

दर्पणं निर्मलं दिव्यं परिविम्बेसिविग्रहे।
कुरु दृष्टि महाभागं आदर्श दर्शयाम्यहम्॥

दुर्गा देवी को दर्पण दिखायें।

अंग पूजनः-

ॐ दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि। ॐ महाकाल्यै नमः गुल्फौ पूजयामि। ॐ मङ्गलायै नमः जानुद्वयं पूजयामि। ॐ कात्यायन्यै नमः उरुद्वयं पूजयामि। ॐ भद्रकाल्यै नमः कटिं पूजयामि। ॐ कमल वासिन्यै नमः नाभिं पूजयामि। ॐ शिवायै नमः उदरं पूजयामि। ॐ क्षमायै नमः हृदयं पूजयामि। ॐ कौमार्ये नमः स्तनौ पूजयामि। ॐ उमायै नमः हस्तौ पूजयामि। ॐ महागौर्ये नमः दक्षिण वाहुं पूजयामि। ॐ वैष्णव्यै नमः वामवाहु पूजयामि। ॐ रमायै नमः स्कन्धौ पूजयामि। ॐ स्कन्दमात्रे नमः कण्ठं पूजयामि।

---

1. वर्जनीय वाद्य-**शिवांगारे झल्लकं च सूर्यागारे च शंखकम्।**
दुर्गागारे वंशीवाद्यं माधुरिच न वादयेत्॥
(झल्लकं कांस्य निर्मितं करताल) (योगिनी तंत्रे)
2. आरती दर्शन फल- **धूपं चारार्तिकं पश्येत्कराभ्यां च प्रवदन्ते।**
कुलकोटि समुद्धृत्य यति देव्याः परम्पदम्॥

ॐ महिषासुर मर्दिन्यै नमः नेत्रे पूजयामि। ॐ सिंह वाहिन्यै नमः मुखं पूजयामि। ॐ माहेश्वर्ये नमः शिरः पूजयामि कात्यायन्यैनमः सर्वाङ्गं पूजयामि॥

उपरोक्त प्रत्येक नाम से गन्धाक्षत पुष्प धूपादि अर्पण कर देवें।

कर्पूर आरती–घी के दीपक अथवा कर्पूर जलाकर घण्टा आदि बजाते हुए दुर्गा देवी के चरणों में चार बार, नाभि देश में दो बार मुख पर एक बार और समस्त अंगों में सात बार आरती घुमायें।

मंत्र :-

ॐ ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ। अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्॥१॥

ॐ आ रात्रि पार्थिव ꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः। दिवः सदा ꣳसि बृहति वितिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः॥२॥ ॐ इद ꣳ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर ꣳ सर्वगण ꣳ स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्य भयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त॥३॥

चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्नि स्तथैव च।
त्वमेव सर्वज्योतीषिं आर्तिक्य प्रतिगृह्यताम्॥

प्रार्थना–

मंत्रहीनं क्रियाहीनं यत्कृतं चण्डिकास्तवम्।
सर्वे सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे॥

मंत्रपुष्पाञ्जलि-

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्रपूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः।।

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुवेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।।

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषऽआन्तादापरार्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया-ऽएकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामाप्रेर्विश्वेदेवा सभासद इति।।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमति। सम्पतत्रैद्यावा भूमि जनयन् देव एकः।। ॐ कात्यायनाय विद्महे कन्यकुमारि धीमहि तन्मो दुर्गेः प्रचोदयात्।।

ॐ देव्यै ब्रह्माण्यै च विद्महे। महाशक्त्यै च धीमहि। तन्नोदेवी प्रचोदयात्।।

सेवन्तिका-बकुल-चम्पक-पाटलाब्जैः
पुन्नाग-जाति-करवीर-रसाल-पुष्पैः।
विल्व-प्रवाल-तुलसी दल मञ्जरीभिः
त्वां पूजयामि जगदीश्वरि मे प्रसीद।।

---

१. परिक्रमा देवताओं की कितनी हो-
एकाचण्डयां रवौसप्त तिस्त्रोदद्याद्विनायके।
चतस्त्रः केशवेदेया शिवस्यार्द्ध प्रदक्षिणा।। (आ०सु०)

नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथाकालो भवानि च।
पुष्पाञ्जलिं मयादत्तं गृहाण परमेश्वरी॥

मां दुर्गा देवी को पुष्पाञ्जलि देकर परिक्रमा [1] कर लेवें-

प्रदक्षिणा -

ॐ सप्तास्यासन्नपरिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअबध्नपुरुषं पशुम्॥

॥ इति दुर्गा पूजनम् ॥

॥ कालरात्रि पूजन॥

कालरात्रि पूजन के लिए यंत्र का निर्माण करें, पहले बिन्दु बनावे, बिन्दु के बाहर षट्कोण का निर्माण करें, षटकोण के बाहर वृत्त का निर्माण कर अष्ट दल बनावें पुनः वृत्त बनाकर सोलह दल बना पुनः वृत्त का निर्माण करें। बाहर यन्त्रोक्त रेखा का निर्माण करें।

कालरात्रि ध्यान-

उद्यन्मार्तण्डकान्तिविगलितकवरींकृष्णवस्त्रावृतांगीम्।
दण्डंलिंगकराब्जैर्वरमथभुवनं संदधानां त्रिनेत्राम्॥
नानाकल्पौधमासांस्मितमुखकमलांसेवितांदेवसंघै।
र्मायांराज्ञीं मनोभूशरविकलतनूमाश्रयेकालरात्रिम्॥

कालरात्रि का पूजन रात्रिसूक्त से कर प्रार्थना करें।

जयन्ति मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते॥
जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणी।
जय सर्व गते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते॥

॥ नवकन्या पूजनम्॥[१]

शप्तशती पाठ में कन्या पूजन का विधान है यजमान उन कन्याओं का पूजन करे जो दो वर्ष से लेकर दश वर्ष की आयु की हो। सम्पूर्ण मनोरथ सिद्धि के लिए ब्राह्मण कन्या का, यश प्राप्ति के लिए क्षत्रिय कन्या का, सन्तान प्राप्ति के लिए शूद्र की कन्या का पूजन विधान बतलाया गया है। भगवान शंकर प्रोक्त मंत्रों से नवकन्या का पूजन करना चाहिए कन्या पूजन कर बटुक पूजन करें-

कन्याओं का आवाहन-

मंत्राक्षरमयीं लक्ष्मी मातृणां रूपधारिणीम्।
नव दुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहम्॥

आवाहन कर निम्नलिखित एक-एक मंत्र बोलकर एक-एक कन्या का गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, भक्ष्य, भोज्य, वस्त्र, अलंकार आदि से पूजन करें-

१. कुमारी पूजन मंत्र-

जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्ति स्वरूपिणी।
पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते॥

२. त्रिमूर्ति पूजन मंत्र-

त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्ग ज्ञानरूपिणीम्।
त्रैलोक्य वन्दितां देवीं त्रिमूर्ति पूजयाम्यहम्॥

३. कल्याणी पूजन मंत्र-

कालात्मिकां कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्।
कल्याण जननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम्॥

---

१. **कन्या पूजन फल-**
न तथा तुष्यते शक्रः होमदान जपैन तु।
कुमारी भोजने नात्र यथादेवी प्रसीदती॥ **(देवी पुराण)**

४. रोहिणी पूजन मंत्र-

अणिमादि गुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकाम्।
अनन्तशक्तिकां लक्ष्मी रोहिणीं पूजयाम्यहम्॥

५. कालिका पूजन मंत्र-

कामाचारां शुभां कान्तां कालचक्रस्वरूपिणीम्।[१]
कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम्॥

६. चण्डिका पूजन मंत्र-

चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्डप्रभञ्जिनीम्।
पूजयामि सदा देवीं चण्डिकां चण्डविक्रमाम्॥

७. शाम्भवी पूजन मंत्र-

सदानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम् ।
सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मी शाम्भवीं पूजयाम्यहम्॥

८. दुर्गा पूजन मंत्र-

दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःख विनाशिनिम्।
पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम्॥

९. सुभद्रा पूजन मंत्र-

सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम्।
सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रा पूजयाम्यहम् ॥

॥ इति नवकन्या पूजनम्॥

---

१. वर्णभेद से कन्या पूजन फल-
गौरी सर्वेष्ट संसिद्ध्यै पीताङ्गी जय कीर्तये।
लाभार्थेऽरुण वर्णाङ्गीमसिता मारणादिष्विति॥
जाति भेद से कन्या पूजन-
ब्रह्मणीं सर्वे कार्येषु जयार्थे नृपवंशजाम्।
लाभार्थे वैश्य वंशोत्था सुतार्थे शुद्रवंशजाम्॥ (कैलावली तंत्रे)

२. वर्ज्य कन्या-
हीनाधिकांगी कुष्टादि विकारां कुकुलां तथा।
ग्रन्थिस्फुटितं सर्वाङ्गी रक्तपूय वर्णाङ्किता॥
जात्यन्धां केकरा काणां कुरूपां तनुरोमशाम्।
संत्यजेद्रोगिणीं कन्यां दासीगर्भ समुद्भवाम्। -कौलावली तंत्रे

॥ वटुक पूजन ॥

कर कलित-कपालः कुण्डली-दण्डपाणि-
स्तरुण-तिमिरनील-व्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमय-सपर्याद् विघ्नविच्छेदहेतु-
र्जयति बटुकनाथ सिद्धिदः साधकानाम्॥

॥ इति बटुक पूजनम् ॥

॥ पुस्तक पूजन ॥

यजमान सप्तशती पुस्तक का पूजन निम्न मंत्रों से करें-

नमो दैव्ये महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नीयताः प्रणताः स्म ताम्॥

पुस्तक का पूजन गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक, नैवेद्य से कर दक्षिणा चढ़ा देवें-

सरस्वती (पुस्तक) मंत्र-

ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञंवष्टु धियावसुः॥

पूजन मंत्र-

श्री सप्तशती स्वरूपिण्यै ह्रीं चण्डिकायै नमः॥

पुस्तक का पूजन गन्ध अक्षत पुष्प आदि से कर पुष्प लेकर सरस्वती को प्रणाम करें-

याकुन्देन्दु तुषारहार धवला या शुभ्रवस्त्रावृता
यावीणा वरदण्डमण्डितकरा या श्वेत पद्मासना।

याब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभिर्देवैसदावन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा॥
शुक्लां ब्रह्म विचार सारपरमामाद्यां जगत् व्यापिनीं
वीणा-पुस्तक धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्तेस्फाटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥

॥ इति सरस्वती पूजन ॥



दुर्गा सप्तशती

॥ अथ सप्तश्लोकी दुर्गा ॥

शिव उवाच-

देवि त्वं भक्तसुलभे सर्वकार्यविधायिनी।
कलौ हि कार्यसिद्ध्यर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः॥

देव्युवाच-

शृणु देव प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम्।
मया तवैव स्नेहेनाप्यम्बास्तुतिः प्रकाश्यते॥

ॐ अस्य श्री दुर्गासप्तश्लोकीस्तोत्रमन्त्रस्य नारायण ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थं सप्तश्लोकीदुर्गापाठे विनियोगः॥

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवति हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति॥१॥

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणी का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥२॥

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥३॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥४॥

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥५॥

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति॥६॥

सर्वबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्।।७।।
इति श्रीसप्तश्लोकी दुर्गा सम्पूर्ण।।
।। श्री दुर्गायै नमः ।।

श्री दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

ईश्वर उवाच

शतनाम प्रवक्ष्यामि श्रृणुष्व कमलानने।
यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती।।१।।
ॐ सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी।।२।।
पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः।
मनो बुद्धिरहंकारा चित्तरूपा चिता चितिः।।३।।
सर्वमन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्दस्वरूपिणी।
अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याभव्या सदागतिः।।४।।
शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा।
सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी।।५।।
अपर्णानेकवर्णा च पाटला पाटलावती।
पट्टाम्बरपरीधाना कमलमञ्जीररञ्जिनी।।६।।
अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी।
वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता।।७।।
ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा।
चामुण्डा चैव बाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः।।८।।
विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा।
बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना।।९।।
निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी।
मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी।।१०।।
सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी।

सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा॥११॥
अनेकशस्त्रहस्ता चअनेकास्त्रस्य धारिणी।
कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यतिः॥१२॥
अप्रौढा चैव प्रोढा च वृद्धमाता बलप्रदा।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला॥१३॥
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी॥१४॥
शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी॥१५॥
य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम्।
नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वती॥१६॥
धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च।
चतुर्वर्ग तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम्॥१७॥
कुमारी पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम्।
पूजयेत् परया भक्तया पठेन्नामशताष्टकम्॥१८॥
तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि सर्वैः सुरवरैरपि।
राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवामुयात्॥१९॥
गोरोचनालक्तककुङ्कमेन, सिन्दूरकर्पूरमधुत्रयेण।
विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो, भवेत् सदा धारयते पुरारीः॥२०॥
भौमावास्यानिशामग्रे चन्द्रे शतभिषां गते।
विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत् संपदां पदम्॥ २१॥
इति श्री विश्वसारतन्त्रे दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्र सम्पूर्णम्।

॥ सप्तशती पाठ संकल्प ॥

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ नमः परमात्मने श्रीपुराण-पुरुषोत्तमस्य अद्य श्री ब्रह्मणो ह्नि द्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्त्तान्तर्गत

अमुकेदशे वर्तमाने अमुकनाम संवत्सरे अमुकायने महामांगल्यप्रदे मासोत्तमे..................मासे ....पक्षे..............तिथौ.... .... वासरे...............गोत्रोत्पन्नः...............शर्माऽहं मम सर्वाभिष्टसिद्ध्यर्थं आयुरारोग्य यैश्वर्यादिवि वृद्ध्यर्थं हर्ष विजयकामना सिद्ध्यर्थं श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थं सर्वापत्तिनिवारणार्थं कवचार्गलाकीलकादि सहितं मार्कण्डेयपुराणोक्तं मार्कण्डेय उवाचेति पूर्वकं सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनु इत्यारम्भ सावर्णि भवितामनुरित्यन्तं दुर्गासप्तशती पाठं तदन्ते रहस्यत्रय पठनञ्च करिष्ये।।

।। शापोद्धारमंत्र ।।

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै शापनाशनुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा।। इस प्रकार शापोद्धार मंत्र का आदि और अन्त में सात-सात बार जप करे।

।। उत्कीलन मंत्र ।।

ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशति चण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा।। इस मंत्र का जप प्रारंभ और अन्त में इक्कीस-इक्कीस बार करना चाहिए।

।। उत्कीलन मंत्र ।।

ॐ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐ ऐं मृतसजीवनि विद्ये मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा।। इस मंत्र का जप पाठ के प्रारंभ और अन्त में सात-सात बार करें।

।। शाप विमोचन मंत्र ।।

ॐ श्रीं श्रीं क्लीं हूँ ॐ ऐं **क्षोभय मोहय उत्कीलय उत्कीलय उत्कीलय ठं ठं।।** एक सौ आठ बार इस मंत्र का केवल पाठ के प्रारंभ में ही जप करें। **(मरीचकला)**

।।ब्रह्म वशिष्ठ विश्वामित्रशाप विमोचन।।

विनियोग

ॐ अस्य श्रीचण्डिकाया ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापविमोचनमन्त्रस्य वशिष्ठनारदसंवादसामवेदाधिपतिब्रह्मण ऋषयः। सर्वैश्वर्यकारिणी श्रीदुर्गा देवता चरित्रत्रयं ह्रीं शक्तिः त्रिगुणात्मस्वरूपचण्डिकाशापविमुक्तौ मम संकल्पितकार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।।

ॐ (ह्रीं) रीं रेतःस्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।१।। ॐ श्रीं बुद्धिस्वरूपिण्यै महिषासुरसैन्यनाशिन्यै ब्रह्मवशिष्टवि श्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।२।। ॐ रं रक्तस्वरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।३।। ॐ क्षुं क्षुधास्वरूपिण्यै देववन्दितायै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।४।। ॐ छां छायास्वरूपिण्यै दूतसंवादिन्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।५।। ॐ शं शक्तिस्वरूपिण्यै धूम्रविलोचनघातिन्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।६।। ॐ तृं तृषास्वरूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।७।। ॐ क्षां क्षान्तिस्वरूपिण्यै रक्तबीजवधकारिण्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।८।। ॐ जां जातिस्वरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवशिष्ठवि श्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।९।। ॐ लं लज्जास्वरूपिण्यै शुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।१०।। ॐ शां शान्तिस्वरूपिण्यै देवतुत्यै ब्रह्मवशिष्ठवि श्वामित्रशापाद्

विमुक्ता भव॥११॥ ॐ श्रं श्रद्धास्वरूपिण्यै सकलफलदात्र्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥१२॥ ॐ कां कान्तिस्वरूपिण्यै राजवरप्रदायै ब्रह्मवशिष्ठवि श्वामिंत्रशापाद् विमुक्ता भव॥१३॥ ॐमां मातृस्वरूपिण्यै अनर्गलमहिमसहितायै ब्रह्मवशिष्ठवि श्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥१४॥ ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै सं सर्वैश्वर्यकारिण्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥१५॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिवायै अभेद्यकवचरूपिण्यै ब्रह्मवशिष्ठवि श्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥१६॥ ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेदस्वरूपिण्यै ब्रह्मवशिष्ठवि श्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥१७॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः॥१८॥

इत्येवं हि महामन्त्रान् पठित्वा परमेश्वर।
चण्डीपाठं दिवा रात्रौ कुर्यादेव न संशयः॥१९॥
एवं मन्त्रं न जानाति चण्डीपाठं करोति यः।
आत्मानं चैव दातारं क्षीणं कुर्यान्न संशयः॥२०॥

॥ इति ब्रह्म वशिष्ठ विश्वामित्रशाप विमोचन सम्पूणम्॥



अथ देवी दुर्गा कवचम्

ॐ अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, चामुण्डा देवता, अंगन्यासोक्तमातरो बीजम्, दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम्, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे सप्तशतीपाठांगत्वेन जपे विनियोगः।

ॐ नमश्चण्डिकायै॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ॥१॥

ब्रह्मोवाच

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम्।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ॥२॥
प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥३॥
पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम् ॥४॥

विनियोग-दाहिने हाथ में जल लेकर '**ॐ अस्य श्रीचण्डी कवचस्य०**' तक पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दें।

ॐ चण्डिका देवी को नमस्कार है।

मार्कण्डेय जी ने कहा- पितामह ! जो इस संसार में परम गोपनीय तथा मनुष्यों की सब प्रकार से रक्षा करने वाला है और जो अब तक आपने दूसरे किसी के सामने प्रकट नहीं किया हो, ऐसा कोई साधन मुझे बताइये।

ब्रह्मा जी बोले-ब्रह्मन्! ऐसा साधन तो एक देवी का कवच ही है, जो गोपनीय से भी परम गोपनीय, पवित्र तथा सम्पूर्ण प्राणियों का उपकार करने वाला है। महामुने! उसे श्रवण करो। देवी की नौ मूर्तियाँ हैं, जिन्हें 'नवदुर्गा' कहते हैं। उनके पृथक्-पृथक् नाम बतलाये जाते हैं। प्रथम नाम शैलपुत्री है। दूसरी मूर्तिका नाम ब्रह्मचारिणी है। तीसरा स्वरूप चन्द्रघण्टा के नाम से प्रसिद्ध है। चौथी मूर्ति को कुष्माण्डा कहते हैं। पाँचवीं दुर्गा का नाम

कवच का पाठ करने से मकड़ी का विष, चेचक, कोढ़, सर्पविष, नशे का विष दूर होता है।

नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ॥५॥
अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः ॥६॥
न तेषां जायते किंचिदशुभं रणसंकटे।
नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि ॥७॥
यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः ॥८॥
प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना।
ऐन्द्री गजसमारूढ़ा वैष्णवी गरुडासना ॥९॥
माहेश्वरी वृषारूढ़ा कौमारी शिखिवाहना।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया ॥१०॥

स्कन्दमाता है। देवी के छठे रूप को कात्यायनी कहते हैं। सातवाँ कालरात्रि और आठवाँ स्वरूप महागौरी के नाम से प्रसिद्ध है। नवीं दुर्गा का नाम सिद्धिदात्री है। ये सब नाम सर्वज्ञ महात्मा वेद भगवान के द्वारा ही प्रतिपादित हुए हैं।।१-५।।

जो मनुष्य अग्नि में जल रहा हो, रणभूमि में शत्रुओं से घिर गया हो, विषम संकट में फँस गया हो तथा इस प्रकार भय से आतुर होकर जो भगवती दुर्गा की शरण में प्राप्त हुए हों, उनका कभी कोई अमंगल नहीं होता। युद्ध के समय संकट में पड़ने पर भी उनके ऊपर कोई विपत्ति नहीं दिखायी देती। उन्हें शोक, दुःख और भय की प्राप्ति नहीं होती। जिन्होंने भक्तिपूर्वक देवी का स्मरण किया है उनका निश्चय ही अभ्युदय होता है। देवेश्वरी! जो तुम्हारा चिन्तन करते हैं, उनकी तुम निःसंदेह रक्षा करती हो। चामुण्डा देवी प्रेत पर आरूढ़ होती हैं। वाराही भैंसे पर सवारी करती है। ऐन्द्री का वाहन ऐरावत हाथी है। वैष्णवी देवी गरुड़ पर ही आसन जमाती हैं। माहेश्वरी वृषभ पर आरूढ़ होती हैं। कौमारी का वाहन मयूर है। भगवान विष्णु की प्रियतमा लक्ष्मी देवी कमल के आसन पर विराजमान हैं और हाथों में कमल धारण किये हुए हैं। वृषभ पर आरूढ़ ईश्वरी देवी ने श्वेत रूप धारण कर रखा है। ब्राह्मी देवी हंस पर बैठी हुई हैं और सब प्रकार के आभूषणों से विभूषित हैं।

श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना।
ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता ॥११॥
इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः।
नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः ॥१२॥
दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः।
शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम् ॥१३॥
खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम् ॥१४॥
दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च।
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै ॥१५॥
नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि ॥१६॥
त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रुणां भयवर्धिनि।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता॥ १७॥

इस प्रकार ये सभी माताएं सब प्रकार की योगशक्तियों से सम्पन्न हैं। इनके सिवा और भी बहुत-सी देवियाँ हैं, जो अनेक प्रकार के आभूषणों की शोभा से युक्त तथा नाना प्रकार के रत्नों से सुशोभित हैं।।६-१२।।

ये सम्पूर्ण देवियाँ क्रोध में भरी हुई हैं और भक्तों की रक्षा के लिए रथ पर बैठी दिखायी देती हैं। ये शङ्ख, चक्र, गदा, शक्ति, हल और मुसल, खेटक और तोमर, परशु तथा पाश, कुन्त और त्रिशूल एवं उत्तम शार्ङ्गधनुष आदि अस्त्र-शस्त्र अपने हाथों में धारण करती है। दैत्यों के शरीर का नाश करना, भक्तों को अभयदान देना और देवताओं का कल्याण करना-यही उनके शस्त्र धारण का उद्देश्य है। (कवच आरम्भ करने के पहले इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिये) महान् रौद्ररूप, अत्यन्त घोर पराक्रम, महान् बल और महान् उत्साहवाली देवि! तुम महान् भय का नाश करने वाली हो, तुम्हें नमस्कार है। तुम्हारी ओर देखना भी कठिन है। शत्रुओं का भय बढ़ाने वाली जगदम्बिके! मेरी रक्षा करो। पूर्व दिशा में ऐन्द्री (इन्द्रशक्ति) मेरी रक्षा करे। अग्निकोण में अग्निशक्ति, दक्षिण दिशा में वाराही तथा नैर्ऋत्यकोण में खड्गधारिणी मेरी रक्षा करें। पश्चिम दिशा

दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी ॥१८॥
उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी।
उर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा ॥१९॥
एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना।
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ॥२०॥
अजिता वाममाश्र्वे तु दक्षिणे चापराजिता।
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता ॥२१॥
मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यम घण्टा च नासिके ॥२२॥
शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी।
कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शांकरी ॥२३॥
नासिकायां सुगन्धा च्र उत्तरोष्ठे च चर्चिका।
अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती ॥२४॥

में वारुणी और वायव्य कोण में मृग पर सवारी करने वाली देवी मेरी रक्षा करे। उत्तर दिशा में कौमारी और ईशान-कोण में शूलधारिणी देवी रक्षा करे। ब्रह्माणि! तुम ऊपर की ओर से मेरी रक्षा करो और वैष्णवी देवी नीचे की ओर से मेरी रक्षा करे।।१३-१९।।

इसी प्रकार शव को अपना वाहन बनाने वाली चामुण्डा देवी दसों दिशाओं में मेरी रक्षा करे।

जया आगे से और विजया पीछे की ओर से मेरी रक्षा करे। वाम भाग में अजिता और दक्षिण भाग में अपराजिता रक्षा करे। उद्योतिनी शिखा की रक्षा करे। उमा मेरी मस्तक पर विराजमान होकर रक्षा करे। ललाट में मालाधरी रक्षा करे और यशस्विनी देवी मेरी भौंहों का संरक्षण करे। भौंहों के मध्य भाग में त्रिनेत्रा और नथुनों की यमघण्टा देवी रक्षा करे। दोनों नेत्रों के मध्य भाग में शङ्खिनी और कानों में द्वारवासिनी रक्षा करे। कालिका देवी कपोलों की तथा भगवती शांकरी कानों के मूलभाग की रक्षा करे। नासिका में सुगन्धा और ऊपर के ओठ में चर्चिका देवी रक्षा

दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका।
घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ॥२५॥
कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमंगला।
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी ॥२६॥
नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी।
स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी ॥२७॥
हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च।
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी ॥२८॥
स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनः शोकविनाशिनी।
हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी ॥२९॥
नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी ॥३०॥
कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी।
जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी ॥३१॥

करें। नीचे के होठ में अमृतकला तथा जिह्वा में सरस्वती देवी रक्षा करे। कौमारी दाँतों की और चण्डिका कण्ठ प्रदेश की रक्षा करे। चित्रघण्टा गले की घाँटी की और महामाया तालु में रहकर रक्षा करे। कामाक्षी ठोढ़ी की और सर्वमंगला मेरी वाणी की रक्षा करे। भद्रकाली ग्रीवा में और धनुर्धरी पृष्ठवंश (मेरुदण्ड) में रहकर रक्षा करें॥२०-२६॥

कण्ठ के बाहरी भाग में नीलग्रीवा और कण्ठ की नली में नलकूबरी रक्षा करे। दोनों कंधों में खड्गिनी और मेरी दोनों भुजाओं की वज्रधारिणी रक्षा करे। दोनों हाथों में दण्डिनी और अंगुलियों में अम्बिका रक्षा करे। शूलेश्वरी नखों की रक्षा करे। कुलेश्वरी कुक्षि (पेट) में रहकर रक्षा करे। महादेवी दोनों स्तनों की और शोकविनाशिनी देवी मन की रक्षा करे। ललिता देवी हृदय में और शूलधारिणी उदर में रहकर रक्षा करें। नाभि में कामिनी और गुह्य भाग की गुह्येश्वरी रक्षा करे। पूतना और कामिका लिंग की और महिषवाहिनी गुदा की रक्षा करे। भगवती कटिभाग में विन्ध्यवासिनी घुटनों की रक्षा करे। सम्पूर्ण कामनाओं को देने वाली महाबला देवी दोनों पिण्डलियों की रक्षा करे। नारसिंही दोनों घुट्ठियों की और तैजसी देवी

गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी।
पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी ॥३२॥
नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी।
रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा ॥३३॥
रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी ॥३४॥
पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा।
ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसंधिषु ॥३५॥
शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा।
अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी ॥३६॥
प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम्।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याण शोभना ॥३७॥
रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी।
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा ॥३८॥

दोनों चरणों के पृष्ठ भाग की रक्षा करे। श्री देवी पैरों की अंगुलियों में और तलवासिनी पैरों के तलुओं में रहकर रक्षा करे। अपनी दाढ़ों के कारण भयंकर दिखायी देने वाली दंष्ट्राकराली देवी नखों की और ऊर्ध्वकेशिनी देवी केशों की रक्षा करे। रोमावलियों के छिद्रों में कौबेरी और त्वचा की वागीश्वरी देवी रक्षा करे॥२७-३३॥

पार्वती देवी रक्त, मज्जा, वसा, मांस, हड्डी और मेदकी रक्षा करे। आँतों की कालरात्रि और पित्त की मुकटेश्वरी रक्षा करे। मूलाधार आदि कमल कोशों में पद्मावती देवी और कफ में चूड़ामणि देवी स्थित होकर रक्षा करे। नख के तेज की ज्वालामुखी रक्षा करे। जिसका किसी भी अस्त्र से भेदन नहीं हो सकता, अभेद्या देवी शरीर की समस्त संधियों में रहकर रक्षा करे।

ब्रह्माणि! आप मेरे वीर्य की रक्षा करें। छत्रेश्वरी छाया की तथा धर्मधारिणी देवी मेरे अहंकार, मन और बुद्धि की रक्षा करे। हाथ में वज्र धारण करने वाली वज्रहस्ता देवी मेरे प्राण, अपान, व्यान, उदान और

आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी।
यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी ॥३९॥
गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके।
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी ॥४०॥
पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता ॥४१॥
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी॥४२॥
पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः।
कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ॥४३॥
तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥४४॥
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान्॥
निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः ॥४५॥

समान वायु की रक्षा करे। कल्याण से शोभित होने वाली भगवती कल्याण शोभना मेरे प्राण की रक्षा करे। रस, रूप, गन्ध, शब्द और स्पर्श-इन विषयों का अनुभव करते समय योगिनी देवी रक्षा करे तथा सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण की रक्षा सदा नारायणी देवी करे। वाराही आयु की रक्षा करे। वैष्णवी धर्म की रक्षा करे तथा चक्रिणी (चक्र धारण करने वाली) देवी यश, कीर्ति, लक्ष्मी, धन तथा विद्या की रक्षा करे॥३४-३९॥

इन्द्राणि! आप मेरे गोत्र की रक्षा करें। चण्डिके! तुम मेरे पशुओं की रक्षा करो। महालक्ष्मी पुत्रों की रक्षा करे और भैरवी पत्नी की रक्षा करे। मेरे पथ की सुपथा तथा मार्ग की क्षेमकरी रक्षा करे। राजा के दरबार में महालक्ष्मी रक्षा करे तथा सब ओर व्याप्त रहने वाली विजया देवी सम्पूर्ण भयों से मेरी रक्षा करे।

देवी! जो स्थान कवच में नहीं कहा गया है, अतएव रक्षा से रहित है, वह सब तुम्हारे द्वारा सुरक्षित हो, क्योंकि तुम विजयशालिनी और पापनाशिनी हो। यदि अपने शरीर का भला चाहे तो मनुष्य बिना कवच के कहीं एक पग भी न जाये-कवच का पाठ करके ही यात्रा करे।

त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान्।
इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम् ।।४६।।
यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः
दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः ।।४७।।
जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः
नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः ।।४८।।
स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम्।।
अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले ।।४९।।
भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः।।
सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा ।।५०।।
अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः।।
ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः ।।५१।।
ब्रह्मराक्षसवेतालाः कुष्माण्डा भैरवादयः।।
नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते ।।५२।।

कवच के द्वारा सब ओर से सुरक्षित मनुष्य जहाँ-तहाँ भी जाता है, वहाँ-वहाँ उसे धन-लाभ होता है तथा सम्पूर्ण कामनाओं की सिद्धि करने वाली विजय की प्राप्ति होती है। वह जिस-जिस अभीष्ट वस्तु का चिन्तन करता है, उस उसको निश्चय ही प्राप्त कर लेता है। वह पुरुष इस पृथ्वी पर तुलनारहित महान ऐश्वर्य का भागी होता है। कवच से सुरक्षित मनुष्य निर्भय हो जाता है। युद्ध में उसकी पराजय नहीं होती तथा वह तीनों लोकों में पूजनीय होता है।।४०-४५।।

देवी का यह कवच देवताओं के लिये भी दुर्लभ है। जो प्रतिदिन नियमपूर्वक तीनों संध्याओं के समय श्रद्धा के साथ इसका पाठ करता है, उसे दैवी कला प्राप्त होती है तथा वह तीनों लोकों में कहीं भी पराजित नहीं होता। इतना ही नहीं, वह अपमृत्यु से रहित होकर सौ से भी अधिक वर्षों तक जीवित रहता है। मकरी, चेचक और कोढ़ आदि उसकी सम्पूर्ण व्याधियाँ नष्ट हो जाती हैं। कनेर, भाँग, अफीम, धतूरे आदि का स्थावर विष, साँप और बिच्छू आदि के काटने से चढ़ा हुआ जंगम विष तथा अहिफेन और तेल के संयोग आदि से बनने वाला कृत्रिम विष-ये सभी

मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम्।।
यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले ।।५३।।
जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा।।
यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम् ।।५४।।
तावत्तिष्ठति मेदिन्यां संततिः पुत्रपौत्रिकी।।
देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम् ।।५५।।
प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः।।
लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते।।ॐ ।।५६।।

।।इति वाराह पुराणान्तर्गत ब्रह्मविरचित देव्याः कवचं सम्पूर्णम्।।

प्रकार के विष दूर हो जाते हैं, उनका कोई असर नहीं होता। इस पृथ्वी पर मारण-मोहन आदि जितने आभिचारिक प्रयोग होते हैं तथा इस प्रकार के जितने मन्त्र, यन्त्र होते हैं, वे सब इस कवच को हृदय में धारण कर लेने पर उस मनुष्य को देखते ही नष्ट हो जाते हैं। ये ही नहीं, पृथ्वी पर विचरने वाले ग्रामदेवता, आकाशचारी देव विशेष, जल के सम्बन्ध से प्रकट होने वाले गण, उपदेश मात्र से सिद्ध होने वाले निम्नकोटि के देवता, अपने जन्म के साथ प्रकट होने वाले देवता, कुलदेवता, माला (कण्ठ माला आदि), डाकिनी, शाकिनी, अन्तरिक्ष में विचरने वाली अत्यन्त बलवती भयानक डाकिनियाँ, ग्रह, भूत, पिशाच, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस, ब्रह्मराक्षस, बेताल, कुष्माण्ड और भैरव आदि अनिष्टकारक देवता भी हृदय में कवच धारण किये रहने पर उस मनुष्य को देखते ही भाग जाते हैं। कवचधारी पुरुष को राजा से सम्मान वृद्धि प्राप्त होती है। यह कवच मनुष्य के तेज की वृद्धि करने वाला और उत्तम है।।

कवच का पाठ करने वाला पुरुष अपनी कीर्ति से विभूषित भूतल पर अपने सुयश के साथ-साथ वृद्धि को प्राप्त होता है। जो पहले कवच का पाठ करके उसके साथ सप्तशती चण्डी का पाठ करता है, उसकी जब तक वन, पर्वत और काननों सहित यह पृथ्वी टिकी रहती है, तब तक यहाँ पुत्र-पौत्र आदि संतान परम्परा बनी रहती है। फिर देह का अन्त होने पर वह पुरुष भगवती महामाया के प्रसाद से उस नित्य परम पद को प्राप्त होता है, जो देवताओं के लिए भी दुर्लभ है। वह सुन्दर दिव्य रूप धारण करता और कल्याणमय शिव के साथ आनन्द का भागी होता है।।५२-५६।।

अथ अर्गलास्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीअर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, श्रीजगदम्बाप्रीतये सप्तशतीपाठांगत्वेन जपे विनियोगः॥

ॐ नमश्चण्डिकायै॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥१॥
जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते ॥२॥
मधुकैटभविद्राविविधातृवरदे नमः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥३॥
महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥४॥

ॐ चण्डिकादेवी को नमस्कार है।

मार्कण्डेय जी कहते हैं- जयन्ती, मङ्गला काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा और स्वधा-इन नामों से प्रसिद्ध जगदम्बिके! तुम्हें नमस्कार हो। देवी चामुण्डे! तुम्हारी जय हो। सम्पूर्ण प्राणियों की पीड़ा हरने वाली देवि! तुम्हारी जय हो। सबमें व्याप्त रहने वाली देवि! तुम्हारी जय हो। कालरात्रि! तुम्हें नमस्कार हो॥

मधु और कैटभ को मारने वाली तथा ब्रह्माजी को वरदान देने वाली देवि! तुम्हें नमस्कार है। तुम मुझे रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो, जय (मोह पर विजय) दो, यश (मोह-विजय तथा ज्ञान प्राप्ति रूप यश) दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो।

महिषासुर का नाश करने वाली तथा भक्तों को सुख देने वाली देवि! तुम्हें नमस्कार है। तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥१-४॥

रक्तबीज का वध और चण्ड-मुण्ड का विनाश करने वाली देवि! तुम

रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनी।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥५॥
शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥६॥
वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनी।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥७॥
अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥८॥
नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥९॥
स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१०॥
चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥११॥

रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। शुम्भ और निशुम्भ तथा धूम्रलोचन का मर्दन करने वाली देवि! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। सबके द्वारा वन्दित युगल चरणों वाली तथा सम्पूर्ण सौभाग्य प्रदान करने वाली देवि! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। देवि! तुम्हारे रूप और चरित्र अचिन्त्य है। तुम समस्त शत्रुओं का नाश करने वाली हो। रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। पापों को दूर करने वाली चण्डिके! जो भक्तिपूर्वक तुम्हारे चरणों में सर्वदा मस्तक झुकाते हैं, उन्हें रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। रोगों का नाश करने वाली चण्डिके! जो भक्तिपूर्वक तुम्हारी स्तुति करते हैं, उन्हें रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। चण्डिके! इस संसार में जो भक्तिपूर्वक तुम्हारी पूजा करते हैं, उन्हें रूप दो, जय दो, यश दो और उनके काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥५-११॥

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१२॥
विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१३॥
विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१४॥
सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१५॥
विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१६॥
प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१७॥

मुझे सौभाग्य और आरोग्य दो। परम सुख दो, रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। जो मुझसे द्वेष रखते हों, उनका नाश और मेरे बल की वृद्धि करो। रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। देवि! मेरा कल्याण करो। मुझे उत्तम सम्पत्ति प्रदान करो। रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। अम्बिके! देवता और असुर-दोनों ही अपने माथे के मुकुट की मणियों को तुम्हारे चरणों पर घिसते रहते हैं। तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। तुम अपने भक्तजन को विद्वान्, यशस्वी और लक्ष्मीवान् बनाओ तथा रूप दो, जय दो, यश दो और उसके काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। प्रचण्ड दैत्यों के दर्प का दलन करने वाली चण्डिके! मुझ शरणागत को रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। चतुर्मुख ब्रह्मा जी के द्वारा प्रशंसित चार भुजाधारिणी परमेश्वरी! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो।।१२-१८।।

देवि अम्बिके! भगवान् विष्णु नित्य-निरन्तर भक्तिपूर्वक तुम्हारी स्तुति करते रहते हैं। तुम रूप दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। हिमालय-कन्या पार्वती के पति महादेव जी के द्वारा प्रशंसित होने

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१८॥
कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१९॥
हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२०॥
इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२१॥
देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनी।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२२॥
देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२३॥
पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् ॥२४॥
इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः।
स तु सप्तशतीसंख्यावरमाप्नोति सम्पदाम्॥ॐ ॥२५॥

॥ इति मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत देव्या अर्गला स्तोत्रं सम्पूर्णम्

वाली परमेश्वरी! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। शचीपति इन्द्र के द्वारा सद्भाव से पूजित होने वाली परमेश्वरी! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। प्रचण्ड भुजदण्डों वाले दैत्यों का घमंड चूर करने वाली देवि! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। देवि अम्बिके! तुम अपने भक्तजनों को सदा असीम आनन्द प्रदान करती रहती हो। मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। मन की इच्छा के अनुसार चलने वाली मनोहर पत्नी प्रदान करो, जो दुर्गम संसार सागर से तारने वाली तथा उत्तम कुल में उत्पन्न हुई हो। जो मनुष्य इस स्तोत्र का पाठ करके सप्तशती रूपी महास्तोत्र का पाठ करता है, वह सप्तशती की जप संख्या से मिलने वाले श्रेष्ठ फल को प्राप्त होता है। साथ ही वह प्रचुर सम्पत्ति भी प्राप्त कर लेता है।।१६-२५।।

अथ कीलकम्

ॐ अस्य श्रीकीलकमन्त्रस्य शिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहासरस्वती देवता, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थं सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।

ॐ नमश्चण्डिकायै॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे।
श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्धधारिणे ॥१॥
सर्वमेतद्विजानीयान्मन्त्राणामभिकीलकम् ।
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः ॥२॥
सिद्ध्यन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि।
एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्रमात्रेण सिद्ध्यति ॥३॥
न मन्त्रो नौषधं तत्र न किञ्चिदपि विद्यते।
विना जाप्येन सिद्ध्येत सर्वमुच्चाटनादिकम् ॥४॥

ॐ चण्डिका देवी को नमस्कार है।

मार्कण्डेय जी कहते हैं- विशुद्ध ज्ञान ही जिनका शरीर है, तीनों वेद ही जिनके तीन दिव्य नेत्र हैं, जो कल्याण प्राप्ति के लिए है तथा अपने मस्तक पर अर्धचन्द्र का मुकुट धारण करते हैं, उन भगवान् शिव को नमस्कार है। मन्त्रों का जो अभिकीलक है अर्थात् मंत्रों की सिद्धि में विघ्न उपस्थित करने वाले शाप रूपी कीलक का जो निवारण करने वाला है, उस सप्तशती स्तोत्र को सम्पूर्ण रूप से जानना चाहिये (और जानकर उसकी उपासना करनी चाहिये), यद्यपि सप्तशती के अतिरिक्त अन्य मन्त्रों के जप में भी जो निरन्तर लगा रहता है, वह भी कल्याण का भागी होता है। उसके भी उच्चाटन आदि कर्म सिद्ध होते हैं तथा उसे भी समस्त दुर्लभ वस्तुओं की प्राप्ति हो जाती है, तथापि जो अन्य मंत्रों का जप न करके केवल इस सप्तशती नामक स्तोत्र से ही देवी की स्तुति करते हैं, उन्हें स्तुति मात्र से ही सच्चिदानंद स्वरूपिणी देवी सिद्ध हो जाती है। उन्हें अपने कार्य के लिये मन्त्र, औषधि तथा अन्य किसी साधन के उपयोग की आवश्यकता नहीं रहती। विना जप के ही उनके उच्चाटन आदि समस्त

समग्राण्यपि सिद्धयन्ति लोकशङ्कामिमां हरः।
कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम् ॥५॥
स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तं चकार सः।
समाप्तिर्न च पुण्यस्य तां यथावन्नियन्त्रणाम्॥६॥
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेवं न संशयः।
कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः ॥७॥
ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति।
इत्थंरूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥८॥
यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम्।
स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः ॥९॥
न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह जायते।
नापमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥१०॥

आभिचारिक कर्म सिद्ध हो जाते हैं। इतना ही नहीं, उनकी सम्पूर्ण अभीष्ट वस्तुएँ भी सिद्ध होती है। लोगों के मन में यह शंका थी कि जब केवल सप्तशती की उपासना से अथवा सप्तशती को छोड़कर अन्य मन्त्रों की उपासना से भी समान रूप से सब कार्य सिद्ध होते हैं, तब इनमें श्रेष्ठ कौन-सा साधन है? लोगों की इस शंका को सामने रखकर भगवान् शंकर ने अपने पास आये हुए जिज्ञासुओं को समझाया कि यह सप्तशती नामक सम्पूर्ण स्तोत्र की सर्वश्रेष्ठ एवं कल्याणमय है।

तदन्तर भगवती चण्डिका के सप्तशती नामक स्तोत्र को महादेव जी ने गुप्त कर दिया। सप्तशती के पाठ से जो पुण्य प्राप्त होता है, उसकी कभी समाप्ति नहीं होती, किंतु अन्य मंत्रों के जपजन्य पुण्य की समाप्ति हो जाती है। अतः भगवान् शिव ने अन्य मंत्रों की अपेक्षा जो सप्तशती की ही श्रेष्ठता का निर्णय किया, उसे यथार्थ ही जानना चाहिये। अन्य मंत्रों का जप करने वाला पुरुष भी यदि सप्तशती के स्तोत्र और जप का अनुष्ठान कर ले तो वह भी पूर्णरूप से ही कल्याण का भागी होता है, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। जो साधक कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी अथवा अष्टमी को एकाग्रचित्त होकर भगवती की सेवा में अपना सर्वस्व समर्पित

ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति।
ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः ॥११॥
सौभाग्यादि च यत्किञ्चिद् दृश्यते ललनाजने।
तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम् ॥१२॥
शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः।
भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत् ॥१३॥
ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसम्पदः।
शत्रुहानिः परो मोक्ष स्तूयते सा न किं जनैः॥ॐ ॥१४॥

॥इति कीलकं स्तोत्रम्॥

कर देता है और फिर उसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करता है उसी पर भगवती प्रसन्न होती हैं, अन्यथा उनकी प्रसन्नता नहीं प्राप्त होती। इस प्रकार सिद्धि के प्रतिबंधक रूप कील के द्वारा महादेव जी ने इस स्तोत्र को कीलित कर रखा है। जो पूर्वोक्त रीति से निष्कीलन करके इस सप्तशती-स्तोत्र का प्रतिदिन स्पष्ट उच्चारणपूर्वक पाठ करता है, वह मनुष्य सिद्ध हो जाता है, वही देवी का पार्षद होता है और वही गंधर्व भी होता है। सर्वत्र विचरते रहने पर भी इस संसार में उसे कहीं भी भय नहीं होता। वह अपमृत्यु के वश में नहीं पड़ता तथा देह त्यागने के अनन्तर मोक्ष प्राप्त कर लेता है॥ अतः कीलन को जानकर उसका परिहार करके ही सप्तशती का पाठ आरंभ करे। जो ऐसा नहीं करता, उसका नाश हो जाता है। इसलिये कीलक और निष्कीलन का ज्ञान प्राप्त करने पर ही यह स्तोत्र निर्दोष होता है और विद्वान् पुरुष इस निर्दोष स्तोत्र का ही पाठ आरम्भ करते हैं। स्त्रियों में जो कुछ भी सौभाग्य आदि दृष्टिगोचर होता है, वह सब देवी के प्रसाद का ही फल है। अतः इस कल्याणमय स्तोत्र का सदा जप करना चाहिये। इस स्तोत्र का मन्द स्वर से पाठ करने पर स्वल्प फल की प्राप्ति होती है और उच्च स्वर से पाठ करने पर पूर्ण फल की सिद्धि होती है।

अतः उच्च स्वर से ही इसका पाठ आरम्भ करना चाहिये। जिनके प्रसाद से ऐश्वर्य, सौभाग्य, आरोग्य, सम्पत्ति, शत्रुनाश तथा परम मोक्ष की भी सिद्धि होती है, उस कल्याणमयी जगदम्बा की स्तुति मनुष्य क्यों नहीं करते?॥१-१४॥

इति देव्याः कीलकस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

अथ वेदोक्तं रात्रिसूक्तम्

ॐ रात्रीत्याद्यष्टर्चस्य सूक्तस्य कुशिकः सौभरो रात्रिर्वा भारद्वाजो ऋषिः, रात्रिर्देवता, गायत्री छन्दः, देवीमाहात्म्यपाठे विनियोगः।

ॐ रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यक्षभिः।
विश्वा अधि श्रियोऽधित ॥१॥
ओर्वप्रा अमर्त्यानिवतो देव्युद्वतः।
ज्योतिषा बाधते तमः ॥२॥
निरु स्वसारमस्कृतोषसं देव्यायती।
अपेदु हासते तमः ॥३॥
सा नो अद्य यस्या वयं नि ते यामन्नविक्ष्महि।
वृक्षे न वसतिं वयः ॥४॥

महत्त्वादिरूप व्यापक इन्द्रियों से सब देशों में समस्त वस्तुओं को प्रकाशित करने वाली ये रात्रिरूपा देवी अपने उत्पंन्न किये हुए जगत् के जीवों के शुभाशुभ कर्मों को विशेष रूप से देखती है और उने अनुरूप फल की व्यवस्था करने के लिये समस्त विभूतियों को धारण करती हैं॥१॥

ये देवी अमर है और सम्पूर्ण विश्व को, नीचे फैलने वाली लता आदि को तथा ऊपर बढ़ने वाले वृक्षों को भी व्याप्त करके स्थित है; इतना ही नहीं, ये ज्ञानमयी ज्योति से जीवों के अज्ञानान्धकार का नाश कर देती है॥२॥

परा चिच्छक्तिरूपा रात्रि देवी आकर अपनी बहिन ब्रह्मविद्यामयी उषा देवी को प्रकट करती हैं, जिसे अविद्यामय अन्धकार स्वतः नष्ट हो जाता है॥३॥

वे रात्रिदेवी इस समय मुझपर प्रसन्न हों, जिनकें आने पर हम लोग अपने घरों में सुख से सोते हैं-ठीक वैसे ही, जैसे रात्रि के समय

नि ग्रामासो अविक्षत नि पद्वन्तो नि पक्षिणः।
नि श्येनासश्चिदर्थिनः ॥५॥
यावया वृक्यं वृकं यवय स्तेनमूर्म्ये।
अथा नः सुतराभव ॥६॥
उप मा पेपिशत्तमः कृष्णं व्यक्तमस्थित।
उष ऋणेव यातय ॥७॥
उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहितर्दिवः।
रात्रि स्तोमं न जिग्युषे ॥८॥

॥इति वेदोक्तं रात्रिसूक्तम्॥

पक्षी वृक्षों पर बनाये हुए अपने घोंसलों में सुखपूर्वक शयन करते हैं॥४॥

उस करुणामयी रात्रि देवी के अंक में सम्पूर्ण ग्रामवासी मनुष्य, पैरों से चलने वाले गाय, घोड़े आदि पशु, पंखों से उड़ने वाले पक्षी एवं पतंग आदि, किसी प्रयोजन से यात्रा करने वाले पथिक और बाज आदि भी सुखपूर्वक सोते हैं॥५॥

हे रात्रिमयी चिच्छक्ति! तुम कृपा करके वासनामयी वृकी तथा पापमय वृकको हमसे अलग करो। काम आदि तस्करसमुदाय को भी दूर हटाओ। तदनन्तर हमारे लिये सुखपूर्वक तरने योग्य हो जाओ–मोक्षदायिनी एवं कल्याणकारिणी बन जाओ॥६॥

हे उषा! हे रात्रि की अधिष्ठात्री देवी! सब ओर फैला हुआ यह अज्ञानमय काला अन्धकार मेरे निकट आ पहुँचा है। तुम इसे ऋण की भांति दूर करो–जैसे धन देकर अपने भक्तों के ऋण दूर करती हो, उसी प्रकार ज्ञान देकर इस अज्ञान को भी हटा दो॥७॥

हे रात्रिदेवी ! तुम दूध देने वाली गौ के समान हो। मैं तुम्हारे समीप आकर स्तुति आदि से तुम्हें अपने अनुकूल करता हूँ। परम व्योमस्वरूप परमात्मा की पुत्री! तुम्हारी कृपा से मैं काम आदि शत्रुओं को जीत चुका हूँ, तुम स्तोम की भांति मर इस हांवष्य को भी ग्रहण करो॥८॥

।। अथ तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम्[1] ।।

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः।। १।।

ब्रह्मोवाच

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ।।२।।
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा ।।३।।
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्।
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ।।४।।
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ।।५।।
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी ।।६।।
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा।।७।।
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ।।८।।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
खड्गिनी चापिनी बाणभुशुण्डी परिघायुधा ।।९।।

---

१. इसका अर्थ प्रथम अध्याय के श्लोक संख्या ७० से ८७ तक देखें।

सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥१०॥
यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा ॥११॥
यया त्वया जगत्स्त्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥१२॥
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।
कारितास्तेयतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ॥१३॥
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरूदारैर्देवि संस्तुता।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥१४॥
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥१५॥

॥ इति रात्रिसूक्तम्॥



श्री देव्यथर्वशीर्षम्

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति॥१॥ साब्रवीत्-अहं ब्रह्मस्वरूपिणी। मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत्। शून्यं चाशून्यं च॥२॥

अहमानन्दानन्दौ। अहं विज्ञानाविज्ञाने। अहं ब्रह्माब्रह्मणी वेदितव्ये। अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि। अहमखिलं जगत्॥३॥ वेदोऽहमवेदोऽहम्। विद्याहमविद्याहम्। अजाहमनजाहम्। अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम्॥४॥

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि। अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि। अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ॥५॥

अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि। अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि॥६॥

अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते। अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूना चिकितुषी प्रथमा

ॐ सभी देवता देवी के समीप गये और नम्रता से पूछने लगे-हे महादेवि! तुम कौन हो?॥१॥

उसने कहा-मैं ब्रह्मस्वरूप हूँ। मुझसे प्रकृति-पुरुषात्मक सद्रूप और असद्रूप जगत् उत्पन्न हुआ है॥२॥

मैं आनन्द और आनन्दारूपा हूँ। मैं विज्ञान और अविज्ञानरूपा हूँ। अवश्य जानने योग्य ब्रह्म और अब्रह्म भी मैं ही हूँ। पञ्चीकृत और अपंचीकृत महाभूत भी मैं ही हूँ। यह सारा दृश्य-जगत् मैं ही हूँ॥३॥

वेद और अवेद मैं हूँ। विद्या और अविद्या भी मैं, अजा और अनजा (प्रकृति और उससे भिन्न) भी मैं, नीचे-ऊपर, अगल-बगल भी मैं ही हूँ॥४॥

मैं रुद्रों और वसुओं के रूप में संचार करती हूँ। मैं आदित्यों और विश्वदेवों के रूपों में फिरा करती हूँ। मैं मित्र और वरुण दोनों का, इन्द्र एवं अग्नि का और दोनों अश्विनी कुमारों का भरण-पोषण करती हूँ॥५॥

मैं सोम, त्वष्टा, पूषा और भग को धारण करती हूँ। त्रैलोक्य को

यज्ञियानाम्। अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः
समुद्रे। य एवं वेद। स देवी सम्पदमाप्नोति।।७।।
ते देवा अब्रुवन्-नमो दैव्ये महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ।।८।।
तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः ।।९।।
देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेशमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु।। १०।।
कालरात्रिं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमारतम्।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम् ।।११।।

आक्रान्त करने के लिए विस्तीर्ण पादक्षेप करने वाले विष्णु, ब्रह्मदेव और प्रजापति को मैं ही धारण करती हूँ।।६।।

देवों को उत्तम हवि पहुँचाने वाले और सोमरस निकालने वाले यजमान के लिए हविर्द्रव्यों से युक्त धन धारण करती हूँ। (यजन करने योग्य देवों में) मुख्य हूँ। मैं आत्मस्वरूप पर आकाशादि निर्माण करती हूँ। मेरा स्थान आत्मस्वरूप को धारण करने वाली बुद्धिवृत्ति में है जो इस प्रकार जानता है, वह दैवी सम्पत्ति लाभ करता है।।७।।

तब उन देवों ने कहा-देवी को नमस्कार है। बड़े-बड़ों को अपने-अपने कर्तव्यों में प्रवृत्त करने वाली कल्याणकत्री को सदा नमस्कार है। गुणसाम्यावस्थारूपिणी मंगलमयी देवी को नमस्कार है। नियमयुक्त होकर हम उन्हें प्रणाम करते हैं।।८।।

उन अग्नि के वर्ण वाली, ज्ञान से जगमगाने वाली, दीप्तिमती, कर्मफल प्राप्ति के हेतु सेवन की जाने वाली दुर्गादेवी की हम शरण में हैं। असुरों का नाश करने वाली देवि! तुम्हें नमस्कार है।।९।।

प्राणरूप देवों ने जिस प्रकाशमान वैखरी वाणी को उत्पन्न किया, उसे अनेक प्रकार के प्राणी बोलते हैं। वह कामधेनु तुल्य आनन्ददायक और अन्न तथा बल देने वाली वाग्रूपिणी भगवती उत्तम स्तुति से संतुष्ट होकर हमारे समीप आये।।१०।।

काल का भी नाश करने वाली, वेदों द्वारा स्तुत हुई विष्णुशक्ति,

महालक्ष्म्ये च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥१२॥
अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः ॥१३॥
कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः।
पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्यैषा विश्वमातादिविद्योम् ॥१४॥
एषाऽऽत्मशक्तिः। एषा विश्वमोहिनी। पाशांकुशधनुर्बाणधरा।
एषा श्रीमहाविद्या। य एवं वेद स शोकं तरति ॥१५॥
नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः॥१६॥
सैषाष्टौ वसवः। सैषैकादश रुद्राः। सैषा द्वादशादित्याः।
सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च।
सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः।

स्कन्दमाता (शिवशक्ति), सरस्वती (ब्रह्मशक्ति), वेदमाता अदिति और दक्ष कन्या (सती), पापनाशिनी कल्याणकारिणी भगवती को हम प्रणाम करते हैं।।११।। हम उस महालक्ष्मी को जानते हैं और उन सर्वशक्तिरूपिणी का ही ध्यान करते हैं। वह देवी हमें उस विषय में (ज्ञान-ध्यान में) प्रवृत्त करें।।।१२।।

हे दक्ष! आपकी जो कन्या अदिति है, वे प्रसूता हुईं और उनके मृत्युरहित कल्याणमय देव उत्पन्न हुए।।१३।।

काम (क), योनि (ए), कमला (ई), वज्रपाणि-इन्द्र (ल), गुहा (ह्री), ह, स-वर्ण, मातरिश्वा-वायु (क), अभ्र (ह), इन्द्र (ल), पुनः गुहा (ह्री), स, क, ल-वर्ण और माया (ह्रीं)-यह सर्वात्मिका जगन्माता की मूल विद्या है और वह ब्रह्मरूपिणी है।।१४।।

(शिवशक्त्यभेदरूपा, ब्रह्म-विष्णु-शिवात्मिका, सरस्वती-लक्ष्मी-गौरीरूपा, अशुद्ध-मिश्र, शुद्धोपासनात्मिका, समरसीभूत-शिवशक्त्यात्मक ब्रह्मस्वरूप का निर्विकल्प ज्ञान देने वाली, सर्वतत्त्वात्मिका महात्रिपुरसुन्दरी-यही इस मन्त्र का भावार्थ है। यह मन्त्र सब मन्त्रों का मुकुटमणि है और इस मन्त्रशास्त्र में पंचदशी आदि श्रीविद्या

सैषा सत्त्वरजस्तमांसि। सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी।
सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः। सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतींषि।
कलाकाष्ठादिकालरूपिणी। तामहं प्रणौमि नित्यम्।।
पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम्।
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम् ।।१७।।
वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम्।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम् ।।१८।।
एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः ।।१९।।

के नाम से प्रसिद्ध है। इसके छह प्रकार के अर्थ अर्थात् भावार्थ, वाच्यार्थ, सम्प्रदायार्थ, लौकिकार्थ, रहस्यार्थ और तत्त्वार्थ 'नित्यषोडशिकार्वण' ग्रन्थ में बताए गए हैं। इसी प्रकार 'वरिवस्यारहस्य' आदि ग्रन्थों में इसके और भी अनेक अर्थ दिखाए गए हैं। श्रुति में भी ये मन्त्र इस प्रकार से अर्थात् क्वचित् स्वरूपोच्चार क्वचित् लक्षणा और लक्षित लक्षणा से और कहीं वर्ण के पृथक-पृथक अवयव दर्शाकर जान-बूझकर विश्रंखला रूप से कहे गए हैं। इससे यह मालूम होगा कि ये मन्त्र कितने गोपनीय और महत्वपूर्ण हैं।)

ये परमात्मा की शक्ति हैं। ये विश्वमोहिनी हैं। पाश, अंकुश, धनुष और बाण धारण करने वाली हैं। ये 'श्रीमहाविद्या' है। जो ऐसा जानता है, वह शोक को पार कर जाता है।।१५।।

भगवती! तुम्हें नमस्कार है। माता! सब प्रकार से हमारी रक्षा करो।।१६।।

(मन्त्रदृष्टा ऋषि कहते हैं-) वहीं ये अष्ट वसु हैं, वही ये एकादश रुद्र हैं; वही ये द्वादश आदित्य हैं; वही ये सोमपान करने वाले और सोमपान न करने वाले विश्वदेव हैं; वही ये यातुधान (एक प्रकार के राक्षस), असुर, राक्षस, पिशाच, यक्ष और सिद्ध हैं; वही ये सत्व-रज-तम है; वही ये ब्रह्म-विष्णु-रुद्ररूपिणी हैं; वही ये प्रजापति-इन्द्र-मनु है; वही ये ग्रह, नक्षत्र और तारे हैं; वही कला-काष्ठादि कालरूपिणी है; उन पाप नाश करने वाली, भोग-मोक्ष देने वाली, अन्तरहित, विजयाधिष्ठात्री, निर्दोष

वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम्।
सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्तष्टात्तृतीयकः ।
नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः।
विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः ॥२०॥
हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभाम्।
पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्।
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे ॥२१॥
नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम्।
महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम् ॥२२॥

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया। यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता। यस्या

शरण लेने योग्य, कल्याणदात्री और मंगलरूपिणी देवी को हम सदा प्रणाम करते हैं।।१७।।

वियत् - आकाश (ह) तथा (ई) कारसे युक्त, वीतिहोत्र-अग्नि (र) अर्धचन्द्र (ँ) से अलंकृत जो देवी का बीज है, वह सब मनोरथ पूर्ण करने वाला है। इस प्रकार इस एकाक्षर ब्रह्म (ह्रीं) का ऐसे यति ध्यान करते हैं, जिनका चित्त शुद्ध है, जो निरतिशयानन्दपूर्ण और ज्ञान के सागर हैं। (यह मन्त्र देवी प्रणव माना जाता है। ॐकार के समान ही यह प्रणव भी व्यापक अर्थ से भरा हुआ है। संक्षेप में इसका अर्थ इच्छा-ज्ञान-क्रिया, धार, अद्वैत, अखण्ड, सच्चिदानन्द, समरसीभूत, शिवशक्तिस्फुरण है।) ॥ १८-१९॥

वाणी (ऐं), माया (ह्रीं), ब्रह्मसू-काम (क्लीं) इसके आगे छठा व्यजंन अर्थात् च, वही वक्त्र अर्थात् आकार से युकत (चा), सूर्य (म), 'अवाम श्रोत्र'-दक्षिण कर्ण (उ) और बिन्दु अर्थात् अनुस्वार से युक्त (मुं), टकार से तीसरा ड, वही नारायण अर्थात् 'आ' से मिश्र (डा), वायु (य) वही अधर अर्थात् 'ऐ' से युक्त (यै) और 'विच्चे' यह नवार्ण मन्त्र उपासकों को आनन्द और ब्रह्मासायुज्ज्य देने वाला है।।२०।।

(इस मन्त्र का अर्थ-हे चित्स्वरूपिणी महासरस्वती ! हे सद्रूपिणी महालक्ष्मी ! हे आनन्दरूपिणी महाकाली ! ब्रह्मविद्या पाने के लिये हम

लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या। यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा। एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका। एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका। अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति॥२३॥

मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी।
यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता॥२४॥
तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्।
नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्॥२५॥

इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति। इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति-शतलक्षं प्रजप्त्वापि

सब समय तुम्हारा ध्यान करते है। हे महाकाली-महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणी चण्डिके! तुम्हें नमस्कार है। अविद्यारूप रज्जुकी दृढ़ ग्रन्थि को खोलकर मुझे मुक्त करो॥२१॥)

हत्कमल के मध्य में रहने वाली, प्रातःकालीन सूर्य के समान प्रभावशाली पाश और अंकुश धारण करने वाली, मनोहर रूपवाली, वरद ओर अभयमुद्रा धारण किए हुए हाथों वाली, तीन नेत्रों से युक्त, रक्त वस्त्र परिधान धारण करने वाली और कामधेनु के समान भक्तों के मनोरथ पूर्ण करने वाली देवी को मैं भजता हूँ॥२२॥

जिसका स्वरूप ब्रह्मादि नहीं जानते-इसलिये जिसे अज्ञेया कहते हैं, जिसका अन्त नहीं मिलता-इसलिये जिसे अनन्ता कहते हैं, जिसका लक्ष्य दीख नहीं पड़ता-इसलिये जिसे अलक्ष्या कहते हैं, जिसका जन्म समझ में नहीं आता-इसलिये जिसे अजा कहते हैं, जो अकेली ही सर्वत्र है-इसलिये जिसे एका कहते हैं, जो अकेली ही विश्वरूपी सजी हुई हैं-इसलिये जिसे नैका कहते हैं, वह इसीलिये अज्ञेया, अनन्ता, अलक्ष्या, अजा, एका और नेका कहाती हैं॥२३॥

सब मन्त्रों में 'मातृका'- मूलाक्षररूप से रहने वाली, शब्दों में ज्ञान (अर्थ) रूप से रहने वाली, ज्ञानों में 'चिन्मयातीता' शून्यों में 'शून्यसाक्षिणी'

सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति। शतमष्ठेत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः। दशवारं पठेद् यस्तु सद्यः पापै प्रमुच्यते। महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः॥२६॥ सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। निशीथे तुरीयसंध्यायां जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति। नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासांनिध्यं भवति। प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति। भौमाश्विन्यां महादेवीसंनिधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति। स महामृत्युं तरति य एवं वेद। इत्युपनिषत्॥

॥ इति देव्यथर्वशीर्षम्॥

तथा जिनसे और कुछ भी श्रेष्ठ नहीं है, वे दुर्गा के नाम से प्रसिद्ध है॥२४॥

उन दुर्विज्ञेय, दुराचारनाशक और संसार सागर से तारने वाली दुर्गा देवी को संसार से डरा हुआ मैं नमस्कार करता हूँ॥२५॥

इस अथर्वाशीर्षका जो अध्यनन करता है, उसे पांचों अथर्वशीर्षों के जप का फल प्राप्त होता है इस अथर्वशीर्षकों न जानकर जो प्रतिमास्थापन करता है, वह सैकड़ों लाख जप करके भी अर्चासिद्धि नहीं प्राप्त करता। अष्टोत्तरशत (१०८ बार) जप (इत्यादि) इसकी पुरश्चरणविधि है। जो इसका दस बार पाठ करता है, वह उसी क्षण पापों से मुक्त हो जाता है और महादेवी के प्रसाद से बड़े दुस्तर संकटों को पार कर जाता है॥२६॥

इसका सायंकाल में अध्ययन करने वाला दिन में किये हुए पापों को नाश करता है, प्रातःकाल में अध्ययन करने वाला रात्रि में किये हुए पापों का नाश करता है। दोनों समय अध्ययन करने वाला निष्पाप होता है। मध्य रात्रि तुरीय संध्या के समय जप करने से वाक्सिद्धि प्राप्त होती है। नयी प्रतिमा पर जप करने से देवता सान्निध्य प्राप्त होता है। प्राणप्रतिष्ठा के समय जप करने से प्राणों की प्रतिष्ठा होती है। भौमाश्विनी (अमृतसिद्धि) योग में महादेवी की सन्निधि में जप करने से महामृत्यु से तर जाता है। जो इस प्रकार जानता है, वह महामृत्यु से तर जाता है। इस प्रकार यह अविद्यानाशिनी ब्रह्मविद्या है।

अथ नवार्णविधिः

साधक देवताओं द्वारा सुरक्षित होने हेतु निम्नांकित रूप से नर्वाणमंत्र के विनियोग, न्यास और ध्यान आदि करें।

श्री गणपतिर्जयति। ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः; ऐ बीजम्, ह्रिं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।'

इसे पढ़कर जल गिराये।

नीचे लिखे न्यासवाक्यों में से एक-एक का उच्चारण करके दाहिने हाथ की अँगुलियों से क्रमशः सिर, मुख, हृदय, गुदा, दोनों चरण और नाभि-इन अंगों का स्पर्श करें।

ऋष्यादिन्यासः

ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्-छन्दोभ्यो नमः, मुखे। महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-देवताभ्यो नमः, हृदि। ऐं बीजाय नमः, गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः, नाभौः।

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे'-इस मूलमन्त्र से हाथों की शुद्धि करके अन्य करन्यास करे-

करन्यासः

करन्यास में हाथ की विभिन्न अँगुलियों, हथेलियों और हाथ के पृष्ठ भाग में मन्त्रों का न्यास (स्थापन) किया जाता है; इसी प्रकार अंगन्यास में हृदयादि अंगों में मन्त्रों की स्थापना होती है। मन्त्रों को चेतन और मूर्तिमान मानकर उन-उन अंगों का नाम लेकर उस मन्त्रमय देवताओं का ही स्पर्श और वन्दन किया जाता है, ऐसा करने से पाठ या जप करने वाला स्वयं

मन्त्रमय होकर मन्त्र देवताओं द्वारा सर्वथा सुरक्षित हो जाता है। उसके बाहर भीतर की शुद्धि होती है, दिव्य बल प्राप्त होता है और साधना निर्विघ्नातापूर्वक पूर्ण तथा परम लाभदायक होती है।

ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः (दोनों हाथों की तर्जनी अँगुलियों से दोनों अँगूठों का स्पर्श)।

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। (दोनों हाथों के अँगूठों से दोनों तर्जनी अँगुलियों का स्पर्श)।

ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः (अँगूठों से मध्यमा अँगुलियों का स्पर्श)।

ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः (अनामिका अँगुलियों का स्पर्श)।

ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः (कनिष्ठिका अँगुलियों का स्पर्श।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः (हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श)।

हृदयादिन्यासः

इसमें दाहिने हाथ की पाँचों अँगुलियों से 'हृदय' आदि अंगों का स्पर्श किया जाता है।

ॐ ऐं हृदयाय नमः (दाहिने हाथ की पाँचों अँगुलियों से हृदय का स्पर्श करें)।

ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। (सिर का स्पर्श)।

ॐ क्लीं शिखायै वषट् (शिखा का स्पर्श)।

ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम् (दाहिने हाथ की अँगुलियों से बायें कंधे का और बायें हाथ की अँगुलियों से दाहिने कंधे का साथ ही स्पर्श)।

ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् (दाहिने हाथ की अँगुलियों के अग्रभाग से दोनों नेत्रों और ललाट के मध्य भाग का स्पर्श)।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्। (यह वाक्य पढ़कर दाहिने हाथ को सिर के ऊपर से बायीं ओर से पीछे की ओर ले जाकर दाहिनी ओर से आगे की ओर ले आये और तर्जनी तथा मध्यमा अँगुलियों से बायें हाथ की हथेली पर ताली बजाये)।

अक्षरन्यासः

निम्नांकित वाक्यों को पढ़कर क्रमशः शिखा आदि का दाहिने हाथ की अँगुलियों से स्पर्श करें।

ॐ ऐं नमः, शिखायाम्। ॐ ह्रीं नमः, दक्षिणनेत्रे। ॐ क्लीं नमः, वामनेत्रे। ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णे। ॐ मुं नमः, वामकर्णे। ॐ डॉ. नमः, दक्षिणनासापुटे। ॐ यैं नमः, वामनासापुटे। ॐ विं नमः, मुखे। ॐ च्चें नमः, गुह्ये।

इस प्रकार न्यास करके मूलमन्त्र से आठ बार व्यापक (दोनों हाथों द्वारा सिर से पैर तक के सभी अंगों का स्पर्श) करें, फिर प्रत्येक दिशा में चुटकी बजाते हुए न्यास करें-

दिङ्न्यासः

ॐ ऐं प्राच्यै नमः। ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः। ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः। ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ॐ क्लीं वायव्यै नमः। ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

ध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषुचापपारिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां

यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥१॥
अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥२॥
घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥३॥

फिर **'ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः'** इस मन्त्र से माला की पूजा करके प्रार्थना करें-

प्रार्थना मंत्र

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥
ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।

इसके बाद **'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे'** इस मन्त्र का 108 बार जप करें और जप पूर्ण होने पर

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

इस श्लोक को पढ़कर देवी के हस्त में जप निवेदन करें।

सप्तशतीन्यासः

तदनन्तर सप्तशती के विनियोगः, न्यास और ध्यान करने चाहिए। न्यास की प्रणाली पूर्ववत् है-

प्रथममध्यमोत्तरचरित्राणां ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, श्री महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः, रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि, अग्निवायुसूर्यास्तत्वानि, ऋग्युजःसामवेदा ध्यानानि, सकलकामनासिद्धये श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डिपरिघायुधा॥ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥
ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च॥ तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि॥ मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्॥ अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः॥ कनिष्ठकाभ्यां नमः।
ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु

ते।। करततलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा०-हृदयाय नमः।

ॐ शूलेन पाहि नो देवि०-शिरसे स्वाहा।

ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च०-शिखायै वषट्।

ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि०-कवचाय हुम्।

ॐ खड्गशूलगदादीनि०-नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे०-अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थिनां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।



॥ श्री दुर्गायै नमः॥

अथ श्रीदुर्गासप्तशती

प्रथमोऽध्यायः

राजा सुरथ तथा समाधि वैश्य का राज्य व धनहीन होने पर भी मोहग्रस्त होना तथा मेधा ऋषि का राजा सुरथ और समाधि को भगवती की महिमा बताते हुए मधु-कैटभ-वध का प्रसंग सुनाना

विनियोगः

ॐ प्रथमचरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, महाकाली देवता, गायत्री छन्दः, नन्दा शक्तिः, रक्तदन्तिका बीजम्, अग्निस्तत्त्वम्, ऋग्वेदः स्वरूपम्, श्रीमहाकालीप्रीत्यर्थे प्रथमचरित्रजपे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐ खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वांगभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

विनियोग-हाथ में जल लेकर '**ॐ प्रथमचरित्रस्य०**' से '**जपे विनियोगः**' तक पढ़कर जल छोड़ दें।

विनियोगार्थ-प्रथम चरित्र के ब्रह्मा ऋषि, महाकाली देवता, गायत्री छन्द, नन्दा शक्ति, रक्तदन्तिका बीज, अग्नितत्त्व और ऋग्वेद स्वरूप है। श्रीमहाकाली रूपी देवता के प्रसन्नार्थ प्रथमचरित्र के जप (पाठ) में विनियोग करने का विधान है।

ध्यान-भगवान् विष्णु के सयन करने पर मधु और कैटभ को मारने के लिये कमलजन्मा ब्रह्माजी ने जिनका स्तवन किया था, उन महाकाली देवी का मैं सेवन करता हूँ। वे अपने दस हाथों में खड्ग, चक्र, गदा, बाण, धनुष, परिध, शूल, भुशुण्डि, मस्तक और शंख धारण करती हैं। उनके तीन नेत्र हैं। वे समस्त अंगों में दिव्य आभूषणों से विभूषित हैं। उनके शरीर की कान्ति नीलमणि के समान है तथा वे दस मुख और दस पैरों से युक्त हैं।

ॐ नमश्चण्डिकायै

'ॐ' ऐं मार्कण्डेय उवाच ।।१।।

सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः।
निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद् गदतो मम ।।२।।
महामायानुभावेन यथामन्वन्तराधिपः।
स बभूव महाभागः सावर्णिस्तनयो रवेः ।।३।।
स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं चैत्रवंशसमुद्भवः।
सुरथो नाम राजाभूत्समस्ते क्षितिमण्डले ।।४।।
तस्य पालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रानिवौरसान्।
बभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा ।।५।।
तस्य तैरभवद् युद्धमतिप्रबलदण्डिनः।
न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः ।।६।।

मार्कण्डेयजी बोले - ।।१।। सूर्य के पुत्र सावर्णि जी आठवें मनु कहे जाते हैं, उनकी उत्पत्ति की कथा विस्तारपूर्वक कहता हूँ, सुनो।।२।। सूर्य कुमार महाभाग सावर्णि भवगती महामाया के अनुग्रह से जिस प्रकार मन्वन्तर के स्वामी हुए, वहीं प्रसंग सुनाता हूँ।।३।। पूर्वकाल की बात है, स्वारोचिष मन्वन्तर में सुरथ नाम के एक राजा थे, जो चैत्रवंश में उत्पन्न हुए थे। उनका समस्त भूमण्डल पर अधिकार था।।४।। वे प्रजा का अपने औरस पुत्रों की भांति धर्मपूर्वक पालन करते थे तो भी उस समय कोलाविध्वंसी नाम के क्षत्रिय उनके शत्रु हो गये।।५।।

राजा सुरथ की दण्डनीति बड़ी प्रबल थी। उनका शत्रुओं के साथ संग्राम हुआ। यद्यपि कोलाविध्वंसी संख्या में कम थे, तो भी राजा सुरथ युद्ध में उनसे परास्त हो गये।।६।। तब वे युद्धभूमि से अपने नगर को लौट आये और केवल अपने देश के राजा होकर रहने लगे (समूची पृथ्वी से अब उनका अधिकार जाता रहा), किन्तु वहां भी उन प्रबल शत्रुओं उस समय महाभाग राजा सुरथ पर आक्रमण कर दिया।।७।।

राजा बल क्षीण हो चला था। इसलिये उनके दुष्ट, बलवान् एवं दुरात्मा मन्त्रियों ने वहां उनकी राजधानी में राजकीय सेना और खजाने को हथिया

ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत्।
आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः ॥७॥
अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः।
कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः ॥८॥
ततो मृगयाव्याजेन हृतस्वाम्यः स भूपतिः।
एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम् ॥९॥
स तत्राश्रममद्राक्षीद् द्विजवर्यस्य मेधसः।
प्रशान्तश्वापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितम् ॥१०॥
तस्थौ कंचित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः।
इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे ॥११॥
सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टचेतनः।
मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत् ॥१२॥
मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा।
न जाने स प्रधानो मे शूरहस्ती सदामदः ॥१३॥

लिया॥८॥ सुरथ का प्रभुत्व नष्ट हो चुका था, इसलिये वे शिकार खेलने के बहाने घोड़े पर सवार हो वहां से अकेले ही एक घने जंगल में चले गये॥६॥ वहां उन्होंने विप्रवर मेधा मुनि का आश्रम देखा, जहां कितने ही हिंसक जीव (अपनी स्वाभाविक हिंसावृत्ति छोड़कर) परम शान्त भाव से रहते थे। मुनि के बहुत से शिष्य उस वन की शोभा बढ़ा रहे थे॥१०॥ वहाँ जाने पर मुनि ने उनका सत्कार किया और वे उन मुनिश्रेष्ठ के आश्रम पर इधर-उधर विचरते हुए कुछ काल तक रहे॥११॥ फिर ममता से आकृष्टचित्त होकर वहां इस प्रकार चिन्ता करने लगे-'पूर्वकाल में मेरे पूर्वजों ने जिसका पालन किया था, वहीं नगर आज मुझसे रहित है। पता नहीं, मेरे दुराचारी भृत्यगण उसकी धर्मपूर्वक रक्षा करते हैं या नहीं। जो सदा मद की वर्षा करने वाला और शूरवीर था, वह मेरा प्रधान हाथी अब शत्रुओं के अधीन होकर न जाने किन भोगों को भोगता होगा? जो लोग मेरी कृपा, धन और भोजन पाने से सदा मेरे पीछे-पीछे चलते थे, वे निश्चय ही अब दूसरे राजाओं का अनुसरण करते

मम वैरिवशं यातः कान् भोगानुपलप्स्यते।
ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः ॥१४॥
अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम्।
असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम् ॥१५॥
संचितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यति।
एतच्चान्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः ॥१६॥
तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः।
स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः ॥१७॥
सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे।
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम् ॥१८॥
प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम् ॥१९॥

वैश्य उवाच॥२०॥

समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले ॥२१॥
पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः।
विहीनश्च धनैर्दारैः पुत्रैरादाय मे धनम् ॥२२॥

होंगे। उन अपव्ययी लोगों के द्वारा सदा खर्च होते रहने के कारण अत्यन्त कष्ट से जमा किया हुआ मेरा वह खजाना खाली हो जायगा।' ये तथा और भी कई बातें राजा सुरथ निरन्तर सोचते रहते थे। एक दिन उन्होंने वहाँ विप्रवर मेधा के आश्रम के निकट एक वैश्य को देखा और उससे पूछा-'भाई तुम कौन हो? यहाँ तुम्हारे आने का क्या कारण है? तुम क्यों शोकग्रस्त और अनमने से दिखायी देते हो? राजा सुरथ का यह प्रेमपूर्वक कहा हुआ वचन सुनकर वैश्य ने विनीत भाव से उन्हें प्रणाम करके कहा-॥१२-१९॥

वैश्य बोला - ॥२०॥ राजन् मैं धनियों के कुल में उत्पन्न एक वैश्य हूँ। मेरा नाम समाधि है।॥२१॥ मेरे दुष्ट स्त्री-पुत्रों ने धन के लोभ से मुझे घर से बाहर निकाल दिया है। मैं इस समय धन, स्त्री और पुत्रों से वंचित हूँ। मेरे विश्वसनीय बन्धुओं ने मेरा ही धन लेकर मुझे दूर कर दिया है, इसलिये दुखी होकर मैं वन में चला आया हूँ। यहाँ रहकर मैं इस बात को नहीं जानता कि मेरे पुत्रों की, स्त्री की और स्वजनों की कुशलता है या नही। इस समय घर में वे

वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः।
सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मिकाम् ।।२३।।
प्रवृत्तिं स्वजनानां च दाराणां चात्र संस्थितः।
किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम् ।।२४।।
कथं ते किं नु सद्वृत्ता दुर्वृत्ताः किं नु मे सुता ।।२५।।

राजोवाच ।।२६।।

यैर्निरस्तो भवाँल्लुब्धैः पुत्रदारादिभिर्धनैः ।।२७।।
तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम् ।।२८।।

वैश्य उवाच।।२९।।

एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः ।।३०।।
किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः।
यैः संत्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः ।।३१।।

कुशल से रहते हैं अथवा उन्हें कोई कष्ट है?।।२२-२४।। वे मेरे पुत्र कैसे हैं? क्या वे सदाचारी है अथवा दुराचारी हो गये है?।।२५।।

राजा ने पूछा - ।।२६।। जिन लोभी स्त्री-पुत्र आदि ने धन के कारण तुम्हें घर से निकाल दिया, उनके प्रति तुम्हारे चित्त में इतना स्नेह का बन्धन क्यों है।।२७-२८।।

वैश्य बोला - ।।२९।। आप मेरे विषय में जैसी बात कहते हैं, वह सब ठीक है।।३०।। किन्तु क्या करूँ, मेरा मन निष्ठुरता नहीं धारण करता। जिन्होंने धन के लोभ में पड़कर पिता के प्रति स्नेह, पति के प्रति प्रेम तथा आत्मीयजन के प्रति अनुराग को तिलाजंलि दे मुझे घर से निकाल दिया है, उन्हीं के प्रति मेरे हृदय में इतना स्नेह है। महामते ! गुणहीन बन्धुओं के प्रति भी जो मेरा चित्त इस प्रकार प्रेममग्न हो रहा है, यह क्या है-इस बात को मैं जानकर भी नहीं जान पाता। उनके लिये मैं लम्बी साँसे ले रहा हूँ और मेरा हृदय अत्यन्त दुःखित हो रहा है।।३१-३३।। उन लोगों में प्रेम का सर्वथा अभाव है; तो भी उनके प्रति जो मेरा मन निष्ठुर नहीं हो पाता, इसके लिये क्या करूँ? ।।३४।।

मार्कण्डेय जी कहते हैं-।।३५।। ब्रह्मन् ! तदनन्तर राजाओं में श्रेष्ठ सुरथ और वह समाधि नामक वैश्य दोनों साथ-साथ मेधा मुनि की सेवा में उपस्थित हुए

पतिस्वजनहार्दं च हार्दि तेष्वेव मे मनः।
किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते ॥३२॥
यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु।
तेषा कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते ॥३३॥
करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम् ॥३४॥

मार्कण्डेय उवाच॥३५॥

ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ ॥३६॥
समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः।
कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथार्हं तेन संविदम् ॥३७॥
उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ। ।३८॥

राजोवाच॥३९॥

भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत् ॥४०॥
दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततां विना।

और उनकें साथ यथायोग्य न्यायानुकूल विनयपूर्ण बर्ताव करके बैठे। तत्पश्चात वैश्य और राजा ने कुछ वार्तालाप आरम्भ किया॥३६-३८॥
राजा ने कहा-॥३९॥ भगवन् ! मै। आपसे एक बात पूछना चाहता हूँ, उसे बताइये॥४०॥ मेरा चित्त अपने अधीन न होने के कारण वह बात मेरे मनको बहुत दुःख देती है। जो राज्य मेरे हाथ से चला गया है, उमें और उसके सम्पूर्ण अंगों में मेरी ममता बनी हुई है॥४१॥ मुनिश्रेष्ठ ! यह जानते हुए भी कि वह अब मेरा नहीं है, अज्ञानी की भांति मुझे उसके लिये दुःख होता है; यह क्या है? इधर यह वैश्य भी घर से अपमानित होकर आया है। इसके पुत्र, स्त्री और भृत्यों ने इसे छोड़ दिया है॥४२॥ स्वजनों ने भी इसका परित्याग कर दिया है, तो भी यह उनके प्रति अत्यन्त हार्दिक प्रेम रखता है। इस प्रकार यह तथा मैं दोनों ही बहुत दुःखी हैं॥४३॥ जिसमें प्रत्यक्ष दोष देखा गया है, उस विषय के लिये भी हमारे मन में ममताजनित आकर्षण पैदा हो रहा है। महाभाग ! हम दोनों समझदार हैं; तो भी हममें जो मोह पैदा हुआ है, यह क्या है? विवेकशून्य पुरुष की भांति मुझमें और इसमें भी यह मूढ़ता

ममत्वं गतराज्यस्य राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि ।।४१।।
जानतोऽपि यथाज्ञस्य किमेतन्मुनिसत्तम।
अयं च निकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः ।।४२।।
स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति।
एवमेष तथाहं च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ ।।४३।।
दृष्टदोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ।
तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि ।।४४।।
ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता ।।४५।।

ऋषिरुवाच।।४६।।

ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे ।।४७।।
विषयश्च महाभाग याति चैवं पृथक् पृथक्।
दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथापरे ।।४८।।

प्रत्यक्ष दिखाई देती है।।४४-४५।।
ऋषि बोले - ।।४६।। महाभाग ! विषय मार्ग का ज्ञान सब जीवों को है।।४७।। इसी प्रकार विषय भी सबके लिये अलग-अलग हैं, कुछ प्राणी दिन में नहीं देखते और दूसरे रात में ही नहीं देखते।।४८।। तथा कुछ जीव ऐसे हैं, जो दिन और रात्रि में भी बराबर ही देखते हैं। यह ठीक है कि मनुष्य समझदार होते हैं; किन्तु केवल वे ही ऐसे नहीं होते।।४६।। पशु, पक्षी और मृग आदि सभी प्राणी समझदार होते हैं। मनुष्यों की समझ भी वैसी ही होती है, जैसी उन मृग और पक्षियों की होती है।।५०।। तथा जैसी मनुष्यों की होती है, वैसे ही उन मृग-पक्षी आदि की होती है। यह तथा अन्य बातें भी प्रायः दोनों में समान ही हैं। समझ होने पर भी पक्षियों को तो देखो, ये स्वयं भूख से पीड़ित होते हुए भी मोहवश बच्चों की चोंच में कितने चाव से अन्न के दाने डाल रहे हैं! नरश्रेष्ठ ! क्या तुम नहीं देखते कि ये मनुष्य समझदार होते हुए भी लोभवश अपने किये हुए उपकार का बदला पाने के लिये पुत्रों की अभिलाषा करते हैं? यद्यपि उन सब में समझ की कमी नहीं है, तथापि वे संसार की स्थिति (जन्म-मरण की परम्परा) बनाये रखने वाले भगवती महामाया के प्रभाव द्वारा ममतामय भँवर से युक्त मोह के गहरे गर्त में गिराये

केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः।
ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किं तु ते न हि केवलम् ॥४९॥
यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः।
ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम् ॥५०॥
मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः।
ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान् पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु ॥५१॥
कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा।
मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान् प्रति ॥५२॥
लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेतान् किं न पश्यसि।
तथापि ममतावर्त्ते मोहगर्ते निपातिताः ॥५३॥
महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा।
तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः ॥५४॥
महामाया हरेश्चैषा तया सम्मोह्यते जगत्।
ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा॥ ५५॥
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।
तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम् ॥५६॥
सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये।
सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी ॥५७॥

गये हैं। इसलिये इसमें आश्चर्य नहीं करना चाहिये। जगदीश्वर भगवान् विष्णु की योगनिद्रारूपा जो भगवती महामाया हैं, उन्हीं से यह जगत् मोहित हो रहा है। वे भगवती महामाया देवी ज्ञानियों के भी चित्त को बलपूर्वक खींचकर मोह में डाल देती हैं। वे ही इस सम्पूर्ण चराचर जगत् की सृष्टि करती हैं तथा वे ही प्रसन्न होने पर मनुष्यों को मुक्ति के लिये वरदान देती हैं। वे ही परा विद्या संसार-बन्धन और मोक्ष की हेतुभूता सनातनी देवी तथा सम्पूर्ण ईश्वरों की भी अधीश्वरी हैं ॥५१-५८॥
राजा ने पूछा - ॥५९॥ भगवन् ! जिन्हें आप महामाया कहते हैं, वे देवी कौन हैं? ब्रह्मन् ! उनका आविर्भाव कैसे हुआ? तथा उनके चरित्र कौन-कौन हैं? ब्रह्मवेत्ताओं

संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी ॥५८॥

राजोवाच॥५९॥

भगवन् का हि सा देवी महामायेति यां भवान् ॥६०॥

ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज।

यत्प्रभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा ॥६१॥

तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदां वर ॥६२॥

ऋषि उवाच॥६३॥

नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम् ॥६४॥

तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम।

देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा ॥६५॥

उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते।

योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते ॥६६॥

आस्तीर्य शेषमभजत्कल्पान्ते भगवान् प्रभुः।

तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ ॥६७॥

विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ।

स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः ॥६८॥

में श्रेष्ठ महर्षे ! उन देवी का जैसा प्रभाव हो, जैसा स्वरूप हो और जिस प्रकार प्रादुर्भाव हुआ हो, वह सब मैं आपके मुख से सुनना चाहता हूँ॥६०-६२॥

ऋषि बोले - ॥६३॥ राजन् ! वास्तव में तो वे देवी नित्यस्वरूपा ही हैं। सम्पूर्ण जगत् उन्हीं का रूप है तथा उन्होंने समस्त विश्व को व्याप्त कर रखा है, तथापि उनका प्राकट्य अनेक प्रकार से होता है। वह मुझसे सुनो। यद्यपि वे नित्य और अजन्मा हैं, तथापि जब देवताओं का कार्य सिद्ध करने के लिये प्रकट होती हैं, उस समय लोक में उत्पन्न हुई कहलाती हैं। कल्प के अन्त में जब सम्पूर्ण जगत् एकार्णव में निमग्न हो रहा था और सबके प्रभु भगवान् विष्णु शेषनाग की शय्या बिछाकर योगनिन्द्रा का आश्रय ले सो रहे थे, उस समय उनके कानों के मैल से दो भयंकर असुर उत्पन्न हुए, जो मधु और कैटभ के नाम से विख्यात थे। वे दोनों ब्रह्माजी का वध करने को तैयार हो गये। भगवान् विष्णु के नाभिकमल में विराजमान प्रजापति ब्रह्माजी ने जब उन

दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम्।
तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयस्थितः ॥६९॥
विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयाम्।
विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ॥७०॥
निद्रां भवगतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥७१॥

ब्रह्मोवाच॥७२॥

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ॥७३॥
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः ॥७४॥
त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा।
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ॥७५॥
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा।
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ॥७६॥
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये।
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ॥७७॥
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी।
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ॥७८॥

दोनों भयानक असुरों को अपने पास आया जाना और भगवान् को सोया हुआ देखा, तब एकाग्रचित होकर उन्होंने भगवान् विष्णु को जगाने के लिये उनके नेत्रों में निवास करने वाली योगनिद्रा का स्तवन आरम्भ किया। जो इस विश्व की अधीश्वरी, जगत् को धारण करने वाली, संसार का पालन और संहार करनेवाली तथा तेजःस्वरूप भगवान् विष्णु की अनुपम शक्ति हैं, उन्हीं भवगती निद्रादेवी की महामोहरूपा, महादेवी और महासुरी हो। तुम्हीं तीनों गुणों को उत्पन्न करने वाली सबकी प्रकृति हो। भयंकर कालरात्रि, महारात्रि और मोहरात्रि भी तुम्हीं हो । तुम्हीं श्री, तुम्हीं ईश्वरी, तुम्हीं ह्री और तुम्हीं बोधस्वरूपा बुद्धि हो। लज्जा, पुष्टि, तुष्टि, शान्ति और क्षमा भी तुम्हीं हो। तुम खड्गधारिणी, शूलधारिणी, घोररूपा तथा गदा, चक्र, शंख और धनुष धारण करनेवाली हो। बाण, भुशुण्डी और परिघ-ये भी तुम्हारे अस्त्र हैं। तुम सौम्य और सौम्यतर हो- इतना ही नहीं, जितने भी सौम्य एवं सुन्दर पदार्थ हैं, उन

कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा।
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ।।७९।।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ।।८०।।
शंखिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा।
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ।।८१।।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।
यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ।।८२।।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा।
यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ।।८३।।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ।।८४।।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुंशक्तिमान् भवेत्।
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ।।८५।।

सबकी अपेक्षा तुम अत्यधिक सुन्दरी हो। पर और अपर-सबसे परे रहने वाली परेश्वरी तुम्हीं हो। सर्वस्वरूपे देवि ! कहीं भी सत्असत्रूप जो कुछ वस्तुएँ हैं और उन सबकी जो शक्ति है,वह तुम्हीं हो। ऐसी अवस्था में आपकी स्तुति क्या हो सकती है? जो इस जगत् की सृष्टि, पालन और संहार करते हैं, उन भगवान् को भी जब तुमने निद्रा के अधीन कर दिया है, तब तुम्हारी स्तुति करने में यहाँ कौन समर्थ हो सकता है? मुझको, भगवान् शंकर को तथा भगवान् विष्णु को भी तुमने ही शरीर धारण कराया है; अतः तुम्हारी स्तुति करने की शक्ति किसमें है? देवी! तुम तो अपने इन उदार प्रभावों से ही प्रशंसित हो। ये जो दोनों दुर्धर्ष असुर मधु और कैटभ हैं, इनको मोह में डाल दो और जगदीश्वर भगवान् विष्णु को शीघ्र ही जगा दो। साथ ही इनके, भीतर इन दोनों महान् असुरों को मार डालने की बुद्धि उत्पन्न कर दो।।७३-८७।।
ऋषि कहते हैं- ।।८८।। राजन! जब ब्रह्माजी ने वहाँ मधु और कैटभ को मारने के उद्देश्य से भगवान् विष्णु को जगाने के लिये तमोगुण की अधिष्ठात्री देवी योगनिद्रा की इस प्रकार स्तुति की, तब वे भवगान् के नेत्र, मुख, नासिका, बाहु, हृदय और वक्षःस्थल से निकलकर अव्यक्तजन्मा ब्रह्माजी की दृष्टि के समक्ष खड़ी हो यगीं। योगनिद्रा से मुक्त होने पर जगत् के स्वामी

मोहयैतो दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ।
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ॥८६॥
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥८७॥

ऋषिरुवाच ॥८८॥

एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा ॥८९॥
विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ।
नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः ॥९०॥
निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः।
उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः ॥९१॥
एकार्णवेऽहिशयनात्ततः स ददृशे च तौ।
मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ ॥९२॥
क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ।
समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः ॥९३॥
पञ्च वर्ष सहस्त्राणि बाहु प्रहरणो विभु.।
तावप्यतिब.ोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ ॥९४॥
उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियतामिति केशवम् ॥९५॥

श्रीभगवानुवाच॥९६॥

भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि ॥९७॥
किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मम ॥९८॥

भगवान् जनार्दन उस एकार्णव के जल में शेषनाग की शय्या से जाग उठे। फिर उन्होंने उन दोनों असुरों को देखा। वे दुरात्मा मधु और कैटभ अत्यन्त बलवान् तथा पराक्रमी थे और क्रोध से लाल आँखे किये ब्रह्माजी को खा जाने के लिये उद्योग कर रहे थे। तब भगवान् श्री हरि ने उठकर उन दोनों के साथ पाँच हजार वर्षों तक केवल बाहुयुद्ध किया। वे दोनों भी अत्यन्त बल के कारण उन्मत्त हो रहे थे। इधर महामायाने भी उन्हें मोह में डाल रखा था, इसलिये वे भगवान् विष्णु से कहने लगे-'हम तुम्हारी वीरता से संतुष्ट हैं। तुम

ऋषिरुवाच।।९९।।
वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत् ।।१००।।
विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान् कमलेक्षणः।
आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता ।।१०१।।
ऋषिरुवाच ।।१०२।।
तथेत्युक्त्वा भगवता शंखचक्रगदाभृता।
कृत्वा चक्रेण वै च्छिन्ने जघने शिरसी तयोः ।।१०३।।
एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम्।
प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः श्रृणु वदामि ते ।।ऐंॐ।।१०४।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
मधुकैटभवधो नाम प्रथमोध्यायः।।१।।

उवाच १४, अर्धश्लोकाः २४, श्लोकाः ६६,
एवमादितः।।१०४।।

हम लोगों से कोई वर माँगो'।।८१-९५।। श्रीभगवान् बोले - ।।९६।। यदि तुम दोनों मुझ पर प्रसन्न हो तो अब मेरे हाथ से मारे जाओ। बस, इतना-सा ही मैंने वर माँगा है। यहाँ दूसरे किसी वर से क्या लेना है।।९७-९८।।
ऋषि कहते हैं - ।।९९।। इस प्रकार धोखे में आ जाने पर जब उन्होंने सम्पूर्ण जगत् में जल ही जल देखा, तब कमलनयन भगवान् से कहा - 'जहाँ पृथ्वी जल में डूबी हुई न हो- जहाँ सूखा स्थान हो, वहीं हमारा वध करो।।१००-१०१।।
ऋषि कहते हैं - ।।१०२।। तब 'तथास्तु' कहकर शंख, चक्र और गदा धारण करने वाले भगवान् ने उन दोनों के मस्तक अपनी जांघ पर रखकर चक्र से काट डाले। इस प्रकार ये देवी महामाया ब्रह्माजी की स्तुति करने पर स्वयें प्रकट हुई थीं। अब पुनः तुम से उनके प्रभाव का वर्णन करता हूँ, सुनो।।१०३-१०४।।
इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में 'मधु-कैटभ-वध' नामक पहला अध्याय पूरा हुआ।।

द्वितीयोऽध्यायः

देवताओं का महिषासुर से पराजित होना तथा देवताओं का भगवान विष्णु व शंकर से यथावत वृतान्त कहना तथा देवताओं के तेज से देवी का प्रादुर्भाव और महिषासुर की सेना का वध-

विनियोगः

ॐ मध्यमचरित्रस्य विष्णुर्ऋषिः, महालक्ष्मीर्देवता, उष्णिक् छन्दः, शाकम्भरी शक्तिः, दुर्गा बीजम्, वायुस्तत्त्वम्, यजुर्वेदः स्वरूपम्, श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं मध्यमचरित्रजपे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।

'ॐ ह्रीं' ऋषिरुवाच।।१।।

देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमशमब्दशतं पुरा।
महिषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे ।।२।।

विनियोग-हाथ में जल लेकर **'ॐ मध्यमचरित्रस्य०'** से आरम्भ कर **'मध्यमचरित्रजपे विनियोग'** पर्यन्त विनियोग-वाक्य पढ़कर भूमि पर जल गिरा दे।

विनियोगार्थ-इस मध्यम चरित्र के विष्णु भगवान् ऋषि, महालक्ष्मी देवता, उष्णिक् छन्द, शाकम्भरी शक्ति, दुर्गा बीज, वायुतत्त्व और यजुर्वेद स्वरूप मांना गया है। श्रीमहालक्ष्मी की प्रसन्नता के निमित्त मध्यम चरित्र के पाठ में इसका विनियोग वर्णित है।

ध्यान-मैं कमल के आसन पर बैठी हुई प्रसन्न मुखवाली महिषासुरमर्दिनी भवगती महालक्ष्मी भजन करता हूँ, जो अपने हाथों में अक्षमाला, फरसा, गदा, बाण, वज्र, कमल, धनुष, कुण्डिका, दण्ड, शक्ति, खड्ग, ढाल, शंख,

तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम्।
जित्वा च सकलान् देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः ॥३॥
ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम्।
पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ ॥४॥
यथावृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम्।
त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभिभव विस्तरम् ॥५॥
सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च।
अन्येषां चाधिकारान् स स्वयमेवाधितिष्ठति ॥६॥
स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि।
विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना ॥७॥
एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम्।
शरणं वः प्रपन्ना स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम् ॥८॥
इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः।
चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ ॥९॥
ततोऽतिकोपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः।
निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शंकरस्य च ॥१०॥

घण्टा, मधुपात्र, शूल, पाश और चक्र धारण करती हैं।

ऋषि कहते हैं – ॥१॥ पूर्वकाल में देवताओं और असुरों में पूरे सौ वर्षों तक घोर संग्राम हुआ था। उसमें असुरों का स्वामी महिषासुर था और देवताओं के नायक इन्द्र थे। उस युद्ध में देवताओं की सेना महाबली असुरों से परास्त हो गयी। सम्पूर्ण देवताओं को जीतकर महिषासुर इन्द्र बन बैठा॥२-३॥ तब पराजित देवता प्रजापति ब्रह्माजी को आगे करके उस स्थान पर गये, जहाँ भगवान् शंकर और विष्णु विराजमान थे॥४॥ देवताओं ने महिषासुर के पराक्रम तथा अपनी पराजय का यथावत् वृत्तान्त उन दोनों देवेश्वरों से विस्तारपूर्वक कह सुनाया॥५॥ वे बोले-'भगवन् ! महिषासुर सूर्य, इन्द्र, अग्नि, वायु, चन्द्रमा, यम, वरूण तथा अन्य देवताओं के भी अधिकार छीनकर स्वयं ही सबका अधिष्ठाता बना बैठा है॥६॥ उस दुरात्मा महिषने समस्त देवताओं को स्वर्ग से निकाल दिया है। अब वे मनुष्यों की भांति पृथ्वी पर विचरते हैं॥७॥ दैत्यों की यह सारी करतूत हमने आप लोगों से

अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः।
निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत ॥११॥
अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम्।
ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम् ॥१२॥
अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम्।
एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा ॥१३॥
यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम्।
याम्येन चाभवन् केशा बाहवो विष्णुतेजसा ॥१४॥
सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत्।
वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः ॥१५॥
ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदङ्गुल्योऽर्कतेजसा।
वसूनां च कराङ्गुल्यः कौबेरेण च नासिका ॥१६॥

कह सुनायी। अब हम आपकी ही शरण में आये हैं। उसके वध का कोई उपाय सोचिये।।८।।

इस प्रकार देवताओं के वचन सुनकर भगवान् विष्णु और शिव ने दैत्यों पर बड़ा क्रोध किया। उनकी भौहें तन गयीं और मुँह टेढ़ा हो गया।।९।। तब अत्यन्त कोप में भरे हुए चक्रपाणि श्री विष्णु के मुख से एक महान् तेज प्रकट हुआ। इसी प्रकार ब्रह्मा, शंकर तथा इन्द्र आदि अन्यान्य देवताओं के शरीर से भी बड़ा भारी तेज निकला। वह सब मिलकर एक हो गया।।१०-११।। महान् तेज का वह पुंज जाज्वल्यमान पर्वत सा जान पड़ा। देवताओं ने देखा, वहां उसकी ज्वालाएं सम्पूर्ण दिशाओं में व्याप्त हो रहीं थीं।।१२।। सम्पूर्ण देवताओं के शरीर से प्रकट हुए उस तेज की कहीं तुलना नहीं थी। एकत्रित होने पर वह एक नारी के रूप में परिणत हो गया और अपने प्रकाश से तीनों लोकों में व्याप्त जान पड़ा।।१३।। भगवान् शंकर का जो तेज था, उससे उस देवी का मुख प्रकट हुआ। यमराज के तेज से उसके सिर में बाल निकल आये। श्रीविष्णु भगवान् के तेज से उसकी भुजाएँ उत्पन्न हुईं।।१४।।

चन्द्रमा के तेज से स्तनों का और इन्द्र के तेज से मध्यभाग (कटिप्रदेश) का प्रादुर्भाव हुआ। वरुण के तेज से जंघा और पिंडली तथा

तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा।
नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा ॥१७॥
भ्रुवौ च संध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च।
अन्येषां चैव देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा ॥१८॥
ततः समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवाम्।
तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः ॥१९॥
शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक्।
चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाद्य स्वचक्रतः ॥२०॥
शंख च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः।
मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी ॥२१॥
वज्रमिन्द्रः समुत्पाद्य कुलिशादमराधिपः।
ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद् गजात् ॥२२॥
कालदण्डाद्यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ।
प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम् ॥२३॥

पृथ्वी के तेज से नितम्बभाग प्रकट हुआ।।१५।। ब्रह्मा के तेज से दोनों चरण और सूर्य के तेज से उनकी अँगुलियाँ हुईं । वसुओं के तेज से हाथों की अँगुलियाँ और कुबेर के तेज से नासिका प्रकट हुई।।१६।। उसकी भौंहे संध्या के और कान वायु के तेज से उत्पन्न हुए थे। इसी प्रकार अन्यान्य देवताओं के तेज से भी उस कल्याणमयी देवी का आविर्भाव हुआ।।१८।।

तदनन्तर समस्त देवताओं के तेज पुंज से प्रकट हुई देवी को देखकर महिषासुर के सताये हुए देवता बहुत प्रसन्न हुए।।१६।। पिनाकधारी भगवान् शंकर ने अपने शूल से एक शूल निकाल कर उन्हें दिया; फिर भगवान् विष्णु ने भी अपने चक्र से चक्र उत्पन्न करके भगवती को अर्पण किया।।२०।। वरुण ने भी शंख भेंट किया, अग्नि ने उन्हें शक्ति दी और वायु ने धनुष तथा बाण से भरे हुए दो तरकस प्रदान किये॥ २१।। सहस्त्र नेत्रों वाले देवराज इन्द्र ने अपने वज्र से वज्र उत्पन्न करके दिया और ऐरावत हाथी से उताकर एक घण्टा भी प्रदान किया।।२२।। यमराज ने कालदण्ड से दण्ड,

समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन् दिवाकरः।
कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्याश्चर्म च निर्मलम् ॥२४॥
क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे।
चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च ॥२५॥
अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान् सर्वबाहुषु।
नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमम् ॥२६॥
अंगुलीयकरत्नानि समस्तास्वगुंलीषु च।
विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम् ॥२७॥
अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेद्यं च दंशनम्।
अम्लानपंकजां मालां शिरस्युरसि चापराम् ॥२८॥
अददज्जलधिस्तस्यै पकजं चातिशोभनम्।
हिमवान् वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च ॥२९॥
ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः।
शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम् ॥३०॥

वरूण ने पाश, प्रजापति ने स्फटिकाक्ष की माला तथा ब्रह्माजी ने कमण्डलु भेंट किया॥२३॥ सूर्य ने देवी के समस्त रोम-कूपों में अपनी किरणों का तेज भर दिया। काल ने उन्हें चमकती हुई ढाल और तलवार दी॥२४॥ क्षीरसमुद्र ने उज्ज्वल हार तथा कभी जीर्ण न होने वाले दो दिव्य वस्त्र भेंट किये। साथ ही उन्होंने दिव्य चूडामणि, दो कुण्डल, कड़े, उज्ज्वल अर्धचन्द्र सब बाहुओं के लिये केयूर, दोनों चरणों के लिये निर्मल नूपुर, गले की सुन्दर हँसली और सब अँगुलियों में पहनने के लिये रत्नों की बनी अँगुठियाँ भी दीं। विश्वकर्मा ने उन्हें अत्यन्त निर्मल फरसा भेंट किया॥२५-२७॥ साथ ही अनेक प्रकार के अस्त्र और अभेद्य कवच दिये; इनके सिवा मस्तक और वक्षःस्थल पर धारण करने के लिए कभी न कुम्हलाने वाले कमलों की मालाएँ दीं॥२८॥ जलधिने उन्हें सुन्दर कमल का फूल भेंट किया। हिमालय ने सवारी के लिये सिंह तथा भांति-भांति के रत्न समर्पित किये॥२६॥ धनाध्यक्ष कुबेर ने मधु से भरा पान पात्र दिया तथा सम्पूर्ण नागों के राजा शेष ने, जो इस पृथ्वी को धारण करते हैं, उन्हें बहुमूल्य मणियों से विभूषित नागहार भेंट दिया। इसी

नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम्।
अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा ॥३१॥
सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः।
तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः ॥३२॥
अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत्।
चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे ॥३३॥
चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः।
जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम् ॥३४॥
तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः।
दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः ॥३५॥
सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः।
आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः ॥३६॥

प्रकार अन्य देवताओं ने भी आभूषण और अस्त्र-शस्त्र देकर देवी का सम्मान किया। तत्पश्चात उन्होंने बारंबार अट्टाहसपूर्वक उच्चस्वर से गर्जना की। उनके भयंकर नाद से सम्पूर्ण आकाश गूँज उठा।।३०-३२।। देवी का वह अत्यन्त उच्चस्वर से किया हुआ सिंहनाद कहीं समा न सका, आकाश उसके सामने लघु प्रतीत होने लगा। उससे बड़े जोर की प्रतिध्वनि हुई, जिससे सम्पूर्ण विश्व में हलचल मच गयी और समुद्र काँप उठे।।३३।। पृथ्वी डोलने लगी और समस्त पर्वत हिलने लगे। उस समय देवताओं ने अत्यन्त प्रसन्नता के साथ सिंहवाहिनी भवानी से कहा- 'देवि ! तुम्हारी जय हो'।।३४।। साथ ही महर्षियों ने भक्तिभाव से विनम्र होकर उनका स्तवन किया।

सम्पूर्ण त्रिलोकी को क्षोभग्रस्त देख दैत्यगण अपनी समस्त सेना को कवच आदिसे सुसज्जित कर, हाथों में हथियार ले सहसा उठकर खड़े हो गये। उस समय महिषासुर ने बड़े क्रोध में आकर कहा- 'आः ! यह क्या हो रहा है?' फिर वह सम्पूर्ण असुरों से घिरकर उस सिंहनाद की ओर लक्ष्य करके दौड़ा और आगे पहुँचकर उसने देवी को देखा, जो अपनी प्रभा से तीनों लोकों को प्रकाशित कर रही थीं।।३५-३७।। उनके चरणों के भार से पृथ्वी दबी जा रही थी। माथे के मुकुट से आकाश में रेखा-सी खिंच रही

अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः।
स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा ॥३७॥
पादाक्रान्त्या नतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम्।
क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिःस्वनेन ताम् ॥३८॥
दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद् व्याप्य संस्थिताम्।
ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम् ॥३९॥
शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपितदिगन्तरम्।
महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः ॥४०॥
युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्गबलान्वितः।
रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः ॥४१॥
अयुध्यतायुतानां च सहस्रेण महाहनुः।
पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः ॥४२॥

थी तथा वे अपने धनुष की टंकार से सातों पातालों को क्षुब्ध किये देती थीं॥३८॥ देवी अपनी हजारों भुजाओं से सम्पूर्ण दिशाओं को आच्छादित करके खड़ी थीं। तदनन्तर उनके साथ दैत्यों का युद्ध छिड़ गया॥३९॥ नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों के प्रहार से सम्पूर्ण दिशाएँ उद्भासित होने लगीं। चिक्षुर नामक महान् असुर महिषासुर का सेनानायक था॥४०॥ वह देवी के सथ युद्ध करने लगा। अन्य दैत्यों की चतुरंगिनी सेना साथ लेकर चामर भी लड़ने लगा। साठ हजार रथियों के साथ आकर उदग्र नामक महादैत्य ने लोहा लिया॥४१॥ एक करोड़ रथियों को साथ लेकर महाहनु नामक दैत्य युद्ध करने लगा। जिसके रोएँ तलवार के समान तीखे थे, वह असिलोमा नामका महादैत्य पांच करोड़ रथी सैनिकों सहित युद्ध में आ डटा॥४२॥ साठ लाख रथियों से घिरा हुआ बाष्कल नामक दैत्य भी उस युद्धभूमि में लड़ने लगा। परिवारित नामक राक्षस हाथीसवार और घुड़सवारों के अनेक दलों तथा एक करोड़ रथियों सेना लेकर युद्ध करने लगा। विडाल नामक दैत्य पांच अरब रथियों से घिरकर लोहा लेने लगा। इनके अतिरिक्त और भी हजारों महादैत्य रथ, हाथी और घोड़ों की सेना साथ लेकर वहाँ देवी के सथ युद्ध करने लगे। स्वयं महिषासुर उस रणभूमि में कोटि-कोटि सहस्त्र रथ, हाथी और घोड़ों की

अयुतानां शतैः षड्भिर्बाष्कलो युयुधे रणे।
गजवाजिसहस्त्रौघैरनेकैः परिवारितः ॥४३॥
वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत।
बिडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाशद्भिरथायुतैः ॥४४॥
युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः।
अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्वृताः ॥४५॥
युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः।
कोटिकोटिसहस्त्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा ॥४६॥
हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः।
तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा ॥४७॥
युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः।
केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित्पाशांस्तथापरे ॥४८॥
देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः।
सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका ॥४९॥

सेना से घिर हुआ खड़ा था। वे दैत्य देवी के साथ तोमर, भिन्दिपाल, शक्ति, मूसल, खड्ग, परशु और पट्टिश आदि अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार करते हुए युद्ध कर रहे थे। कुछ दैत्यों ने उन पर शक्ति का प्रहार किया, कुछ लोगों ने पाश फेंके।।४३-४८।। तथा कुछ दूसरे दैत्यों ने खड्गप्रहार करके दैवी को मार डालने का उद्योग किया। देवी ने क्रोध में भरकर खेल-खेल में ही अपने अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा करके दैत्यों के वे समस्त, अस्त्र-शस्त्र काट डाले। उनके मुख पर परिश्रम या थकावट का रंचमात्र भी चिह्न नहीं था, देवता और ऋषि उनकी स्तुति करते थे और वे भगवती परमेश्वरी दैत्यों के शरीरों पर अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा करती रहीं।

देवी का वाहन सिंह भी क्रोध में भरकर गर्दन के बालों को हिलाता हुआ असुरों की सेना में इस प्रकार विचरने लगा, मानो वनों में दावानल फैल रहा हो। रणभूमि में दैत्यों के साथ युद्ध करती हुई अम्बिका देवी ने जितने निःश्वास छोड़े, वे सभी तत्काल सैकड़ों-हजारों गणों के रूप में प्रकट हो गये

लीलयैव प्रचिच्छेद जिनशस्त्रास्त्रवर्षिणी।
अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः ।।५०।।
मुमोचासुरदेहषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी।
सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेसरी ।।५१।।
चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताशनः।
निःश्वासान् मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका ।।५२।।
त एव सद्यः सम्भूता गणाः शतसहस्रशः।
युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः ।।५३।।
नाशयन्तोऽसुरगणान् देवीशक्त्युपबृंहिताः।
अवादयन्त पटहान् गणाः शंखास्तथापरे ।।५४।।
मृदगांश्च तथैवान्ये तस्मिन् युद्धमहोत्सवे।
ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभिः ।।५५।।
खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान्।
पातयामास चैवान्यान् घण्टास्वनविमोहितान् ।।५६।।

और परशु, भिन्दिपाल, खड्ग तथा पट्टिश आदि अस्त्रों द्वारा अुसरों का सामना करने लगे।।४६-५३।। देवी की शक्ति से बढ़े हुए वे गण असुरों का नाश करते हुए नगाड़ा और शंख आदि बाजे बजाने लगे।।५४।। उस संग्राम महोत्सव में कितने ही गण मृदंग बजा रहे थे। तदनन्तर देवी ने त्रिशूल से, गदा से, शक्ति की वर्षा से और खड्ग आदि से सैकड़ों महादैत्यों का संहार कर डाला। कितनों को घण्टे के भयंकर नाद से मूर्च्छित करके मार गिराया।।५५-५६।। बहुतेरे दैत्यों को पाश से बाँधकर धरती पर घसीटा। कितने ही दैत्य उनकी तीखी तलवार की मारसे दो-दो टुकड़े हो गये।।५७।। कितने ही गदाकी चोट से घायल हो धरती पर सो गये। कितने ही मूसल की मार से अत्यन्त आहत होकर रक्त वमन करने लगे। कुछ दैत्य शूल से छाती फट जाने के कारण पृथ्वी पर ढेर हो गये। उस रणाङ्गण में बाणसमूहों की वृष्टि से कितने ही असुरों की कमर टूट गयी।।५८-५६।। बाज की तरह झपटने वाले देवपीडक दैत्यगण अपने प्राणों से हाथ धोने लगे। किन्हीं की बाँहे

असुरान् भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत्।
केचिद् द्विधा कृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे ।।५७।।
विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते।
वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः ।।५८।।
केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि।
निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे ।।५९।।
श्येनानुकारिणः प्राणान् मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः।
केषांचिद् बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे ।।६०।।
शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः।
विच्छिन्नजंघास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः ।।६१।।
एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधा कृताः।
छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः ।।६२।।
कबन्धा युयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः।
ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः ।।६३।।

छिन्न-भिन्न हो गयीं। कितनों की गर्दने कट गयीं। कितने ही दैत्यों के मस्तक कट-कटकर गिरने लगे। कुछ लोगों के शरीर मध्यभाग में ही विदीर्ण हो गये। कितने ही महादैत्य जाँघे कट जाने से पृथ्वी पर गिर पड़े। कितनों को ही देवी ने एक बाँह, एक पैर और एक नेत्रवाले करके दो टुकड़ों में चीर डाला। कितने ही दैत्य मस्तक कट जाने पर भी गिरकर फिर उठ जाते और केवल धड़ के ही रूप में अच्छे-अच्छे हथियार हाथ में ले देवी के साथ युद्ध करने लगते थे। दूसरे कबन्ध युद्ध के बाजों की लय पर नाचते थे।।६०-६३।। कितने ही बिना सिर के धड़ हाथों में खड्ग, शक्ति और ऋष्टि लिये दौड़ते थे तथा दूसरे-दूसरे महादैत्य 'ठहरो ! ठहरो !!' यह कहते हुए देवी को युद्ध के लिये ललकारते थे। जहाँ वह घोर संग्राम हुआ था, वहाँ की धरती देवी के गिराये हुए रथ, हाथी, घोड़े और असुरों की लाशों से ऐसी पट गयी थी कि वहाँ चलना-फिरना असम्भव हो गया था।।६४-६५।। दैत्यों की सेना में हाथी, घोड़े और असुरों के शरीरों से इतनी अधिक मात्रा में रक्तपात हुआ

कंबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः।
तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः ॥६४॥
पातितै रथनागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा।
अगम्या साभवत्तत्र यत्राभूत्स महारणः ॥६५॥
शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुस्त्रुवुः।
मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम् ॥६६॥
क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका।
निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम् ॥६७॥
स च सिंहो महानादमुत्सृजन्धुतकेसरः।
शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति ॥६८॥
देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं महासुरैः।
यथैषां तुतुषुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि॥ॐ ॥६९॥

इति श्रीमार्कण्डेपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
महिषासुरसैन्यवधो नाम द्वितीयोऽध्यायः॥२॥
उवाच १, श्लोकाः ६८, एवम् ६९, एवमादितः १७३॥

था कि थोड़ी ही देर में वहाँ खून की बड़ी-बड़ी नदियाँ बहने लगीं॥६६॥ ज़गदम्बा ने अुसरों की विशाल सेना को क्षणभर में नष्ट कर दिया-ठीक उसी तरह, जैसे तृण और काठके भारी ढेर की आग कुछ ही क्षणों में भस्म कर देती हैं॥६७॥ और वह सिंह भी गर्दन के बालों को हिला-हिलाकर जोर-जोर से गर्जना करता हुआ दैत्यों के शरीरों से मानो उनके प्राण खींच लेता था॥६८॥ वहाँ देवी के गणों ने भी उन महादैत्यों के साथ ऐसा युद्ध किया, जिससे आकाश में खड़े हुए देवतागण उन पर बहुत संतुष्ट हुए और फूल बरसाने लगे॥६९॥

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में 'महिषासुर सेना का वध' नामक दूसरा अध्याय पूरा हुआ॥२॥

तृतीयोऽध्यायः

चिक्षुर चामर उदग्र भिन्दिपाल वाष्कल ताम्र अन्धक विडाल आदि सेनापतियों सहित महिषासुर का वध

ध्यानम्

ॐ उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्दस्थिताम्॥

'ॐ' ऋषिरुवाच॥१॥

निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः।
सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम् ॥२॥
स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः।
यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः ॥३॥

ध्यान-जगदम्बा के श्री अंगों की कान्ति उदयकाल के सहस्रों सूर्यों के समान है। वे लाल रंग की रेशमी साड़ी पहने हुए हैं। उनके गले में मुण्डमाला शोभा पा रही है। दोनों स्तनों पर रक्त चन्दन का लेप लगा है। वे अपने कर-कमलों में जपमालिका, विद्या और अभय तथा वर नामक मुद्राएँ धारण किये हुए हैं। तीन नेत्रों से सुशोभित मुखारविन्द की बड़ी शोभा हो रही है। उनके मस्तक पर चन्द्रमा के साथ ही रत्नमय मुकुट बँधा है तथा वे कमल के आसन पर विराजमान हैं। ऐसी देवी को मैं भक्तिपूर्वक प्रणाम करता हूँ।

ऋषि कहते हैं - ॥१॥ दैत्यों की सेना को इस प्रकार तहस-नहस होते देख महादैत्य सेनापति चिक्षुर क्रोध में भरकर अम्बिका देवी से युद्ध करने के लिये आगे बढ़ा॥२॥ वह असुर रणभूमि में देवी के ऊपर इस प्रकार बाणों की वर्षा करने लगा, जैसे बादल मेरूगिरि के शिखर पर पानी की धार बरसा रहा हो॥३॥ तब देवी ने अपने बाणों से उसके बाणसमूह को अनायास ही

तस्यच्छित्त्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान्।
जघान तुरगान्बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम् ॥४॥
चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छ्रितम्।
विव्याध चैव गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः ॥५॥
सच्छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः।
अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः ॥६॥
सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि।
आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान् ॥७॥
तस्या खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन।
ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः ॥८॥
चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः।
जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात् ॥९॥

काटकर उसके घोड़ों और सारथि को भी मार डाला॥४॥ साथ ही उसके धनुष तथा अत्यन्त ऊँची ध्वजा को भी तत्काल काट गिराया। धनुष कट जाने पर उसके अंगों को अपने बाणों से बींध डाला। ॥५॥ धनुष, रथ, घोड़े और सारथि के नष्ट हो जाने पर वह असुर ढाल और तलवार लेकर देवी की ओर दौड़ा॥६॥ उसने तीखी धारवाली तलवार से सिंह के मस्तक पर चोट करके देवी की भी बायीं भुजा में बड़े वेग से प्रहार किया॥७॥ राजन्! देवी की बाँह पर पहुँचते ही वह तलवार टूट गयी, फिर तो क्रोध से लाल आँखें करके उस राक्षस ने शूल हाथ में लिया॥८॥ और उसे उस महादैत्य ने भगवती भद्रकाली के ऊपर चलाया। वह शूल आकाश से गिरते हुए सूर्यमण्डल की भांति अपने तेज से प्रज्वलित हो उठा॥९॥

उस शूल को अपनी ओर आता देख देवी ने शूल का प्रहार किया। उससे राक्षस के शूल के सैकड़ों टुकड़े हो गये, साथ ही महादैत्य चिक्षुर की भी धज्जियाँ उड़ गयीं। वह प्राणों से हाथ धो बैठा॥१०॥

महिषासुर के सेनापति उस महापराक्रमी चिक्षुर के मारे जाने पर देवताओं को पीड़ा देने वाला चामर हाथी पर चढ़कर आया। उसने भी देवी के ऊपर शक्ति का प्रहार किया, किन्तु जगदम्बा ने उसे अपने हुंकार से ही

दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्चत।
तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महासुरः ॥१०॥
हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ।
आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः ॥११॥
सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम्।
हुंकाराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम् ॥१२॥
भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः।
चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साच्छिनत् ॥१३॥
ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः।
बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा ॥१४॥
युद्ध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागान्महीं गतौ।
युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः ॥१५॥
ततो वेगात् खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा।
करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम् ॥१६॥

आहत एवं निष्प्रभ करके तत्काल पृथ्वी पर गिरा दिया।।११-१२।। शक्ति टूटकर गिरी हुई देख चामर को बड़ा क्रोध हुआ। अब उसने शूल चलाया, किन्तु देवी ने उसे भी अपने बाणों द्वारा काट डाला।।१३।। इतने में ही देवी का सिंह उछलकर हाथी के मस्तक पर चढ़ बैठा और उस दैत्य के साथ खूब जोर लगाकर बाहुयुद्ध करने लगा।।१४।। वे दोनों लड़ते-लड़ते हाथी से पृथ्वी पर आ गये और अत्यन्त क्रोध में भरकर एक दूसरे पर बड़े भंयकर प्रहार करते हुए लड़ने लगे।।१५। तदनन्तर सिंह बड़े वेग से आकाश की ओर उछला और उधर से गिरते समय उसने पंजों की मार से चामर का सिर धड़ से अलग कर दिया।।१६।। इसी प्रकार उदग्र भी शिला और वृक्ष आदि की मार खाकर रणभूमि में देवी के हाथ से मारा गया तथा कराल भी दाँतों, मुक्कों और थप्पड़ों की चोट से धराशायी हो गया।।१७।। क्रोध में भरी हुई देवी ने गदा की चोट से उद्धत का कचूमर निकाल डाला। भिन्दिपाल से वाष्कल को तथा बाणों से ताम्र और अन्धक को मौत के घाट उतार

उदग्रश्च रणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः।
दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः ॥१७॥
देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम्॥
वाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम् ॥१८॥
उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुम्।
त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी ॥१९॥
बिडालस्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः।
दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम् ॥२०॥
एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः।
माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान् ॥२१॥
कांश्चित्तुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथापरान्।
लाङ्गूलताडितांश्चान्याञ्छृङ्गाभ्यां च विदारितान् ॥२२॥

दिया।।१८।। तीन नेत्रों वाली परमेश्वरी ने त्रिशूल से उग्रास्थ, उग्रवीर्य तथा महाहनु नामक दैत्य को मार डाला।।१९।। तलवार की चोट से विडाल के मस्तक को धड़ से काट गिराया। दुर्धर और दुर्मुख-इन दोनों को भी अपने बाणों से यमलोक भेज दिया।।२०।।

इस प्रकार अपनी सेना का संहार होता देख महिषासुर ने भैंसे का रूप धारण करके देवी के गणों को त्रास देना आरम्भ किया।।२१।। किन्हीं को थूथुन से मारकर, किन्हीं के ऊपर खुरों का प्रहार करके, किन्हीं-किन्हीं को पूँछ से चोट पहुँचाकर, कुछ को सींगों से विदीर्ण करके, कुछ गणों को वेग से, किन्हीं को सिंहनाद से, कुछ को चक्कर देकर और कितनों को निःश्वास-वायु के झोंके से धराशायी कर दिया।।२२-२३।। इस प्रकार गणों की सेना को गिराकर वह असुर महादेवी के सिंह को मारने के लिये झपटा। इससे जगदम्बा को बड़ा क्रोध हुआ।।२४।। उधर महापराक्रमी महिषासुर भी क्रोध में भरकर धरती को खुरों से खोदने लगा तथा अपने सींगों से ऊँचे-ऊँचे पर्वतों को उठाकर फेंकने और गर्जने लगा।।२५।। उसके वेग से चक्कर देने के कारण पृथ्वी क्षुब्ध होकर फटने लगी। उसकी पूंछ से टकराकर समुद्र सब ओर से धरती को डुबाने लगा।।२६।। हिलते हुए सींगों के आघात से विदीर्ण

वेगेन कांश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च।
निःश्वासपवनेनान्यान् पातयामास भूतले ॥२३॥
निपात्य प्रथमानीकमभ्यधावत सोऽसुरः।
सिंह हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका ॥२४॥
सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः।
शृंगाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च ॥२५॥
वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत।
लाङ्.गूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः ॥२६॥
धुतशृंगविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः।
श्वावश्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः ॥२७॥
इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम्।
दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाकरोत् ॥२८॥
सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम्।
तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे ॥२९॥

होकर बादलों के टुकड़े-टुकड़े हो गये। उसके श्वास की प्रचण्ड वायु के वेग से उड़े हुए सैकड़ों पर्वत आकाश से गिरने लगे।।२७।। इस प्रकार क्रोध में भरे हुए उस महादैत्य को अपनी ओरआते देख चण्डिका ने उसका वध करने के लिए महान् क्रोध किया।।२८।। उन्होंने पाश फेंककर उस महान् असुर को बाँध लिया। उस महासंग्राम में बँध जाने पर उसने भैंसे का रूप त्याग दिया।।२९।। और तत्काल सिंह के रूप में वह प्रकट हो गया। उस अवस्था में जगदम्बा ज्यों ही उसका मस्तक काटने के लिये उद्यत हुईं, त्यों ही वह खड्गधारी पुरूष केरूप में दिखाई देने लगा।।३०।। तब देवी ने तुरन्त ही बाणों की वर्षा करके ढाल और तलवार के साथ उस पुरुष को भी बींध डाला। इतने में ही वह महान् गजराज के रूप में परिणत हो गया।।३१।। तथा अपनी सूँड से देवी के विशाल सिंह को खींचने और गर्जने लगा। खींचते समय देवी ने तलवार से उसकी सूँड़ काट डाली।।३२।। तब उस महादैत्य ने पुनः भैंसे का शरीर धारण कर लिया और पहले की भांति चराचर प्राणियों

ततः सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः।
छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत ॥३०॥
तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः।
तं खड्गचर्मणा सार्धं ततः सोऽभून्महागजः ॥३१॥
करेण च महासिंह तं चकर्ष जगर्ज च।
कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत ॥३२॥
ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः।
तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥३३॥
ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम्।
पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना ॥३४॥
ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः।
विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान् ॥३५॥
सा च तान् प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः।
उवाच तं मदोद्धूतमुखरागाकुलाक्षरम् ॥३६॥

सहित तीनों लोकों को व्याकुल करने लगा॥३३॥ तब क्रोध में भरी हुई जगन्माता चण्डिका बारंबार उत्तम मधुका पान करने और लाल आँखे करके हँसने लगीं॥३४॥ उधर वह बल और पराक्रम के मदसे उन्मत्त हुआ राक्षस गर्जने लगा और अपने सींगों से चण्डी के ऊपर पर्वतों को फेंकने लगा॥३५॥ उस समय देवी अपने बाणों के समूहों से उसके फेंके हुए पर्वतों को चूर्ण करती हुई बोलीं। बोलते समय उनका मुख मधु के मदसे लाल हो रहा था और वाणी लड़खड़ा रही थी॥३६॥

देवी ने कहा - ॥३७॥ ओ मूढ़! मैं जब तक मधु पीती हूँ, तब तक तू क्षण भर के लिये खूब गर्ज ले। मेरे हाथ से यहीं तेरी मृत्यु हो जाने पर अब शीघ्र ही देवता भी गर्जना करेंगे॥३८॥

ऋषि कहते हैं-॥३९॥ यों कहकर देवी उछलीं और उस महादैत्य के ऊपर चढ़ गयीं। फिर अपने पैर से उसे दबाकर उन्होंने शूल से उसके कण्ठ में आघात किया॥४०॥ उनके पैरसे दबा होने पर भी महिषासुर अपने मुख से

देव्युवाच॥३७॥

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम्।
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः ॥३८॥

ऋषिरुवाच॥३९॥

एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महासुरम्।
पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत् ॥४०॥
ततः सोऽपि पदाऽऽक्रान्तस्तया निजमुखात्ततः।
अर्धनिष्क्रान्त एवासीद् देव्या वीर्येण संवृतः ॥४१॥
अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः।
तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः ॥४२॥
ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत्।
प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवतागणाः ॥४३॥
तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः।
जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः॥ॐ ॥४४॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
महिषासुरवधो नाम तृतीयोऽध्यायः॥३॥
उवाच ३, श्लोकाः ४१, एवम् ४४, एवमादितः २१७॥

दूसरे रूप में बाहर होने लगा। अभी आधे शरीर से ही वह बाहर निकलने पाया था कि देवी ने अपने प्रभाव से उसे रोक दिया॥४१॥ आधा निकला होने पर भी वह महादैत्य देवी से युद्ध करने लगा। तब देवी ने बहुत बड़ी तलवार से उसका मस्तक काट गिराया॥४२॥ फिर तो हाहाकार करती हुई दैत्यों की सारी सेना भाग गयी तथा सम्पूर्ण देवता अत्यन्त प्रसन्न हो गये॥४३॥ देवताओं ने दिव्य महर्षियों के साथ दुर्गा देवी का स्तवन किया। गन्धर्वराज गाने लगे तथा अप्सराएँ नृत्य करने लगीं॥४४॥

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में 'महिषासुरवध' नामक तीसरा अध्याय पूरा हुआ॥३॥

चतुर्थोऽध्याय:

इन्द्रादि देवताओं द्वारा देवी की स्तुति तथा देवी द्वारा रक्षा का वरदान

ध्यानम्

ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः॥

'ॐ' ऋषिरुवाच॥१॥

शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या।
तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा
वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ॥२॥
देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या

ध्यान- सिद्धि की इच्छा रखने वाले पुरुष जिनकी सेवा करते हैं तथा देवता जिन्हें सब ओर से घेरे रहते हैं, उन 'जया' नामवाली दुर्गादेवी का ध्यान करें। उनके श्रीअंगों की आभा काले मेघ के समान श्याम है। वे अपने कटाक्षों से शत्रुसमूह को भय प्रदान करती हैं। उनके मस्तक पर आबद्ध चन्द्रमा की रेखा शोभा पाती है। वे अपने हाथों में शंख, चक्र, कृपाण और त्रिशूल धारण करती हैं। उनके तीन नेत्र हैं। वे सिंह के कंध पर चढ़ी हुई हैं और अपने तेज से तीनों लोकों को परिपूर्ण कर रही हैं।

ऋषि कहते हैं - ॥१॥ अत्यन्त पराक्रमी दुरात्मा महिषासुर तथा उसकी दैत्य-सेना के देवी के हाथ से मारे जाने पर इन्द्र आदि देवता प्रणाम के लिये गर्दन तथा कंधे झुकाकर उन भगवती दुर्गा का उत्तम वचनों द्वारा स्तवन करने लगे। उस समय उनके सुन्दर अंगों में अत्यन्त

निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ॥३॥
यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु ॥४॥
या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥५॥
किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्
किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि।
कि चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि
सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥६॥

हर्ष के कारण रोमांच हो आया था॥२॥ देवता बोले-'सम्पूर्ण देवताओं की शक्ति का समुदाय ही जिनका स्वरूप है तथा जिन देवी ने अपनी शक्ति से सम्पूर्ण जगत को व्याप्त कर रखा है, समस्त देवताओं और महर्षियों की पूजनीया उन जगदम्बा को हम भक्तिपूर्वक नमस्कार करते हैं। वे हम लोगों का कल्याण करें॥३॥ जिनके अनुपम प्रभाव और बलका वर्णन करने में भगवान् शेषनाग, ब्रह्माजी तथा महादेव भी समर्थ नहीं हैं, वे भगवती चण्डिका सम्पूर्ण जगत् का पालन एवं अशुभ भयका नाश करने का विचार करें॥४॥ जो पुण्यात्माओं के घरों में स्वयं ही लक्ष्मीरूप से, पापियों के यहाँ दरिद्रतारूप से, शुद्ध अन्तःकरण वाले पुरुषों के हृदय में बुद्धि रूप से, सत्पुरुषों में श्रद्धारूप से तथा कुलीन मनुष्य में लज्जारूप से निवास करती हैं, उन आप भगवती दुर्गा को हम नमस्कार करते हैं।

हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषै-
र्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूत-
मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ।।७।।
यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन
तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि।
स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु-
रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च ।।८।।
या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता त्व-
मभ्यस्यसे सुनियतेद्रिन्यतत्त्वसारैः।
मोक्षर्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषै-
र्विद्यासि सा भवगती परमा हि देवि। ।।९।।
शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधान-
मुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम्।
देवी त्रयी भगवती भवभावनाय
वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री ।।१०।।

देवि ! आप सम्पूर्ण जगत् की उत्पत्ति में कारण हैं। आपमें सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण-ये तीनों गुण मौजूद है; तो भी दोषों के साथ आपका संसर्ग नहीं जान पड़ता। भगवान् विष्णु और महादेव जी आदि देवता भी आपका पार नहीं पाते। आप ही सबका आश्रय है। यह समस्त जगत् आपका अंशभूत है; क्योंकि आप सबकी आदिभूत अव्याकृता परा प्रकृति है।।७।। देवि ! सम्पूर्ण यज्ञों में जिसके उच्चारण से सब देवता तृप्ति लाभ करते हैं, वह स्वाहा आप ही हैं। इसके अतिरिक्त आप पितरों की भी तृप्तिका कारण है, अतएव सब लोग आपको स्वधा भी कहते हैं।।८।। देवि! जो मोक्षकी प्राप्ति का साधन है, अचिन्त्य महाव्रतस्वरूपा है, समस्त

मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा
दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसंगा।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥११॥
ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र-
बिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम्।
अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥१२॥
दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकराल-
मुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः।
प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं
कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन ॥१३॥
देवि प्रसीद परमा भवती भवाय

दोषों से रहित, जितेन्द्रिय, तत्व को ही सार वस्तु मानने वाले तथा मोक्ष की अभिलाषा रखने वाले मुनिजन जिसका अभ्यास करते हैं, वह भगवती पराविद्या आप ही हैं।।९।। आप शब्दस्वरूपा हैं, अत्यन्त निर्मल ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा उद्गीथ के मनोहर पदों के पाठ से युक्त सामवेद का भी आधार आप ही हैं। आप देवी, त्रयी (तीनों वेद) और भगवती (छहों ऐश्वर्यों से युक्त) हैं। इस विश्व की उत्पत्ति एवं पालन के लिये आप ही वार्ता (खेती एवं आजीविका) के रूप में प्रकट हुई हैं। आप सम्पूर्ण जगत् की घोर पीड़ा का नाश करने वाली हैं।।१०।। देवि! जिससे समस्त शास्त्रों के सार का ज्ञान होता है, वह मेधाशक्ति आप ही है। दुर्गम भवसागर से पार उतारने वाली नौकारूप दुर्गादेवी भी आप ही हैं। आपकी कहीं भी आसक्ति नहीं है। कैटभके शत्रु भगवान् विष्णु के वक्षःस्थल में एकमात्र निवास करने वाली भगवती तथा भगवान् चन्द्रशेखर द्वारा सम्मानित गौरी देवी भी आप ही हैं।।११।। आपका मुखमन्द मुसकान से सुशोभित, निर्मल,

सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥१४॥
ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥१५॥
धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मा-
ण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति।
स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादा-
ल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥१६॥
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

पूर्ण चन्द्रमा के बिम्बका अनुकरण करने वाला और उत्तम सुवर्ण की मनोहर कान्ति से कमनीय है; तो भी उसे देखकर महिषासुर को क्रोध हुआ और सहसा उसने उस पर प्रहार कर दिया। यह बड़े आश्चर्य की बात है।।१२।। देवि ! वही मुख जब क्रोध से युक्त होने पर उदयकाल के चन्द्रमा की भांति लाल और तनी हुई भौंहों के कारण विकराल हो उठा, तब उसे देखकर जो महिषासुर के प्राण तुरन्त नहीं निकल गये, यह उससे भी बढ़कर आश्चर्य की बात है; क्योंकि क्रोध में भरे हुए यमराज को देखकर भला, कौन जीवित रह सकता है?।।१३।। देवि! आप प्रसन्न हों। परमात्मास्वरूपा आपके प्रसन्न होने पर जगत् का अभ्युदय होता है और क्रोध में भर जाने पर आप तत्काल ही कितने कुलों का सर्वनाश कर डालती हैं, यह बात अभी अनुभव में आयी है; क्योंकि महिषासुर की यह विशाल सेना क्षणभर में आपके कोप से नष्ट हो गई हैं ।।१४।। सदा अभ्युदय प्रदान करने वाली आप जिन पर प्रसन्न रहती हैं, वे ही देश में

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता ॥१७॥
एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।
संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु
मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि ॥१८॥
दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म
सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम्
लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता
इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी ॥१९॥
खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः
शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम्।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्ड-
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥२०॥
दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं

सम्मानित हैं, उन्हीं को धन और यश की प्राप्ति होती है, उन्हीं का धर्म कभी शिथिल नहीं होता तथा वे ही अपने हष्ट-पुष्ट स्त्री, पुत्र और भृत्यों के साथ धन्य माने जाते हैं।।१५।। देवि! आपकी ही कृपा से पुण्यात्मा पुरुष प्रतिदिन अत्यन्त श्रद्धापूर्वक सदा सब प्रकार के धर्मानुकूल कर्म करता है और उसके प्रभाव से स्वर्गलोक में जाता है; इसलिए आप तीनों लोकों में निश्चय ही मनोवांछित फल देने वाली हैं।।१६।। दुर्गे ! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती हैं और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें परम कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती हैं। दुःख, द्ररिद्रता और भय हरने वाली देवी! आपके सिवा दूसरी कौन है, जिसका चित्त सबका उपकार करने के लिये सदा ही दयार्द्र रहात हो।।१७।। देवि

रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः।
वीर्यं च हन्तृ हृतदेवपराक्रमाणां
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ॥२१॥
केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य
रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र।
चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्ट्वा
त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि ॥२२॥
त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन
त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्त-
मस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते ॥२३॥

! इन राक्षसों के मारने से संसार को सुख मिले तथा ये राक्षस चिरकाल तक नरक में रहने के लिये भले ही पाप करते रहे हों, इस समय संग्राम में मृत्यु को प्राप्त होकर स्वर्गलोक में जाय- निश्चय ही यही सोचकर आप शत्रुओं का वध करती हैं।।१८।। आप शत्रुओं पर शस्त्रों का प्रहार क्यों करती हैं? समस्त असुरों को दृष्टिपात मात्र से ही भस्म क्यों नहीं कर देतीं? इसमें एक रहस्य है। ये शत्रु भी हमारे शस्त्रों से पवित्र होकर उत्तम लोकों में जायँ-इस प्रकार उनके प्रति भी आपका विचार अत्यन्त उत्तम रहता है।।१९।। खड्ग के तेज पुंज की भयंकर दीप्ति से तथा आपके त्रिशूल के अग्रभाग की घनीभूत प्रभा से चौंधियाकर जो असुरों की आँखें फूट नहीं गयीं, उसमें कारण यही था कि वे मनोहर रश्मियों से युक्त चन्द्रमा के समान आनन्द प्रदान करने वाले आपके इस सुन्दर मुख का दर्शन करते थे।।२०।। देवि ! आपका शील दुराचारियों के बुरे बर्ताव को दूर करने वाला है। साथ ही यह रूप ऐसा है, जो कभी चिन्तन में भी नहीं आ सकता और जिसकी कभी दूसरों से तुलना भी नहीं हो सकती; तथा आपका बल और पराक्रम तो उन दैत्यों को भी नष्ट करने वाला है जो कभी देवताओं के पराक्रम को भी नष्ट कर चुके थे। इस प्रकार

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥२४॥
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥२५॥
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥२६॥
खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥२७॥

ऋषिरुवाच॥२८॥

एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः।
अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः ॥२९॥
भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूपिता।
प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान् ॥३०॥

आपने शत्रुओं पर भी आपकी दया ही प्रकट की है।।२१।। वरदायिनी देवि! आपके इस पराक्रम की किसके साथ तुलना हो सकती है तथा शत्रुओं को भय देने वाला एवं अत्यन्त मनोहर ऐसा रूप भी आपके सिवा और कहाँ है? हृदय में कृपा और युद्ध में निष्ठुरता -ये दोनों बातें तीनों लोकों के भीतर केवल आपमें ही देखी गयी हैं।।२२।। मातः ! आपने शत्रुओं को भी युद्धभूमि में मारकर स्वर्गलोक में पहुँचाया है तथा उन्मत्त दैत्यों से प्राप्त होने वाले हम लोगों के भय को भी दूर कर दिया है, आपको हमारा नमस्कार है।।२३।। देवि! आप शूल से हमारी रक्षा करें। अम्बिके ! आप खड्ग से भी हमारी रक्षा करें तथा घण्टा की ध्वनि और धनुष की टंकार से भी हम लोगों की रक्षा करें।।२४।। चण्डिके ! पूर्व, पश्चिम और दक्षिण दिशा में आप हमारी रक्षा करें तथ ईश्वरि ! अपने त्रिशूल को घुमाकर आप उत्तर दिशा में भी हमारी रक्षा करें।।२५।। तीनों लोकों में आपके जो परम सुन्दर एवं अत्यन्त भंयकर रूप विचरते रहते हैं, उनके

देव्युवाच।।३१।।

व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम् ।।३२।।

देवा ऊचुः।।३३।।

भगवत्या कृतं सर्वं न किंचिदवशिष्यते ।।३४।।
यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः।
यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि ।।३५।।
संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः।
यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने ।।३६।।
तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसम्पदाम्।
वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके ।।३७।।

ऋषिरुवाच।।३८।।

इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः।
तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप ।।३९।।

द्वारा भी आप हमारी तथा इस भूलोक की रक्षा करें।।२६।। अम्बिके ! आपके कर-पल्लवों में शोभा पाने वाले खड्ग, शूल और गदा आदि जो-जो शस्त्र हों, उन सबके द्वारा आप सब ओर से हम लोगों की रक्षा करें।।२७।।

ऋषि कहते हैं- ।।२८।। इस प्रकार जब देवताओं ने जगन्माता दुर्गा की स्तुति की और नन्दन-वन के दिव्य पुष्पों एवं गन्ध-चन्दन आदि के द्वारा उनका पूजन किया, फिर सबने मिलकर जब भक्तिपूर्वक दिव्य धूपों की सुगन्ध निवेदन की, तब देवी ने प्रसन्नवदन होकर प्रणाम करते हुए सब देवताओं से कहा-।।२९-३०।।

देवी बोली-।।३१।। देवताओं! तुम सब लोग मुझसे जिस वस्तु की अभिलाषा रखते हो, उसे माँगो।।३२।।

देवता बोले- ।।३३।। भगवती ने हमारी सब इच्छा पूर्ण कर दी अब कुछ भी बाकी नहीं है।।३४।। क्योंकि हमारा यह शत्रु महिषासुर मारा गया।

इत्येतत्कथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा।
देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी ॥४०॥
पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता यथाभवत्।
वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः ॥४१॥
रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी।
तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयामि ते॥ ह्रीं ॐ ॥४२॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
शक्रादिस्तुतिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः॥४॥
उवाच ५, अर्धश्लोकौ २, श्लोकाः ३५,
एवम् ४२, एवमादितः २५६॥

महेश्वरि ! इतने पर भी यदि आप हमें और वर देना चाहती हैं॥३५॥ तो हम जब-जब आपका स्मरण करें, तब-तब आप दर्शन देकर हम लोगों के महान् संकट दूर कर दिया करें तथा प्रसन्नमुखी अम्बिके ! जो मनुष्य इन स्तोत्रों द्वारा आपकी स्तुति करे, उसे वित्त, समृद्धि और वैभव देने के साथ ही उसकी धन और स्त्री आदि सम्पत्ति को भी बढ़ाने के लिये आप सदा हम पर प्रसन्न रहें ॥३६-३७॥

ऋषि कहते हैं - ॥३८॥ राजन् ! देवताओं ने जब अपने तथा जगत् के कल्याण के लिये भद्रकाली देवी को इस प्रकार प्रसन्न किया, तब वे 'तथास्तु' कहकर वहीं अन्तर्धान हो गयीं॥३९॥ राजन्। इस प्रकार पूर्वकाल में तीनों लोकों का हित चाहने वाली देवी जिस प्रकार देवताओं के शरीरों से प्रकट हुई थी; वह सब कथा मैंने कह सुनायी॥४०॥ अब पुनः देवताओं का उपकार करने वाली वे देवी दुष्ट दैत्यों तथा शुम्भ-निशुम्भ का वध करने एवं सब लोकों की रक्षा करने के लिये गौरीदेवी के शरीर से जिस प्रकार प्रकट हुई थीं वह सब प्रसंग मेरे मुँह से सुनो। मैं उसका तुमसे यथावत् वर्णन करता हूँ॥४१-४२॥

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में 'शक्रादिस्तुति' नामक चौथा अध्याय पूरा हुआ॥४॥

पंचमोऽध्यायः

देवताओं द्वारा देवी की स्तुति, चण्ड-मुण्ड के मुख से अम्बिका के रूप की प्रशंसा सुनकर शुम्भ का उनके पास दूत भेजना और दूत का निराश लौटना

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीउत्तरचरित्रस्य रुद्र ऋषिः, महासरस्वती देवता, अनुष्टुप् छन्दः, भीमा शक्तिः, भ्रामरी बीजम्, सूर्यस्तत्त्वम्, सामवेदः स्वरूपम्, महासरस्वतीप्रीत्यर्थे उत्तरचरित्रपाठे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐ घण्टाशूलहलानि शंखमुसले चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्। गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥

'ॐ क्लीं' ऋषिरुवाच॥१॥

पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः।
त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात् ॥२॥

विनियोग-इस उत्तर चरित्र के ऋषि रुद्र, देवता महासरस्वती, अनुष्टुप् छन्द, भीमा शक्ति, भ्रामरी बीज, सूर्य तत्त्व तथा सामवेद स्वरूप है। महासरस्वती की प्रसन्नता के लिए उत्तर चरित्र के पाठ में इसके विनियोग का विधान है।

ध्यान-जिनके कर कमलों में घंटा, शूल, हल, शंख, मूसल, चक्र, और ध नुष-बाण हैं, जिनके शरीर की दीप्ति शारदीय चन्द्र के समान सुन्दर है, जो त्रैलोक्य की आधारभूता और शुम्भ-निशुम्भ आदि दैत्यों का संहार करने वाली हैं, उन गौरी देवी के शरीर से उत्पन्न महासरस्वती देवी का मैं निरन्तर स्मरण करता हूँ।

ऋषि कहते हैं-॥१॥ पूर्वकाल में शुम्भ और निशुम्भ नामक असुरों ने अपने बल के घमण्ड में आकर शचीपति इन्द्र के हाथ से तीनों लोकों का

तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम्।
कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च ॥३॥
तावेव पवनर्द्धिं च चक्रतुर्वह्निकर्म च।
ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः ॥४॥
हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः।
महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम् ॥५॥
तयास्माकं वरो दत्तो यथाऽऽपत्सु स्मृताखिलाः।
भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः ॥६॥
इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम्।
जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः ॥७॥

देवा ऊचुः॥८॥

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥९॥
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥१०॥
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः।

राज्य और यज्ञभाग छीन लिये॥२॥ वेही दोनों सूर्य, चन्द्रमा, कुबेर, यम और वरूण के अधिकार का भी उपयोग करने लगे। वायु और अग्नि का कार्य भी वे ही करने लगे। उन दोनों ने सब देवताओं को अपमानित, राज्यभ्रष्ट, पराजित तथा अधिकारहीन करके स्वर्ग से निकाल दिया। उन दोनों महान् असुरों से तिस्कृत देवताओं ने अपराजिता देवी का स्मरण किया और सोचा-'जगदम्बा ने हम लोगों को वर दिया था कि आपत्तिकाल में स्मरण करने पर मैं तुम्हारी सब आपत्तियों का तत्काल नाश कर दूँगी॥३-६॥ यह विचार कर देवता गिरिराज हिमालय पर गये और वहाँ भवगती विष्णुमाया की स्तुति करने लगे॥७॥

देवता बोले - ॥८॥ देवी को नमस्कार है, महादेवी शिवा को सर्वदा

नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥११॥
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥१२॥
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥१३॥
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै॥१४॥ नमस्तस्यै॥१५॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥१६॥
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते।
नमस्तस्यै॥१७॥ नमस्तस्यै॥१८॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥१९॥
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥२०॥ नमस्तस्यै॥२१॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥२२॥
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥२३॥ नमस्तस्यै॥२४॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥२५॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता।

नमस्कार है। प्रकृति एवं भद्रा को प्रणाम है। हम लोग नियमपूर्वक जगदम्बा को नमस्कार करते हैं॥९॥ रौद्रा को नमस्कार है। नित्या, गौरी एवं धात्री को बारम्बार नमस्कार है। ज्योतिस्नामयी, चन्द्ररूपिणी एवं सुखस्वरूपा देवी को सतत प्रणाम है॥१०॥ शरणागतों का कल्याण करने वाली वृद्धि एवं सिद्धिरूपा देवी को हम बारम्बार नमस्कार करते हैं। नैर्ऋती (राक्षसों की लक्ष्मी), राजाओं की लक्ष्मी तथा शर्वाणी (शिवपत्नी) स्वरूपा आप जगदम्बा को बार-बार नमस्कार है॥११॥ दुर्गा, दुर्गपारा (दुर्गम संकट से पार उतारने वाली), सारा (सबकी सारभूता) सर्वकारिणी, ख्याति, कृष्णा और धूम्रादेवी को सर्वदा नमस्कार है॥१२॥ अत्यन्त सौम्य तथा अत्यन्त रौद्ररूपा देवी को हम नमस्कार करते हैं, उन्हें हमारा बारम्बार प्राणम है। जगत् की आधारभूता कृति देवी को बारम्बार नमस्कार है॥१३॥ जो देवी सब प्राणियों में विष्णुमाया के नाम से कही जाती है उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार है॥१४-१६॥

नमस्तस्यै॥२६॥ नमस्तस्यै॥२७॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥२८॥
या देवी सर्वभूतेषुच्छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥२९॥ नमस्तस्यै॥३०॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥३१॥
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥३२॥ नमस्तस्यै॥३३॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥३४॥
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥३५॥ नमस्तस्यै॥३६॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥३७॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥३८॥ नमस्तस्यै॥३९॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥४०॥
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥४१॥ नमस्तस्यै॥४२॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥४३॥
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥४४॥ नमस्तस्यै॥४५॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥४६॥
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।

जो देवी सब प्राणियों में चेतना कहलाती हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥१७-१९॥ जो देवी सब प्राणियों में बुद्धिरूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥२०-२२॥ जो देवी सब प्राणियों में निद्रारूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥२३-२५॥ जो देवी सब प्राणियों में क्षुधारूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥२६-२८॥ जो देवी सब प्राणियों में छायारूप से स्थित है, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥२९-३१॥ जो देवी सब प्राणियों में शक्तिरूप से स्थित है, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है ॥३२-३४॥ जो देवी सब प्राणियों में तृष्णा रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है॥३५-३७॥ जो देवी सब प्राणियों में शान्ति (क्षमा) रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार,

नमस्तस्यै॥४७॥ नमस्तस्यै॥४८॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥४९॥
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥५०॥ नमस्तस्यै॥५१॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥५२॥
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥५३॥ नमस्तस्यै॥५४॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥५५॥
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥५६॥ नमस्तस्यै॥५७॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥५८॥
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥५९॥ नमस्तस्यै॥६०॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥६१॥
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥६२॥ नमस्तस्यै॥६३॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥६४॥
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै॥६५॥ नमस्तस्यै॥६६॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥६७॥

उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।।३८-४०।। जो देवी सब प्राणियों में जातिरूप में स्थित है, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।।४१-४३।। जो देवी सब प्राणियों में लज्जारूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।।४४-४६।। जो देवी सब प्राणियों में शान्तिरूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।।४७-४९।। जो देवी सब प्राणियों में श्रद्धारूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।।५०-५२।। जो देवी सब प्राणियों में कान्तिरूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।।५३-५५।। जो देवी सब प्राणियों में लक्ष्मी रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।।५६-५८।। जो देवी सब प्राणियों में वृत्तिरूप से स्थित है, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।।५९-६१।। जो देवी सब प्राणियों में स्मृतिरूप से स्थित हैं उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार

या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।६८।। नमस्तस्यै।।६९।। नमस्तस्यै नमो नमः ।।७०।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।७१।। नमस्तस्यै।।७२।। नमस्तस्यै नमो नमः ।।७३।।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।७४।। नमस्तस्यै।।७५।। नमस्तस्यै नमो नमः ।।७६।।
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ।।७७।।
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै।।७८।नमस्तस्यै।।७९।नमस्तस्यै नमो नमः ।।८०।।
स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-
त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ।।८१।।

नमस्कार है।।६२-६४।। जो देवी सब प्राणियों में दयारूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।।६५-६७।। जो देवी सब प्राणियों में तुष्टिरूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।।६८-७०।। जो देवी सब प्राणियों में मातारूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है।।७१-७३।। जो देवी सब प्राणियों में भ्रान्तिरूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है।।७४-७६।। जो जीवों के इन्द्रिय वर्ग की अधिष्ठात्री देवी एवं सब प्राणियों में सदा व्याप्त रहने वाली हैं, उन व्याप्ति देवी को बारंबार नमस्कार है।।७७।। जो देवी चैतन्यरूप से इस सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त करके स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार हैं।।७८-८०।। पूर्वकाल में अपने अभीष्ट की प्राप्ति होने से देवताओं ने जिनकी स्तुति की तथा देवराज इन्द्र ने बहुत दिनों तक ज़िनका सेवन किया, वह कल्याण

या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥८२॥

ऋषिरुवाच ॥८३॥

एवं स्तवादियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती।
स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन ॥८४॥
साब्रवीत्तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का ।
शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताब्रवीच्छिवा ॥८५॥
स्तोत्रं ममैतत् क्रियते शुम्भ दैत्य निराकृतेः।
देवैः समेतैः समरे निशुम्भेन पराजितैः ॥८६॥
शरीरकोशा द्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका।
कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते ॥८७॥
तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती।

साधनाभूता ईश्वरी हमारा कल्याण और मंगल करे तथा सारी आपत्तियों का नाश कर डाले॥८१॥ उद्दण्ड दैत्यों से सताये हुए हम सभी देवता जिन परमेश्वरी को इस समय नमस्कार करते हैं तथा जो भक्ति से विनम्र पुरुषों द्वारा स्मरण की जाने पर तत्काल ही सम्पूर्ण विपत्तियों का नाश कर देती हैं, वे जगदम्बा हमारा संकट दूर करें॥८२॥
ऋषि कहते हैं- ॥८३॥ राजन् ! इस प्रकार जब देवता स्तुति कर रहे थे, उस समय पार्वती देवी गंगा जी के जल में स्नान करने के लिये वहाँ आयीं॥८४॥

उन सुन्दर भौंहो वाली भगवती ने देवताओं से पूछा- आप लोग यहां किसकी स्तुति करते हैं? तब उन्हीं के शरीर कोश से प्रकट हुई शिवादेवी बोलीं-॥८५॥ शुम्भ दैत्य से तिरस्कृत और युद्ध में निशुम्भ से पराजित हो यहाँ एकत्रित हुए ये समस्त देवता यह मेरी ही स्तुति कर रहे

कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया ॥८८॥
ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम्।
ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः ॥८९॥
ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीव सुमनोहरा।
काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम् ॥९०॥
नैव तादृक् क्वचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम्।
ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर ॥९१॥
स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा।
सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान् द्रष्टुमर्हति ॥९२॥
यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो।
त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे ॥९३॥
ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात्।
पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः ॥९४॥
विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति तेऽङ्गणे।

हैं।।८६।। पार्वती जी के शरीर कोश से अम्बिका का प्रादुर्भाव हुआ था, इसलिये वे समस्त लोकों में 'कौशिकी' कही जाती हैं।।८७।। कौशिकी के प्रकट होने के बाद पार्वती देवी का शरीर काले रंगा का हो गया, अतः वे हिमालय पर रहने वाली कालिका देवी नाम से विख्यात हुईं।।८८।। तदनन्तर शुम्भ-निशुम्भ के भृत्य चण्ड-मुण्ड वहाँ आये और उन्होंने परम मनोहर रूप धारण करने वाली अम्बिका देवी को देखा।।८९।। फिर वे शुम्भ के पास जाकर बोले- 'महाराज! एक अत्यन्त मनोहर स्त्री है, जो अपनी दिव्य कान्ति से हिमालय को प्रकाशित कर रही है।।९०।।

वैसा उत्तम रूप कहीं किसी ने भी नहीं देखा होगा। असुरेश्वर! पता लगाइये,वह देवी कौन है और उसे ले लीजिये।।९१।। स्त्रियों में तो वह रत्न है, उसका प्रत्येक अंग बहुत ही सुन्दर है तथा वह अपने श्री अंगों की प्रभा से सम्पूर्ण दिशाओं में प्रकाश फैला रही है। दैत्यराज ! अभी वह हिमालय पर ही मौजूद है, आप उसे देख सकते हैं।।९२।। प्रभो ! तीनों

रत्नभूतमिहानीतं यदासीद्वेधसोऽद्भुतम् ॥९५॥
निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात्।
किञ्ज़ल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लानपंकजाम् ॥९६॥
छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्त्रावि तिष्ठति।
तथायं स्यन्दनवरो यः पुराऽऽसीत्प्रजापतेः ॥९७॥
मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता।
पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे ॥९८॥
निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः ।
वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी ॥९९॥
एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते।
स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते ॥१००॥

ऋषिरुवाच॥१०१॥

निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः।
प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम् ॥१०२॥

लोकों में मणि, हाथी और घोड़े आदि जितने भी रत्न हैं, वे सब इस समय आपके घर में शोभा पाते हैं॥९३॥ हाथियों में रत्नभूत ऐरावत, यह पारिजात का वृक्ष और यह उच्चैःश्रवा घोड़ा - यह सब आपने इन्द्र से ले लिया है॥९४॥ हंसों से जुता हुआ यह विमान भी आपके आँगन में शोभा पाता है। यह रत्नभूत अद्भुत विमान, जो पहले ब्रह्माजी के पास था, अब आपके यहाँ लाया गया है॥९५॥ यह महापद्म नामक निंधि आप कुबेर से छीन लाये हैं। समुद्र ने भी आपको किंजल्किनी नाम की माला भेंट की है, जो केसरों से सुशोभित है और जिसके कमल कभी कुम्हलाते नहीं हैं॥९६॥ सुवर्ण की वर्षा करने वाला वरुण का छत्र भी आपके घर में शोभा पाता है तथा यह श्रेष्ठ रथ, जो पहले प्रजापति के अधिकार में था, अब आपके पास मौजूद है॥९७॥ दैत्येश्वर! मृत्यु की उत्क्रान्तिदा नामवाली शक्ति भी आपने छीन ली है तथा वरुण का पाश और समुद्र में होने वाले सब प्रकार के रत्न आपके भाई निशुम्भ के अधिकार में हैं। अग्नि ने भी स्वतः शुद्ध किए हुए दो वस्त्र आपकी सेवा में अर्पित किये

इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम।
यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु ॥१०३॥
स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने।
सा देवी तां ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा ॥१०४॥

दूत उवाच॥१०५॥

देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः।
दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः ॥१०६॥
अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु ।
निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत् ॥१०७॥
मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः।
यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक् ॥१०८॥
त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः।
तथैव गजरत्नं च हृत्वा देवेन्द्रवाहनम् ॥१०९॥

हैं॥९८-९९॥ दैत्यराज ! इस प्रकार सभी रत्न आपने एकत्र कर लिये हैं। फिर जो यह स्त्रियों में रत्नरूप कल्याणमयी देवी है, इसे आप क्यों नहीं अपने अधिकार में कर लेते? ॥१००॥

ऋषि कहते हैं-॥१०१॥ चण्ड-मुण्डका यह वचन सुनकर शुम्भ ने महादैत्य सुग्रीव को दूत बनाकर देवी के पास भेजा और कहा- तुम मेरी आज्ञा से उसके सामने ये-ये बातें कहना और ऐसा उपाय करना, जिससे प्रसन्न होकर वह शीघ्र ही यहाँ आ जाय॥१०२-१०३॥ वह दूत पर्वत के अत्यन्त रमणीय प्रदेश में, जहां देवी मौजूद थीं, गया और मुधर वाणी में कोमल वचन बोला॥१०४॥

दूत बोला - ॥१०५॥ देवि ! दैत्यराज शुम्भ इस समय तीनों लोकों के परमेश्वर हैं। मैं उन्हीं का भेजा हुआ दूत हूँ और यहां तुम्हारे ही पास आया हूँ॥१०६॥ उनकी आज्ञा सदा सब देवता एक स्वर से मानते है। कोई उसका उल्लघन नहीं कर सकता। वे सम्पूर्ण देवताओं को परास्त कर चुके हैं। उन्होंने तुम्हारे लिये जो संदेश दिया है, उसे सुनो॥१०७॥

क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरैः ।।
उच्चैःश्रवससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम् ।।११०।।
यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च।
रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने ।।१११।।
स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम्।
सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम् ।।११२।।
मां वा मामनुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम्।
भज त्वं चंचलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः ।।११३।।
परमेश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात्।
एतद् बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज ।।११४।।

ऋषिरुवाच।।११५।।

इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तः स्मिता जगौ।
दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत् ।।११६।।

सम्पूर्ण त्रिलोकी मेरे अधिकार में है। देवता भी मेरी आज्ञा के अधीन चलते हैं। सम्पूर्ण यज्ञों के भागों को मैं ही पृथक्-पृथक् भोगता हूँ।।१०८।। तीनों लोकों में जितने श्रेष्ठ रत्न हैं, वे सब मेरे अधिकार में हैं। देवराज इन्द्र का वाहन ऐरावत, जो हाथियों के रत्न के समान है, मैंने छीन लिया है।।१०९।। क्षीरसागर का मन्थन करने से जो अश्वरत्न उच्चैःश्रवा प्रकट हुआ था, उसे देवताओं ने मेरे पैरों पर पड़कर समर्पित किया है।।११०।। सुन्दरी ! उनके सिवा और भी जितने रत्नभूत पदार्थ देवताओं, गन्धर्वों और नागों के पास थे, वे सब मेरे ही पास आ गये हैं।।१११।। देवी ! हम लोग तुम्हें संसार की स्त्रियों में रत्न मानते हैं, अतः तुम हमारे पास आ जाओ; क्योंकि रत्नों का उपभाग करने वाले हम ही हैं।।११२।। चंचल कटाक्षों वाली सुन्दरी ! तुम मेरी या मेरे भाई महापराक्रमी निशुम्भ की सेवा में आ जाओ, क्योंकि तुम रत्नस्वरूपा हो।।११३।। मेरा वरण करने से तुम्हें तुलना रहित महान् ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। अपनी बुद्धि से यह विचारकर तुम मेरी पत्नी बन जाओ।।११४।।

देव्युवाच।।११७।।

सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किंचित्त्वयोदितम्।
त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः ।।११८।।
किं त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम्।
श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा ।।११९।।
यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति ।।१२०।।
तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः।
मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु ।।१२१।।

दूत उवाच।।१२२।।

अवलिप्तासि मैवं त्वं देहि ब्रूहि ममाग्रतः।
त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः ।।१२३।।
अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि।
तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका ।।१२४।।

ऋषि कहते हैं–।।११५।। दूत के यों कहने पर कल्याणमयी भगवती दुर्गा देवी, जो इस जगत् को धारण करती हैं, मन ही मन गम्भीर भाव से मुस्करायीं और इस प्रकार बोलीं–।।११६।।
देवी ने कहा–।।११७।। दूत! तुमने सत्य कहा है, इसमें तनिक भी मिथ्या नहीं हैं। शुम्भ तीनों लोकों का स्वामी है और निशुम्भ भी उसी के समान पराक्रमी है।।११८।। किन्तु इस विषय में मैंने जो प्रतिज्ञा कर ली है, उसे मिथ्या कैसे करूँ? मैंने अपनी अल्पबुद्धि के कारण पहले से प्रतिज्ञा कर रखी है, उसे सुनो–।।११९।। जो मुझे संग्राम में जीत लेगा, जो मेरे अभिमान को चूर्ण कर देगा तथा संसार में जो मेरे समान बलवान् होगा, वही मेरा स्वामी होगा।।१२०।। इसलिये शुम्भ अथवा महादैत्य निशुम्भ स्वयं ही यहाँ पधारें और मुझे जीतकर शीघ्र ही मेरा पाणिग्रहण कर लें, इसमें विलम्ब की क्या आवश्यकता है?।।१२१।।
दूत बोला – ।।१२२।। देवि ! तुम घमण्ड में भरी हो, मेरे सामने ऐसी बातें

इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे।
शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम् ॥१२५॥
सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः।
केशाकर्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि ॥१२६॥

देव्युवाच॥१२७॥

एवमेतद् बली शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान्।
किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा ॥१२८॥
स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः।
तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु तत्॥ॐ ॥१२९॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
देव्या दूतसंवादो नाम पंचमोध्यायः ॥५॥

उवाच ६, त्रिपान्मन्त्राः ६६, श्लोकाः ५४, एवम् १२६, एवमादितः ३८८॥

न करो। तीनों लोकों में कौन ऐसा पुरुष है, जो शुम्भ-निशुम्भ के सामने खड़ा हो सके॥१२३॥ देवि ! अन्य दैत्यों के सामने भी सारे देवता युद्ध में नही ठहर सकते, फिर तुम अकेली स्त्री होकर कैसे ठहर सकती हो॥१२४॥ जिन शुम्भ आदि दैत्यों के सामने इन्द्र आदि सब देवता भी युद्ध में खड़े नहीं हुए, उनके समने तुम स्त्री होकर कैसे जाओगी॥१२५॥ इसलिये तुम मेरे ही कहने से शुम्भ-निशुम्भ के पास चली चलो। ऐसा करने से तुम्हारे गौरव की रक्षा होगी; अन्यथा जब वे केश पकड़कर घसीटेंगें, तब तुम्हें अपनी प्रतिष्ठा खोकर जाना पड़ेगा॥१२६॥
देवी ने कहा - ॥१२७॥ तुम्हारा कहना ठीक है, शुम्भ बलवान् है और निशुम्भ भी बड़े पराक्रमी हैं; किन्तु क्या करूँ? मैंने पहले बिना सोचे-समझे प्रतिज्ञा कर ली है॥१२८॥ अतः अब तुम जाओ; मैंने तुमसे जो कुछ कहा है, वह सब दैत्यराज से आदरपूर्वक कहना। फिर वे जो उचित जान पड़े, करें॥१२९॥

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में 'देवी-दूत-संवाद' नामक पांचवाँ अध्याय पूरा हुआ॥५॥

षष्ठोऽध्याय:

साठ हजार सेना सहित शुम्भ निशुम्भ सेनानी धूम्रलोचन वध तथा शुम्भ निशुम्भ द्वारा पुनः चण्डमुण्ड को देवी के पास भेजना

ध्यानम्

ॐ नागाधी श्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावली-
भास्वद्देहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम्।
मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्धचूडां परां
सर्वज्ञेश्वरभैरवाङ्कनिलयां पद्मावतीं चिन्तये॥

'ॐ' ऋषिरुवाच॥१॥

इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः।
समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात् ॥२॥
तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट् ततः।
सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनम् ॥३॥

ध्यान- मैं सवेज्ञेश्वर भैरव के अंक में निवास करने वाली परमोत्कृष्ट पद्मावती देवी का चिन्तन करता हूँ। वे नागराज के आसन पर बैठी हैं, नागों के फणों में सुशोभित होने वाली मणियों की विशाल माला से उनकी देहलता उद्भासित हो रही है। सूर्य के समान उनका तेज है, तीन नेत्र उनकी शोभा बढ़ा रहे हैं। वे हाथों में माला, कुम्भ, कपाल और कमल लिए हुए हैं तथा उनके मस्तक में अर्धचन्द्र का मुकुट सुशोभित है।

ऋषि कहते हैं-॥१॥ देवी का यह कथन सुनकर दूतों को बड़ा अमर्ष हुआ और उसने दैत्यराज के पास जाकर सब समाचार विस्तारपूर्वक कह सुनाया॥२॥ दूत के वचन को सुनकर दैत्यराज कुपित हो उठा और दैत्य सेनापति धुम्रलोचन से बोला॥३॥

हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्ययरिवारितः।
तामानय बालाद् दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम् ॥४॥
तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः।
सहन्तव्योऽमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा ॥५॥

ऋषिरुवाच॥६॥

तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः।
वृत्तः षष्ट्या सहस्त्राणामसुराणां द्रुतं ययौ ॥७॥
स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम्।
जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः ॥८॥
न चेत्प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति।
ततो बलान्नयाम्येष केशाकर्षणविह्वलाम् ॥९॥

देव्युवाच॥१०॥

दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान् बलसंवृतः।
बलान्नयसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम् ॥११॥

ऋषिरुवाच॥१२॥

-'धूम्रलोचन! तुम शीघ्र अपनी सेना साथ लेकर जाओ और उस दुष्ट के केश पकड़कर घसीटते हुए उसे बलपूर्वक यहाँ ले आओ॥४॥ उसकी रक्षा के लिए यदि कोई दूसरा खड़ा हो तो वह देवता, यक्ष अथवा गन्धर्व ही क्यों न हो, उसे अवश्य मार डालना'॥५॥

ऋषि कहते है-॥६॥ शुम्भ के इस प्रकार आज्ञा देने पर वह धुम्रलोचन दैत्य साठ हजार असुरों की सेना को साथ लेकर वहाँ से तुरंत चल दिया॥७॥ वहाँ पर पहुँचकर उसने हिमालय पर रहने वाली देवी को देखा और ललकार कर कहा-अरी! तू शुम्भ-निशुम्भ के पास चल। यदि इस समय प्रसन्नतापूर्वक मेरे स्वामी के समीप नहीं चलेगी तो मैं बलपूर्वक झोंटा पकड़कर घसीटते हुए तुझे ले चलूँगा'॥८-९॥

देवी बोली-॥१०॥ तुम्हें दैत्यों के राजा ने भेजा है, तुम स्वयं भी बलवान हो और तुम्हारे साथ विशाल सेना भी है; ऐसी दशा में यदि मुझे बलपूर्वक

इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः।।
हुंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः।।१३।।
अथ क्रुद्धं महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका।
ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्तिपरश्वधैः।।१४।।
ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम्।
पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः।।१५।।
कांश्चित् करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान्।
आक्रम्य चाधरेणान्यान् स जघान महासुरान्।।१६।।
केषांचित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी।
तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान् पृथक् ।।१७।।
विच्छिन्नबाहुशिरसः कृतास्तेन तथापरे।
पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः ।।१८।।
क्षणेन तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना।
तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना ।।१९।।

ले चलोगे तो मैं तुम्हारा क्या कर सकती हूँ?।।११।।
ऋषि कहते हैं-।।१२।। देवी के यों कहने पर असुर धुम्रलोचन उनकी ओर दौड़ा, तब अम्बिका ने 'हुँ' शब्द के उच्चारण मात्र से उसे भस्म कर दिया।।१३।। फिर तो क्रोध में भरी हुई दैत्यों की विशाल सेना और अम्बिका ने एक दूसरे पर तीखे सायकों, शक्तियों तथा फरसों की वर्षा आरम्भ की।।१४।। इतने में ही देवी का वाहन सिंह क्रोध में भरकर भयंकर गर्जना करके गर्दन के बालों को हिलाता हुआ असुरों की सेना में कूद पड़ा।।१५।। उसने कुछ दैत्यों को पंजों से मार से, कितनों को अपने जबड़ों से और कितने ही महादैत्यों को पटककर ओठ की दाढ़ों से घायल करके मार डाला।।१६।। उस सिंह ने नखों से कितनों के पेट फाड़ डाले और थप्पड़ मारकर कितनों के सिर धड़ से अलग कर दिए।।१७।। कितनों की भुजाएँ और मस्तक काट डाले तथा अपनी गर्दन के बाल हिलाते हुए उसने दूसरे दैत्यों के पेट फाड़कर उनका रक्त चूस लिया।।१८।। अत्यन्त क्रोध में भरे हुए देवी के वाहन उस महाबली सिंह ने क्षणभर में ही असुरों

श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम्।
बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवीकेसरिणा ततः ॥२०॥
चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भ प्रस्फुरिताधरः।
आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ ॥२१॥
हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्बहुभिः परिवारितौ।
तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु ॥२२॥
केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संशयो युधि।
तदाशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम् ॥२३॥
तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते।
शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम्॥ ॐ ॥२४॥

इति श्रीमार्कण्डेपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
शुम्भनिशुम्भसेनानीधूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोऽध्यायः॥६॥

उवाच ४, श्लोकाः २०, एवम् २४,
एवमादितः ४१२॥

की सारी सेना का संहार कर डाला॥१९॥
शुम्भ ने जब सुना कि देवी ने धूम्रलोचन असुर को मार डाला तथा उसके सिंह ने सारी सेना का सफाया कर डाला, तब उस दैत्यराज को बड़ा क्रोध हुआ। उसका ओठ काँपने लगा। उसने चण्ड और मुण्ड नामक दो महादैत्यों को आज्ञा दी-॥२०-२१॥ 'हे चण्ड! और हे मुण्ड! तुम लोग बहुत बड़ी सेना लेकर वहाँ जाओ, उस देवी के झोंटे पकड़कर अथवा उसे बाँधकर शीघ्र यहाँ ले आओ। यदि इस प्रकार उसको लाने में सन्देह हो तो युद्ध में सब प्रकार के अस्त्रों-शस्त्रों तथा समस्त आसुरी सेना का प्रयोग करके उसकी हत्या कर डालना॥२२-२३॥ उस दुष्टा की हत्या होने तथा सिंह के भी मारे जाने पर उस अम्बिका को बाँधकर साथ ले शीघ्र ही लौट आना'॥२४॥
इस प्रकार श्री मार्कण्डेय पुराण में सार्वणिक मन्वन्तर की कथा के अंतर्गत देवीमाहात्म्य में 'धूम्रलोचन-वध' नामक छठा अध्याय पूरा हुआ॥६॥

सप्तमोऽध्यायः

महाकाली द्वारा चण्ड और मुण्ड का वध

ध्यानम्

ॐ ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीं
न्यस्तैकाङ्घ्रिं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम्।
कह्लाराबद्धमालां नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां
मातङ्गीं शंखपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिभालाम्॥

'ॐ' ऋषिरुवाच॥१॥

आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः।
चतुरङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः ॥२॥
ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम्।
सिंहस्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने ॥३॥

ध्यान- मैं मातंगी देवी का ध्यान करता हूँ। वे रत्नमय सिंहासन पर बैठकर पढ़ते हुए तोते का मधुर शब्द सुन रही हैं। उनके शरीर का वर्ण श्याम है। वे अपना एक पैर कमल पर रखे हुए हैं और मस्तक पर अर्धचन्द्र धारण करती हैं तथा कह्लार पुष्पों की माला धारण किए वीणा बजाती है। उसके अंग में कसी हुई चोली शोभा पा रही है। वे लाल रंग की साड़ी पहने हाथ में शंखमय पात्र लिए हुए हैं। उनके बदन पर मधु का हल्का-हल्का प्रभाव जान पड़ता है और ललाट में बिंदी शोभा दे रही है।

ऋषि कहते हैं-॥१॥ तदनन्तर शुम्भ की आज्ञा पाकर वे चण्ड-मुण्ड आदि दैत्य चतुरंगिनी सेना के साथ अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित हो चल दिए॥२॥ फिर गिरिराज हिमालय के सुवर्णमय ऊँचे शिखर पर पहुँचकर उन्होंने सिंह पर बैठी देवी को देखा। वे मन्द-मन्द मुस्कुरा

ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः।
आकृष्टचापासिधरास्तथान्ये तत्समीपगाः ॥४॥
ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन् प्रति।
कोपेन चास्या वदनं मषीवर्णमभूत्तदा ॥५॥
भ्रुकुटीकुटिलात्तस्या ललाटफलकाद्द्रुतम्।
काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी ॥६॥
विचित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा।
द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसातिभैरवा ॥७॥
अतिविस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा।
निमग्नारक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा ॥८॥
सा वेगेनाभिपतिता घातयन्ती महासुरान्।
सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद्बलम् ॥९॥

रही थीं॥३॥ उन्हें देखकर दैत्य लोग तत्परता से पकड़ने का उद्योग करने लगे। किसी ने धनुष तान लिया, किसी ने तलवार सँभाली और कुछ लोग देवी के पास आकर खड़े हो गए॥४॥ तब अम्बिका ने उन शत्रुओं के प्रति बड़ा क्रोध किया। उस समय क्रोध के कारण उनका मुख काला पड़ गया॥५॥ ललाट में भौंहें टेढ़ी हो गईं और वहाँ से तुरन्त विकरालमुखी काली प्रकट हुईं, जो तलवार और पाश लिए हुए थीं॥६॥ वे विचित्र खट्वांग धारण किए और चीते के चर्म की साड़ी पहने नरमुण्डों की माला से विभूषित थीं। उनके शरीर का मांस सूख गया था, केवल हड्डियों का ढाँचा था, जिससे वे अत्यन्त भयंकर जान पड़ती थीं॥७॥ उनका मुख बहुत विशाल था, जीभ लपलपाने के कारण वे और भी डरावनी प्रतीत होती थीं। उनकी आँखें भीतर को धँसी हुई और कुछ लाल थीं, वे अपनी भयंकर गर्जना से सम्पूर्ण दिशाओं को गुँजा रही थीं॥८॥ बड़े-बड़े दैत्यों का वध करती हुई वे कालिकादेवी बड़े वेग से दैत्यों की उस सेना पर टूट पड़ीं और उन सबका भक्षण करने लगीं॥९॥ वे पार्श्वरक्षकों, अंकुशधारी महावतों,

पार्ष्णिग्राहाङ्कुशग्राहियोधघण्टासमन्वितान् ।
समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान् ॥१०॥
तथैव योधं तुरगै रथं सारथिना सह।
निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्य तिभैरवम् ॥११॥
एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम्।
पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसान्यमपोथयत् ॥१२॥
तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरैः।
मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्मथितान्यपि ॥१३॥
बलिनां तद् बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम् ।
ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्यांश्चाताडयत्तथा ॥१४॥
असिना निहताः केचित्केचित्खट्वाङ्गताडिताः।
जग्मुर्विनाशमसुरा दन्ताग्राभिहतास्तथा ॥१५॥

योद्धाओं और घण्टासहित कितने ही हाथियों को एक ही हाथ से पकड़कर मुँह में डाल लेती थीं।।१०।। इसी प्रकार घोड़े, रथ और सारथी के साथ रथी सैनिकों के मुँह में डालकर वे उन्हें बड़े भयानक रूप से चबा डालती थीं।।११।। किसी के बाल पकड़ लेतीं, किसी का गला दबा देतीं, किसी को पैरों से कुचल डालतीं और किसी को छाती से धक्के से गिराकर मार डालती थीं।।१२।। वे असुरों के छोड़े हुए बड़े-बड़े अस्त्र-शस्त्र मुँह से पकड़ लेतीं और रोष में भरकर उनको दाँतों से पीस डालती थीं।।१३।। काली ने बलवान एवं दुरात्मा दैत्यों की वह सारी सेना रौंद डाली, खा डाली और कितनों को मार भगाया।।१४।। कोई तलवार के घाट उतारे गए, कोई खट्वाङ्ग से पीटे गए और कितने ही असुर दाँतों के अग्रभाग से कुचले जाकर मृत्यु को प्राप्त हुए।।१५।। इस प्रकार देवी से असुर की उस सारी सेना को क्षण भर में मार गिराया। यह देख चण्ड उन अत्यन्त भयानक काली देवी की ओर दौड़ा।।१६।। तथा महादैत्य मुण्ड ने भी अत्यन्त भयंकर बाणों की वर्षा से तथा हजारों बार चलाए हुए चक्रों से उन भयानक नेत्रों वाली देवी

क्षणेन तद् बलं सर्वमसुराणां निपातितम्।
दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम् ॥१६॥
शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः।
छादयामास चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः ॥१७॥
तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम्।
बभुर्यथार्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम् ॥१८॥
ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी।
कालीकरालवक्त्रान्तर्दुर्दर्शदशनोज्ज्वला ॥१९॥
उत्थाय च महासिं हं देवी चण्डमधावत।
गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाच्छिनत् ॥२०॥

को आच्छादित कर दिया॥१७॥ वे अनेकों चक्र देवी के मुख में समाते हुए ऐसे जान पड़े, मानो सूर्य के बहुतेरे मण्डल बादल के उदर में प्रवेश कर रहे हों॥१८॥ तब भयंकर गर्जना करने वाली काली ने अत्यन्त रोष में भरकर विकट अट्टाहास किया। उस समय उनके विकराल वदन के भीतर से कठिनता से देखे जा सकने वाले दाँतों की प्रभा से वे अत्यन्त उज्जवल दिखाई देती थीं॥१६॥ देवी ने बहुत बड़ी तलवार हाथ में ले 'हँ' का उच्चारण करके चण्ड पर धावा किया और वे उसके केश पकड़कर उसी तलवार से उसका मस्तक काट डाला॥२०॥ चण्ड को मारा गया देखकर मुण्ड भी देवी की ओर दौड़ा। तब देवी ने रोष में भरकर उसे भी तलवार से घायल करके धरती पर सुला दिया॥२१॥ महापराक्रमी चण्ड और मुण्ड को मारा गया देख मरने से बची हुई बाकी सेना भय से व्याकुल हो चारों ओर भाग गई॥२२॥ तदनन्तर काली ने चण्ड और मुण्ड का मस्तक हाथ में ले चण्डिका के पास जाकर प्रचण्ड अट्टाहास करते हुए कहा-॥२३॥ 'देवि! मैने चण्ड और मुण्ड नामक इन दो महापशुओं को तुम्हें भेंट किया है। अब युद्ध यज्ञ में तुम शुम्भ और निशुम्भ का स्वयं ही वध करना'॥२४॥ **ऋषि कहते हैं**-॥२५॥ वहाँ लाये हुए उन चण्ड-मुण्ड नामक महादैत्यों

अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।
तमप्यपातयद्भूमौ सा खड्गाभिहतं रुषा ॥२१॥
हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।
मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम् ॥२२॥
शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च।
प्राह प्रचण्डाट्टाहासमिश्रमभेत्य चण्डिकाम् ॥२३॥
मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू।
युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि ॥२४॥

ऋषिरुवाच॥२५॥

तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ।
उवाच कालीं कल्याणी ललितं चण्डिका वचः ॥२६॥
यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता।
चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि॥ॐ ॥२७॥

इति श्रीमार्कण्डेपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
चण्डमुण्डवधो नाम सप्तमोऽध्यायः॥७॥
उवाच २, श्लोकाः २५, एवम् २७, एवमादितः ४३१॥

को देखकर कल्याणमयी चण्डी ने काली से मधुर वाणी में कहा-॥२६॥ 'देवि! तुम चण्ड और मुण्ड को लेकर मेरे पास आयी हो, इसलिए चामुण्डा के नाम से तुम्हारी ख्याति होगी'॥२७॥

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वनतर की कथा के अन्तर्गत देवी माहात्म्य में 'चण्ड-मुण्ड-वध' नामक सातवाँ अध्याय पूरा हुआ॥७॥

अष्टमोऽध्यायः

देवी के द्वारा सेना सहित सेनापति उदायुद्ध, कुम्बु, धौम्रकुल, कालक, दौहृद, कालकेय आदि असुर सहित रक्त बीज वध

ध्यानम्

ॐ अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं
धृतपाशाङ्कुशबाणचापहस्ताम्।
अणिमादिभिरावृतां मयूखै-
रहमित्येव विभावये भवानीम्।।

'ॐ' ऋषिरुवाच।।१।।

चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते।
बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः ।।२।।
ततः कोपपराधीनचेताः शुम्भः प्रतापवान्।
उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह ।।३।।

ध्यान- मैं अणिमा आदि सिद्धिमयी किरणों से आवृत भवानी का ध्यान करता हूँ। उनके शरीर का रंग लाल है, नेत्रों में करुणा लहरा रही है तथा हाथों में पाश, अंकुश, बाण और धनुष शोभा पाते हैं।

ऋषि कहते हैं-।।१।। चण्ड और मुण्ड नामक दैत्यों के मारे जाने तथा बहुत सी सेना का संहार हो जाने पर दैत्यों के राजा प्रतापी शुम्भ के मन में बड़ा क्रोध हुआ और उसने दैत्यों की सम्पूर्ण सेना को युद्ध के लिए कूच करने की आज्ञा दी।।२-३।। वह बोला-'आज उदायुध नाम के छियासी दैत्य-सेनापति अपनी सेनाओं के साथ युद्ध के लिए प्रस्थान करें। कम्बु नाम वाले दैत्यों के चौरासी सेनानायक अपनी वाहिनी से घिरे हुए यात्रा करें।।४।। पचास कोटिवीर्य-कुल के और सौ धौम्र-कुल के असुर

अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः।।
कम्बूनां चतुरशीतिर्निर्यान्तु स्वबलैर्वृताः ।।४।।
कोटिवीर्याणि पञ्चाशदसुराणां कुलानि वै।
शतं कुलानि धौम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया ।।५।।
कालका दौर्हृदा मौर्याः कालकेयास्तथासुराः।
युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम ।।६।।
इत्याज्ञाप्यासुरपतिः शुम्भो भैरवशासनः।
निर्जगाम महासैन्यसहस्त्रैर्बहुभिर्वृतः ।।७।।
आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम्।
ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम् ।।८।।
ततः सिंहो महानादमतीव कृतवान् नृप।
घण्टास्वनेन तन्नादमम्बिका चोपबृंहयत् ।।९।।
धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा।
निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारितानना ।।१०।।

सेनापति मेरी आज्ञा से सेना सहित कूच करें।।५।। कालक, दौर्हृद, मौर्य और कालकेय असुर भी युद्ध के लिए तैयार हो मेरी आज्ञा से तुरंत प्रस्थान करें'।।६।। भयानक शासन करने वाला असुरराज शुम्भ इस प्रकार आज्ञा दे सहस्त्रों बड़ी-बड़ी सेनाओं के साथ युद्ध के लिए प्रस्थित हुआ।७।। उसकी अत्यन्त भयंकर सेना आती देख चण्डिका ने अपने ध नुष की टंकार से पृथ्वी और आकाश के बीच का भाग गुँजा दिया।।८।। राजन्! तदनन्तर देवी के सिंह ने भी बड़े जोर-जोर से दहाड़ना आरम्भ किया, फिर अम्बिका ने घण्टे के शब्द से उस ध्वनि को और भी बढ़ा दिया।।९।। धनुष की टंकार, सिंह की दहाड़ और घण्टे की ध्वनि से सम्पूर्ण दिशाएँ गूँज उठीं। उस भयंकर शब्द से काली ने अपने विकराल मुख को और भी बढ़ा लिया तथा इस प्रकार से विजयिनी हुईं।।१०।। उस तुमुल नाद को सुनकर दैत्यों की सेनाओं ने चारों ओर से आकर चण्डिका

तं निनादमुपश्रुत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम्।
देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिताः ॥११॥
एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम्।
भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः ॥१२॥
ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः।
शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः ॥१३॥
यस्य देवस्य यद्रूपं यथाभूषणवाहनम्।
तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान् योद्धुमाययौ ॥१४॥
हंसयुक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः।
आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणी साभिधीयते ॥१५॥
माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी।
महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखाविभूषणा ॥१६॥
कौमारी शक्तिहस्ता च मूयरवरवाहना।
योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी ॥१७॥

देवी, सिंह तथा काली देवी को क्रोधपूर्वक घेर लिया।।११।। राजन्! इसी बीच में असुरों के विनाश तथा देवताओं के अभ्युदय के लिए ब्रह्मा, शिव, कार्तिकेय, विष्णु तथा इन्द्र आदि देवों की शक्तियाँ, जो अत्यन्त पराक्रम और बल से सम्पन्न थीं, उनके शरीरों से निकलकर उन्हीं के रूप में चण्डिका देवी के पास गईं।।१२-१३।। जिस देवता का जैसा रूप, जैसी वेश-भूषा और जैसा वाहन है, ठीक वैसे ही, साधनों से सम्पन्न हो उसकी शक्ति असुरों से युद्ध करने के लिए आयी।।१४।। सबसे पहले हंसयुक्त विमान पर बैठी हुई अक्षसूत्र और कमण्डलु से सुशोभित ब्रह्माजी की शक्ति उपस्थित हुई, जिसे ब्रह्माणी कहते हैं।।१५।। महादेव जी की शक्ति वृषभ पर आरूढ़ हो हाथों में श्रेष्ठ त्रिशूल धारण किए महानाग का कंगन पहने, मस्तक में चन्द्ररेखा से विभूषित हो वहाँ आ पहुँची।।१६।। कर्तिकेय जी की शक्तिरूपा जगदम्बिका उन्हीं का रूप धारण किए श्रेष्ठ

तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता।
शंखचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ ॥१८॥
यज्ञ वाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः।
शक्तिः साप्यायययौ तत्र वाराहीं विभ्रती तनुम् ॥१९॥
नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः।
प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः ॥२०॥
वज्रहस्ता तथैवैन्द्री गजराजोपरि स्थिता।
प्राप्ता सहस्त्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा ॥२१॥
ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देवशक्तिभिः।
हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याऽऽह चण्डिकाम् ॥२२॥
ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा।
चण्डिकाशक्तिरत्युग्रा शिवाशतनिनादिनी ॥२३॥
सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता।
दूत त्वं गच्छ भगवन् पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः ॥२४॥

मयूर पर आरूढ़ हो हाथ में शक्ति लिए दैत्यों से युद्ध करने के लिए आयीं।।१७।। इसी प्रकार भगवान् विष्णु की शक्ति गरुड़ पर विराजमान हो शंख, चक्र, गदा, शार्ङ्ग धनुष तथा खड्ग हाथ में लिए वहाँ आयी।।१८।। अनुपम यज्ञवाराह का रूप धारण करने वाले श्रीहरि की जो शक्ति है, वह भी वाराह-शरीर धारण करके वहाँ उपस्थित हुई।।१९।। नारसिंही शक्ति भी नृसिंह के समान शरीर धारण करके वहाँ आयी। उसकी गर्दन के बालों के झटके से आकाश के तारे बिखरे पड़ते थे।।२०।। इसी प्रकार इन्द्र की शक्ति वज्र हाथ में लिए गजराज ऐरावत पर बैठकर आयी। उसके भी सहस्त्र नेत्र थे। इन्द्र का जैसा रूप है, वैसा ही उसका भी था।।२१।।

तदनन्तर उन देव-शक्तियों से घिरे हुए महादेवजी ने चण्डिका से कहा-'मेरी प्रसन्नता के लिए तुम शीघ्र ही इन असुरों का संहार करों'।।२२।। तब देवी के शरीर से अत्यन्त भयानक और परम उग्र चण्डिका-शक्ति प्रकट हुई।

ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावतिगर्वितौ।
ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः ॥२५॥
त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः।
यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ ॥२६॥
बलावलेपादथ चेद्भवन्तो युद्धकाङ्क्षिणः।
तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः ॥२७॥
यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम्।
शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता ॥२८॥
तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः।
अमर्षापूरिता जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता ॥२९॥
ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः।
ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः ॥३०॥
सा च तान् प्रहितान् बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वाधान्।
चिच्छेद लीलायाऽऽध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः ॥३१॥

जो सैकड़ों गीदड़ियों की भाँति आवाज करने वाली थी।।।२३।। उस अपराजिता देवी ने धूमिल जटावाले महादेवजी से कहा-'भगवन्! आप शुम्भ-निशुम्भ के पास दूत बनकर जाइये।।२४।। और उन अत्यन्त गर्वीले दानव शुम्भ एवं निशुम्भ दोनों से कहिये। साथ ही उनके अतिरिक्त भी जो दानव युद्ध के लिए वहाँ उपस्थित हों उनको भी यह संदेश दीजिये-।।२५।। 'दैत्यो! यदि तुम जीवित रहना चाहते हो तो पाताल को लौट जाओ। इन्द्र को त्रिलोकी का राज्य मिल जाए और देवता यज्ञभाग का उपभोग करें।।२६।। यदि बल के घमंड में आकर युद्ध की अभिलाषा रखते हो तो आओ। मेरी शिवाएँ(योगिनियाँ) तुम्हारे कच्चे मांस से तृप्त हों'।।२७।। चूँकि उस देवी ने भगवान शिव को दूत के रूप में कार्य में नियुक्त किया था, इसलिए वह 'शिवदूती' के नाम से संसार में विख्यात हुई।।२८।। वे महादैत्य भी भगवन् शिव के मुँह से देवी के वचन सुनकर क्रोध में भर गए और जहाँ कात्यायनी विराजमान थीं, उस ओर बढ़े।।२९।। तदनन्तर वे दैत्य अमर्ष में भरकर पहले ही देवी के ऊपर बाण,

तस्याग्रतस्तथा काली शूलपातविदारितान्।
खट्वाङ्गपोथितांश्चारीन् कुर्वती व्यचरत्तदा ॥३२॥
कमण्डलुजलाक्षेपहतवीर्यान् हतौजसः।
ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून् येन येन स्म धावति ॥३३॥
माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी।
दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यातिकोपना ॥३४॥
ऐन्द्रीकुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः
पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः ॥३५॥
तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः।
वाराहमूर्त्या न्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः ॥३६॥
नखैर्विदारितांश्चान्यान् भक्षयन्ती महासुरान्।
नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगम्बरा ॥३७॥

शक्ति और ऋष्टि आदि अस्त्रों की वृष्टि करने लगे।।३०।। तब देवी ने खेल-खेल में ही धनुष की टंकार की और उसे छोड़े हुए बड़े-बड़े बाणों द्वारा दैत्यों के चलाये हुए बाण, शूल, शक्ति और फरसों को काट डाला।।३१।। फिर काली उनके आगे होकर शत्रुओं को शूल के प्रहार से विदीर्ण करने लगी और खटवांग से उनका कचूमर निकालती हुई रणभूमि में विचरने लगी।।३२।। ब्रह्माणी भी जिस-जिस ओर दौड़ती, उसी-उसी ओर अपने कमण्डलु का जल छिड़क कर शत्रुओं के ओज और पराक्रम को नष्ट कर देती थी।।३३।। माहेश्वरी ने त्रिशूल से तथा वैष्णवी ने चक्र से और अत्यन्त क्रोध में भरी हुई कुमार कार्तिकेय की शक्ति ने शक्ति से दैत्यों का संहार आरम्भ किया।।३४।। इन्द्रशक्ति के वज्रप्रहार से विदीर्ण हो सैकड़ों दैत्य-दानव रक्त की धारा बहाते हुए पृथ्वी पर सो गए।।३५।। वाराही शक्ति ने कितनों को अपनी थूथुन की मार से नष्ट किया, दाढ़ों के अग्रभाग से कितनों की छाती छेद डाली और कितने ही दैत्य उसके चक्र की चोट से विदीर्ण होकर गिर पड़े।।३६।। नारसिंही भी दूसरे-दूसरे महादैत्यों को अपने नखों से विदीर्ण करके खाती और सिंहनाद से दिशाओं एवं आकाश को गंजाती हुई युद्ध-क्षेत्र में विचरने लगी।।३७।।

चण्डाट्टाहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः।
पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्चखादाथ सा तदा ॥३८॥
इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महासुरान्।
दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः ॥३९॥
पलायनपरान् दृष्ट्वा दैत्यान् मातृगणार्दितान्।
योद्धुमभ्यायययौ क्रुद्धौ रक्तबीजो महासुरः ॥४०॥
रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः।
समुत्पतति मेदिन्यां तत्प्रमाणस्तदासुरः ॥४१॥
युयुधे स गदापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः।
ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमतडयत् ॥४२॥
कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम्।
समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः ॥४३॥
यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्तबिन्दवः।
तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः ॥४४॥

कितने ही असुर शिवदूती के प्रचण्ड अट्टाहास से अत्यन्त भयभीत हो पृथ्वी पर गिर पड़े और गिरने पर उन्हें शिवदूती ने उस समय अपना ग्रास बना लिया।।३८।।

इस प्रकार क्रोध में भरे हुए मातृगणों को नाना प्रकार के उपायों से बड़े-बड़े असुरों का मर्दन करते देख दैत्य सैनिक भाग खड़े हुए।।३९।। मातृगणों से पीड़ित दैत्यों को युद्ध से भागते देख रक्तबीज नामक महादैत्य क्रोध में भरकर युद्ध करने के लिए आया।।४०।। उसके शरीर से जब रक्त की बूंद पृथ्वी पर गिरती, तब उसी के समान शक्तिशाली एक दूसरा महादैत्य पृथ्वी पर पैदा हो जाता।।४१।।

महासुर रक्तबीज हाथ में गदा लेकर इन्द्रशक्ति के साथ युद्ध करने लगा। तब एन्द्री ने अपने वज्र से रक्तबीज को मारा।।४२।। वज्र से घायल होने पर उसके शरीर में बहुत सा रक्त चूने लगा और उससे उसी के समान रूप तथा पराक्रम वाले योद्धा उत्पन्न होने लगे।।४३।। उसके शरीर से रक्त की जितनी बूँदें गिरीं, उतने ही पुरुष उत्पन्न हो गए। वे सब रक्तबीज के

ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः।
समं मातृभिरत्युग्रशस्त्रपातातिभीषणम् ॥४५॥
पुनश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा।
ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः ॥४६॥
वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह।
गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम् ॥४७॥
वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्त्रावसम्भवैः।
सहस्रशो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरैः ॥४८॥
शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना।
माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम् ॥४९॥
स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत् पृथक्।
मातृः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः ॥५०॥
तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर्भुवि।
पपात यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः ॥५१॥

समान ही वीर्यवान्, बलवान तथा पराक्रमी थे।।४४।। वे रक्त से उत्पन्न होने वाले पुरुष भी अत्यन्त भयंकर अस्त्रों-शस्त्रों का प्रहार करते हुए वहाँ मातृगणों के साथ घोर युद्ध करने लगे।।४५।। पुनः वज्र के प्रहार से जब उसका मस्तक घायल हुआ, तब रक्त बहने लगा और उससे हजारों पुरुष उत्पन्न हो गए।।४६।। वैष्णवी युद्ध में रक्तबीज पर चक्र का प्रहार किया तथा ऐन्द्री ने उस दैत्य सेनापति को गदा से चोट पहुँचायी।।४७।।
वैष्णवी के चक्र से घायल होने पर उसके शरीर से जो रक्त बहा और उससे जो उसी के बराबर आकार वाले सहस्त्रों महादैत्य प्रकट हुए, उनके द्वारा सम्पूर्ण जगत् व्याप्त हो गया।।४८।। कौमारी ने शक्ति से, वाराही ने खड्ग से और माहेश्वरी नें त्रिशूल से महादैत्य रक्तबीज को घायल किया।।४९।। क्रोध में भरे हुए महादैत्य रक्तबीज ने भी गदा से सभी मातृ-शक्तियों पर पृथक-पृथक प्रहार किया।।५०।। शक्ति और शूल आदि से अनेक बार घायल होने पर जो उसके शरीर से रक्त की धारा पृथ्वी पर गिरी, उससे भी निश्चय ही सैकड़ों असुर उत्पन्न हुए।।५१।। इस प्रकार

तैश्चासुरासृक्सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत्।
व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम् ॥५२॥
तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरा।
उवाच कालीं चामुण्डे विस्तीर्णं वदनं कुरु ॥५३॥
मच्छस्त्रपातसम्भूतान् रक्तबिन्दून्महासुरान्।
रक्तबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना ॥५४॥
भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान्महासुरान्।
एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति ॥५५॥
भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे।
इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम् ॥५६॥
मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम्।
ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम् ॥५७॥
न चास्या वेदनां चक्रे गदापातोऽल्पिकामपि।
तस्याहतस्य देहातुबहुसुस्राव शोणितम् ॥५८॥

उस महादैत्य रक्त से प्रकट हुए असुरों द्वारा सम्पूर्ण जगत व्याप्त हो गया। इससे उन देवताओं को बड़ा भय हुआ।।५२।। देवताओं को उदास देख चण्डिका ने काली से शीघ्रतापूर्वक कहा-'चामुण्डे! तुम अपना मुख और भी फैलाओ।।५३।। तथा मेरे शस्त्रपात से गिरने वाले रक्त बिन्दुओं और उनसे उत्पन्न होने वाले महादैत्यों को तुम अपने इस उतावले मुख से खा जाओ।।५४।। इस प्रकार रक्त से उत्पन्न होने वाले महादैत्यों का भक्षण करती हुई तुम रण में विचरती रहो। ऐसा करने से उस दैत्य का सारा रक्त क्षीण हो जाने पर वह स्वयं ही नष्ट हो जाएगा।।५५।। उन भयंकर दैत्यों को जब तुम खा जाओगी, तब दूसरे नये दैत्य उत्पन्न नहीं हो सकेंगे।' काली से यों कहकर चण्डिका देवी ने शूल से रक्तबीज को मारा।।५६।। और काली ने अपने मुख में उसका रक्त ले लिया। तब उसने वहां चण्डिका पर गदा से प्रहार किया।।५७।। किंतु उस गदापात ने देवी को तनिक भी वेदना नहीं पहुँचायी।। रक्तबीज के घायल शरीर से बहुत सा

यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतिच्छति।
मुखे समुद्गता येऽस्या रक्तपातान्महासुराः ॥५९॥
तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम्।
देवी शूलेन व्रजेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः ॥६०॥
जघान रक्तबीजं तं चामुण्डापीतशोणितम्।
स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसङ्घसमा हतः ॥६१॥
नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः।
ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप ॥६२॥
तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः॥ॐ॥ ६३॥

इति श्रीमार्कण्डेपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
रक्तबीजवधो नामाष्टमोऽध्यायः ॥७॥

उवाच १, अर्धश्लोकः १, श्लोकाः ६१, एवम् ६३,
एवमादितः ५०२ ॥

रक्त गिरा॥५८॥ किंतु ज्यों ही वह गिरा त्यों ही चामुण्डा ने उसे अपने मुख में ले लिया। रक्त गिरने से काली के मुख में जो महादैत्य उत्पन्न हुए, उन्हें भी वह चट कर गयी और उसने रक्तबीज का रक्त भी पी लिया। तदनन्तर देवी ने रक्तबीज को, जिसका रक्त चामुण्डा ने पी लिया था, वज्र, बाण, खड्ग तथा ऋषि आदि से मार डाला। राजन्! इस प्रकार शस्त्रों के समुदाय से आहत एवं रक्तहीन हुआ महादैत्य रक्तबीज पृथ्वी पर गिर पड़ा। नरेश्वर! इससे देवताओं को अनुपम हर्ष की प्राप्ति हुई॥५९-६०॥ और मातृगण उन असुरों के रक्तपान के मद से उद्धत-सा होकर नृत्य करने लगा॥६३॥

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेय पुराण में सार्वणिक मन्वन्तर की कथा के अंतर्गत देवी माहात्म्य में 'रक्तबीज-वध' नामक आठवाँ अध्याय पूरा हुआ॥८॥

नवमोऽध्याय:

देवी द्वारा निशुम्भ-वध तथा सिंह, काली, शिवदूती, कौमारी, ब्रह्माणी, माहेश्वरी, वाराही, वैष्णवी एवं ऐन्द्री के द्वारा सेना का विनाश।

ध्यानम्

ॐ बन्धूककाञ्चननिभं रुचिराक्षमालां
पाशाङ्कुशौ च वरदां निजबाहुदण्डैः।
बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्र-
मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि॥

'ॐ' राजोवाच॥१॥

विचित्रमिदमाख्यातं भगवन् भवता मम।
देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम् ॥२॥
भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते।
चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः ॥३॥

'ॐ' ऋषिरुवाच॥४॥

ध्यान- मैं अर्धनारीश्वर के श्रीविग्रह की निरन्तर शरण लेता हूँ। उसका वर्ण बन्धूकपुष्प और सुवर्ण के समान रक्तपीत मिश्रित है। वह अपनी भुजाओं में सुन्दर अक्षमाला, पाश, अंकुश और वरद-मुद्रा धारण करता है, अर्धचन्द्र उसका आभूषण है तथा वह तीन नेत्रों से सुशोभित है।

राजा ने कहा-॥१॥ भगवन्! आपने रक्तबीज के वध से सम्बन्ध रखने वाला देवी-चरित्र का यह अद्भुत माहात्म्य मुझे बतलाया॥२॥ अब रक्तबीज के मारे जाने पर अत्यन्त क्रोध में भरे हुए शुम्भ और निशुम्भ ने जो कर्म किया, उसे मैं सुनना चाहता हूँ॥३॥

ऋषि कहते हैं-॥४॥ राजन्! युद्ध में रक्तबीज तथा अन्य दैत्यों के मारे

चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते।
शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे ॥५॥
हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन्।
अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययासुरसेनया ॥६॥
तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः।
संदष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः ॥७॥
आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः।
निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः ॥८॥
ततो युद्धमतीवासीद्देव्या शुम्भनिशुम्भयोः।
शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः ॥९॥
चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिका स्व शरोत्करैः।
ताडयामास चांगेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ ॥१०॥
निशुम्भो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम्।
अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम् ॥११॥

जाने पर शुम्भ और निशुम्भ के क्रोध की सीमा न रही॥५॥ अपनी विशाल सेना इस प्रकार मारी जाती देख निशुम्भ अमर्ष में भरकर देवी की ओर दौड़ा। उसके साथ असुरों की प्रधान सेना थी॥६॥ उसके आगे, पीछे तथा पार्श्व भाग में बड़े-बड़े असुर थे जो क्रोध से ओठ चबाते हुए देवी को मार डालने के लिए आए॥७॥ महापराक्रमी शुम्भ भी अपनी सेना के साथ मातृगणों से युद्ध करके क्रोधवश चण्डिका को मारने के लिए आ पहुँचा॥८॥ तब देवी के साथ शुम्भ और निशुम्भ का घोर संग्राम छिड़ गया। वे दोनों दैत्य मेघों की भांति बाणों की भयंकर वृष्टि कर रहे थे॥९॥ उन दोनों के चलाये हुए बाणों को चण्डिका ने अपने बाणों के समूह से तुरंत काट डाला और शस्त्र समूहों की वर्षा करके उन दोनों दैत्यपतियों के अंगों में भी चोट पहुँचायी॥१०॥ निशुम्भ ने तीखी तलवार और चमकती हुई ढाल लेकर देवी के श्रेष्ठ वाहन सिंह के मस्तक पर

ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम्।
निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम् ॥१२॥
छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः।
तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम् ॥१३॥
कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः।
आयातं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत् ॥१४॥
आविध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति।
सापि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता ॥१५॥
ततः परशुहस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गवम्।
आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूतले ॥१६॥
तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे।
भ्रातर्यतीव संक्रुद्ध प्रययौ हन्तुमम्बिकाम् ॥१७॥
स रथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः ।
भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः ॥१८॥

प्रहार किया॥११॥ अपने वाहन को चोट पहुँचने पर देवी ने क्षुरप्र नामक बाण से निशुम्भ की श्रेष्ठ तलवार तुरंत ही काट डाली और उसकी ढाल को भी, जिसमें आठ चाँद जड़े थे, खण्ड-खण्ड कर दिया॥१२॥ ढाल और तलवार के कट जाने पर उस असुर ने शक्ति चलायी, किंतु सामने आने पर देवी ने चक्र से उसके भी दो टुकड़े कर दिए॥१३॥ अब तो निशुम्भ क्रोध से जल उठा और उस दानव ने देवी को मारने के लिये शूल उठाया; किन्तु देवी ने समीप आने पर उसे भी मुक्के से मारकर चूर्ण कर दिया॥१४॥ तब उसने गदा घुमाकर चण्डी के ऊपर चलायी, परन्तु वह भी देवी के त्रिशूल से कटकर भस्म हो गयी॥१५॥ तदनन्तर दैत्यराज निशुम्भ को फरसा हाथ में लेकर आते देख देवी ने बाण समूहों से घायल कर धरती पर सुला दिया।१६॥ उस भयंकर पराक्रमी भाई निशुम्भ के धराशायी हो जाने पर शुम्भ को बड़ा क्रोध हुआ और अम्बिका का वध

तमायान्तं समालोक्य देवी शंखमवादयत्।
ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीव दुःसहम् ॥१९॥
पूरयामास ककुभो निजघण्टास्वनेन च।
समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना ॥२०॥
ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः।
पूरयामास गगनं गां तथैव दिशो दश ॥२१॥
ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत्।
कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः ॥२२॥
अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह।
तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ ॥२३॥
दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा।
तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः ॥२४॥
शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा।
आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया ॥२५॥

करने के लिये वह आगे बढ़ा॥१७॥ रथ पर बैठे-बैठे ही उत्तम आयुधों से सुशोभित अपनी बड़ी-बड़ी आठ अनुप्म भुजाओं से समूचे आकश को ढककर वह अद्‌भुत शोभा पाने लगा॥१८॥ उसे आते देख देवी ने शंख बजाया और धनुष की प्रत्यंचा का भी अत्यन्त दुस्सह शब्द किया॥१९॥ साथ ही अपने घण्टे के शब्द से जो समस्त दैत्य-सैनिकों का तेज नष्ट करने वाला था, सम्पूर्ण दिशाओं को व्याप्त कर दिया॥२०॥ तदनन्तर सिंहने भी अपनी दहाड़ से, जिसे सुनकर बड़;-बड़; गजराजों का महान मद दूर हो जाता हथा, आकाश, पृथ्वी और दसों दिशाओं को गुँजा दिया॥२१॥ फिर काली ने आकाश में उछल/कर अपने दोनों हाथों पर आघात किया। उससे ऐसा भयंकर शब्द हुआ, जिससे पहले के सभी शब्द शान्त हो गये॥२२॥ तत्पश्चात शिवदूती ने दैत्यों के लिये अमंगलजनक अट्टहास किया, इन शब्दों को सुनकर समस्त असुर थर्रा उठै; किन्तु

सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम्।
निर्घातनिःस्वनो घोरो जितवानवनीपते ॥२६॥
शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान्।
चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रशः ॥२७॥
ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभिजघान तम्।
स तदाभिहतो भूमौ मूर्च्छितो निपपात ह ॥२८॥
ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः।
आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा ॥२९॥
पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः।
चक्रायुधेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम् ॥३०॥
ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी।
चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरैः सायकांश्च तान् ॥३१॥
ततो निशुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम्।
अभ्यधावत वै हन्तुं दैत्यसेनासमावृतः ॥३२॥

शुम्भ को बड़ा क्रोध हुआ॥२३॥ उस समय देवी ने जब शुम्भ को लक्ष्य करके कहा-ओ दुरात्मन् ! खड़ा रह, खड़ा रह, तभी आकाश में खड़े हुए देवता बोल उठे- जय हो, जय हो॥२४॥ शुम्भ ने वहाँ आकर ज्वालाओं से युक्त अत्यन्त भयानक शक्ति चलायी। अग्निमय पर्वत के समान आती हुई उस शक्ति को देवी ने बड़े भारी उल्का से दूर हटा दिया॥२५॥ उस समय शुम्भ के सिंहनाद से तीनों लोक गूँज उठे। राजन्! उसकी प्रतिध्वनि से वज्रपात के समान भयानक शब्द हुआ, जिसने अन्य सब शब्दों को जीत लिया॥२६॥ शुम्भ के चलाये हुए बाणों के देवी ने और देवी के चलाये हुए बाणों के शुम्भ ने अपने भयंकर बाणों द्वारा सैकड़ों और हजारों टुकड़े कर दिये॥२७॥ तब क्रोध से भरी हुई चण्डिका ने शुम्भ को शूल से मारा। उसके आघात से मूर्च्छित हो वह पृथ्वी पर गिर पड़ा॥२८॥

तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका।
खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे ॥३३॥
शूलहस्तं समायान्तं निशुम्भममरार्दनम्।
हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका ॥३४॥
भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निः सृतोऽपरः।
महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन् ॥३५॥
तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः।
शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद्भुवि ॥३६॥
ततः सिंहश्चखादोग्रं दंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान्।
असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथापरान् ॥३७॥
कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः।
ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः ॥३८॥
माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे।
वाराहीतुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृता भुवि ॥३९॥

इतने में ही निशुम्भ को चेतना हुई और उसने धनुष हाथ में लेकर बाणों द्वारा देवी, काली तथा सिंह को घायल कर डाला॥२९॥ फिर उस दैत्यराज ने दस हजार बाँहें बनाकर चक्रों के प्रहार से चण्डिका को आच्छादित कर दिया॥३०॥ तब दुर्गम पीड़ा का नाश करने वाली भगवती दुर्गा ने कुपित होकर अपने बाणों से उन चक्रों तथा बाणों को काट गिराया॥३१॥ यह देख निशुम्भ दैत्यसेना के साथ चण्डिका का वध करने के लिये हाथ में गदा ले बड़े वेग से दौड़ा॥३२॥ उसके आते ही चण्डी ने तीखी धारवाली तलवार से उसकी गदा को शीघ्र ही काट डाला। तब उसने शूल हाथ में ले लिया॥३३॥ देवताओं को पीड़ा देने वाले निशुम्भ को शूल हाथ में लिये आते देख चण्डिका ने वेग से चलाये हुए अपने शूल से उसकी छाती छेद डाली॥३४॥ शूल से विदीर्ण हो जाने पर उसकी छाती से एक दूसरा महाबली एवं महापराक्रमी पुरुष 'खड़ी रह, खड़ी

खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः।
वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथापरे ॥४०॥
केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात्।
भक्षिताश्चापरे कालीशिवदूतीमृगाधिपैः ॥ॐ ॥४१॥

इति श्रीमार्कण्डेपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये निशुम्भवधो नाम नवमोऽध्यायः ॥९॥
उवाच २, श्लोकाः ३९, एवम् ४१,
एवमादितः ५४३ ॥

रह' कहता हुआ निकला॥३५॥ उस निकलते हुए पुरुषकी बात सुनकर देवी ठठाकर हँस पड़ी और खड्ग से उन्होंने उसका मस्तक काट डाला। फिर तो वह पृथ्वी पर गिर पड़ा॥३६॥ तदनन्तर सिंह अपनी दाढ़ों से असुरों की गर्दन कुचलकर खाने लगा। यह बड़ा भंयकर दृश्य था। उध र काली तथा शिवदूती ने भी अन्यान्य दैत्यों का भक्षण आरम्भ किया॥३७॥ कौमारी की शक्ति से विदीर्ण होकर कितने ही महादैत्य नष्ट हो गये। ब्रह्माणी के मन्त्रपूत जल से निस्तेज होकर कितने ही भाग खड़े हुए॥३८॥ कितने ही दैत्य माहेश्वरी के त्रिशूल से छिन्न-भिन्न हो धराशायी हो गये। वाराही के थूथुन के आघात से कितनों का पृथ्वी पर कचूमर निकल गया॥३९॥ वैष्णवी ने भी अपने चक्र से दानवों के टुकड़े-टुकड़े कर डाले ऐन्द्री के हाथ से छूटे हुए वज्र से भी कितने ही प्राणों से हाथ ध ो बैठे॥४०॥

कुछ असुर नष्ट हो गये, कुछ उस महायुद्ध से भाग ये तथा कितने ही काली, शिवदूती तथा सिंह के ग्रास बन गये॥४१॥

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में 'निशुम्भ-वध' नामक नवाँ अध्याय पूरा हुआ॥९॥

दशमोऽध्यायः

अम्बिका द्वारा शुम्भ के अस्त्र-शस्त्र नष्ट होना
शुम्भ-वध तथा वातावरण शुद्ध होना

ध्यानम्

ॐ उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्नि-
नेत्रां धनुश्शरायुताङ्कुशपाशशूलम्।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपां
कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम्॥

'ॐ' ऋषिरुवाच॥१॥

निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसम्मितम्।
हन्यमानं बलं चैव शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः ॥२॥
बलावलेपाद्दुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह।
अन्यासां बलमाश्रित्य युद्ध्यसे यातिमानिनी ॥३॥

'ॐ' देव्युवाच॥४॥

ध्यान-मैं मस्तक पर अर्धचन्द्र धारण करने वाली शिवशिक्तस्वरूपा भवगती कामेश्वरी का हृदय में चिन्तन करता हूँ। वे तपाये हुए सुवर्ण के समान सुन्दर हैं। सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि-ये ही तीन उनके नेत्र हैं तथा वे अपने मनोहर हाथों में धनुष बाण, अंकुश, पाश और शूल धारण किये हुए हैं।

ऋषि कहते हैं - ॥१॥ राजन् ! अपने प्राणों के समान प्यारे भाई निशुम्भ को मारा गया देख तथा सारी सेना का संहार होता जान शुम्भ ने कुपित होकर कहा-॥२॥ दुष्ट दुर्गे ! तू बल के अभिमान में अकार झूठ-मूठका घमण्ड न दिखा। तू बड़ी मानिनी बनी हुई है, किन्तु दूसरी स्त्रियों के बल का सहारा लेकर लड़ती है॥३॥

देवी बोलीं - ॥४॥ ओ दुष्ट ! मैं अकेली ही हूँ। इस संसार में मेरे सिवा दूसरी कौन है। देख, ये मेरी ही विभूतियाँ हैं, अतः मुझमें ही प्रवेश कर रही हैं॥५॥

एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा।
पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः ॥५॥
ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखा लयम्।
तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका ॥६॥

देव्युवाच ॥७॥

अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदास्थिता।
तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव ॥८॥

ऋषिरुवाच ॥९॥

ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः।
पश्यतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम् ॥१०॥
शरवर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैव दारुणैः।
तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयङ्करम् ॥११॥
दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका।
बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः ॥१२॥
मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी।
बभञ्ज लीलयैवोग्रहुङ्कारोच्चारणादिभिः ॥१३॥

तदनन्तर ब्रह्माणी आदि समस्त देवियाँ अम्बिका देवी के शरीर में लीन हो गयीं। उस समय केवल अम्बिका देवी ही रह गयीं॥६॥

देवी बोलीं-॥७। मैं अपनी ऐश्वर्यशक्ति से अनेक रूपों में यहाँ उपस्थित हुई थी। उन सब रूपों को मैंने समेट लिया। अब अकेली ही युद्ध में खड़ी हूँ तुम स्थिर हो जाओ॥८॥

ऋषि कहते हैं-॥९॥ तदन्तर देवी और शुम्भ दोनों में सब देवताओं तथा दानवों के देखते-देखते भयंकर युद्ध छिड़ गया॥१०॥ बाणो की वर्षा तथा तीखे शस्त्रों एवं दारुण अस्त्रों के प्रहार के कारण उन दोनों का युद्ध सब लोगों के लिये बड़ा भयानक प्रतीत हुआ॥११॥ उस समय अम्बिका देवी ने जो सैकड़ों दिव्य अस्त्र छोड; उन्हें दैत्यराज शुम्भ ने उनके निवारक अस्त्रों

ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः।
सापि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः ॥१४॥
छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे।
चिच्छेद देवी चक्रेण तामस्य करे स्थिताम् ॥१५॥
ततः खड्गमुपादाय शत्चन्द्रं च भानुमत्।
अभ्यधावत्तदा देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः ॥१६॥
तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका।
धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम् ॥१७॥
हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः।
जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः ॥१८॥
चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः।
तथापि सोऽभ्यधावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान् ॥१९॥

द्वारा काट डाला।।१२।। इसी प्रकार शुम्भ ने भी जो दिव्य अस्त्र चलाये; उन्हें परमेश्वरी ने भयंकर हुंकार शब्द के उच्चारण आदि द्वारा खिलवाड़ में ही नष्ट कर डाला।।१३।। तब उस असुर ने सैकड़ो बाणों से देवी को आच्छादित कर दिया। यह देख क्रोध में भरी हुई उन देवी ने भी बाण मारकर उसका धनुष काट डाला।।१४।। धनुष कट जाने पर फिर दैत्यराज ने शक्ति हाथ में ली, किन्तु देवी ने चक्र से उसके हाथ की शक्तियों को भी काट गिराया।।१५।। तत्पश्चात दैत्यों के स्वामी शुम्भ ने सौ चाँद वाली चमकती हुई ढाल और तलवार हाथ में ले उस समय देवी पर धावा किया।।१६।। उसके आते ही चण्डिका ने अपने धनुष से छोड़े हुए तीखे बाणों द्वारा उसकी सूर्य किरणों के समान उज्ज्वल ढाल और तलवार को तुरन्त काट दिया।।१७।। फिर उस दैत्य के घोड़े और सारथि मारे गये, धनुष तो पहले ही कट चुका था, अब उसने अम्बिका को मारने के लिये उद्यत हो भयंकर मुद्गर हाथ में लिया।।१८।। उसे आते देख देवी ने अपने तीक्ष्ण बाणों से उसका मुद्गर भी काट डाला, जिस पर भी वह असुर मुक्का तानकर बड़े वेग से देवी की ओर झपटा।।१९।। उस दैत्यराज ने देवी की छाती में मुक्का मारा, तब देवी ने भी उसकी छाती में एक चाँटा जड़ दिया।।२०।। देवी का थप्पड़ खाकर दैत्यराज

स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः।
देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत् ॥२०॥
तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले।
स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः ॥२१॥
उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः।
तत्रापि सा निराधारा ययुधे तेन चण्डिका ॥२२॥
नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम्।
चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम् ॥२३॥
ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह।
उत्पात्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले ॥२४॥
स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगितः।
अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिकानिधनेच्छया ॥२५॥
तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम्।
जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि ॥२६॥

शुम्भ पृथ्वी पर गिर पड़ा, किन्तु पुनः सहसा पूर्ववत् उठकर खड़ा हो गया; तब चण्डिका आकाश में भी बिना किसी आधार के ही शुम्भ के साथ युद्ध करने लगीं॥२२॥ उस समय दैत्य और चण्डिका आकाश में एक दूसरे से लड़ने लगे। उनका वह युद्ध पहले सिद्ध और मुनियों को विस्मय में डालने वाला हुआ॥२३॥

फिर अम्बिका ने शुम्भ के साथ बहुत देर तक युद्ध करने के पश्चात उसे उठाकर घुमाया और पृथ्वी पर पटक दिया॥२४॥ पटके जाने पर पृथ्वी पर आने के बाद वह दुष्टात्मा दैत्य पुनः चण्डिका का वध करने के लिये उनकी ओर बड़े वेग से दौड़ा॥२५॥ तब समस्त दैत्यों के राजा शुम्भ को अपनी ओर आते देख देवी ने त्रिशूल से उसकी छाती छेदकर उसे पृथ्वी पर गिरा दिया॥२६॥ देवी के शूल की धार से घायल होने पर उसे प्राण-पखेरू उड़ गये और वह समुद्रों, द्वीपों तथा पर्वतों सहित समूची पृथ्वी को कँपाता हुआ

स गतासुः पपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः।
चालयन् सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम् ॥२७॥
ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन् दुरात्मनि।
जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाभवन्नभः ॥२८॥
उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः।
सरितो मार्गवाहिन्यस्तथासंस्तत्र पातिते ॥२९॥
ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः।
बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितं जगुः ॥३०॥
अवादयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः।
ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः ॥३१॥
जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः शान्ता दिग्जनितस्वनाः॥ॐ ॥३२॥

इति श्रीमार्कण्डेपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
निशुम्भवधो नाम दशमोऽध्यायः ॥१०॥
उवाच ४, अर्धश्लोकः १, श्लोकाः २७,
एवम् ३२ एवमादितः ५७५ ॥

भूमि पर गिर पड़ा॥२७॥ तदनन्तर उस दुरात्मा के मारे जाने पर सम्पूर्ण जगत् प्रसन्न एवं पूर्ण स्वस्थ हो गया तथा आकाश स्वच्छ दिखायी देने लगा॥२८॥ पहले जो उत्पात सूचक मेघ और उल्कापात होते थे, वे सब शान्त हो गये तथा उस दैत्य के मारे जाने पर नदियाँ भी ठीक मार्ग से बहने लगीं॥२९॥

उस समय शुम्भ की मृत्यु के बाद सम्पूर्ण देवताओं का हृदय हर्ष से भर गया और गन्धर्वगण मधुर गीत गाने लगे॥३०॥ दूसरे गन्धर्व बाजे बजाने लगे और अप्सराएँ नाचने लगीं। पवित्र वायु बहने लगी। सूर्य की प्रभा उत्तम हो गयी॥३१॥ अग्निशाला की बुझी हुई आग अपने-आप प्रज्जवलित हो उठी तथा सम्पूर्ण दिशाओं के भयंकर शब्द शान्त हो गये॥३२॥

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में 'शुम्भ-वध' नामक दसवाँ अध्याय पूरा हुआ॥१०॥

एकादशोऽध्यायः

देवताओं द्वारा देवी की स्तुति तथा देवी द्वारा देवताओं को वरदान एवं भविष्य में सात बार भक्तों की रक्षा के लिए अवतार लेने की कथा।

ध्यानम्

'ॐ' बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्।।

'ॐ' ऋषिरुवाच।।१।।

देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे
सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम्।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्ट लाभाद्
विकाशिवक्त्राब्ज विकाशिताशाः।।२।।
देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।३।।

ध्यान-मैं भुवनेश्वरी देवी का ध्यान करता हूँ। उनके श्री अंगों की आभा प्रभात काल के सूर्य के समान है और मस्तक पर चन्द्रमा का मुकुट है। वे उभरे हुए स्तनों और तीन नेत्रों से युक्त है। उनके मुख पर मुस्कान की छटा छायी रहती है और हाथों में वरद्, अंकुश, पाश एवं अभय-मुद्रा शोभा पाते हैं।

ऋषि कहते हैं-।।१।। देवी के द्वारा वहाँ महादैत्यपति शुम्भ के मारे जाने पर इन्द्र आदि देवता अग्नि को आगे करके उन कात्यायनी देवी की स्तुति करने लगे। उस समय अभीष्ट की प्राप्ति होने से उनके मुखकमल दमक उठे थे और उनके प्रकाश से दिशाएँ भी जगमगा उठी थीं।।२।। देवता बोले-शरणागत की पीड़ा दूर करने वाली देवि! हम पर

आधारभूता जगतस्त्वमेका
महीस्वरूपेण यतः स्थितासि।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैत-
दाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये॥४॥
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः॥५॥
विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्
का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः॥६॥
सर्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्ति प्रदायिनी।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः॥७॥

प्रसन्न होओ। सम्पूर्ण जगत् की माता! प्रसन्न होओ। विश्वेश्वरि ! विश्व की रक्षा करो। देवि ! तुम्हीं चराचर जगत् की अधीश्वरी हो॥३॥ तुम इस जगत् का एकमात्र आधार हो, क्योंकि पृथ्वी रूप में तुम्हारी ही स्थिति है। देवी ! तुम्हारा पराक्रम अलङ्घनीय है। तुम्हीं जलरूप में स्थित होकर सम्पूर्ण जगत् को तृप्त करती हो॥४॥ तुम अनन्त बल सम्पन्न वैष्णवी शक्ति हो। इस विश्व की कारणभूता परा माया हो। देवि ! तुमने इस समस्त जगत् को मोहित कर रखा है। तुम्हीं प्रसन्न होने पर इस पृथ्वी पर मोक्ष की प्राप्ति कराती हो॥५॥ देवि! सम्पूर्ण विद्याएं तुम्हारे ही भिन्न-भिन्न स्वरूप हैं। जगत् में जितनी स्त्रियाँ हैं, वे सब तुम्हारी ही मूर्तियाँ हैं। जगदम्बा ! एकमात्र तुमने ही इस विश्व को व्याप्त कर रखा है। तुम्हारी स्तुति क्या हो सकती है? तुम तो स्तवन करने योग्य पदार्थों से परे एवं परा वाणी हो॥६॥ जब तुम सर्वस्वरूपा देवी स्वर्ग तथा मोक्ष प्रदान करने

सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥८॥
कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि।
विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥९॥
सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१०॥
सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥११॥
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१२॥
हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि।
कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१३॥
त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि।
माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१४॥

वाली हो, तब इसी रूप में तुम्हारी स्तुति हो गयी। तुम्हारी स्तुति के लिये इससे अच्छी उक्तियाँ और क्या हो सकती हैं?॥७॥ बुद्धिरूप से सब लोगों के हृदय में विराजमान रहने वाली तथा स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदान करने वाली नारायणी देवि! तुम्हें नमस्कार है॥८॥ कला, काष्ठा आदि के रूप से क्रमशः परिणाम (अवस्था-परिवर्तन) की ओर ले जाने वाली तथा विश्व का उपसंहार करने में समर्थ नारायणी ! तुम्हें नमस्कार है॥९॥ नारायणी ! तुम सब प्रकार का मंगल प्रदान करने वाली मंगलमयी हो। कल्याणदायिनी शिवा हो। सब पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाली, शरणागतवत्सला, तीन नेत्रों वाली एवं गौरी हो। तुम्हे नमस्कार हैं॥१०॥ तुम सृष्टि, पालन और संहार की शक्तिभूता, सनातनी देवी, गुणों का आधार तथा सर्वगुणमयी हो। नारायणि ! तुम्हें नमस्कार है॥११॥ शरण में आये हुए दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में संलग्न रहने वाली तथा सबकी पीड़ा दूर करने वली नारायणी

मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे।
कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१५॥
शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे ।
प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१६॥
गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुंधरे।
वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१७॥
नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे।
त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१८॥
किरीटिनी महावज्रे सहस्त्रनयनोज्ज्वले।
वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१९॥
शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले।
घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२०॥
दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे।
चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२१॥

देवी! तुम्हें नमस्कार है।।१२।। नारायणि ! तुम ब्रह्माणी का रूप धारण करके हंसों से जुते हुए विमान पर बैठती तथा कुश-मिश्रित जल छिड़कती रहती हो। तुम्हें नमस्कार है।।१३।। माहेश्वरी रूप से त्रिशूल, चन्द्रमा एवं सर्प को धारण करने वाली तथा महान वृषभ की पीठ पर बैठने वाली नारायणी देवी तुम्हें नमस्कार है।।१४।। मोरों और मुर्गों से घिरी रहने वाली तथा महाशक्ति धारण करने वाली कौमारीरूपधारिणी निष्पापे नारायणि! तुम्हें नमस्कार है।।१५।। शंख, चक्र, गदा और शंख धनुष उत्तम आयुधों को धारण करने वाली वैष्णवी शक्तिरूपा नारायणि! तुम प्रसन्न होओ ! तुम्हें नमस्कार है।।१६।। हाथ में भयानक महाचक्र लिये और दाढ़ों पर धरती को उठाये वाराही रूपधारिणी कल्याणमयी नारायणि ! तुम्हें नमस्कार है।।१७।। भयंकर नृसिंहरूप से दैत्यों के वध के लिये उद्योग करने वाली तथा त्रिभुवन की रक्षा में संलग्न रहने वाली नारायणि

लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टिस्वधे ध्रुवे।
महारात्रि महाऽविद्ये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२२॥
मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि।
नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२३॥
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥२४॥
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥२५॥
ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥२६॥
हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव ॥२७॥
असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥२८॥

तुम्हें नमस्कार है।।१८।। मस्तक पर किरीट और हाथ में महावज्र धारण करने वाली, सहस्र नेत्रों के कारण उद्दीप्त दिखायी देने वाली और वृत्रासुर के प्राणों का अपहरण करने वाली इन्द्रशक्तिरूपा नारायणी देवी! तुम्हें नमस्कार है।।१९।। शिवदूतीरूप से दैत्यों की महती सेना का संहार करने वाली, भंयकर रूप धारण तथा विकट गर्जना करने वाली नारायणि! तुम्हें नमस्कार है।।२०।। दाढ़ों के कारण विकराल मुखवाली मुण्डमाला से विभूषित मुण्डमर्दिनी चामुण्डारूपा नारायणि! तुम्हें नमस्कार है।।२१।। लक्ष्मी, लज्जा, महाविद्या, श्रद्धा, पुष्टि, स्वधा, ध्रुवा, महारात्रि तथा महाअविद्यारूपा नारायणि! तुम्हें नमस्कार है।।२२।। मेधा, सरस्वती, वरा (श्रेष्ठा), भूति (ऐश्वर्यरूपा), बाभ्रवी (भूरे रंग की अथवा पार्वती), तामसी (महाकाली), नियता (संयमपरायणा) तथा ईशा (सबकी अधीश्वरी) रूपिणी नारायणि ! तुम्हें नमस्कार है।।२३।। सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति॥२९॥
एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य
धर्मद्विषां देवि महासुराणाम्।
रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्तिं
कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या॥३०॥
विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपे-
ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या।
ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे
विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम्॥३१॥
रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा
यत्रारयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्॥३२॥

सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न दिव्यरूपा दुर्गे देवि ! सब भयों से हमारी रक्षा करो; तुम्हें नमस्कार है॥२४॥ कात्यायनी ! यह तीन लोचनों से विभूषित तुम्हारा सौम्य मुख सब प्रकार के भयों से हमारी रक्षा करे। तुम्हें नमस्कार है॥२५॥ भद्रकाली ! ज्वालाओं के कारण विकराल प्रतीत होने वाला, अत्यन्त भयंकर और समस्त असुरों का संहार करने वाला तुम्हारा त्रिशूल भय से हमें बचाये। तुम्हें नमस्कार है॥२६॥ देवि ! जो अपनी ध्वनि से सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त करके दैत्यों के तेज नष्ट किये देता है, वह तुम्हारा घण्टा हम लोगों की पापों से उसी प्रकार रक्षा करे, जैसे माता अपने पुत्रों की बुरे कर्मों से रक्षा करती है॥२७॥ चण्डिके ! तुम्हारे हाथों में सुशोभित खड्ग, जो असुरों के रक्त और चर्बी से

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः॥३३॥
देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीते-
र्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः।
पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु
उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान्॥३४॥
प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव॥३५॥
देव्युवाच॥३६॥
वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ।
तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम्॥३७॥
देवा ऊचुः॥३८॥
सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्॥३९॥

चर्चित है, हमारा मंगल करें। हम तुम्हें नमस्कार करते है॥२८॥

देवि ! तुम प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट कर देती हो और कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके हैं,उन पर विपत्ति तो आती ही नही। तुम्हारी शरण मे गये हुए मनुष्य दूसरों को शरण देने वाले हो जाते है॥२९॥ देवि ! अम्बिके !! तुमने अपने स्वरूप को अनेक भागों में विभक्त करके नाना प्रकार के रूपों से जो इस समय इन धर्मद्रोही महादैत्यों का संहार किया है, वह सब दूसरी कौन कर सकती थी?॥३०॥ विद्याओं में, ज्ञान को प्रकाशित करने वाले शास्त्रों में तथा आदिवाक्यों (वेदों) में तुम्हारे सिवा और किसका वर्णन है? तथा तुमको छोड़कर

देव्युवाच।।४०।।

वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे।
शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ ।।४१।।
नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसम्भवा।
ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी ।।४२।।
पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले।
अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान् ।।४३।।
भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान् वैप्रचित्तान्महासुरान्।
रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः ।।४४।।
ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः।
स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम् ।।४५।।
भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि।
मुनिभिः संस्तुता भूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा ।।४६।।

दूसरी कौन ऐसी शक्ति है, जो इस विश्व को अज्ञानमय घोर अन्धकार से परिपूर्ण ममतारूपी गढ़े में निरन्तर भटका रही हो।।३१।।

जहाँ राक्षस, जहाँ भयंकर विष वाले सर्प, जहां शत्रु, जहाँ लुटेरों की सेना और जहाँ दावानाल हो, वहाँ तथा समुद्र के बीच में भी साथ रहकर तुम विश्व की रक्षा करती हो।।३२।। विश्वेश्वरि ! तुम विश्व का पालन करती हो। विश्वरूपा हो, इसलिये सम्पूर्ण विश्व को धारण करती हो। तुम भगवान विश्वनाथ की भी वन्दनीया हो। जो लोग भक्तिपूर्वक तुम्हारे सामने मस्तक झुकाते हैं, वे सम्पूर्ण विश्व को आश्रय देने वाले होते हैं।।३३।। देवि ! प्रसन्न होओ। जैसे इस समय असुरों का वध करके तुमने शीघ्र ही हमारी रक्षा की है, उसी प्रकार सदा हमें शत्रुओं के भय से बचाओ। सम्पूर्ण जगत् का पाप नष्ट कर दो और उत्पात एवं पापों के फलस्वरूप प्राप्त होने वाले महामारी आदि बड़े-बड़े उपद्रवों को शीघ्र दूर करो।।३४।।

विश्व की पीड़ा दूर करने वालीं देवि! हम तुम्हारे चरणों पर पड़े हुए हैं, हम पर प्रसन्न हो जाओ। त्रिलोकनिवासियों पूजनीया परमेश्वरी !

ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन्।
कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः ।।४७।।
ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः।
भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः ।।४८।।
शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि
तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम् ।।४९।।
दुर्गा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले ।।५०।।
रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात्।
तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः ।।५१।।
भीमा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति ।।५२।।
तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्येयषट्पदम्।
त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम् ।।५३।।

सब लोगों को वरदान दो।।३५।।

देवी बोलीं - ।।३६।। देवताओं ! मैं वर देने को तैयार हूँ। तुम्हारे मन में जिसकी इच्छा हो, वह वर माँग लो। संसार के लिये उस उपकारक वर को मैं अवश्य दूँगी।।३७।।

देवता बोले- ।।३८।। सर्वेश्वरि ! तुम इसी प्रकार तीनों लोकों की समस्त बाधाओं को शान्त करो और हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो।।३९।।

देवी बोलीं - ।।४०।। देवताओं ! वैवस्वत मन्वन्तर के अठ्ठाइसवें युग में शुम्भ और निशुम्भ नाम के दो अन्य महादैत्य उत्पन्न होंगे।।४१।। तब मैं नन्दगोप के घर में उनकी पत्नी यशोदा के गर्भ से अवतीर्ण हो विन्ध्याचल में जाकर रहूँगी और उक्त दोनों असुरों का नाश करूँगी।।४२।। फिर अत्यन्त भयंकर रूप से पृथ्वी पर अवतार ले मैं वैप्रचित नाम वाले दानवों का वध करूँगी।।४३।। उन भयंकर महादैत्यों को भक्षण करते समय मेरे दाँत अनार के फूल की भांति लाल हो जायेगे।।४४।। तब स्वर्ग

भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः।
इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति ॥५४॥
तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम्॥ॐ ॥५५॥

इति श्रीमार्कण्डेपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
देव्याः स्तुतिर्नामैकादशोऽध्यायः ॥११॥
उवाच ४, अर्धश्लोकः १, श्लोकाः ५०, एवम् ५५
एवमादितः ६३० ॥

में देवता और मर्त्यलोक में मनुष्य सदा मेरी स्तुति करते हुए मुझे रक्तदन्तिका कहेंगे॥४५॥ फिर जब पृथ्वी पर सौ वर्षों के लिये वर्षा रूक जाएगी और पानी का अभाव हो जाएगा, उस समय मुनियों के स्तवन करने पर मैं पृथ्वी पर अयोनिज्ञा रूप में प्रकट होऊँगी॥४६॥ और सौ नेत्रों से मुनियों को देखूँगी। अतः मनुष्य 'शताक्षी' इस नाम से मेरा कीर्तन करेंगे॥४७॥ देवताओं ! उस समय मैं अपने शरीर से उत्पन्न हुए शाकों द्वारा समस्त संसार का भरण-पोषण करूँगी। जब तक वर्षा नहीं होगी, तब तक वे शाक ही सबके प्राणों की रक्षा करेंगें॥४८॥ ऐसा करने के कारण पृथ्वी पर शाकम्भरी के नाम से मेरी ख्याति होगी। उसी अवतार में मैं दुर्गम नामक महादैत्य का वध भी करूँगी॥४६॥ इससे मेरा नाम दुर्गा देवी के रूप से प्रसिद्ध होगा। फिर मैं जब भीमरूप धारण करके मुनियों की रक्षा के लिये हिमालय पर रहने वाले राक्षसों का भक्षण करूँगी, उस समय सब मुनि भक्ति से नतमस्तक होकर मेरी स्तुति करेंगे॥५०-५१॥ तब मेरा नाम भीमादेवी के रूप में विख्यात होगा। जब अरूण नामक दैत्य तीनों लोकों में भारी उपद्रव मचायेगा॥५२॥ तब मैं तीनों लोकों का हित करने के लिये छः पैरों वाले असंख्य भ्रमरों का रूप धारण करके उस महादैत्य का वध करूँगी॥५३॥ उस समय सब लोग 'भ्रामरी' के नाम से चारों ओर मेरी स्तुति करेंगे।

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में 'देवीस्तुति' नामक ग्यारहवाँ अध्याय पूरा हुआ॥११॥

द्वादशोऽध्यायः

देवी-चरित्रों के पाठ श्रवण करने का महात्म्य

ध्यानम्

'ॐ' विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

'ॐ' देव्युवाच।।१।।

एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः।
तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम् ।।२।।
मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम्।
कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वद् वधं शुम्भनिशुम्भयोः ।।३।।
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः।
श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम् ।।४।।

ध्यान-मैं तीन नेत्रों वाली दुर्गा देवी का ध्यान करता हूँ, उनके श्री अंगों की प्रभा बिजली के समान है। वे सिंह के कंधे पर बैठी हुई भयंकर प्रतीत होती है। हाथों में चक्र, गदा, तलवार, ढाल, बाण, धनुष पाश और तर्जनी मुद्रा धारण किये हुए हैं। उनका स्वरूप अग्मिनय है तथा वे माथे पर चन्द्रमा का मुकुट धारण करती हैं।

देवीं बोलीं - ।।१।। देवताओं ! जो एकाग्रचित्त होकर प्रतिदिन इन स्तुतियों से मेरा स्तवन करेगा, उसकी सारी बाधा मैं निश्चय ही दूर कर दूँगी।।२।। जो मधुकैटभका नाश, महिषासुर का वध तथा शुम्भ-निशुम्भ के संहार के प्रसंग का पाठ करेंगे।।३।। तथा अष्टमी, चतुर्दशी और नवमी

न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद् दुष्कृतोत्था न चापदः।
भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम् ॥५॥
शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः।
न शस्त्रानलतोयौघात्कदाचित्सम्भविष्यति ॥६॥
तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः।
श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं हि तत् ॥७॥
उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान्।
तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम ॥८॥
यत्रैतत्पठ्यते सम्यङ्नित्यमायतने मम।
सदा न तद्विमोक्ष्यामि सांनिध्यं तत्र मे स्थितम् ॥९॥
बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे।
सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च ॥१०॥
जानताऽजानता वापि बलिपूजां तथा कृताम्।
प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या वह्निहोमं तथा कृतम् ॥११॥

को भी जो एकाग्रचित हो भक्तिपूर्वक मेरे उत्तम माहात्म्य का श्रवण करेंगे॥४॥ उन्हें कोई पाप नहीं छू सकेगा। उनपर पापजनित आपत्तियाँ भी नहीं आयेंगी। उनके घर में कभी दरिद्रता नही होगी तथा उनको कभी प्रेमीजनों के विछोह का कष्ट भी नहीं भोगना पड़ेगा॥५॥ इतना ही नहीं, उन्हें शत्रु से, लुटेरों से, राजा से, शस्त्र से, अग्नि से तथा जल की राशि से भी कभी भय नहीं होगा॥६॥ इसलिये सबको एकाग्रचित होकर भक्तिपूर्वक मेरे इस माहात्म्य को सदा पढ़ना और सुनना चाहिये। यह परम कल्याणकारक है॥७॥ मेरा माहात्म्य महामारीजनित समस्त उपद्रव्यों तथा आध्यात्मिक आदि तीनों प्रकार के उत्पातों को शान्त करने वाला है॥८॥ मेरे जिस मन्दिर में प्रतिदिन विधिपूर्वक मेरे इस माहात्म्य का पाठ किया जाता है।, उस स्थान को मैं कभी नहीं छोड़ता। वहाँ सदा ही मेरा सान्निध्य

शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः ॥१२॥
सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥१३॥
श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः॥
पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान् ॥१४॥
रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते।
नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम् ॥१५॥
शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने।
ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम ॥१६॥
उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः।
दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते ॥१७॥
बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम्।
संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम् ॥१८॥

बना रहता है॥९॥ बलिदान, पूजा, होम तथा महोत्सव के अवसरों पर मेरे इस चरित्र का पूरा-पूरा पाठ और श्रवण करना चाहिये॥१०॥ ऐसा करने पर मनुष्य विधि को जानकर या बिना जाने भी मेरे लिये जो बलि, पूजा या होम आदि करेगा, उसे मैं बड़ी प्रसन्नता के साथ ग्रहण करूँगी॥११॥ शरत्काल में जो वार्षिक महापूजा की जाती है, उस अवसर पर जो मेरे इस माहात्म्य को भक्तिपूर्वक सुनेगा, वह मनुष्य मेरे प्रसाद से सब बाधाओं से मुक्त तथा धन, धान्य एवं पुत्र से सम्पन्न होगा-इसमें तनिक भी संदेह नहीं है॥१२-१३॥ मेरे इस माहात्म्य, मेरे प्रादुर्भाव की सुन्दर कथाएँ तथा युद्ध में किये हुए मेरे पराक्रम सुनने से मनुष्य निर्भय हो जाता है॥१४॥ मेरे माहात्म्य का श्रवण करने वाले पुरुषों के शत्रु नष्ट हो जाते हैं, उन्हें कल्याण की प्राप्ति होती तथा उनका कुल आनन्दित रहता

दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम्।
रक्षोभूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम् ॥१९॥
सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम्।
पशुपुष्पार्घ्यधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः ॥२०॥
विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम्।
अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या ॥२१॥
प्रीतिर्मे क्रियते सास्मिन् सकृत्सुचरिते श्रुते।
श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति ॥२२॥
रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम।
युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम् ॥२३॥
तस्मिञ्छ्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते।
युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः ॥२४॥
ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां मतिम्।
अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्निपरिवारितः ॥२५॥

है।।१५।। सर्वत्र शान्ति-कर्म में, बुरे स्वप्न दिखाई देने पर तथा ग्रहजनित भयंकर पीड़ा उपस्थित होने पर मेरा माहात्म्य श्रवण करना चाहिये।।१६।। इससे सब विघ्न तथा भयंकर ग्रह-पीड़ाएँ शान्त हो जाती हैं और मनुष्यों द्वारा देखा हुआ दुःस्वप्न शुभ स्वप्न में परिवर्तित हो जाता है।।१७।। बालग्रहों से आक्रान्त हुए बालकों के लिये यह माहात्म्य शान्तिकारक है तथा मनुष्यों के संगठन में फूट होने पर यह अच्छी प्रकार मित्रता कराने वाला होता है।।१८।। यह माहात्म्य समस्त दुराचारियों के बल का नाश कराने वाला है। इसके पाठ मात्र से राक्षसों, भूतों और पिशाचों का नाश हो जाता है।।१९।। मेरा यह सब माहात्म्य मेरे सामीप्य की प्राप्ति कराने वाला है। पशु, पुष्प, अर्घ्य, धूप, दीप, गन्ध आदि उत्तम सामग्रियों द्वारा पूजन करने से, ब्राह्मणों को भोजन कराने से, होम करने से, प्रतिदिन

दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः।
सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः ॥२६॥
राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा।
आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे ॥२७॥
पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृशदारुणे।
सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा ॥२८॥
स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत संकटात्।
मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा ॥२९॥
दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितं मम ॥३०॥

ऋषिरुवाच ॥३१॥

इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा ॥३२॥
पश्यतामेव देवानां तत्रैवान्तरधीयत।
तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान् यथा पुरा ॥३३॥

अभिषेक करने से, नाना प्रकार के अन्य भोगों का अर्पण करने से तथा दान देने आदि से एक वर्ष तक जो मेरी आराधना की जाती है और उससे मुझे जितनी प्रसन्नता होती है, उतनी प्रसन्नता मेरे इस उत्तम चरित्र का एक बार श्रवण करने मात्र से हो जाती है। यह माहात्म्य श्रवण करने पर पापों को हर लेता और आरोग्य प्रदान करता है।।२०-२२।। मेरे प्रादुर्भाव का कीर्तन समस्त भूतों से रक्षा करता है तथा मेरा युद्धविषयक चरित्र दुष्ट दैत्यों का संहार करने वाला है।।२३।। इसके श्रवण करने पर मनुष्यों को शत्रु का भय नहीं रहता। देवताओं ! तुमने और ब्रह्मर्षियों ने जो मेरी स्तुतियों की है।।२४।। तथा ब्रह्माजी ने जो स्तुतियाँ की हैं, वे सभी कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती हैं। वन में, सूने मार्ग मं अथवा दावानल से घिर जाने पर।।२५।। निर्जल स्थान में, लुटेरों के दाव में पड़ जाने पर या शत्रुओं से पकड़े जाने पर अथवा जंगल में सिंह, व्याघ्र या जंगली

यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः।
दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि॥३४॥
जगद्विध्वंसिनि तस्मिन् महोग्रेऽतुलविक्रमे।
निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः ॥३५॥
एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः।
सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम् ॥३६॥
तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते।
सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति ॥३७॥
व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर।
महाकाल्या महाकाले महामारीस्वरूपया ॥३८॥
सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा।
स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी ॥३९॥
भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे।
सैवाभावे तथाऽलक्ष्मीर्विनाशायोपजायते ॥४०॥

हाथियों के पीछा करने पर॥२६॥ कुपित राजा के आदेश से वध या बन्धन के स्थान में ले जाये अथवा महासागर में नाव पर बैठने के बाद भारी तूफान से नाव के डगमग होने पर॥२७॥ और अत्यन्त भयंकर युद्ध में शस्त्रों का प्रहार होने पर अथवा वेदना से पीड़ित होने पर किं बहुना, सभी भयानक बाधाओं के उपस्थित होने पर॥२८॥ जो मेरे इस चरित्र का स्मरण करता है, वह मनुष्य संकट से मुक्त हो जाता है। मेरे प्रभाव से सिंह आदि हिंसक जन्तु नष्ट हो जाते है तथा लुटेरे और शत्रु भी मेरे चरित्र का स्मरण करने वाले पुरुष से दूर भागते है॥२९-३०॥

ऋषि कहते हैं - ॥३१॥ ऐसा कहकर प्रचण्ड पराक्रम वाली भगवती चण्डिका सब देवताओं के देखते-देखते वहीं अन्तर्धान हो गयीं। फिर समस्त देवता भी शत्रुओं के मारे जाने से निर्भय हो पहले की भांति

स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्धूपगन्धादिभिस्तथा।
ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे गतिं शुभाम्॥ॐ॥४१॥

इति श्रीमार्कण्डेपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये फलस्तुतिर्नाम द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥
उवाच २, अर्धश्लोकौः २, श्लोकाः ३७, एवम् ४१
एवमादितः ६७१ ॥

यज्ञभाग का उपभोग करते हुए अपने-अपने अधिकार का पालन करने लगे। संसार का विध्वंस करने वाले महाभयंकर अतुल पराक्रमी देवशत्रु शुम्भ तथा महाबली निशुम्भ के युद्ध में देवी द्वारा मारे जाने पर शेष दैत्य पाताल लोक में चले आये॥३२-३५॥ राजन् ! इस प्रकार भगवती अम्बिका देवी नित्या होती हुई भी पुनः पुनः प्रकट होकर जगत् की रक्षा करती हैं॥३६॥ वे ही इस विश्व का मोहित करतीं, वे ही जगत् की रक्षा करती हैं॥३६॥ वे ही इस विश्व को मोहित करतीं, वे ही जगत् को जन्म देतीं तथा वे ही प्रार्थना करने पर संतुष्ट हो विज्ञान एवं समृद्धि प्रदान करती हैं॥३७॥ राजन् ! महाप्रलय के समय महामारी का स्वरूप धारण करने वाली वे महाकाली ही इस ममस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त हैं॥३८॥ वे ही समय-समय पर महामारी होती और वे ही स्वयं अजन्मा होती हुई भी सृष्टि के रूप में प्रकट होती है। वे सनातनी देवी ही समयानुसार सम्पूर्ण भूतों की रक्षा करती है॥३९॥ मनुष्यों के अभ्युदाय के समय वे ही घर में लक्ष्मी के रूप में स्थित हो उन्नति प्रदान करती हैं और वे ही अभाव के समय दरिद्रता बनकर विनाशक कारण होती है॥४०॥
पुष्प, धूप और गन्ध आदि से पूजन करंरके उनकी स्तुति करने पर वे धन, पुत्र, धार्मिक बुद्धि तथा उत्तम गति प्रदान करती हैं॥४१॥

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में 'फलस्तुति' नामक बारहवाँ अध्याय पूरा हुआ॥१२॥

त्रयोदशोऽध्यायः

सुरथ और वैश्य द्वारा भगवती की तीन वर्ष आराधना और देवी द्वारा वरदान

ध्यानम्

'ॐ' बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशाङ्कुशवराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे।।

'ॐ' ऋषिरुवाच।।१।।

एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम्।
एवंप्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत् ।।२।।
विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया।
तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः ।।३।।
मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे।
तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम् ।।४।।
आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा ।।५।।

मार्कण्डेय उवाच।।६।।

ध्यान- जो उदयकाल के सूर्यमण्डल की सी कान्ति धारण करने वाली हैं, जिनके चार भुजाएं ओर तीन नेत्र हैं तथा जो अपने हाथों में पाश, अंकुश, वर एवं अभय की मुद्रा धारण किये रहती हैं, उन शिवा देवी का मैं ध्यान करता हूँ।

ऋषि कहते हैं - ।।१।। राजन् ! इस प्रकार मैने तुमसे देवी के उत्तम माहात्म्य का वर्णन किया। जो इस जगत् को धारण करती हैं, उन देवी का ऐसा ही प्रभाव है।।२।। वे ही विद्या (ज्ञान) उत्पन्न करती हैं। भगवान् विष्णु की मायास्वरूपा उन भगवती के द्वारा ही तुम, ये वैश्य तथा अन्यान्य विवेकी जन मोहित होते हैं, मोहित हुए हैं तथा आगे भी मोहित होंगे। महाराज ! तुम उन्हीं परमेश्वरी की शरण में जाओं।।३-४।।

इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः ॥७॥
प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं शंसितव्रतम्।
निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च ॥८॥
जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने।
संदर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनसंस्थितः ॥९॥
स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन्।
तौ तस्मिन् पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम् ॥१०॥
अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः।
निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ ॥११॥
ददतुस्तौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम्।
एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः ॥१२॥
परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका ॥१३॥

देव्युवाच॥१४॥

आराधना करने पर वे ही मनुष्यों को भोग, स्वर्ग तथा मोक्ष प्रदान करती है॥५॥

मार्कण्डेयजी कहते हैं - ॥६॥ क्रौष्टुकिजी ! मेधामुनि के ये वचन सुनकर राजा सुरथ ने उत्तम व्रत का पालन करने वाले उन महाभाग महर्षि को प्रणाम किया। वे अत्यन्त ममता और राज्यापहरण से बहुत खिन्न हो चुके थे॥७-८॥ महामुने ! इसलिये विरक्त होकर वे राजा तथा वैश्य तत्काल तपस्या को चले गये और वे जगदम्बा के दर्शन के लिये नदी के तट पर रहकर तपस्या करने लगे॥९॥ वे वैश्य उत्तम देवी सूक्त का जप करते हुए तपस्या में प्रवृत्त हुए। वे दोनों नदी के तट पर देवी की मिट्टी की मूर्ति बनाकर पुष्प, धूप, और हवन आदि के द्वारा उनकी आराधना करने लगे। उन्होंने पहले तो आहार को धीरे-धीरे कम किया फिर बिल्कुल निराहार रहकर देवी में ही मन लगाये एकाग्रतापूर्वक उनका चिन्तन आरम्भ किया॥१०-११॥ वे दोनों अपने शरीर के रक्त से प्रोक्षित

यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन।
मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत् ।।१५।।

मार्कण्डेय उवाच।।१६।।

ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि।
अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात् ।।१७।।
सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः।
ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्गविच्युतिकारकम् ।।१८।।

देव्युवाच।।१९।।

स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान्।।२०।।
हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति।।२१।।
मृतश्च भूयः सम्प्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः।।२२।।
सावर्णिको नाम मनुर्भवान् भुवि भविष्यति।।२३।।
वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवाञ्छितः।।२४।।
तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै तव ज्ञानं भविष्यति।।२५।।

बलि देते हुए लगातार तीन वर्ष तक संयमपूर्वक आराधना करते रहे।।१२।। इस पर प्रसन्न होकर जगत् को धारण करने वाली चण्डिका देवी ने प्रत्यक्ष दर्शन देकर कहा।।१३।।

देवी बोली - ।।१४।। राजन् ! तथा अपने कुल को आनन्दित करने वाले वैश्य ! तुम लोग जिस वस्तु की अभिलाषा रखते हो, वह मुझसे माँगो। मैं संतुष्ट हूँ, अतः तुम्हें वह सब कुछ दूँगी।।१५।।

मार्कण्डेय कहते हैं - ।।१६।। तब राजा ने दूसरे जन्म में नष्ट न होने वाला राज्य माँगा तथा इस जन्म में भी शत्रुओं की सेना को बलपूर्वक नष्ट करके पुनः अपना राज्य प्राप्त कर लेने का वरदान माँगा।।१७।। वैश्य का चित्त संसार की ओर से खिन्न एवं विरक्त हो चुका था और वे बड़े बुद्धिमान थे; अतः उस समय उन्होंने तो ममता और अहंतारूप आसक्ति का नाश करने वाला ज्ञान मांगा।।१८।।

मार्कण्डेय उवाच॥२६॥

इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम् ॥२७॥
बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता।
एवं देव्यावरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ॥२८॥
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥२९॥
एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः।
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः॥क्लीं ॐ॥

इति श्रीमार्कण्डेपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
सुरथ-वैश्ययोर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥
उवाच ६, अर्धश्लोकाः ११, श्लोकाः १२, एवम् २९ एवमादितः ७००॥
समस्ता उवाचमन्त्राः ५७, अर्द्धश्लोकाः ४२, श्लोकाः ५३५, अवदानानि ॥६६॥

देवी बोली - ॥१९॥ राजन् ! तुम थोड़े ही दिनों में शत्रुओं को मारकर अपना राज्य प्राप्त कर लोगे। अब वहाँ तुम्हारा राज्य स्थिर रहेगा॥२०-२१॥ फिर मृत्यु के पश्चात तुम भगवान् विवस्वान् (सूर्य) के अंश से जन्म लेकर इस पृथ्वी पर सावर्णिक मनु के नाम से विख्यात हो जाओगे॥२२-२३॥ वैश्यवर्य ! तुमने भी जिस वर को मुझसे प्राप्त करने की इच्छा की है, उसे देती हूँ। तुम्हें मोक्ष के लिये ज्ञान प्राप्त होगा॥२४-२५॥

मार्कण्डेयजी कहते हैं- ॥२६॥ इस प्रकार उन दोनों को मनोवांछित वरदान देकर तथा उनके द्वारा भक्तिपूर्वक अपनी स्तुति सुनकर देवी अम्बिका तत्काल अन्तर्धान हो गयीं। इस तरह देवी से वरदान पाकर क्षत्रियों में श्रेष्ठ सुरथ सूर्य से जन्म ले सावर्णि नामक मनु होंगे॥२७-२९॥

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य
में 'सुरथ और वैश्य को वरदान' नामक तेरहवा अध्याय पूरा हुआ॥१३॥

उपसंहारः

इस प्रकार सप्तशती का पाठ पूरा होने पर पहले नवार्ण जप करके फिर देवीसूक्त के पाठ का विधान है। अतः यहां भी-नर्वाण विधि उद्धृत की जाती है। सब कार्य पहले की भांति होंगे।

विनियोगः

श्री गणपतिर्जयति। ॐ अस्य श्रीनर्वाणमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः गायत्र्यष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकालीमहा-लक्ष्मीमहासरस्वती प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखेः। महाकालीमहा-लक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः, हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः नाभौ।

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इति मूलेन करौ संशोध्य-

करन्यासः

ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः। ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः

ॐ ऐं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीं शिखायै वषट्। ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्। ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

अक्षरन्यासः

ॐ ऐं नमः, शिखायाम्। ॐ ह्रीं नमः, दक्षिणनेत्रे। ॐ क्लीं नमः, वामनेत्रे। ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णे। ॐ मुं नमः, वामकर्णे। ॐ डां नमः, दक्षिणनासापुटे। ॐ यैं नमः, वामनासापुटे। ॐ विं नमः, मुखे। ॐ च्चें नमः गुह्ये।

'एवं विन्यस्याष्टावार मूलेन व्यापकं कुर्यात्'

दिङ्न्यासः

ॐ ऐं प्राच्यै नमः। ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः। ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः। ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ॐ क्लीं वायव्यै नमः। ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

ध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥१॥

अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥२॥
घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥३॥

इस प्रकार न्यास और ध्यान करके मानसिक उपचार से देवी की पूजा करे। फिर १०८ या १००८ बार नवार्णमन्त्र का जप करना चाहिए। जप आरम्भ करने से पहले 'ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः' इस मन्त्र से माला की पूजा करके इस प्रकार प्रार्थना करें-

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥
ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।

इस प्रकार प्रार्थना करके जप आरम्भ करें। जप पूरा करके उसे भगवती को समर्पित करते हुए कहें -

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणस्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

तत्पश्चात फिर नीचे लिखे अनुसार न्यास करें-

करन्यासः

ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ चं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ डिं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ कां अनामिकाभ्यां नमः। ॐ यैं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं चण्डिकायै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा॥ हृदयाय नमः।
ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च॥ शिरसे स्वाहा।
ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथे श्वरि॥ शिखायै वषट्।
ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्॥ कवचाय हुम्।
ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः॥ नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥ अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तै श्चक्रगदासिखेटविशिखां श्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रा भजे॥

ऋग्वेदोक्त देवीसूक्तम्

ॐ अहमित्यष्टर्चस्य सूक्तस्य वागाम्भृणी ऋषी:, सच्चित्सुखात्मक: सर्वगत: परमात्मा देवता, द्वितीयाया ऋचो जगती, शिष्टानां त्रिष्टुप् छन्द:, देवीमाहात्म्यपाठे विनियोग:।

ध्यानम्

ॐ सिंहस्था शिशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजै:
शङ्खं चक्रधनु:शरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभि: शोभिता।
आमुक्तांगदहारकङ्कणरणत्काञ्चीरणन्नूपुरा
दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला।।

देवीसूक्तम्

ॐ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवै:।
अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा ।।१।।

जो सिंह की पीठ पर विराजमान है, जिनके मस्तक पर चन्द्रमा का मुकुट है, जो मरकतमणि के समान कान्ति वाली अपनी चार भुजाओं में शंख, चक्र, धनुष और बाण धारण करती हैं, तीन नेत्रों से सुशोभित होती है, जिनके भिन्न-भिन्न अंग बाँधे हुए बाजूबंद, हार, कंगन खनखनाती हुई करधनी और रुनझुन करते हुए नुपुरों से विभूषित हैं तथा जिनके कानों में रत्नजटित कुण्डल झिलमिलाते रहते हैं, वे भगवती दुर्गा हमारी दुर्गति दूर करने वाली हों।

महर्षि अम्भृण की कन्या का नाम वाक् था। वह बड़ी ब्रह्मज्ञानी थी। उसने देवी के साथ अभिन्नता प्राप्त कर ली थी। उसी के ये उद्गार हैं-मैं सच्चिदानन्दमयी सर्वात्मा देवी रुद्र, वसु, आदित्य तथा विश्वेदेवगणों के रूप में विचरती हूँ। मैं ही मित्र और वरुण दोनों को, इन्द्र और अग्नि

अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्।
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते ॥२॥
अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्य्यावेशयन्तीम् ॥३॥
मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः
प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम्।
अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि
श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि ॥४॥
अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं
देवेभिरुत मानुषेभिः।
यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि
तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् ॥५॥
अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ।
अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश ॥६॥

को तथा दोनों अश्विनी कुमारों को धारण करती हूँ।।१।। मैं ही शत्रुओं के नाशक आकाशचारी देवता सोम को, त्वष्टा प्रजापति को तथा पूषा और भग को भी धारण करती हूँ। जो हविष्य से उत्पन्न हो देवताओं को उत्तम हविष्य की प्राप्ति कराता है तथा उन्हें सोमरस के द्वारा तृप्त करता है, उस यजमान के लिये मैं ही उत्तम यज्ञ का फल और धन प्रदान करती हूँ।।२।। मैं सम्पूर्ण जगत् की अधीश्वरी, अपने उपासकों को धन की प्राप्ति कराने वाली, साक्षात्कार करने योग्य परब्रह्म को अपने से अभिन्न रूप में जानने वाली तथा पूजनीय देवताओं में प्रधान हूँ। मैं प्रपंच रूप से अनेक भावों में स्थित हूँ। सम्पूर्ण भूतों में मेरा प्रवेश है। अनेक स्थानों में रहने वाले देवता जहाँ-कहीं जो कुछ भी करते हैं, वह सब मेरे लिये करते हैं।।३।। जो अन्न खाता है, वह मेरी शक्ति से ही खाता है, क्योंकि मैं ही

अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम
योनिरप्स्वन्तः समुद्रे।
ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वो-
तामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि ॥७॥
अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा।
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना संबभूव ॥८॥

॥इति ऋग्वेदोक्त देवी सूक्तम्॥

भोक्त-शक्ति हूँ; इसी प्रकार जो देखता है, जो सांस लेता है तथा जो कहीं हुई बात सुनता है, वह मेरी ही सहायता से उक्त सब कर्म करने में समर्थ होता है। जो मुझे इस रूप में नहीं जानते, वे न जानने के कारण दीन दशा को प्राप्त होते जाते हैं। हे ब्रहुश्रुत! मैं तुम्हें श्रद्धा से प्राप्त होने वाले ब्रह्मतत्व का उपदेश करती हूँ, सुनो-॥४॥ मैं स्वयं ही देवताओं और मनुष्यों द्वारा सेवित इस दुर्लभ तत्त्व का वर्णन करती हूँ। मैं जिस-जिस पुरुष की रक्षा करना चाहती हूँ, उस उसको सबकी अपेक्षा अधिक शक्तिशाली बना देती हूँ। उसी को सृष्टिकर्ता ब्रह्मा, परोक्ष ज्ञान-सम्पन्न ऋषि तथा उत्तम मेधाशक्ति से युक्त बनाती हूँ॥५॥ मैं ही ब्रह्मद्वेषी हिंसक असुरों का वध करने के लिये रुद्र के धनुष को चढ़ाती हूँ॥॥६॥ मैं ही शरणागतजनों की रक्षा के लिये शत्रुओं से युद्ध करती हूँ तथा अन्तर्यामीरूप से पृथ्वी और आकाश के भीतर व्याप्त रहती हूँ॥७॥ मैं ही इस जगत् के पिता रूप आकाश को सर्वाधिष्ठानस्वरूप परमात्मा के ऊपर उत्पन्न करती हूँ। समुद्र (सम्पूर्ण भूतों के उत्पत्तिस्थान परमात्मा) में तथा जल (बुद्धि की व्यापक वृत्तियों) में मेरे कारण (कारणस्वरूप चैतन्य ब्रह्म) की स्थिति है; अतएव मैं समस्त भुवन में व्याप्त रहती हूँ तथा उस स्वर्गलोक का भी अपने शरीर से स्पर्श करती हूँ, तब दूसरों की प्रेरणा के बिना स्वयं ही वायु की भांति चलती हूँ, स्वेंच्छा से ही कर्म में प्रवृत्त होती हूँ। मैं पृथ्वी और आकाश दोनों से परे हूँ। अपनी महिमा से ही मैं ऐसी हुई हूँ॥८॥

अथ तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥१॥
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥२॥
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥३॥
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥४॥
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥५॥
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥६॥
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥७॥
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥८॥
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥९॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१०॥

इसका अर्थ पंचम अध्याय में श्लोक संख्या ६ से ८२ तक देखें।

या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥११।
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१२॥
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१३॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१४॥
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१५॥
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१६॥
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१७॥
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१८॥
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१९॥
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२०॥
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तास्यै नमो नमः ॥२१॥
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२२॥

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२३॥
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२४॥
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२५॥
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२६॥
इन्द्रियाणामधिष्ठात्रि भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ॥२७॥
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२८॥

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-
त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरी श्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥२९॥
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्तिं नः
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥३०॥

॥इति तंत्रोक्त देवी सूक्तमं॥

अथ प्राधानिकं रहस्यम्

ॐ अस्य श्रीसप्तशतीरहस्यत्रयस्य नारायण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः, महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवता यथोक्तफलावाप्त्यर्थं जपे विनियोगः।

राजोवाच

भगवन्नवतारा मे चण्डिकायास्त्वयोदिताः।
एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन् प्रधानं वक्तुमर्हसि ॥१॥
आराध्यं यन्मया देव्याः स्वरूपं येन च द्विज।
विधिना ब्रूहि सकलं यथावत्प्रणतस्य मे ॥२॥

ऋषिरुवाच

इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते।
भक्तोऽसीति न मे किञ्चित्तवावाच्यं नराधिप ॥३॥
सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी।
लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नं व्यवस्थिता ॥४॥

ॐ सप्तशती के इन तीनों रहस्यों के नारायण ऋषि, अनुष्टुप् छन्द तथा महाकाली महालक्ष्मी एवं महासरस्वती देवता हैं। शास्त्रोक्त फल की प्राप्ति के लिये जप में इनका विनियोग होता है।

राजा बोले - भगवन् ! आपने चण्डिका के अवतारों की कथा मुझसे कही। ब्रह्मन् ! अब इन अवतारों की प्रधान प्रकृति का निरूपण कीजिये॥१॥ द्विजश्रेष्ठ! मैं आपके चरणों में पड़ा हूँ। मुझे देवी के जिस स्वरूप की और जिस विधि से आराधना करनी है, वह सब यथार्थ रूप से बतलाइये॥२॥ ऋषि कहते हैं- राजन् ! यह रहस्य परम गोपनीय हैं। इसे किसी से कहने योग्य नहीं बतलाया गया है; किन्तु तुम मेरे भक्त हो, इसलिये तुमसे न कहने योग्य मेरे पास कुछ भी नहीं है॥३॥ त्रिगुणमयी परमेश्वरी महालक्ष्मी ही सबका आदि कारण हैं। वे ही दृश्य और अदृश्यरूप से सम्पूर्ण विश्व को व्याप्त करके स्थित हैं॥४॥

राजन् ! वे अपनी चार भुजाओं में मातुलुंग (बिजौरे का फल), गदा,

मातुलुङ्गं गदां खेटं पानपात्रं च बिभ्रती।
नागं लिंग च योनिं च बिभ्रती नृप मूर्धनि ॥५॥
तप्तकाञ्चनवर्णाभा तप्तकाञ्चनभूषणा।
शून्यं तदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा ॥६॥
शून्यं तदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी।
बभार परमं रूपं तमसा केवलेन हि ॥७॥
सा भिन्नाञ्जनसंकाशा दंष्ट्राङ्कितवरानना।
विशाललोचना नारी बभूव तनुमध्यमा ॥८॥
खड्गपात्रशिरः खेटैरलंकृतचतुर्भुजा
कबन्धहारं शिरसा बिभ्राणा हि शिरःस्त्रजम् ॥९॥
सा प्रोवाच महालक्ष्मीं तामसी प्रमदोत्तमा।
नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः ॥१०॥

खेट (ढाल) एवं पानपात्र और मस्तक पर नाग, लिंग तथा योनि- इन वस्तुओं को धारण करती हैं।।५।। तपाये हुए सुवर्ण के समान उनकी कान्ति है, तपाये हुए सुवर्ण के ही उनके भूषण हैं। उन्होंने अपने तेज से इस शून्य जगत् को परिपूर्ण किया है।।६।। परमेश्वरी महालक्ष्मी ने इस सम्पूर्ण जगत् को शून्य देखकर केवल तमोगुणरूप उपाधि के द्वारा एक अन्य उत्कृष्ट रूप धारण किया।।७।। वह रूप एक नारी के रूप में प्रकट हुआ, जिसके शरीर की कान्ति निखरे हुए काजल की भांति काले रंग की थी। उसका श्रेष्ठ मुख दाढ़ों से सुशोभित था। नेत्र बड़े-बड़े और कमर पतली थी।।८।। उसकी चार भुजाएँ ढाल, तलवार, प्याले और कटे हुए मस्तक से सुशोभित थी। वह वक्षःस्थल पर कबन्ध (धड़) की तथा मस्तक पर मुण्डों की माला धारण किये हुए थी।।९।। इस प्रकार प्रकट हुई स्त्रियों में श्रेष्ठ तामसी देवी ने महालक्ष्मी से कहा-'माताजी ! आपको नमस्कार है। मुझे मेरा नाम और कर्म बताइये।।१०।। तब महालक्ष्मी ने स्त्रियों में श्रेष्ठ उस तामसी देवी से कहा- मैं तुम्हें नाम प्रदान करती हूँ और तुम्हारे जो-जो कर्म हैं, उनको भी बतलाती हूँ।।११।। महामाया, महाकाली, महामारी, क्षुधा, तृषा, निद्रा, तृष्णा, एकवीरा, कालरात्रि तथा दुरत्यया-।।१२।। ये तुम्हारे नाम हैं, जो कार्यों के द्वारा लोक में

तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम्।।
ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते ।।११।।
महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा।
निद्रा तृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया ।।१२।।
इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः।
एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुते सुखम् ।।१३।।
तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप।
सत्त्वाख्येनातिशुद्धेन गुणेनेन्दुप्रभं दधौ ।।१४।।
अक्षमालाङ्कुशधरा वीणापुस्तकधारिणी।
सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यै च सा ददौ ।।१५।।
महाविद्या महावाणी भारती वाक् सरस्वती।
आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा च धीश्वरी ।।१६।।
अथोवाच महालक्ष्मीर्महाकालीं सरस्वतीम्।
युवां जनयतां देव्यौ मिथुने स्वानुरूपतः ।।१७।।

चरितार्थ होंगे। इन नामों के द्वारा तुम्हारे कर्मों को जानकर जो उनका पाठ करता है, वह सुख भोगता है।।१३।। राजन् ! महाकाली से यों कहकर महालक्ष्मी ने अत्यन्त शुद्ध सत्त्वगुण के द्वारा दूसरा रूप धारण किया, जो चन्द्रमा के समान गौरवर्ण था।।१४।। वह श्रेष्ठ नारी अपने हाथों में अक्षमाला, अंकुश, वीणा तथा पुस्तक धारण किये हुए थी। महालक्ष्मी ने उसे भी नाम प्रदान किये।।१५।। महाविद्या, महावाणी, भारती, वाक्, सरस्वती, आर्या, ब्राह्मी, कामधेनु, वेदगर्भा और धीश्वरी (बुद्धि की स्वामिनी)-ये तुम्हारे नाम होगें।।१६।। तदनन्तर महालक्ष्मी ने महाकाली ओर महासरस्वती से कहा- 'देवियो ! तुम दोनों अपने-अपने गुणों के योग्य स्त्री-पुरुष के जोड़े उत्पन्न करो।।१७।।

उन दोनों से यों कहकर महालक्ष्मी ने पहले स्वयं ही स्त्री-पुरुष का एक जोड़ा उत्पन्न किया। वे दोनों हिरण्यगर्भ (निर्मल ज्ञान से सम्पन्न) सुन्दर तथा कमल के आसन पर विराजमान थे। उनमें से एक स्त्री थी और दूसरा पुरुष।।18।। तत्पश्चात माता महालक्ष्मी ने पुरुष को ब्रह्मन् ! विधे ! विरिञ्च

इत्युक्त्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनं स्वयम्।
हिरण्यगर्भौ रुचिरौ स्त्रीपुंसौ कमलासनौ ॥१८॥
ब्रह्मन् विधे विरिञ्चेति धातरित्याह तं नरम्।
श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता च तां स्त्रियम् ॥१९॥
महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह।
एतयोरपि रूपाणि नामान्नि च वदामि ते ॥२०॥
नीलकण्ठं रक्तबाहुं श्वेताङ्गं चन्द्रशेखरम्।
जनयामास पुरुषं महाकाली सितां स्त्रियम् ॥२१॥
स रुद्रः शंकरः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः।
त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा॥२२॥
सरस्वती स्त्रियं गौरीं कृष्णं च पुरुषं नृप।
जनयामास नामानि तयोरपि वदामि ते ॥२३॥
विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः।
उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा ॥२४॥

तथा धातः ! इस प्रकार सम्बोधित किया और स्त्री को श्री! पद्मा ! कमला! लक्ष्मी ! इत्यादि नामों से पुकारा।।१६।। इसके बाद महाकाली और महासरस्वती ने भी एक-एक जोड़ा उत्पन्न किया। इनके भी रूप और नाम मैं तुम्हें बतलाता हूँ।।२०।। महाकाली ने कण्ठ में नील चिन्ह से युक्त, लाल भुजा, श्वेत शरीर और मस्तक पर चन्द्रमा का मुकुट धारण करने वाले पुरुष को तथा गोरे रंग की स्त्री को जन्म दिया।।२१।। वह पुरुष रुद्र, शंकर, स्थाणु, कपर्दी और त्रिलोचन के नाम से प्रसिद्ध हुआ तथा स्त्री के त्रयी, विद्या, कामधेनु, भाषा, अक्षरा और स्वरा-ये नाम हुए।।२२।। राजन् ! महासरस्वती ने गोरे रंग की स्त्री और श्याम रंग के पुरुष को प्रकट किया। उन दोनों के नाम मैं तुम्हें बतलाता हूँ।।२३।। उनमें पुरुष के नाम विष्णु, कृष्ण, हृषीकेश, वासुदेव और जनार्दन हुए तथा स्त्री उमा, गौरी, सती, चण्डी, सुन्दरी, सुभगा और शिवा-इन नामों से प्रसिद्ध हुई।।२४।। इस प्रकार तीनों युवतियाँ ही तत्काल पुरुषरूप को प्राप्त हुईं। इस बात को ज्ञान नेत्र वाले लोग ही समझ

एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे।
चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः ॥२५॥
ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृप त्रयीम्।
रुद्राय गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम् ॥२६॥
स्वरया सह सम्भूय विरिञ्चोऽण्डमजीजनत्।
बिभेद भगवान् रुद्रस्तद् गौर्या सह वीर्यवान् ॥२७॥
अण्डमध्ये प्रधानादिं कार्यजातमभून्नृप।
महाभूतात्मकं सर्वं जगत्स्थावरजंगमम् ॥२८॥
पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः।
संजहार जगत्सर्वं सह गौर्या महेश्वरः ॥२९॥
महालक्ष्मीर्महाराज सर्वसत्त्वमयीश्वरी।
निराकारा च साकारा सैव नानाभिधानभृत् ॥३०॥
नामान्तरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नान्येन केनचित्॥ॐ ॥३१॥

इति प्राधानिकं रहस्यं सम्पूर्णम्

सकते हैं। दूसरे अज्ञानीजन इस रहस्य को नहीं जान सकते॥२५॥ राजन् ! महालक्ष्मी ने त्रयीविद्यारूपा सरस्वती को ब्रह्मा के लिये पत्नी रूप में समर्पित किया, रुद्र को वरदायिनी गौरी तथा भगवान् वासुदेव को लक्ष्मी दे दी॥२६॥ इस प्रकार सरस्वती के साथ संयुक्त होकर ब्रह्माजी ने ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया ओर परम पराक्रमी भगवान् रुद्र ने गौरी के साथ मिलकर उसका भेदन किया॥२७॥ राजन् ! उस ब्रह्माण्ड में प्रधान (महत्तत्व) आदि कार्य समूह-पञ्चमहाभूतात्मक समस्त स्थावर-जङ्गमरूप जगत् की उत्पत्ति हुई॥२८॥ फिर लक्ष्मी के साथ भगवान् विष्णु ने उस जगत् का पालन-पोषण किया और प्रलयकाल में गौरी के साथ महेश्वर ने उस सम्पूर्ण जगत् का संहार किया॥२६॥

महाराज ! महालक्ष्मी ही सर्वसत्त्वमयी तथा सब सत्त्वों की अधीश्वरी हैं। वे ही निराकार और साकाररूप में रहकर नाना प्रकार के नाम धारण करती हैं॥३०॥ सगुणवाचक सत्य, ज्ञान, चित्, महामाया आदि नामान्तरों से इन महालक्ष्मी का निरूपण करना चाहिए। केवल एक नाम (महालक्ष्मीमात्र) से अथवा अन्य प्रत्यक्ष आदि प्रमाण से उनका वर्णन नहीं हो सकता॥३१॥

अथ वैकृतिकं रहस्यम्

ऋषिरुवाच

ॐ त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधोदिता।
सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते ॥१॥
योगनिद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा।
मधुकैटभनाशार्थं यां तुष्टावाम्बुजासनः ॥२॥
दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा।
विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया ॥३॥
स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपापि भूमिप।
रूपसौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियः ॥४॥
खड्गबाणगदाशूलचक्रशंखभुशुण्डिभृत् ।
परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्च्योतद्रुधिरं दधौ ॥५॥
एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया।
आराधिता वशीकुर्यात् पूजाकर्तुश्चराचरम् ॥६॥

ऋषि कहते हैं - राजन्! पहले जिन सत्त्वप्रधाना त्रिगुणमयी महालक्ष्मी के तामसी आदि भेद से तीन स्वरूप बतलाये गये, वे ही शर्वा, चण्डिका, दुर्गा, भद्रा और भगवती आदि अनेक नामों से कही जाती हैं।।१।। तमोगुणमयी महाकाली भगवान् विष्णु की योगनिद्रा कही गयी हैं। मधु और कैटभ का नाश करने के लिए ब्रह्माजी ने जिनकी स्तुति की थी, उन्हीं का नाम महाकाली है।।२।। उसके दस मुख, दस भुजाएँ और दस पैर हैं। वे काजल के समान काले रंग की है तथा तीस नेत्रों की विशाल पंक्ति से सुशोभित होती हैं।।३।। भूपाल! उनके दाँत और दाढ़े चमकती रहती हैं। यद्यपि उनका रूप भयंकर है तथापि वे रूप सौभाग्य, कान्ति एवं महती सम्पदा की अधिष्ठान (प्राप्तिस्थान) हैं।।४।। वे अपने हाथों में खड्ग, बाण, गदा, शूल, शङ्ख, भुशुण्डि, परिघ, धनुष तथा जिससे रक्त चूता रहता है ऐसा कटा हुआ मस्तक धारण करती है।।५।। ये महाकाली भगवान् विष्णु की दुस्तर माया है। आराधना करने पर ये चराचर जगत् को अपने उपासक के

सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽविर्भूतामितप्रभा।
त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी ॥७॥
श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला।
रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुरुन्मदा ॥८॥
सुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा।
चित्रानुलेपना कान्तिरूपसैभाग्यशालिनी ॥९॥
अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती।
आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधःकरक्रमात् ॥१०॥
अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा।
चक्रं त्रिशूलं परशुः शंखो घण्टा च पाशकः ॥११॥
शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः।
अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम् ॥१२॥
सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप।
पूजयेत्सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत् ॥१३॥

अधीन कर देती हैं॥६॥

सम्पूर्ण देवताओं के अङ्गों से जिनता प्रादुर्भाव हुआ है वे अनन्त कांति से युक्त साक्षात् महालक्ष्मी हैं। उन्हें ही त्रिगुणमयी प्रकृति कहते हैं तथा वे ही महिषासुर का मर्दन करने वाली है॥७॥ उनका मुख गोरा, भुजाएँ श्याम, स्तनमण्डल अत्यन्तश्वेत, कटिभाग और चरण लाल तथा जङ्घा और पिंडली नीले रंग की है। अजेय होने के कारण उनको अपने शौर्य का अभिमान है॥८॥ कटि के आगे का भाग बहुरंगे वस्त्र से आच्छादित होने के कारण अत्यन्त सुन्दर एवं विचित्र दिखाई देता है। उसकी माला, वस्त्र, आभूषण तथा अङ्गराग सभी विचित्र हैं। वे कान्ति, रूप और सौभाग्य से सुशोभित हैं॥९॥ यद्यपि उनकी हजारों भुजाएँ हैं, तथापि उन्हें अठारह भुजाओं से युक्त मानकर उनकी पूजा करनी चाहिए। अब उनके दाहिने ओर के निचले हाथों से लेकर बायीं ओर के निचले हाथों तक में क्रमशः जो अस्त्र हैं, उसका

गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्त्वैकगुणाश्रया।
साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥१४॥
दधौ चाष्टभुजा बाणमुसले शूलचक्रभृत्।
शङ्खं घण्टां लांगलं च कार्मुकं वसुधाधिप ॥१५॥
एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति।
निशुम्भमथिनी देवी शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥१६॥
इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्तीनां तव पार्थिव।
उपासनं जगन्मातुः पृथगासां निशामय ॥१७॥
महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली सरस्वती।
दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुनत्रयम् ॥१८॥

वर्णन किया जाता है॥१०॥ अक्षमाला, कमल, बाण, खड्ग, वज्र, गदा, चक्र, त्रिशूल, परशु, शङ्ख, घण्टा, पाश, शक्ति, दण्ड, चर्म (ढाल), धनुष, पानपात्र और कमण्डलु-इन आयुधों से उनकी भुजाएँ विभूषित हैं। त्र कमल के आसन पर विराजमान हैं, सर्वदेवमयी हैं तथा सबकी ईश्वरी है। राजन्! जो इन महालक्ष्मी देवी का पूजन करता है, वह सब लोकों तथा देवताओं का भी स्वामी होता है॥११-१३॥

जो एकमात्र सत्व गुण के आश्रित हो पार्वती जी के शरीर से प्रकट हुई थीं तथा जिन्होंने शुम्भ नामक दैत्य का संहार किया था, वे साक्षात् सरस्वती कही गई हैं॥१४॥ पृथ्वीपते! उनके आठ भुजाएँ हैं तथा वे अपने हाथ में क्रमशः बाण, मुसल, शुल, चक्र, शङ्ख, घण्टा, हल एवं धनुष धारण करती हैं॥१५॥ ये सरस्वती देवी, जो निशुम्भ का मर्दन तथा शुम्भासुर का संहार करने वाली है, भक्तिपूर्वक पूजित होने पर सर्वज्ञता प्रदान करती हैं॥१६॥

राजन्! इस प्रकार तुमसे महाकाली आदि तीनों मूर्तियों के स्वरूप बतलायें, अब जगन्माता महालक्ष्मी की तथा इन महालक्ष्मी आदि तीनों मूर्तियों की पृथक्-पृथक उपासना श्रवण करो॥१७॥ जब महालक्ष्मी की पूजा करनी हो, तब उन्हें मध्य में स्थापित करके उनके दक्षिण और वाम भाग में क्रमशः महाकाली और महासरस्वती का पूजन करना चाहिए और

विरञ्चिः स्वरया मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे।
वामे लक्ष्म्या हृषीकेशः पुरतो देवतात्रयम् ॥१९॥
अष्टादशभुजा मध्ये वामे चास्या दशानना।
दक्षिणेऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीति समर्चयेत् ॥२०॥
अष्टादशभुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप।
दशानना चाष्टभुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा ॥२१॥
कालमृत्यु च सम्पूज्यौ सर्वारिष्टप्रशान्तये।
यदा चाष्टभुजा पूज्या शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥२२॥

पृष्ठभाग में तीनों युगल देवताओं की पूजा करनी चाहिए॥१८॥ महालक्ष्मी के ठीक पीछे मध्य भाग में सरस्वती के साथ ब्रह्मा का पूजन करें। उनके दक्षिण भाग में गौरी के साथ रुद्र की पूजा करे तथा वामभाग में लक्ष्मी सहित विष्णु का पूजन करे। महालक्ष्मी आदि तीनों देवियों के सामने निम्नांकित तीन देवियों की भी पूजा करनी चाहिए॥१६॥ मध्यस्थ महालक्ष्मी के आगे मध्यभाग में अठारह भुजाओं वाली महालक्ष्मी का पूजन करें। उनके वामभाग में दस मुखों वाली महाकाली का तथा दक्षिण भाग में आठ भुजाओं वाली महासरस्वती का पूजन करें॥२०॥ राजन् जब केवल अठारह भुजाओं वाली महालक्ष्मी का अथवा दशमुखी काली का या अष्टभुजा सरस्वती का पूजन करना हो तब सब अरिष्टों की शांति के लिए इनके दक्षिण भाग में काल की और वाम भाग में मृत्यु की भी भली-भांति पूजा करनी चाहिए। जब शुम्भासुर का संहार करने वाली अष्टभुजा देवी की पूजा करनी हो, तब उनके साथ उनकी नौ शक्तियों और दक्षिण भाग में रुद्र एवं वामभाग में गणेश जी का भी पूजन करना चाहिए (ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नारसिंही, ऐन्द्री, शिवदूती तथा चामुण्डा- ये नौ शक्तियाँ हैं।

'नमो देव्यै......' इस स्तोत्र से महालक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए॥२१-२३॥ तथा उनके तीन अवतारों की पूजा के समय उनके चरित्रों में जो स्तोत्र और मन्त्र आये हैं, उन्हीं का उपयोग करना चाहिए। अठारह भुजाओं वाली महिषासुर मर्दनी महालक्ष्मी ही विशेष रूप से

नवास्याः शक्तयः पूज्यास्तदा रुद्रविनायकौ।
नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मीं समर्चयेत् ॥२३॥
अवतारत्रयार्चायां स्तोत्रमन्त्रास्तदाश्रयाः।
अष्टादशभुजा चैषा पूज्या महिषमर्दिनी ॥२४॥
महालक्ष्मीर्महाकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती।
ईश्वरी पुण्यपापानां सर्वलोकमहेश्वरी ॥२५॥
महिषान्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः।
पूजयेज्जगतां धात्रीं चण्डिकां भक्तवत्सलाम् ॥२६॥
अर्घ्यादिभिरलंकारैर्गन्धपुष्पैस्तथाक्षतैः ।
धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैर्नानाभक्ष्यसमन्वितैः ॥२७॥
रुधिराक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप।
(बलिमांसादिपूजेयं विप्रवर्ज्या मयेरिता॥
तेषां किल सुरामांसैर्नोक्ता पूजा नृप क्वचित्।)
प्रणामाचमनीयेन चन्दनेन सुगन्धिना ॥२८॥

पूजनीय है; क्योंकि वे ही महालक्ष्मी, महाकाली तथा महासरस्वती कहलाती हैं। वे ही पुण्य पापों की अधीश्वरी तथा सम्पूर्ण लोकों की महेश्वरी हैं॥२४-२५॥ जिसने महिषासुर का अन्त करने वाली महालक्ष्मी की भक्तिपूर्वक आराधना की है, वही संसार का स्वामी है। अतः जगत् को धारण करने वाली भक्तवत्सला भगवती चण्डिका की अवश्य पूजा करनी चाहिए॥२६॥

अर्घ्य आदि से, आभूषणों से, गन्ध, पुष्प, अक्षत, धूप, दीप तथा नाना प्रकार के भक्ष्य पदार्थों से युक्त नैवेद्यों से, रक्तसिञ्चित बलि से, मांस से तथा मदिरा से भी देवी का पूजन होता है। (राजन! बलि और मांस आदि से की जाने वाली पूजा ब्राह्मणों को छोड़कर बतायी गयी है। उनके लिए मांस और मदिरा से कहीं भी पूजा का विधान नहीं हैं।) प्रणाम, आचमन के योग्य जल, सुगन्धित चन्दन, कपूर तथा ताम्बूल आदि

सकर्पूरैश्च ताम्बूलैर्भक्तिभावसमन्वितैः।
वामभागेऽग्रतो देव्याश्छिन्नशीर्षं महासुरम् ॥२९॥
पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्यमीशया।
दक्षिणे पुरतः सिंह समग्रं धर्ममीश्वरम् ॥३०॥
वाहनं पूजेयेद्देव्या धृतं येन चराचरम्।
कुर्याच्च स्तवनं धीमांतस्या एकाग्रमानसः ॥३१॥
तत कृताञ्जलिर्भूत्वा स्तुवीत चरितैरिमैः।
एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिह ॥३२॥
चरितार्धं तु न जपेज्जपञ्छिद्रमवाप्नुयात्।
प्रदक्षिणानमस्कारान् कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः ॥३३॥
क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतन्द्रितः।
प्रतिश्लोकं च जुहुयात्पायसं तिलसर्पिषा ॥३४॥
जुहुयात्स्तोत्रमन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविः।
भूयो नामपदैर्देवीं पूजयेत्सुसमाहितः ॥३५॥

सामग्रियों को भक्तिभाव से निवेदन करके देवी की पूजा करनी चाहिए। देवी के सामने बाये भाग में कटे मस्तक वाले महादैत्य महिषासुर का पूजन करना चाहिए, जिसने भगवती के साथ सायुज्य प्राप्त कर लिया। इसी प्रकार देवी के सामने दक्षिण भाग में उनके वाहन सिंह का पूजन करना चाहिए, जो सम्पूर्ण धर्म का प्रतीक एवं षड्विध ऐश्वर्य से युक्त है। उसी ने चराचर जगत् को धारण कर रखा है। तदनन्तर बुद्धिमान पुरुष एकाग्रचित्त हो देवी की स्तुति करे। फिर हाथ जोड़कर तीनों पूर्वोक्त चरित्रों द्वारा भगवती का स्तवन करें। यदि कोई एक ही चरित्र से स्तुति करना चाहे तो केवल मध्यम चरित्र के पाठ से कर ले, किन्तु प्रथम और उत्तर चरित्रों में से एक का पाठ न करे। आधे चरित्र का भी पाठ करना मना है। जो आधे चरित्र का पाठ करता है, उसका पाठ सफल नहीं होता। पाठ-समाप्ति के बाद साधक प्रदक्षिणा और

प्रयतः प्राञ्जलिः प्रह्वः प्रणम्यारोप्य चात्मनि।
सुचिरं भावयेदीशां चण्डिकां तन्मयो भवेत ॥३६॥
एवं यः पूजयेद्भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम्।
भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात् ॥३७॥
यो न पूजयते नित्यं चण्डिकां भक्तवत्सलाम्।
भस्मीकृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत्परमेश्वरीम् ॥३८॥
तस्मात्पूजय भूपाल सर्वलोकमहेश्वरीम्।
यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सुखमाप्स्यसि ॥३९॥

इति वैकृतिकं रहस्यं सम्पूर्णम्

नमस्कार कर तथा आलस्य छोड़कर जगदम्बा के उद्देश्य से मस्तक पर हाथ जोड़े और उनसे बारम्बार त्रुटियों या अपराधों के लिए क्षमा-प्रार्थना करे। सप्तशती का प्रत्येक श्लोक मन्त्ररूप है, उससे तिल और घृत मिली हुई खीर ही आहूति दे।।२७-३४।। अथवा सप्तशती में जो स्तोत्र आये हैं, उन्हीं के मन्त्रों से चण्डिका के लिए पवित्र हविष्य का हवन करे। होम के पश्चात् एकाग्रचित्त हो महालक्ष्मी देवी के नाम-मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पुनः उनकी पूजा करे।।३५।। तत्पश्चात् मन और इन्द्रियों को वश में रखते हुए हाथ जोड़ कर विनीत भाव से देवी को प्रणाम करे और अन्तःकरण में स्थापित करके उन सर्वेश्वरी चण्डिका देवी का देर तक चिन्तन करें। चिन्तन करते-करते उन्हीं में तन्मय हो जाय।।३६।। इस प्रकार जो मनुष्य प्रतिदिन भक्तिपूर्वक परमेश्वरी का पूजन करता है, वह मनोवाञ्छित भोगों को भोगकर अन्त में देवी का सायुज्य प्राप्त करता है।।३७।। जो भक्तवत्सला चण्डी का प्रतिदिन पूजन नहीं करता, भगवती परमेश्वरी उसके पुण्यों को जलाकर भस्म कर देती हैं।।३८।। इसलिए राजन्! तुम सर्वलोकमहेश्वरी चण्डिका का शास्त्रोक्त विधि से पूजन करो। उससे तुम्हें सुख मिलेगा।।३९।।

अथ मूर्तिरहस्यम्

ऋषिरुवाच

ॐ नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा।
स्तुता सा पूजिता भक्त्या वशीकुर्याज्जगत्त्रयम् ॥१॥
कनकोत्तमकान्तिः सा सुकान्तिकनकाम्बरा।
देवी कनकवर्णाभा कनकोत्तमभूषणा ॥२॥
कमलांकुशपाशाब्जैरलंकृतचतुर्भुजा ।
इन्दिरा कमला लक्ष्मीः सा श्री रुक्माम्बुजासना ॥३॥
या रक्तदन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मयानघ।
तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्वाभयापहम् ॥४॥
रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वांगभूषणा।
रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा ॥५॥

ऋषि कहते हैं : राजन्! नन्दा नाम की देवी जो नन्द से उत्पन्न होने वाली हैं, उनकी यदि भक्तिपूर्वक स्तुति और पूजा की जाय तो वे तीनों लोकों को उपासक के अधीन कर देती हैं।।१।। उनके श्री अङ्गों की कान्ति कनक के समान उत्तम है। वे सुनहरे रंग के सुन्दर वस्त्र धारण करती हैं। उनकी आभा स्वर्ण के तुल्य है तथा वे स्वर्ण के ही उत्तम आभूषण धारण करती हैं।।२।। उनकी चार भुजाएं कमल, अंकुश, पाश और शङ्ख से सुशोभित हैं। वे इंदिरा, कमला, लक्ष्मी, श्री तथा रुक्माम्बुजासना (स्वर्णमय कलश के आसन पर विराजमान) आदि नामों से पुकारी जाती हैं।।३।। निष्पाप नरेश! पहले मैंने रक्तदन्तिका नाम से जिन देवी का परिचय दिया है, अब उनके स्वरूप का वर्णन करूँगा; सुनो। वह सब प्रकार के भयों को दूर करने वाली है।।४।। वे लाल रंग के वस्त्र धारण

रक्ततीक्ष्णनखा रक्तदशना रक्तदन्तिका।
पतिं नारीवानुरक्ता देवी भक्तं भजेज्जनम् ॥६॥
वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी।
दीर्घौ लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ ॥७॥
कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्दपयोनिधी
भक्तान् सम्पाययेद्देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ ॥८॥
खड्गं पात्रं च मुसलं लाङ्गलं च बिभर्ति सा।
आख्याता रक्तचामुण्डा देवी योगेश्वरीति च ॥९॥
अनया व्याप्तमखिलं जगत्स्थावरजङ्गमम्।
इमां यः पूजयेद्भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम् ॥१०॥
(भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात्।)

करती हैं। उनके शरीर का रंग भी लाल ही है और अंगों के समस्त आभूषण भी लाल रंग के हैं। उनके अस्त्र-शस्त्र, नेत्र, शिर के बाल, तीखे नख और दांत सभी रक्तवर्ण के हैं; इसलिए वे रक्तदन्तिका कहलाती हैं और अत्यन्त भयानक दिखायी देती हैं। जैसे स्त्री पति के प्रति अनुराग रखती है, उसी प्रकार देवी अपने भक्त पर (माता की भांति) स्नेह रखते हुए उसकी सेवा करती हैं।।५-६।।

देवी रक्तदन्तिका आकार का वसुधा की भांति विशाल है। उनके दोनों स्तन सुमेरु पर्वत के समान हैं। वे लंबे, चौड़े, अत्यन्त स्थूल एवं बहुत ही मनोहर हैं। कठोर होते हुए भी अत्यन्त कमनीय हैं तथा पूर्ण आनन्द के समुद्र हैं। सम्पूर्ण कामनाओं की पूर्ति करने वाले ये दोनों स्तन देवी अपने भक्तों को पिलाती हैं।।७-८।। वे अपनी चार भुजाओं में खड्ग, पानपात्र, मूसल और हल धारण करती हैं। ये ही रक्त चामुण्डा और योगेश्वरी देवी कहलाती हैं।।९।। इनके द्वारा सम्पूर्ण चराचर जगत्

अधीते य इमं नित्यं रक्तदन्त्या वपुःस्तवम्।
तं सा परिचरेद्देवी पतिं प्रियमिवाङ्गना ॥११॥
शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना।
गम्भीरनाभिस्त्रिवलीविभूषिततनूदरी ॥१२॥
सुकर्कशसमोत्तुङ्गवृत्तपीनघनस्तनी ।
मुष्टिं शिलीमुखापूर्णं कमलं कमलालया ॥१३॥
पुष्पपल्लवमूलादिफलाढ्यं शाकसञ्चयम्।
काम्यानन्तरसैर्युक्तं क्षुत्तृण्मृत्युभयापहम् ॥१४॥
कार्मुकं च स्फुरत्कान्ति बिभ्रती परमेश्वरी॥
शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता ॥१५॥
विशोका दुष्टदमनी शमनी दुरितापदाम्।
उमा गौरी सती चण्डी कालिका सा च पार्वती ॥१६॥

व्याप्त है। जो इन रक्तदन्तिका देवी का भक्तिपूर्वक पूजन करता है, वह भी चराचर जगत में व्याप्त होता है।।१०।। (वह यथेष्ठ भोगों को भोगकर अन्त में देवी के साथ साजुज्य प्राप्त कर लेता है।) जो प्रतिदिन रक्तदन्तिका देवी के शरीर का यह स्तवन करता है, उसकी वे देवी प्रेमपूर्वक संरक्षणरूप सेवा करती हैं-ठीक उसी तरह, जैसे पतिव्रता नारी अपने प्रियतम पति की परिचर्या करती है।।११।।

शाकम्भरी देवी के शरीर की कान्ति नीले रंग की होती है। उसके नेत्र नील कमल के समान हैं, नाभि नीची है तथा त्रिवली से विभूषित उदर (मध्यभाग) सूक्ष्म है।।१२।। उसके दोनों स्तन अत्यन्त कठोर, सब ओर से बराबर, ऊँचे, गोल, स्थूल तथा परस्पर सटे हुए हैं। वे परमेश्वरी कमल में निवास करने वाली हैं और हाथों में बाणों से भरी हुई मुष्टि, कमल, शाक-समूह तथा प्रकाशमान धनुष धारण करती हैं। वह शाकसूमह अनन्त मनोवाञ्छित रसों से युक्त तथा क्षुधा, तृषा और मृत्यु के भय को

शाकम्भरीं स्तुवन् ध्यायञ्जपन् सम्पूजयन्नमन्।
अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्नपानामृतं फलम् ॥१७॥
भीमापि नीलवर्णा सा दंष्ट्रादशनभासुरा।
विशाललोचना नारी वृत्तपीनपयोधरा ॥१८॥
चन्द्रहासं च डमरुं शिरः पात्रं च बिभ्रती।
एकवीरा कालरात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता ॥१९॥
तेजोमण्डलदुर्धर्षा भ्रामरी चित्रकान्तिभृत्।
चित्रानुलेपना देवी चित्राभरणभूषिता ॥२०॥
चित्रभ्रमरपाणिः सा महामारीति गीयते।
इत्येता मूर्तयो देव्या याः ख्याता वसुधाधिप ॥२१॥
जगन्मातुश्चण्डिकायाः कीर्तिताः कामधेनवः।
इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित्त्वया ॥२२॥
व्याख्यानं दिव्यमूर्तीनामभीष्टफलदायकम्।

नष्ट करने वाला तथा फूल, पल्लव, मूल आदि एवं फलों से सम्पन्न है। वे ही शाकम्भरी, शताक्षी तथा दुर्गा कही गयी हैं।।१३-१५।। वे शोक से रहित, दुष्टों का दमन करने वाली तथा पाप और विपत्ति को शांत करने वाली हैं। उमा, गौरी, सती, चण्डी, कालिका और पार्वती भी वे ही हैं।।१६।। जो मनुष्य देवी की स्तुति, ध्यान, जप, पूजा और वन्दन करता है, वह शीघ्र ही अन्न, पान एवं अमृतरूप अक्षय फल का भागी होता है।।१७।।

भीमा देवी का वर्ण भी नील ही है। उनकी दाढ़ें और दाँत चमकते रहते हैं। उनके नेत्र बड़े-बड़े हैं, स्वरूप स्त्री का है, स्तन गोल-गोल और स्थूल हैं। वे अपने हाथों में चन्द्रहास नामक खड्ग, डमरु, मस्तक और पानपात्र धारण करती हैं। वे ही एकवीरा, कालरात्रि तथा कामदा

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन देवीं जप निरन्तरम् ॥२३॥
सप्तजन्मार्जितैघोरैर्ब्रह्महत्यासमैरपि ।
पाठमात्रेण मन्त्राणां मुच्यते सर्वकिल्बिषैः ॥२४॥
देव्या ध्यानं मया ख्यातं गुह्याद् गुह्यतरं महत्।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन सर्वकामफलप्रदम् ॥२५॥
(एतस्यास्त्वं प्रसादेन सर्वमान्यो भविष्यसि।
सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत्।
अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम्।)

॥ इति मूर्ति रहस्यम् सम्पूर्णम् ॥

कहलाती और इन नामों से प्रशंसित होती हैं।।१८-१६।।

भ्रामरी देवी की कान्ति विचित्र (अनेक रंग की) है। वे अपने तेजोमण्डल के कारण दुर्धर्ष दिखायी देती हैं। उनका अंगराग भी अनेक रंग का है तथा वे चित्र-विचित्र आभूषणों से विभूषित हैं।।२०।। चित्रभ्रमरपाणि और महामारी आदि नामों से उनकी महिमा का गान किया जाता है। राजन्! इस प्रकार जगन्माता चण्डिका देवी की ये मूर्तियाँ बतलायी गई हैं।।२१।। जो कीर्तन करने पर कामधेनु के समान सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करती हैं। यह परम गोपनीय रहस्य है। इसे तुम्हें दूसरे किसी को नहीं बतलाना चाहिए।।२२।। दिव्य मूर्तियों का यह आख्यान मनोवाञ्छित फल देने वाला है, इसलिए पूर्ण प्रयत्न करके तुम निरन्तर देवी के जप (आराधन) में लगे रहो।।२३।। सप्तशती के मन्त्रों के पाठ मात्र से मनुष्य सात जन्मों में उपार्जित ब्रह्महत्यासदृश घोर पातकों एवं समस्त कल्मषों से मुक्त हो जाता है।।२४।। इसलिए मैने पूर्ण प्रयत्न करके देवी के गोपनीय से अत्यन्त गोपनीय ध्यान का वर्णन किया है, जो सब प्रकार के मनोवाञ्छित फलों को देने वाला है।।२५।। (उनके प्रसाद से तुम सर्वमान्य हो जाओगे। देवी सर्वरूपमयी हैं तथा सम्पूर्ण जगत् देवीमय है। अतः मैं उन विश्वरूपा परमेश्वरी को नमस्कार करता हूँ।।

अथ दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममाला

एक समय की बात है, ब्रह्मा आदि देवताओं ने पुष्प आदि विविध उपचारों से महेश्वरी दुर्गा का पूजन किया। इससे प्रसन्न होकर दुर्गतिनाशिनी दुर्गा ने कहा-'देवताओं! मैं तुम्हारे पूजन से संतुष्ट हूँ, तुम्हारी जो इच्छा हो, मांगों, मैं तुम्हें दुलर्भ से दुलर्भ वस्तु भी प्रदान करूँगी।' दुर्गा का यह वचन सुनकर देवता बोले-'देवि! हमारे शत्रु महिषासुर को, जो तीनों लोकों के लिए कंटक था, आपने मार डाला, इससे सम्पूर्ण जगत् स्वस्थ एवं निर्भय हो गया। आपकी ही कृपा से हमें पुनः अपने-अपने पद की प्राप्ति हुई है। आप भक्तों के लिए कल्पवृक्ष हैं, हम आपकी शरण में आए हैं। अतः अब हमारे मन में कुछ भी पाने की अभिलाषा शेष नहीं है। हमें सब कुछ मिल गया। तथापि आपकी आज्ञा है, इसलिए हम जगत् के लिए आपसे कुछ पूछना चाहते हैं। महेश्वरि! कौन-सा ऐसा उपाय है, जिससे शीघ्र प्रसन्न होकर आप संकट में पड़े हुए जीव की रक्षा करती हैं। देवेश्वरि! यह बात सर्वथा गोपनीय हो तो भी हमें अवश्य बतावें।'

देवताओं के इस प्रकार प्रार्थना करने पर दयामयी दुर्गा देवी ने कहा -देवगण! सुनो-यह रहस्य अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ है। मेरे बत्तीस नामों की माला सब प्रकार की आपत्ति का विनाश करने वाली है। तीनों लोकों में इनके समान दूसरी कोई कोई स्तुति नहीं है। यह रहस्यरूप है। इसे बतलाती हूँ सुनो:-

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी।
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी॥
दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा।
दुर्गमज्ञानदा दुर्गदैत्यलोकदवानला॥

दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्मस्वरूपिणी।
दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता॥
दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गमध्यानभासिनी।
दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरूपिणी॥
दुर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमायुधधारिणी।
दुर्गमाङ्गी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमे श्वरी॥
दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी।
नामावलिमिमां यस्तु दुर्गाया मम मानवः॥
पठेत् सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति न संशयः।

१. दुर्गा, २. दुर्गतिनाशिनी, ३. दुर्गापद्विनिवारिणी, ४. दुर्गमच्छेदिनी, ५. दुर्गसाधिनी, ६. दुर्गनाशिनी, ७. दुर्गतोद्धारिणी, ८. दुर्गनिहन्त्री, ९. दुर्गमापहा, १०. दुर्गमज्ञानदा, ११. दुर्गदैत्यलोकदवानला, १२. दुर्गमा, १३. दुर्गमालोका, १४. दुर्गमात्मस्वरूपिणी, १५. दुर्गमार्गप्रदा, १६. दुर्गमविद्या, १७. दुर्गमाश्रिता, १८. दुर्गमज्ञानसंस्थाना, १९. दुर्गमध्यानभासिनी, २०. दुर्गमोहा, २१. दुर्गमगा, २२. दुर्गमार्थस्वरूपिणी, २३. दुर्गमासुरसंहन्त्री, २४. दुर्गमायुधधारिणी, २५. दुर्गमाङ्गी, २६. दुर्गमता, २७. दुर्गम्या, २८. दुर्गमे श्वरी, २९. दुर्गभीमा, ३०. दुर्गभामा, ३१. दुर्गभा, ३२. दुर्गदारिणी।

जो मनुष्य मुझ दुर्गा की इस नाममाला का पाठ करता है, वह निःसन्देह सब प्रकार के भय से मुक्त हो जाएगा।

॥इति अथ दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममाला॥

सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम्

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत् ॥१॥
न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम् ॥२॥
कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम् ॥३॥
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वती।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठमात्रेण संसिद्ध्येत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ॥४॥

अथ मन्त्रः

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे॥ ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।

॥ इति मन्त्रः॥

शिव जी बोले-

देवी ! सुनो। मैं उत्तम कुजिंकास्तोत्र का उपदेश करूँगा, जिस मन्त्र के प्रभाव से देवी का जप (पाठ) सफल होता है।।१।।

कवच, अर्गला, कीलक, रहस्य, सूक्त, ध्यान, न्यास यहां तक कि अर्चन भी (आवश्यक) नहीं है।।२।।

केवल कुंजिका के पाठ से दुर्गा-पाठ का फल प्राप्त हो जाता है। (यह कुंजिका) अत्यन्त गुप्त और देवों के लिये भी दुर्लभ है।।३।।

हे पार्वती ! इसे स्वयोनि की भांति प्रयत्नपूर्वक गुप्त रखना चाहिये। यह उत्तम कुंजिकास्तोत्र केवल पाठ के द्वारा मारण, मोहन, वशीकरण, स्तम्भन और उचाटन आदि (अभिचारिक) उद्देश्यों को सिद्ध करता

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि ॥१॥
नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि
जाग्रतं हि महादेवी जपं सिद्धं कुरुष्व मे ॥२॥
ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते ॥३॥
चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि ॥४॥
धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु ॥५॥
हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ॥६॥

है॥४॥

मन्त्र - ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे॥ ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा (मन्त्र में आये बीजों का अर्थ जानना न सम्भव है, न आवश्यक और न वांछनीय। केवल जप पर्याप्त है।

हे रुद्रस्वरूपिणी ! तुम्हें नमस्कार। हे मधु दैत्य को मारने वाली ! तुम्हें नमस्कार है। कैटभविनाशिनी को नमस्कार। महिषासुर को मारने वाली देवी! तुम्हें नमस्कार॥१॥

शुम्भ का हनन करने वाली और निशुम्भ को मारने वाली ! तुम्हें नमस्कार है॥२॥ हे महादेवि ! मेरे जप को जाग्रत् और सिद्ध करो। ऐंकार के रूप में सृष्टिस्वरूपिणी, ह्रीं के रूप में सृष्टि पालन करने वाली॥३॥ क्लीं के रूप में कामरूपिणी तथा (निखिल ब्रह्माण्ड) की बीजरूपिणी देवी! तुम्हें नमस्कार है। चामुण्डा के रूप में चण्डविनाशिनी और यैकार के रूप में तुम वर देने वाली हो॥४॥ विच्चे रूप में तुम नित्य ही अभय

अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा ॥७॥
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे ॥८॥
इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहेतवे।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वती ॥९॥
यस्तु कञ्जिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा ॥१०॥

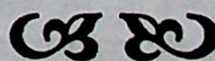
इति श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ ॐ तत्सत् ॥

देती हो। (इस प्रकार ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे) तुम इस मन्त्र का स्वरूप हो॥५॥ धां धीं धूं के रूप में धूर्जटी (शिव) की तुम पत्नी हो। वां वीं वूं के रूप में तुम वाणी की अधीश्वरी हो। क्रां क्रीं क्रूं के रूप में कालिका देवी, शां शीं शूं के रूप में मेरा कल्याण करो॥६॥ हुं हुं हुंकार स्वरूपिणी, जं जं जं जम्भनाशिनी, भ्रां भ्रीं भ्रूं के रूप में हे कल्याणकारिणी भैरवी भवानी! तुम्हें बार-बार प्रणाम॥७॥

अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं धिजाग्रं धिजाग्रं इन सब को तोड़ों और दीप्त करो करो स्वाहा। पां पीं पूं के रूप मे तुम पार्वती पूर्णा हो। खां खीं खूं के रूप में तुम खेचरी (आकाशचारिणी) अथवा खेचरी मुद्रा हो॥८॥ सां सीं सूं स्वरूपिणी सप्तशती देवी के मन्त्र को मेरे लिये सिद्ध करो। यह कुंजिकास्तोत्र मन्त्र को जगाने के लिये है। इसे भक्तहीन पुरुष को नहीं देना चाहिये। हे पार्वती! इसे गुप्त रखो। हे देवी! जो बिना कुंजिका के सप्तशती का पाठ करता है उसे उसी प्रकार सिद्धि नहीं मिलती जिस प्रकार वन में रोना निरर्थक होता है।

इस प्रकार श्रीरुद्रयामल के गौरीतन्त्र में शिव पार्वती संवाद में सिद्धकुंजिकास्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।



अथ देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥१॥
विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया ।
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥२॥
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥३॥

माँ ! मैं न मन्त्र जानता हूँ, न यन्त्र, अहो! मुझे स्तुति का भी ज्ञान नहीं है। न आवाहन का पता है न ध्यान का। स्तोत्र और कथा की भी जानकारी नहीं है। न तो तुम्हारी मुद्राएँ जानता हूँ और न मुझे व्याकुल होकर विलाप करना ही आता है, परंतु एक बात जानता हूँ, केवल तुम्हारा अनुसरण-तुम्हारे पीछे चलना। जो कि सब क्लेशों को, समस्त दुःख, विपत्तियों को हर लेने वाला है।।१।।

सबका उद्धार करने वाली कल्याणमयी माता! मैं पूजा की विधि नहीं जानता, मेरे पास धन का भी अभाव है, मैं स्वभाव से भी आलसी हूँ तथा मुझसे ठीक-ठीक पूजा का सम्पादन हो भी नहीं सकता, इन सब कारणों से तुम्हारे चरणों की सेवा में जो त्रुटि हो गयी है, उसे क्षमा करना, क्योंकि कुपुत्र का होना सम्भव है किंतु कहीं भी कुमाता नहीं होती।।२।।

माँ ! इस पृथ्वी पर तुम्हारे सीधे-सादे पुत्र तो बहुत से हैं किंतु उन सबमें मैं ही अत्यन्त चपल तुम्हारा बालक हूँ, मेरे जैसा चंचल कोई विरला ही होगा। शिवे! मेरा जो यह त्याग हुआ है यह तुम्हारे लिये कदापि उचित नहीं है, क्योंकि

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।।४।।
परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ।।५।।

संसार में कुपुत्र का होना संभव है, किंतु कहीं भी कुमाता नहीं होती।।३।।

जगदम्बे! मातः! मैंने तुम्हारे चरणों की सेवा कभी नहीं की, देवि! तुम्हें अधिक धन भी समर्पित नहीं किया, तथापि मुझ जैसे अधम पर जो तुम अनुपम स्नेह करती हो इसका कारण यही है कि संसार में कुपुत्र पैदा हो सकता है किंतु कहीं भी कुमाता नहीं होती।।४।।

गणेश जी को जन्म देने वाली माता पार्वती! (अन्य देवताओं की आराधना करते समय) मुझे नाना प्रकार की सेवाओं में व्यग्र रहना पड़ता था, इसलिये पचासी वर्ष से अधिक अवस्था बीत जाने पर मैंने देवताओं को छोड़ दिया है अब उनकी सेवा पूजा मुझसे नहीं हो पाती, अतएव उनसे कुछ भी सहायता मिलने की आशा नहीं है। इस समय यदि तुम्हारी कृपा नहीं होगी तो मैं अवलंबरहित होकर किसकी शरण में जाऊँगा।।५।।

माता अपर्णा! तुम्हारे मन्त्र का एक अक्षर भी कान में पड़ जाये तो उसका फल यह होता है कि मूर्ख, चाण्डाल भी मधुपाक के समान मधुर वाणी का उच्चारण करने वाला उत्तम वक्ता हो जाता है, दीन नमुष्य भी करोड़ों स्वर्ण मुद्राओं से सम्पन्न हो चिरकाल तक निर्भय विहार करता रहता है। जब मन्त्र के एक अक्षर के श्रवण का ऐसा फल है तो जो लोग विधि पूर्वक जप में लगे रहते हैं उनके जप से प्राप्त होने वाला उत्तम फल कैसा होगा? इसको कौन मनुष्य जान सकता है।।६।।

भवानी! जो अपने अंगों में चिता की राख भभूत लपेटे रहते हैं, जिनका विष ही भोजन है, जो दिगम्बरधारी (नग्न रहने वाले) हैं, मस्तक पर जटा और कण्ठ में नागराज वासुकि को हार के रूप में धारण करते हैं तथा जिनके हाथ में कपाल (भिक्षापात्र) शोभा पाता है, ऐसे भूतनाथ पशुपति भी

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातंको रंको विहरति चिरं कोटिकनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥६॥
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानी त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥७॥

जो एकमात्र 'जगदीश' की पदवी धारण करते हैं, इसका क्या कारण है? यह महत्व उन्हें कैसे मिला, यह केवल तुम्हारे पाणिग्रहण परिपाटी का फल है, तुम्हारे साथ विवाह होने से ही उनका महत्व बढ़ गया॥७॥

मुख में चन्द्रमा की शोभा धारण करने वाली माँ! मुझे मोक्ष की इच्छा नहीं है, संसार के वैभव की भी अभिलाषा नहीं है न विज्ञान की अपेक्षा है, न सुख की आकांक्षा, अतः तुमसे मेरी यही याचना है कि मेरा जन्म 'मृडानी, रुद्राणी, शिव, शिव, भवानी' इन नामों का जप करते हुए बीते॥८॥

माँ श्यामा! नाना प्रकार की पूजन-सामग्रियों से कभी विधिपूर्वक तुम्हारी आराधना मुझसे न हो सकी। सदा कठोर भाव का चिन्तन करने वाली मेरी वाणी ने कौन सा अपराध नहीं किया है। फिर भी तुम स्वयं ही प्रयत्न करके मुझ अनाथ पर जो किञ्चित कृपादृष्टि रखती हो, माँ! यह तुम्हारे ही योग्य है। तुम्हारी जैसी दयामयी माता ही मेरे जैसे कुपुत्र को भी आश्रय दे सकती है॥६॥

माता दुर्गे! करुणासिन्धु महेश्वरी! मैं विपत्तियों में फंसकर आज जो तुम्हारा स्मरण करता हूँ (पहले कभी नहीं करता रहा) इसे मेरी शठता न मान लेना, क्योंकि भूख-प्यास से पीडित बालक माता का ही स्मरण करते हैं। जगदम्बे! मुझ पर जो तुम्हारी पूर्ण कृपा बनी हुई है, इसमें आश्चर्य की कौन-सी बात है, पुत्र अपराध पर अपराध क्यों न करता जाता हो, फिर भी माता उसकी उपेक्षा नहीं करती। महादेवी! मेरे समान कोई पातकी नहीं है और तुम्हारे समान दूसरी कोई पापहारिणी नहीं है, ऐसा जानकर जो उचित जान पड़े, वह करो॥१०-१२॥

॥ इति देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम् समाप्तम्॥

न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ॥८॥
नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥९॥
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥
जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।
अपराधपरम्परापरं न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥
मत्समः पातकी नास्ति पापाघ्नी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवी यथायोग्यं तथा कुरु ॥१२॥
॥ इति देव्यपराध क्षमापन स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

क्षमा-प्रार्थना

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरी ॥१॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ॥२॥

परमेश्वरि! मेरे द्वारा दिन-रात सहस्रों अपराध होते रहते हैं। 'यह मेरा दास है'-यों समझकर मेरे उन अपराधों को तुम कृपापूर्वक क्षमा करो॥१॥ परमेश्वरि! मैं आवाहन नहीं जानता, विसर्जन करना नहीं जानता तथा पूजा करने का ढंग भी नहीं जानता। क्षमा करो॥२॥ देवि! सुरेश्वरि! मैने जो मन्त्रहीन, क्रियाहीन और भक्तिहीन पूजन किया है, वह सब आपकी कृपा से पूर्ण हो॥३॥ सैकड़ों अपराध करके भी जो तुम्हारी शरण में जा 'जगदम्ब' कहकर पुकारता है, उसे वह गति प्राप्त होती है, जो ब्रह्मादि देवताओं के लिए भी सुलभ नहीं हैं॥४॥ जगदम्बिके! मैं अपराधी हूँ किंतु तुम्हारी शरण

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥३॥
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ॥४॥
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके।
इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु ॥५॥
अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥६॥
कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ॥७॥
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि ॥८॥

॥ श्री दुर्गार्पणमस्तु ॥

प्रार्थना

यदत्र पाठे जगदम्बिके! मया
विसर्गःविन्दुक्षर-हीन मोरितम्।
तदस्तु सम्पूर्णतमं प्रसादतः
सङ्कल्प सिद्धि श्च सदैव जायताम्॥१॥
यस्यार्थ पठितं स्तोत्रं तदैव शंकर प्रिये।
तस्य देहस्य गेहस्य शान्तिर्भवतु सर्वदा॥२॥

॥ॐ शान्तिः॥

में आया हूँ। इस समय दया का पात्र हूँ। तुम जैसा चाहो करो॥५॥ देवि! परमेश्वरी अज्ञान से, भूल से अथवा बुद्धि भ्रान्त होने के कारण मैने जो न्यूनता या अधिकता कर दी हो, वह सब क्षमा करो और प्रसन्न होओ॥६॥ सच्चिदानन्दस्वरूपा परमेश्वरि! जगन्माता कामेश्वरि! तुम प्रेमपूर्वक मेरी यह पूजा स्वीकार करो और मुझ पर प्रसन्न रहो॥७॥ देवि! सुरेश्वरि! तुम गोपनीय से भी गोपनीय वस्तु की रक्षा करने वाली हो। मेरे निवेदन किए हुए इस जप को ग्रहण करो। तुम्हारी कृपा से मुझे सिद्धि प्राप्त हो॥८॥

॥ यज्ञ कुण्ड पूजा ॥

यजमान यज्ञ कुण्ड के पश्चिम भाग में बैठकर प्राणायाम कर तिल जल हाथ में लेकर संकल्प करें-

पूर्वोक्त गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक यज्ञ (ग्रहमख सप्तशती शत्चण्डी याग) कर्मणि कुण्ड पूजनम्, मेखला कण्ठ पूजनम्, नाभि पूजनम्, अग्निस्थापनमहं करिष्ये।

गोबर से लीपकर फिर पञ्चगव्य से यज्ञ कुण्ड का प्रेक्षण करे-

ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्ता न ऊर्जे दधातन।
महेरणाय चक्षसे यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः उशतीरिवमातरः॥ तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः॥

दाहिनें हाथ से यज्ञ कुण्ड का स्पर्श कर आवाहन करें।

आवाहयामि तत्कुण्डं विश्वकर्म विनिर्मितम्।
शरीरं यच्च ते दिव्यं अग्निधिष्ठानमद्भुतम्॥

यज्ञ सिद्धि हेतु हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करे-

ये च कुण्डे स्थिता देवा कुण्डाङ्गे याश्च देवता।
ऋद्धिं यच्छन्तु ते सर्वे यज्ञ सिद्धिं मुदान्विता॥
हे कुण्ड तव रूपं तु रचितं विश्वकर्मणाः।
अस्माकं वाच्छितां सिद्धिं यज्ञ सिद्धि ददस्व च॥

कुण्ड के मध्य में विश्वकर्मा की पूंजा करे-

ॐ विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्।

तस्मैः विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्।। विश्वकर्मणे नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्य च समर्पयामि। पूजन कर प्रार्थना करें।

अज्ञानाद् ज्ञानतो वापि दोषा ये खननोद्भवाः।
नाशाय त्वखिलांस्तांस्तु विश्वकर्मन् नमोऽस्तु ते।।

अब मेखला की पूजा के क्रम में चार अंगुल ऊँची चौडी ऊपर की मेखला को श्वेत अक्षतों से अलंकृत कर विष्णु भगवान की पूजा करे-

ॐ इदं विष्णुर्विचक्र मे त्रेधा निदधे पदम्। समूढ़मस्य पाᳬ सुरे स्वाहा।। विष्णवे नमः गंधाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं च समर्पयामि।।

मध्य की मेखला तीन अंगुल ऊँची व चौड़ी रक्त वर्ण के अक्षतों से अलंकृत कर ब्रह्मा की पूजा करे-

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरुस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन ऽ आवः। सवुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः।। ब्रह्मणे नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं च समर्पयामि।।

सबसे नीचे की मेखला दो अंगुल ऊंची व दो अंगुल चौड़ी कृष्ण वर्ण के अक्षतों से अलंकृत कर शिव का पूजन करे-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। रुद्राय नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।।

गौरी पूजन हेतु एक सुपारी को मौली बांधकर पूजन करें-

ॐ अम्बे ऽ अम्बिके ऽ अम्बालिके नमानयति कश्चन।

ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनीम्।। गौर्ये नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं च समर्पयामि।

कुण्ड योनि पूजन निम्न मंत्र से करे-

ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि मा त्वा हिँ सीन्मा माहि सीः। कुण्ड योन्ये नमः। गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं च समर्पयामि।।

प्रार्थयेत्-

सेवन्ते महतीं योनिं सिद्धाः देवर्षि मानवा।
चतुरशीति लक्षाणि पन्नागाद्याः सरिसृपाः।।
पशवः पक्षिणः सर्वे संसरन्ति यतो भुवि।
योनिरित्येव विख्याता जगदुत्पत्ति हेतुका।।
मनोभवयुता देवी रतिसौख्य प्रदायिनी।
मोहयित्री सुराणां च जगद्धात्रि नमोऽस्तुते।।

यज्ञ कुण्ड में नीले रंग के चावलों से सजाकर कण्ठ में रुद्र का पूजन करे-

ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा ऽ अधः क्षमाचराः तेषाँ ७ सहस्रयोजने ऽ व धन्वानि तन्मसि।। कण्ठे रुद्राय नमः।। गन्धाक्षतं पुष्प धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।

प्रार्थना- जीवनं सर्व जन्तूनां स्रगादिस्थानमुत्तमम्।
उत्तमांगस्य चाधारं कण्ठं पूजयाम्यहम्।।

नाभि पूजन-

ॐ नाभिर्मे चितं विज्ञानं पायुर्मेऽपचति र्भसत्। आनन्द नन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः।। नाभ्यै नमः नाभि का पूजन गन्ध अक्षतपुष्प धूप दीपक नैवेद्य से कर देवें।

यज्ञकुण्ड के नैऋत्य कोण में वास्तुदेव का आवाहन करे-

विशन्तु भूतलेनागाः लोकपालाश्च सर्वतः।
कुण्डे नैर्ऋत्य तिष्ठन्तु आयुर्वलकराः सदा॥

वास्तु का पूजन मंत्र-

ॐ वास्तोस्पते प्रतिजानी ह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवानः। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥ वास्तुपुरुषाय नमः गंधाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।

प्रार्थना- **पूज्योऽसि त्रिषु लोकेषु यज्ञरक्षादि हेतवे।**
त्वां विनानार्चनं सिद्धेद्यज्ञादानादिषु क्वचित्॥

यज्ञकुण्ड की चारों दिशाओं में चारों वेदों का पूजन करे-

ॐ ऋग्वेदं स्थापयेद् पूर्वे यजुर्वेदञ्च दक्षिणे।
पश्चिमे सामवेदं च उत्तरे च अथर्वणम्॥

चतुर्वेदेभ्यो नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं च समर्पयामि।

ईशान में रुद्र कलश स्थापन कर पूजन करे-

ॐ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्। तेषा ँ सहस्रयोजने वधन्वानि तन्मसि। रुद्रकलश देवताभ्यो नमः॥ पूजन कर लेवें।

॥ अथ पञ्च भू संस्कार ॥

पहले यज्ञ मण्डप को कुशा से साफ कर देवें। फिर एक हाथ लम्बा कुशा लेकर उससे यज्ञकुण्ड में बुहरा देवें-

हस्तमात्र परिमितां चतुरस्रां भूमिं कुशैः परिसमूह्य तानैशान्यां

परित्यज्य॥ कुशा को ईशान में छोड़कर **गोमयेनोपलिप्य।** यज्ञकुण्ड को गोबर से लीप देवें।

स्रुव दाहिने हाथ में लेकर श्रुव के मूल से पश्चिम से पूर्व की तरफ अंगूठा तर्जनी (प्रादेश मात्र) लम्बाई की तीन रेखा खीचें-

स्त्रुव मूलेन प्राङमुखं प्रादेशमात्रं उत्तरोत्तर क्रमेण त्रिरुल्लिख्य॥

रेखाओं से अनामिका अंगुष्ठा से कुछ मिट्टी उठाकर ईशान कोण में फेंक दें-

उल्लेखन क्रमेण अनामिका अंगुष्ठाभ्यां मृद्मुद्धृत्य ऐशान्यां दिशि स्थापयेत्।

यज्ञ कुण्ड में जल के छींटे देवें-

ततः उदकेन अभ्युक्षणम्॥

ये पाँचों भू संस्कार जहाँ अग्नि स्थापन हो वहां करने चाहिये।

॥ अथ अग्निस्थापनम् ॥

वामहस्तानामिकया भूमि स्पृशन् ताम्रपात्रेण (कांस्यपात्रेण वा) आहृतमग्निं स्वाभिमुखं निदध्यात्। तद्रक्षार्थकिंचिन्नियुज्य आनीताग्निपात्रे अक्षतादि प्रक्षेपः॥

बायें हाथ की अनामिका से भूमि का स्पर्श करें। तांबे या कांसी के पात्र में अग्नि मंगाकर सामने रखें। अग्निरक्षार्थ किसी को नियुक्त कर यज्ञकुण्ड में अग्नि डालकर अग्निवाले पात्र में अक्षातादि डाल देवें।

योनि मार्ग से अग्नि को यज्ञ कुण्ड में स्वाभिमुख स्थापन

करते हुए यह मंत्र बोलें-

ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे देवाँ २ ऽ आ सादयादिह॥ ततोऽग्नि प्रदक्षिणा कृत्य पुष्प चन्दन ताम्बूल पूगीफल द्रव्य वस्त्राण्यादाय अग्नेर्दक्षिणतो वास्त्रतरणं कल्पयित्वा ब्राह्मणं पाद प्रक्षालन गन्ध माल्यादिभिसम्पूज्य॥

पुनः अग्नि की परिक्रमा कर दक्षिण में ब्रह्मा को वरण कर पूजन कर लेवें-

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। स बुध्न्याऽ उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ ततः प्रणीतापात्रं वारण काष्ठमयं द्वादशांगुलौच्च्यं चतुरंगुल मध्य खातं पद्माकृतिं पुरतो निधाय जलेनापूर्य कुशैराछाद्य ब्रह्मणो मुख मवलोक्य अग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात्।

यजमान प्रणीतापात्र यज्ञीय काष्ट का बना हुआ बारह अंगुल प्रमाण ऊँचा एवं चार अंगुल गहरा (पद्माकृती) जल से भरकर कुशाओं से ढककर ब्रह्मा का मुख देखकर (या ब्रह्मा को दिखाकर) अग्नि के उत्तर की ओर कुशा पर रख देवे।

ततः बर्हिषां परिस्तरणम्। बर्हिर्नाम्नामेकाशीति दर्भदलानां अथवा यावल्लब्धानां चतुर्भागं कृत्वा यथा एकेन दर्भेण शून्य हस्तो न भवति।

यहां ८१ दर्भ दल या जितनें उपलब्ध हो उनके चार भाग करे एक कुशा हाथ में रहे जिससे हाथ खाली न रहे।

प्रथम भागमादाय अग्नेयादीशानान्तम्।

पहले भाग को अग्नि कोण से ईशान कोण तक रखें।

द्वितीय भागमादाय ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्॥

दूसरे भाग को ब्रह्मा से अग्नि कोण तक रखें।

तृतीय भागमादाय नैर्ऋत्याद् वायव्यान्तम्॥

तीसरे भाग की नैर्ऋत्य से वायव्य तक रखे।

चतुर्थभागमादाय अग्नितः प्रणीता पर्यन्तम्॥

चतुर्थ भाग लेकर अग्नि से प्रणीता तक अग्रभाग पूर्व की ओर रखते हुए बिछा दें।

॥ अथ पात्रासादनम् ॥

ततो अग्नेरुतरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थ कुशत्रयं पवित्र करणार्थं साग्रमनन्तगर्भकुशपत्र द्वयं, प्रोक्षणी पात्रं आज्यस्थाली, चरुस्थाली, सम्मार्जनकुशापञ्च, उपयमनकुशाः सप्त, समिधस्तिस्त्रः प्रादेशमात्रःस्त्रुवखादिर, आज्यं षट्पञ्चाशदुत्तरशतद्वय मुष्ट्यवछिन्न तण्डुल पूर्णपात्रं दक्षिणा (सहित) पवित्रच्छेदन कुशानां पूर्व पूर्वक्रमेण एतान्यासादनीयानि॥

इसके बाद अग्नि कुण्ड के पश्चिम दिशा अथवा उत्तर की ओर से निम्न सामग्रियाँ रखे-

पवित्र तोड़ने की तीन कुशा, पवित्र करने की दो कुशा, प्रोक्षणी पात्र, घी का पात्र, चरु पात्र, समार्जन की ५ कुशा, उपयमन की ७ कुशा प्रादेश मात्र लम्बी ३ समिधा, खैर का स्त्रुवा, चावलों से भरा हुआ दो सौ छप्पन मुष्टि प्रमाण का पूर्ण

पात्र एवं दक्षिणादि रख देवें।

अथ त्रिभिः पवित्रच्छेदन कुशै द्वै पवित्रे छित्वा सपवित्र करेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणी पात्रे निधाय (पश्चात्) प्रोक्षणी पात्रं वामहस्ते धृत्वा दक्षिण हस्तानामिकांगुष्ठाभ्यां पवित्रं गृहीत्वा त्रिरुत्पवनम्॥

अब तीन पवित्र छेदन कुशाओं से दो पवित्रियों को (तीन आंटे देकर) काटकर तीन को त्याग देवे और दो को फिर दायें हाथ में रखकर इसी कुशा से प्रणीता का जल तीन बार प्रोक्षणी पात्र में डाले, फिर प्रोक्षणी पात्र को बांये हाथ में लेकर दाहिने हाथ के अनामिका अंगुष्ठ से पवित्र पकड़कर प्रोक्षणी के जल को तीन बार ऊपर उछाले।

ततः प्रोक्षणी पात्रं आकाशस्थ प्रणीतोदकेनापूरयेत्। भूमौ पतति चेतदा प्रायश्चितं गोदानम्॥

फिर प्रोक्षणी पात्र को प्रणीता के जल से भर लेवें, किन्तु जल को पृथ्वी पर न गिरने दें। यदि गिर जाय तो गोदान प्रायश्चित करे।

ततः प्रोक्षणी जलेनयथासादितवस्त्वनुरुपं सेचनम्।
इसके बाद प्रोक्षणी के जल से सब सामग्री पर छीटें देवे।

ततोऽग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणी पात्रं निदध्यात्॥

अब अग्नि व प्रणीता के बीच में प्रोक्षणी पात्र में रख देवें।

आज्यास्थाल्यामाज्यनिर्वापः। आज्यस्थाली में घी भरे। **चरूपात्रे चरु प्रक्षेपः।** चरु पात्र में चरु बना लें।

आज्यऽविश्रयणम्। घी को गर्म कर देवें।

ततो ज्वलतृणंमादाय आजस्योपरि प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा

वह्नौ तत्प्रक्षेपः॥ एक तृण जला हुआ लेकर प्रदक्षिणा क्रम से घी के ऊपर घुमाकर अग्नि में डाल देवे।

ततो दक्षिण पाणिनां श्रुवमादायाधोमुखं मग्नौ त्रिस्तापियित्वा वामहस्ते कृत्वा सम्मार्जनकुशानाम ग्रेरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः श्रुवमूर्ध्वमुखं संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनः पूर्ववत्प्रताप्य दक्षिणतो निधाय॥

दाहिने हाथ में श्रुव लेकर श्रुव का मुंह अग्नि में तीन बार तपाकर वामहस्त में रखकर पांच सम्मार्जन कुशा के अग्रभाग से श्रुव के अग्रभाग को मध्य से मध्य को अधोभाग से श्रुव के अधोभाग को साफ कर पुनः श्रुव को तीन बार तपा लेवे। श्रुव का आवाहन कर श्रुव पर मौली बांध लेवें-

आवाह्वयाम्यहं देवं स्त्रुवं शेवधिमुत्तमम्।
स्वाहाकार स्वधाकारवषट्कार समन्वितम्॥

श्रुव पूजन कर के दाहिनी तरफ रख देवें।

ततः आज्योत्तारणम् अवेक्षणम् अपद्रव्य निरसनं च।

फिर घी उतार कर देखें कोई खराब चीज पड़ी हो तो उसे निकाल देवे।

ततः उत्थाय उपयमनकुशानादाय वामहस्ते धृत्वा अग्नि पर्युक्षणं कृत्वा उत्तिष्ठन् मनसा प्रजापतिं धात्वा तूष्णोमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्त्रः क्षिपेत्॥

इसके बाद उठकर सात उपयमन कुशा को बायें हाथ में रख तथा तीनों समिधा (प्रादेशमात्र) लेकर घी में भिगोकर ब्रह्मा जी का मन में ध्यान कर चुपचाप उनको (समिधा) अग्नि में छोड़ दें।

ततः उपविश्य सपवित्र प्रोक्षण्युदकेन अग्निं पर्युक्ष्यपवित्रे प्रणीता पात्रे निधाय पातित दक्षिण जानुः कुशेन ब्रह्मणाऽन्वारब्धः समिद्धतमेऽग्नौ स्त्रुवेण आज्याहुतिं जुहुयात्॥

फिर बैठकर पवित्र से प्रोक्षणी के जल को अग्नि के चारों तरफ छिड़क दें। पवित्र को प्रणितापात्र में रख दें फिर दाहिनी जंघा को नवाकर ब्रह्मा को कुशा से स्पर्श कर (ब्रह्मा से यजमान तक मौली रखकर) श्रुव से अग्नि में घी की आहुति दें।

आहुति चतुष्टये स्त्रुवावशिष्ट घृतस्य प्रोक्षणी पात्रे प्रक्षेपः। अग्रेयथादैवतं चतुर्थ्यन्तं स्वाहान्तं नममेति त्याग च कुर्यात्॥

प्रथम चार आहुतियों में श्रुव के शेष घी को प्रोक्षणी पात्र में त्याग देवे। देवता के नाम के आगे चतुर्थी विभक्ति लगाकर **'स्वाहा'** व **'न मम'** से प्रोक्षणी में शेष घी का त्याग करें।

॥ अथ घृताहुतिः ॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये, इदं न मम।

ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय, इदं न मम।

ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये, इदं न मम।

आहुति से अग्नि का स्वरूप :-

आधार-नासिका

आज्यभाग-नेत्र

प्रजापत्य-मुख

व्याहृति-कटिभाग

पंचवारूण-हाथ पैर मस्तक

स्वीष्टकृत पूर्णाहुति-कान

ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय, इदं न मम।

बिना **अन्वारब्धमेकाहुतिः।** (ब्रह्माजी से मौली हटाकर एक आहुति देवें।)

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये, इदं न मम।

(महाव्याहृतिहोमः)

ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये, इदं न मम।

ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे, इदं न मम।

ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय, इदं न मम।

एतामहाव्याहृतयः॥

ॐ यथा वाण प्रहाराणां कवच वारकं भवेत्।

तद्वद्देवोपघातानां शान्तिर्भवति वारिका॥

शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तु यत्पापं रोगम्, अकल्याणम् तद्दूरे प्रतिहतमस्तु॥ पढ़कर के-

आचार्य यजमान के सिर के ऊपर जल के छींटे देवें।

॥ अथ अग्नि पूजनम् ॥

ध्यानम्

ॐ चत्वारि श्रृङ्गात्रयो ऽ अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो ऽ अस्य त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्यां२ऽ आविवेश॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने वैश्वानर शांण्डिल्य गोत्र साण्डिला सित देवलेति त्रिपुरान्वित भूमिमातः वरुणपितः मेषध्वज प्राङमुख मम संमुखो भवः। ॐ

अग्नि को प्रतिष्ठापित कर अग्निजिह्वा पूजन करे-

ॐ कनकायै नमः। ॐ रक्तायै नमः। ॐ कृष्णायै नमः। ॐ उद्गारिण्यै नमः। ॐ उत्तरमुखे सुप्रभायै नमः। ॐ बहुरूपायै नमः। ॐ अतिरिक्तायै नमः। अग्नये नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यंदक्षिणां च समर्पयामि॥

अग्नि प्रार्थना -

अग्नि प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुतासनम्।
हिरण्यवर्णममलं समृद्धं विश्वतोमुखम्॥
त्वं मुखं सर्व देवानां सप्तार्चिरमित द्युते।
आगच्छ भगवन् अग्ने यज्ञेऽस्मिन् सन्निधौभव॥

॥ हवन संकल्प ॥

हवन हेतु यव आदि सामग्री तथा जल लेकर संकल्प करे- विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे-युगे कलियुगे कलिप्रथम चरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तेक देशे गंगा यमुनयोर्मध्ये (अथवा अमुकतीरे) बौद्धावतारे अमुक नाम संवत्सरे श्री सूर्ये अमुकायने अमुक ऋतौ महामांगल्य प्रदेमासोत्तमे मासे अमुकायने अमुककरणे अमुक राशि स्थिते चन्द्रे अमुक राशिस्थिते श्री सूर्ये अमुकाराशिस्थिते देव गुरौ शेषेषु यथायथा राशिस्थान-स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गुण गण विशेषण-विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ अमुक गोत्रः अमुक शर्मा (वर्मा, गुप्त) ऽहं मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा श्री

यज्ञपुरुष प्रीत्यर्थे सर्वपापक्षयपूर्वक-दीर्घायुर्विपुल धनधान्यपुत्रपौत्राद्यवच्छिन्न सन्ततिवृद्धि-स्थिरलक्ष्मि कीर्तिलाभ सदाभीष्ट सिद्ध्यर्थं दुर्गा याग कर्मणि ग्रह होम अधिदेवता प्रत्याधि देवता पञ्चलोकपाल देवता दशदिक्पाल देवता अमुक प्रधान देवता सहितानां च प्रीतये ब्राह्मण द्वारा यव तिल धान्याज्य शर्करादि द्रव्यैस्तत्त देवता मंत्रैर्यक्ष्ये।

॥ अथ सर्वप्रायश्चितसंज्ञक पञ्चवारुणहोमः ॥

ॐ त्वन्नोऽ अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽअव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठोवह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ꣳसि प्र मुमुग्ध्यस्मत्॥ ॐ स्वाहा॥ इदमग्निवरुणाभ्यां न मम॥१॥ ॐ त्वं नो ऽअग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्या ऽउषसो व्युष्टौ। अब यक्ष्व नो वरुण ꣳ रराणो वीहि मृडीक ꣳ सुहवो न ऽएधि॥ ॐ स्वाहा॥ इदंमग्निवरुणाभ्यांनमम॥२॥ ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभिशस्तिपाश्चसत्वमित्वमयाऽ असि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ꣳ स्वाहा॥ इदमग्नये न मम॥३॥ ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितताः महान्तः। तेभिर्नो अद्यसवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्योमरुद्भ्यः स्वर्केभ्य स्वाहा॥४॥ ॐ उदुतम वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ꣳ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽ अदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणायादितये न ममः॥५॥ अत्रोदकस्पर्शः॥ इति प्रयाश्चित (पंचवारुणी) होमः॥

॥ ततोगणपति प्रीत्यर्थ होमः ॥

ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे। प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ हवामहे। निधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे। वसो मम आहमजानि गर्भधमा त्वमजासिगर्भ धम्॥ॐ स्वाहा॥ वरुणाय नमः स्वाहा॥ ॐ कार देवताभ्योनमः स्वाहा॥ श्रियैनमः स्वाहाः॥ अष्टवसुभ्यो नमः स्वाहा॥ षोडश-मातृकाभ्यो नमः स्वाहा॥

॥ अथ नवग्रहाणां होमः ॥

ग्रहों का होम ग्रह समिधा को घी में भिगोकर करे-

(अर्कम्) ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ स्वाहा॥१॥

(पलाशम्) ॐ इमं देवा ऽ असपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्र स्येन्द्रियाय। इमममुख्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽ एष वोऽमी राजा सोमो ऽ स्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा॥ ॐ स्वाहा॥२॥

(खदिरम्) ॐ अग्नि मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽयम्। अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति॥ ॐ स्वाहा॥३॥

(अपामार्गम्) ॐ उद् बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्ठापूर्ते स ँ सृजे थामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे ऽ अध्युत्तरस्मिन्

ॐ शब्द की महत्ता :-

वेद मन्त्रों का उच्चारण करने वाले श्रेष्ठ पुरुषों की शास्त्र विधि से नीयत यज्ञ, दान और तप रूप क्रियायें सदा 'ॐ' इस परमात्मा के नाम को उच्चारण करके ही आरम्भ होती हैं। (गीता १७/२४)

विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ ॐ स्वाहा॥४॥

(अश्वत्थम्) ॐ बृहस्पते ऽअतियदर्यो ऽअर्हाद्द्युमद्वि भाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात् तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ स्वाहा॥५॥

(उदुम्बरम्) ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्र-मन्धस ऽ इन्द्र स्येन्द्रिय मिदं पयोऽ मृतं मधु॥ ॐ स्वाहा॥६॥

(शमीम्) ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये शय्योरभि स्त्रवन्तुनः॥ ॐ स्वाहा॥७॥

(दूर्वाम्) ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ॐ स्वाहा॥८॥

(दर्भम्) ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ ॐ स्वाहा॥९॥

॥ अथ नवग्रहाधिदेवतानां होमः ॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥ ॐ स्वाहा॥१॥ ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्रांणि रूपमश्विनौ व्यात्तम। इष्णन्निषाणां मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मइषाण॥ ॐ स्वाहा॥२॥ ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य वाहूऽ उपस्तुत्यं महिजातं ते अर्वन्॥ ॐ स्वाहा॥३॥ ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि

वैष्णवमसि विष्णवेत्वा।। ॐ स्वाहा।।४।। ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः सवुध्न्याउपमाअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमशतश्चव्विवः।। ॐ स्वाहा।।५।। ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवेहवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।। ॐ स्वाहा ।।६।। ॐ असि यमोऽस्यादित्योऽअर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन। असि सोमेन समया विपृक्तऽआहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि।। ॐ स्वाहा।।७।। ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्याऽउन्नयामि। समापोऽअद्भि रग्मतसमोषधी-भिरोषधीः।। ॐ स्वाहा।।८।। ॐ इन्धानास्त्वा शत ँ हिमाद्युमन्त ँ समिधीमहि। वयस्वन्तो वयस्कृत ँ सहस्वन्तः सहस्कृतम्। अग्ने सपत्नदम्भनमदब्धासो ऽ अदाभ्यम्। चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय।। ॐ स्वाहा।।९।।

।। इतिनवग्रहाधिदेवतानां होमः।।

।। अथ नवग्रह प्रत्यधिदेवतानां होमः ।।

ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवां२ऽ आसादयादिह।।ॐ अग्नये स्वाहा।।१।। ॐ अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत प्रशस्तिष्वश्वा भवत वाजिनः। देवीरापो यो वऽऊर्मिः प्रतूर्तिः ककुन्मान् वाजसास्तेनायं वाजँसेत्।। ॐ अद्भ्यः स्वाहा।।२।। ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथाः।। ॐ पृथ्व्यै स्वाहा।।३।। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा।। ॐ विष्णवे स्वाहा।।४।। ॐ सजोषाऽइन्द्र

सगणो मरुद्‌भिः सोमंपिव वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूँ २ ऽरप मूधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः।। ॐ इन्द्राय स्वाहा।।५।। ॐ अदित्यैरास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीषः। पूषासिघर्मायदीष्व।। ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा।।६।। ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽ अस्तु व्वय ँ स्याम पतयो रयीणाम्।। ॐ प्रजापतये स्वाहा।।७।। ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवि मनु। येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। ॐ सर्पेभ्यः स्वाहा।।८।। ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः। स वुध्न्याऽउपमाऽ-अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विव्वः।। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।।९।।

।। अथ पंचलोकपाल देवता होमः ।।

ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासिगर्भधम्।। ॐ गणपतये स्वाहा।।१।। ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽअम्बरलिके नमानयतिकश्चन ससस्त्यश्वकःसुभद्रकां काम्पील वासिनीम्।। ॐ दुर्गायै स्वाहा।।२।। ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ँ सहस्त्रिणीरूपयाहि यज्ञम्।। वायो ऽ अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः। ॐ वायवे स्वाहा।।३।। ॐ घृतं घृतपावनः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरि क्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश ऽआदिशो

विदिशऽउद्दिशो दिग्भ्यः।। ॐ आकाशाय स्वाहा।।४।। ॐ यवांकशा मधुमत्यश्विनासूनृतावती तया यज्ञम्मिमिक्षताम्।। ॐ अश्विभ्याम् स्वाहा।।५।।

।। इति पंचलोकपाल होमः ।।

।। अथ दश दिक्पालानां होमः ।।

ॐ त्रातारमिन्द्र मवितारमिन्द्र ँ हवे हवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः।। ॐ इन्द्राय स्वाहा।।१।। ॐ त्वन्नोऽ अग्ने तव देवपायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेष ँ रक्षमाणस्तव व्रते।। ॐ अग्नये स्वाहा।।२।। ॐ यमायत्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।। ॐ यमाय स्वाहा।।३।। ॐ असुन्वन्तमयजमान मिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य अन्यमस्मदिच्छसात ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।। ॐ निर्ऋतये स्वाहा।।४।। ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ँ स मा न आयुः प्रमोषीः।। ॐ वरुणाय स्वाहा।।५।। ॐ आ नो नियुद्भि शतिनीभिरध्वर ँ सहस्त्रिणीभिरूप याहि यज्ञम्। वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। ॐ वायये स्वाहा।।६।। ॐ वय ँ सोमव्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।। ॐ कुवेराय स्वाहा।।७।। ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। ॐ

ईशानाय स्वाहा॥८॥ ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः श ँ सते स्तुवते धायि पज्र ऽ इन्द्रजेष्ठा ऽ अस्माँ२ ऽ अवन्तु देवाः॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा॥९॥ ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥ ॐ अनन्ताय स्वाहा॥१०॥

॥ इति दशदिक्पाल होमः ॥

॥ अथ वास्तुहोमः ॥

ॐ वास्तोस्पते प्रतिजानी ह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवानः। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥

१. ॐ शिखिने स्वाहा।
२. ॐ प्रजन्याय स्वाहा।
३. ॐ जयन्ताय स्वाहा।
४. ॐ कुलिशायुधाय स्वाहा।
५. ॐ सूर्याय स्वाहा।
६. ॐ सत्याय स्वाहा।
७. ॐ भृशाय स्वाहा।
८. ॐ आकाशाय स्वाहा।
९. ॐ वायवे स्वाहा।
१०. ॐ पूष्णे स्वाहा।
११. ॐ वितथाय स्वाहा।
१२. ॐ गृहक्षताय स्वाहा।
१३. ॐ यमाय स्वाहा।
१४. ॐ गन्धर्वाय स्वाहा।
१५. ॐ भृगराजाय स्वाहा।
१६. ॐ मृगाय स्वाहा।
१७. ॐ पितृभ्यः स्वाहा।
१८. ॐ दौवारिकाय स्वाहा।
१९. ॐ सुग्रीवाय स्वाहा।
२०. ॐ पुष्पदंताय स्वाहा।
२१. ॐ वरुणाय स्वाहा।
२२. ॐ असुराय स्वाहा।
२३. ॐ शोषाय स्वाहा।
२४. ॐ पापाय स्वाहा।
२५. ॐ रोगाय स्वाहा।
२६. ॐ अहये स्वाहा।
२७. ॐ मुख्याय स्वाहा।
२८. ॐ भल्लाटाय स्वाहा।
२९. ॐ सोमाय स्वाहा।
३०. ॐ सर्पाय स्वाहा।
३१. ॐ आदित्यै स्वाहा।
३२. ॐ दित्यै स्वाहा।
३३. ॐ अद्भ्यः स्वाहा।
३४. ॐ सवित्राय स्वाहा।
३५. ॐ जयाय स्वाहा।
३६. ॐ रुद्राय स्वाहा।

३७. ॐ अर्यम्णे स्वाहा
३८. ॐ सवित्रे स्वाहा।
३९. ॐ विवस्वते स्वाहा।
४०. ॐ विबुधाधिपाय स्वाहा।
४१. ॐ मित्राय स्वाहा।
४२. ॐ राजयक्ष्मणे स्वाहा।
४३. ॐ पृथ्वीधराय स्वाहा।
४४. ॐ आपवत्साय स्वाहा।
४५. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।
४६. ॐ चरक्यै स्वाहा।
४७. ॐ विदार्यै स्वाहा।
४८. ॐ पूतनायै स्वाहा।
४९. ॐ पापराक्षस्यै स्वाहा।
५०. ॐ पूर्वे स्कंदाय स्वाहा।
५१. ॐ दक्षिणे अर्यम्णे स्वाहा।
५२. ॐ पश्चिमेजृम्भकाय स्वाहा।
५३. ॐ उत्तरे पिलिपिच्छाय स्वाहा।
५४. ॐ पूर्वे इन्द्राय स्वाहा।
५५. ॐ आग्नेयां अग्नये स्वाहा।
५६. ॐ दक्षिणे यमाय स्वाहा
५७. ॐ नैर्ऋते नैर्ऋतये स्वाहा।
५८. ॐ पश्चिमे वरुणाय स्वाहा॥
५९. ॐ वायव्य वायवे स्वाहा।
६०. ॐ उत्तरे कुबेराय स्वाहा।
६१. ॐ ईशान्यां ईश्वराय स्वाहा।
६२. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।
६३. ॐ अनंताय स्वाहा
६४ ॐ वास्तु पुरुषाय स्वाहा॥

॥ अथ चतुर्वेद हवनम् ॥

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥ ॐ ऋग्वेदायः स्वाहा॥१॥ ॐ इषेत्वोर्जेत्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठ तमाय कर्मणऽ आप्यायध्वमघ्न्याऽ इन्द्राय भागं प्रजावतीरन मीवाऽअयक्ष्मा मा व स्तेन ऽईशत माघस ँ सो ध्रुवा ऽअस्मिन् गोपतौ स्यात् वह्वीर्यजमानस्यपशूनपाहि॥ ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा॥२॥ ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये निहोता सत्सि बर्हिषिः॥ सामवेदाय स्वाहा॥३॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽ आपोभवन्तु पीतये शं योरभिस्त्रवन्तु नः॥ ॐ अथर्ववेदाय स्वाहा॥४॥

।। सर्वतोभद्रदेवता होमः ।।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा।। ॐ स्वाहा।।

१. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।
२. ॐ सोमाय स्वाहा।
३. ॐ ईशानाय स्वाहा।
४. ॐ इन्द्राय स्वाहा।
५. ॐ अग्नये स्वाहा।
६. ॐ यमाय स्वाहा।
७. ॐ निर्ऋतये स्वाहा।
८. ॐ वरुणाय स्वाहा।
९. ॐ वायवे स्वाहा।
१०. ॐ अष्टवसुभ्यः स्वाहा।
११. ॐ एकादश रुद्रेभ्यो स्वाहा।
१२. ॐ द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा।
१३. ॐ अश्विभ्यां स्वाहा।
१४. ॐ विश्वेदेवेभ्यः स्वाहा।
१५. ॐ पितृभ्य स्वाहा स्वाहा।
१६. ॐ सप्तयक्षेभ्यो स्वाहा।
१७. ॐ भूतगोनेभ्यः स्वाहा।
१८. ॐ गन्धर्वप्सरोभ्यः स्वाहा।
१९. ॐ स्कंदाय स्वाहा।
२०. ॐ नन्दिश्वरशूलाय स्वाहा।
२१. ॐ महाकालाय स्वाहा।
२२. ॐ प्रजापतये स्वाहा।
२३. ॐ दुर्गायै स्वाहा।
२४. ॐ विष्णवे स्वाहा।
२५. ॐ पितृभ्यः स्वाहा।
२६. ॐ मृत्युरोगेभ्यो स्वाहा।
२७. ॐ गणपतये स्वाहा।
२८. ॐ अद्भ्यः स्वाहा।
२९. ॐ मरुद्भ्यः स्वाहा।
३०. ॐ पृथिव्यै स्वाहा।।
३१. ॐ सरिद्भ्य स्वाहा।
३२. ॐ सप्तसागरेभ्यो स्वाहा।
३३. ॐ मेरवे स्वाहा।
३४. ॐ गदायै स्वाहा।
३५. ॐ त्रिशूलायै स्वाहा।
३६. ॐ व्रजाय स्वाहा।
३७. ॐ शक्तये स्वाहा।
३८. ॐ दण्डाय स्वाहा।
३९. ॐ खड्गाय स्वाहा।
४०. ॐ पाशाय स्वाहा।
४१. ॐ अंकुशाय स्वाहा।
४२. ॐ गौतमाय स्वाहा।
४३. ॐ भारद्वाजाय स्वाहा।
४४. ॐ विश्वामित्राय स्वाहा।
४५. ॐ कश्यपाय स्वाहा।
४६. ॐ जमदग्नये स्वाहा।
४७. ॐ वशिष्ठाय स्वाहा।
४८. ॐ अत्रये स्वाहा।
४९. ॐ अरुन्धत्यै स्वाहा।
५०. ॐ एन्द्र्यै स्वाहा।
५१. ॐ कौमार्यै स्वाहा।
५२. ॐ ब्राह्मयै स्वाहा।
५३. ॐ वाराह्यै स्वाहा।
५४. ॐ चामुण्डायै स्वाहा।
५५. ॐ वैष्णव्यै स्वाहा।
५६. ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा।

।। वैनायिक्यै स्वाहा ।।

।। चतुः षष्ठियोगिनि होमः ।।

ॐ योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखायऽइन्द्र मूतये।। ॐ स्वाहा।।

१. ॐ दिव्ययोगायै स्वाहा। २. ॐ महायोगायै स्वाहा।
३. ॐ सिद्धियोगायै स्वाहा। ४. ॐ गणेश्वर्यै स्वाहा।
५. ॐ प्रेताक्ष्यै स्वाहा। ६. ॐ डाकिन्यै स्वाहा।
७. ॐ काल्यै स्वाहा। ८. ॐ कालरात्र्यै स्वाहा।
९. ॐ निशाचर्यै स्वाहा। १०. ॐ हुंकार्यै स्वाहा।
११. ॐ रुद्रवैताल्यै स्वाहा। १२. ॐ खर्पयै स्वाहा।
१३. ॐ भूतयामिन्यै स्वाहा। १४. ॐ उर्ध्वकेश्यै स्वाहा।
१५. ॐ विरूपाक्ष्यै स्वाहा। १६. ॐ शुष्कांग्यै स्वाहा।
१७. ॐ मांस भोजिन्यै स्वाहा। १८. ॐ फेत्कार्यै स्वाहा।
१९. ॐ वीरभद्राक्ष्यै स्वाहा। २०. ॐ धूम्राक्ष्यै स्वाहा।
२१. ॐ कलह प्रियायै स्वाहा। २२. ॐ रक्तायै स्वाहा।
२३. ॐ घोर रक्ताक्ष्यै स्वाहा। २४. ॐ बिरुपाक्ष्यै स्वाहा।
२५. ॐ भयंकर्यै स्वाहा। २६. ॐ चौरिकायै स्वाहा।
२७. ॐ मारिकायै स्वाहा। २८. ॐ चण्डिकायै स्वाहा।
२९. ॐ वाराह्यै स्वाहा। ३०. ॐ मुण्डधारिण्यै स्वाहा।।
३१. ॐ भैरव्यै स्वाहा। ३२. ॐ चक्रपाण्यै स्वाहा।
३३. ॐ क्रोधायै स्वाहा। ३४. ॐ दुर्मख्यै स्वाहा।
३५. ॐ प्रेतवाहिन्यै स्वाहा। ३६. ॐ कंटक्यै स्वाहा।
३७. ॐ दीर्घ लम्बोष्ट्यै स्वाहा। ३८. ॐ मालिन्यै स्वाहा।
३९. ॐ मंत्रयोगिन्यै स्वाहा। ४०. ॐ कालाग्न्यै स्वाहा।
४१. ॐ मोहिन्यै स्वाहा। ४२. ॐ चक्रयै स्वाहा।
४३. ॐ कंकाल्यै स्वाहा। ४४. ॐ भुवनेश्वर्यै स्वाहा।
४५. ॐ कुण्डलाक्ष्यै स्वाहा। ४६. ॐ जुह्यै स्वाहा।
४७. ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा। ४८. ॐ यमदूत्यै स्वाहा।
४९. ॐ करालिन्यै स्वाहा। ५०. ॐ कौशिक्यै स्वाहा।
५१. ॐ भक्षिण्यै स्वाहा। ५२. ॐ यक्षिण्यै स्वाहा।
५३. ॐ कौमार्यै स्वाहा। ५४. ॐ यंत्रवाहिन्यै स्वाहा।
५५. ॐ विशालायै स्वाहा। ५६. ॐ कामुक्यै स्वाहा।
५७. ॐ व्याघ्र्यै स्वाहा। ५८. ॐ यक्षिण्यै स्वाहा।

५९. ॐ प्रेतभूषण्यै स्वाहा। ६०. ॐ धूर्जट्यै स्वाहा।
६१. ॐ विकटायै स्वाहा। ६२. ॐ घोरायै स्वाहा।
६३. ॐ कपालायै स्वाहा। ६४. ॐ लांगली देव्यै स्वाहा।

।। इति योगिनी हवनम् ।।

।। अथ क्षेत्रपाल होमः ।।

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्मा द्वैस्वानरात्पुर ऽएतारमग्नेः। एमेनम वृधन्नमृताऽ अमृर्त्यं वैश्वानरं क्षेत्र जित्याय देवाः।। ॐ स्वाहा।। ॐ क्षेत्रपालाय स्वाहा।।

१. ॐ अजराय स्वाहा। २. ॐ ब्यापकाय स्वाहा।
३. ॐ इन्द्रचौराय स्वाहा। ४. ॐ इन्द्रमूर्तये स्वाहा।
५. ॐ उक्षाय स्वाहा। ६. ॐ कूष्माण्डाय स्वाहा।
७. ॐ वरुणाय स्वाहा। ८. ॐ बटुकाय स्वाहा।
९. ॐ विमुक्ताय स्वाहा। १०. ॐ लिप्तकायाय स्वाहा।
११. ॐ लीलाकाय स्वाहा। १२. ॐ एक द्रंष्ट्राय स्वाहा।
१३. ॐ ऐरावताय स्वाहा। १४. ॐ औषधिघ्नाय स्वाहा।
१५. ॐ बन्धनाय स्वाहा। १६. ॐ दिव्य कायाय स्वाहा।
१७. ॐ कम्बलाय स्वाहा। १८. ॐ भीषणाय स्वाहा।
१९. ॐ गवयाय स्वाहा। २०. ॐ घण्टाय स्वाहा।
२१. ॐ व्यालाय स्वाहा। २२. ॐ अणवे स्वाहा।
२३. ॐ चन्द्र वारुणाय स्वाहा। २४. ॐ पटाटोपाय स्वाहा।
२५. ॐ जटालाय स्वाहा। २६. ॐ क्रतवे स्वाहा।
२७. ॐ घण्टेश्वराय स्वाहा। २८. ॐ विटंकाय स्वाहा।
२९. ॐ घण्टेश्वराय स्वाहा। ३०. ॐ गणबन्धवे स्वाहा।।
३१. ॐ डामराय स्वाहा। ३२. ॐ ढुण्डिकर्णाय स्वाहा।
३३. ॐ स्थविराय स्वाहा। ३४. ॐ दन्तुराय स्वाहा।
३५. ॐ धनदाय स्वाहा। ३६. ॐ नागकर्णाय स्वाहा।
३७. ॐ महाबलाय स्वाहा। ३८. ॐ फेत्काराय स्वाहा।
३९. ॐ चीत्काराय स्वाहा। ४०. ॐ सिंहाय स्वाहा।
४१. ॐ मृगाय स्वाहा। ४२. ॐ यक्षाय स्वाहा।
४३. ॐ मेघवाहनाय स्वाहा। ४४. ॐ तीक्ष्णौष्ठाय स्वाहा।
४५. ॐ अनलाय स्वाहा। ४६. ॐ शुष्कतुण्डाय स्वाहा।

४७. ॐ सुधालापाय स्वाहा। ४८. ॐ वर्वरकाय स्वाहा।
४९. ॐ पवनाय स्वाहा। ५०. ॐ पावनाय स्वाहा।
५१. ॐ युधामन्यवे स्वाहा।

।। इति क्षेत्रपाल होम ।।

।। श्री सूक्तम् ।।

(न्यास तथा हवन)

ॐ हिरण्य वर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्। चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।१।। ॐ स्वाहा।। शिरसी।। ॐ तांम ऽ आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।। यस्यांहिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।२।। ॐ स्वाहा।। नेत्रयोः।। ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रवोधिनीम्। श्रियं देविमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।३।। ॐ स्वाहा।। कर्णयोः।। ॐ कांसोऽस्मिता हिरण्याप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णा तामिहो पह्वये श्रियम्।।४।। ॐ स्वाहा।। घ्राणयोः।। ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसां ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये, अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।।५।। ॐ स्वाहा। मुखे।। ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या ऽअलक्ष्मीः।।६।। ॐ स्वाहा।। ग्रीवायाम्।। ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतो सुरोष्टऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।७।। ॐस्वाहा।। करयोः।। ॐ क्षुत्पिपासामलांज्येष्ठामलक्ष्मी नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धि च सर्वा निर्णुद मे गृहात।।८।। ॐ स्वाहा।।हृदि।। ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरी सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।९।।

ॐ स्वाहा।। नाभौः।। ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।१०।। ॐ स्वाहा ।गुह्ये।। ॐ कर्दमेन प्रजाभूता, मयि सम्भव कद्रम!। श्रियं वासयमे कुलेमातरं पद्ममालिनीम्।।११।। ॐ स्वाहा।गुदे।। ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवी मातरं श्रियं वासय मे कुले।।१२।।ॐ स्वाहा।।ऊर्वोः।। ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मी जातवेदो म आवह।।१३।। ॐ स्वाहा।। जानुनोः।। ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टि सुवर्णां हेममालिनीम्।। सूर्यां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।१४।। ॐ स्वाहा।। जंघयो।। ॐ तांमऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।। यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।१५।। ॐ स्वाहा।। चरणयोः।। ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।। सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।१६।। ॐ स्वाहा।। सर्वाङ्गे।। ॐ महाकाल्यै स्वाहा।। ॐ महालक्ष्मै स्वाहा।। ॐ महासरस्वत्यै स्वाहा।। ''तत्पश्चात अक्षमालिकायै नमः'' से जपमाला का पूजन कर के **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** मंत्र से एक १०८ आहुति देवे। फिर दुर्गासप्तशती के प्रथम अध्याय का विनियोग कर जल छोड़ देवे फिर देवी का ध्यान खड्ग चक्रगदेषु' से कर के **'ऐं मार्कण्डेय उवाच'** से हवन प्रारम्भ कर त्रयोदश अध्याय के **'सावर्णिभविता मनु'** तक हवन सात सौं मंत्रों से पूर्ण करें। हवन के पश्चात पुनः पूर्ववतः न्यास तथा १०८ बीज मंत्र से आहुति देवें, तत्पश्चात देवी सूक्तम्, प्राधानिकं रहस्यं वैकृतिकरहस्यं मूर्ति-रहस्यम् आदि का पाठ कर लेवे।

॥ दुर्गायाग विधान ॥

दुर्गा शप्तशती के कुछ महत्वपूर्ण मंत्रों का हवन विधान तथा अध्याय पूर्ण होने पर विशेष आहुति का विधान भी लिख दिया है। मंत्र तथा अध्याय पूर्ण होने पर विशेष आहुतियां निम्नवत् देवें।

हर अध्याय में जहाँ पर 'देव्युवाच' हो गोरोचन व चन्दन की आहुति देवें।

प्रथम अध्याय

श्लोक	श्लोक संख्या	विशेष आहुति
तत्किमेतन् महा०	॥४४॥	लौंग से
खड्गिनी शूलिनीघोरा०	॥८०॥	घी से
सौम्या सौम्या०	॥८१॥	घी से
परापराणां परामा०	॥८२॥	घी से
तस्यसर्वस्य या०	॥८३॥	घी से

अध्याय पूर्ण होने पर-**ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽअम्बालिके न मानयति कश्चन। ससत्यश्वकः सुभद्रिकां कांपील वासिनीम् ॐ स्वाहा॥** मंत्र पढ़कर आहुति में भोजपत्र के ऊपर पान पत्ता व सुपारी तिलयव चावल मधु रखकर **ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै ऐं बीजाधिष्ठात्र्यै महाकाल्यै नमः महाआहुति समर्पयामि।** तत्पश्चात "**ॐ अम्बे नमः स्वाहा अम्बिके नमः स्वाहा। अम्बालिके नमः** स्वाहा से घी की तीन आहुति दें।

दूसरा अध्याय

अदद्ज्जली धस्तस्यै°	।।२६।।	कमल पुष्प।
ददावंशून्यं°	।।३०।।	शहद।
नागहारं ददौ°	।।३१।।	मोती।
नाशयन्तो सुर°	।।५४।।	शंख।
ततोदेवि त्रिशूलेन°	।।५५।।	स्वर्ण या चांदी की गदा।
वेमुश्च केचिदरुधिरम्°	।।५८।।	लाल चन्दन।
देव्यागणैश्च तैस्त°	।।५६।।	अनेक पुष्प।

पुनः अम्बे ऽम्बिके..... से आहुति दें पुनः पूर्ववतः भोज के ऊपर पान पत्ता सुपारी गन्ध अक्षत सरसों गुगुल रखकर महा आहुति निम्न मन्त्र से दें। **ॐ सांगायै सपरिवारायै ह्रीं बीजाधिष्ठात्र्यै महालक्ष्म्यै नमः।। महा आहुति समर्पयामि।।** फिर घी से तीन आहुति-**ॐ अम्बे नमः स्वाहा। ॐ अम्बिके नमः। स्वाहा। अम्बालिके नमः स्वाहा।।** तीन आहुतियां घी को देवें।

तीसरा अध्याय

दृष्ट्वातदापतच्छूल° ।।१०।।

सोने चांदी के त्रिशूल से।

सोऽपि शक्ति मुचोचाथ°	।।१२।।	गुगुल
उदग्रश्च रणे देव्या°	।।१७।।	पालक राइ साग।
देविक्रुद्धा गदापातै°	।।१८।।	अपामार्ग।
सोऽपि कोपान्महावीर्यः°	।।२५।।	बड़े की (नमक रहित)।

ततः क्रुद्धा जगन्माता॰	॥३४॥	त्रिमधु।
ननद्र चासुरः सोऽपि॰	॥३५॥	मधु।
सा चतान् प्रहितांस्तेन॰	॥३६॥	मधु।
गर्ज गर्ज क्षणं मूढ॰	॥३८॥	मधु।
अर्ध निष्क्रान्त एवासौ॰	॥४२॥	नारियल ।

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽअम्बालिके..... स्वाहा। महा आहुति पूर्ववत् **ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सर्वायुधायै महालक्ष्म्यै नमः महाआहुतिं समर्पयामि स्वाहा॥** (आहुति में विशेष भैंस का घी) **ॐ अम्बे नमः स्वाहा। ॐ अम्बिके नमः स्वाहा। अम्बालिके नमः स्वाहा॥** से तीन आहुति घी की देवें।

चौथा अध्याय

शूलेन पहिनो देवि॰ श्लोक सं॰ २४ से **तैरस्मान् रक्ष सर्वतः॥** तक चार मंत्रों का पाठमात्र कर **ॐ महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा** इस मंत्र से चार आहुति प्रदान करें।

एवं स्तुता सुरैर्दिव्यै॰	॥२६॥	गन्ध चंदन चूरा पुष्प।
भक्त्या समस्तैः॰	॥३०॥	कपूर धूप।
इत्येतत्किथितं भूप॰	॥४०॥	मावा पेड़ा।

ॐ अम्बे ऽअम्बिके...... ॐ स्वाहा॥ महाआहुति पूर्ववत्- **ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सर्वायुधायै अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै महालक्ष्मै नमः। महाआहुतिं समर्पयामि॥** महाआहुति में विशेष तिल यव डाल देवे।

ॐ अम्बे नमः स्वाहा। ॐ अम्बिके नमः स्वाहा॥ ॐ अम्बालिके नमः स्वाहा। तीन आहुति घी की देवें।

पाँचवाँ अध्याय

पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्याम॰ ।।२।। हलुआ।
नमोदेव्यैमहादेव्यै॰ शलोक संख्या ९ से ८२ तक हलुवा या खीर।
स तत्र गत्वा॰ ।।१०४।। सरियाली।
यो मां जयति संग्रामे॰ ।।१२०।। सुरमा।
अवलिप्तासि मैवं॰ ।।१२३।। सरियाली।

ॐ अम्बे ऽअम्बिके....... ॐ स्वाहा। महा आहुति पूर्ववत्- **ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सर्वायुधायै कामबीजाधिष्ठात्र्यै श्री महासरस्वत्यै नमः महा आहुतिं समर्पयामि।।**

(आहुति के लिए विशेष ईख या केला।)

पुनः तीन आहुति घी से देवें-

ॐ अम्बे नमः स्वाहा। ॐ अम्बिके नमः स्वाहा। ॐ अम्बालिके नमः स्वाहा।।

छठा अध्याय

इत्युक्तः सोभ्य धावताम्॰ ।।१३।। सुरमा
अथक्रुद्धं महासैन्यं॰ ।।१४।। गुलाल
ततो धूतसटः कोपात्॰ ।।१५।। गुग्गुल

ॐ अम्बे ऽअम्बिके....... नमः स्वाहा। महाआहुति पूर्वत्। ॐ सांगायै सपरिवारायै सर्वायुधायै सवाहनायै वाग्भबीजाधिष्ठात्र्यै श्री महासरस्वत्यै महाआहुतिं समर्पयामि।।

पुनः तीन आहुति घी से देवें-

ॐ अम्बे स्वाहा। ॐ अम्बिके स्वाहा। ॐ अम्बालिके स्वाहा।

सातवाँ अध्याय

ततः कोपं चकारोच्चैः० ॥५॥ कपूर युक्त कज्जल।

विचित्र खट्वांगधरा० ॥७॥ छुवारे

ॐ अम्बे ऽअम्बिके...... ॐ स्वाहा। महा आहुति पूर्ववत्। **ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सर्वायुधायै धूम्राक्ष्यै नमः महा आहुतिं समर्पयामि॥**

पुनः तीन आहुति घी से देवें :-

ॐ अम्बे नमः स्वाहा। ॐ अम्बिके नमः स्वाहा। ॐ अम्बालिके नमः स्वाहा॥

आठवाँ अध्याय

मच्छस्त्रपात् संभूतान० ॥५४॥ लाल चन्दन।

मुखने कालि जगृहे० श्लोक संख्या ५७ से ६३ तक कपिकाष्ट **ॐ अम्बे ऽअम्बिके..... ॐ स्वाहा।** महा आहुति में विशेष लालचन्दन, **ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सर्वायधयै रक्ताक्ष्यै देव्यै नमः महा आहुतिं समर्पयामि॥** पुनः तीन आहुति घी की देवें :-

ॐ अम्बे नमः स्वाहा। अम्बिके नमः स्वाहा। ॐ अम्बालिके नमः स्वाहा॥

नवाँ अध्याय

ततः सिहो महानादै॰ ।।२१।। केला।

पुनश्च कृत्वा॰ ।।३०।। सरियाली।

ॐ अम्बेऽअम्बिके...... ॐ स्वाहा। महा आहुति में विशेष विल्वफल **ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै त्रिशूल पाश धारिण्यै सिंह वाहनायै नमः महाआहुतिं समर्पयामि।।**

पुनः तीन घी की आहुति-

ॐ अम्बे स्वाहा। ॐ अम्बिके स्वाहा। ॐ अम्बालिके स्वाहा।।

दसवाँ अध्याय

ततः शरशतैर्देवी॰ ।।१४।। धनुष वाण।

ॐ अम्बेऽअम्बिके. ..... ॐ स्वाहा। महाआहुति में विशेष पुष्प। **ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै महाकाल्यै नमः महा आहुतिं समर्पयामि।।**

ॐ अम्बे स्वाहा। ॐ अम्बिके स्वाहा। ॐ अम्बालिके स्वाहा।।

एकादश अध्याय

एकादश अध्याय में प्रत्येक मंत्र से खीर का हवन तथा विशेष आहुति निम्नवत देवे, सर्व स्वरूपे सर्वेशे. मंत्र का पाठ मात्र कर **ॐ महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा** कहकर आहुति देवें।।।२४।।

रोगानशेषान॰ ।।२९।। गिलोय।

प्रणताना प्रसीद त्वं॰	।।३५।।	कपूर।
सर्वाबाधा प्रशमनं॰	।।३६।।	कालीमिर्च।
नन्दगोप गृहे जाता॰	।।४२।।	मखन मिश्री।
भक्षयन्त्याश्च॰	।।४४।।	अनार के फल फूल।
ततः शतेन नेत्राणां॰	।।४७।।	गेन्दा के पुष्प से।
शाकम्भरीतिविख्यातिं॰	।।४६।।	हरे शाक से।
यदारुणाख्य॰	।।५२।।	कमल पुष्प।

ॐ अम्बेऽअम्बिके. ..... ॐ स्वाहा। महा आहुति में विशेष खीर। **ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै सर्वनारायण्यै नमः महा आहुतिं समर्पयामि।।**

पुनः तीन आहुति घी से देवें :-

ॐ अम्बे स्वाहा। ॐ अम्बिके स्वाहा। ॐ अम्बालिके स्वाहा।।

बारहवाँ अध्याय

उपसर्गानशेषांस्तु॰	।।८।।	सरसों।
बलिप्रदाने पूजायाम्॰	।।१०।।	नारियल।
सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो॰	।।१३।।	मोती।
बालग्रहाभिभूतानां॰	।।१८।।	सरसों।
सर्वंममैतन्महात्म्यं॰	।।२०।।	लाल चन्दन।
विप्राणां भोजनैः र्होमैः॰	।।२१।।	हलवा मिठाई।
तयैतन्मोह्यते विश्वं॰	।।३७।।	वेल।

ॐ अम्बेऽअम्बिके. ..... ॐ स्वाहा। महाआहुति में गोरोचन व गेंदे के पुष्प।

ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै वालात्रिपुर

सुन्दर्यै नमः महाआहुति समर्पयामि।। पुनः तीन आहुति घी से देवें। **ॐ अम्बे स्वाहा। ॐ अम्बिके स्वाहा। ॐ अम्बालिके स्वाहा।।**

तेरहवाँ अध्याय

अर्हणां चक्रतुस्तस्याः ।।११।। पुष्प धूप चन्दन।।
ददतुस्तौ वलिं चैव ।।१२।। अनेक प्रकार के फल।।

ॐ अम्बेऽअम्बिके...... ॐ स्वाहा। महा आहुति में विशेष श्रीफल **ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै त्रिपुर सुन्दर्यै नमः महाआहुतिं समर्पयामि।।** पुनः तीन आहुति घी से देवें।

ॐ अम्बे स्वाहा। ॐ अम्बिके स्वाहा। ॐ अम्बालिके स्वाहा।।

।। अन्य होम ।।

इष्ट देवताभ्यो नमः स्वाहा, कुलदेवताभ्योनमः स्वाहा।। यदि किसी मंत्र का जप किया गया हो तो उसी मंत्र से जप का दशांश हवन कर लेंवे।

।।अथ उत्तर पूजनम्।।

यज्ञ मण्डप में आवाहित देवताओं का उत्तर पूजन उसी क्रम से करें जिस क्रम से प्रतिदिन देवताओं का पूजन किया गया हो। संक्षेप में उत्तर पूजन यहां पर दे रहें है। संकल्प कर के पञ्चोपचार से पूजन कर लेवें।

ॐ तत्स० कृतस्य 'अमुक....यज्ञ कर्मणः साङ्गत्व सिद्धये मृडनामाग्नि सहित आवाहित देवतानां उत्तर पूजनं करिष्ये।।

ॐ गणानान्त्वा गणपति० गणपतये नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। गंधाक्षत आदि समर्पण कर देवें।

ॐ इमं मे वरुण श्रुधि हवमद्या व मृडय। त्वामवस्युरा चके।। वरुणाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।

ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमीद् सदन् मातरं पुनः पितरं च प्रयन्त्स्वः।। गौर्यादि षोडश मातृका देवेभ्यो नमः।। आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।। ॐ ॐकार, श्री घृतमातृका, अष्टवसु, देवताभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।

ॐ ग्रहा ऽ ऊर्जा हुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषांविशिप्प्रियाणां वोऽहमिष मूर्ज्ज ॐसमग्रभ मुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येषतेयोनिरिद्राय त्वा जुष्टतमम्।। सूर्यादिनवग्रह देवताभ्योनमः।। आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।। ॐ वास्तोस्पते प्रतिजानी ह्यस्मान् स्वोवेशो अनमीवो भवानः। यत्वेमहेप्रतितन्नौ जुषस्व शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।। ॐ वास्तु देवताभ्यो नमः।। आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।

।। अथ अग्निपूजनम् ।।

ॐ अग्नि दूतं पुरोदधे हव्यवाह मुपब्रुवे देवाँ २ ऽ आसादयादिह।। पूर्णाहुत्या मृडनाम अग्नयेनमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतं पुष्प धूप दीप नैवेद्य दक्षिणां च समर्पयामि।।

।। स्विष्ट कृद्धोमः।।

ब्रह्मा से कुशा अन्वारब्ध कर घी की एक आहुति देवें-

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये न ममः।।१।।

पुन नवाहुतयः-

ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम॥१॥

ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न ममः॥२॥

ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न ममः॥३॥

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य० इदमग्निवरुणाभ्यां०॥४॥

ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो० इदमग्निवरुणाभ्यां०॥५॥

ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिश० इदमग्नये न मम॥६॥

ॐ ये ते शतं वरुण० इदंवरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न०॥७॥

ॐ उदुतमं वरुण० इदं वरुणायादित्ययादितयेन०॥८॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये नमम ॥९॥

॥ बलिदानम् ॥

हाथ में तिल अक्षत जल लेकर संकल्प करे-

ॐ तत्सदद्य अमुक गोत्रः अमुक शर्म्मा, वर्मा गुप्तोह कृतस्य अमुक यज्ञ कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दशदिक्पाल पूर्वकम् आदित्यादि नवग्रहादि तथा आवाहित प्रतिष्ठापित देवताभ्यो बलिदानञ्च करिष्ये।

जिस क्रम से पूजन तथा हवन किया गया हो उसी क्रम से देवताओं को बलिदान देवें (दीपक उड़द माष दही के ऊपर दीपक रखकर) गणेश हेतु - ॐ गणानान्त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ꣳ हवामहे वासेमम॥ आहमजानि गर्ब्भमात्वमजासि गर्ब्भधम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतिं साङ्गायसपरिवाराय

सायुधाय सशक्तिकाय इमं बलिगृहाण। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य यजमानस्याभयुदयं कुरु॥ आयुः कर्त्ता क्षेमकर्त्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदो भवः॥ अनने बलिदानेन गणपतिः प्रीयतां न मम॥ एक आचमन जल छोड़ दें। **गौर्यादि मातृका**-ॐ आयं गौः पृश्निर क्रमीद सदन मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ ॐ भूभुर्व स्वः गौर्याद्यावाहितमातृकाभ्यः साङ्गभ्यः सपरिवारभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्य इमं सदीपम् बलिं गृह्णीत। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य यजमानस्याभ्युदयं कुरुत। आयुः कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकत्र्यः वरदा भवत॥ अनेन बलिदानेन गौर्याद्यावाहितमातरः प्रीयातां न मम॥ आचमन जल डाल दें।

दिक्पाल बलिदान- (यदि अलग-अलग बलिदान देना हो तो हवन प्रकरण से अलग-अलग मंत्रों से बलिदान देवें। एक तंत्र से निम्नवत् दिक्पाल बलिदान दे-)

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः। अग्नयेनमः। यमाय नमः। निर्ऋतये नमः। वरुणाय नमः। वायवे नमः। सोमाय नमः। ईश्वरायनमः। ब्रह्मणे। नमः। अनन्ताय नमः॥ इन्द्रादि दिक्पाल देवताभ्यो नमः साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमंबलिं गृहाण॥ मम सकुटम्बस्य सपरिवारस्य यजमानस्याभ्युदयं कुरु। आयुकर्ता क्षेमकर्त्ता शान्तिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता तुष्टिकर्ता वर दो भवः॥ अनेनबलिदानेन इन्द्रादि दिक्पाल देवता प्रीयतां न ममः॥ आचमन जल छोड़ दें।

॥ क्षेत्रपाल बलिदान ॥

क्षेत्रपाल बलिदान- एक वंशपात्र (बांस की बनी डलिया) में पतल पर कुशा बिछाकर उसके ऊपर एक व्यक्ति के आहार से चौगुना दो गुना या यथाशक्ति प्रमाण उड़द चावल में दही मिलाकर तथा एक जलपात्र रखकर उसमें चतुर्मुख दीपक जलाकर हल्दी सिन्दूर पुष्प कज्जल एवं ध्वजायुक्तबलि रखकर पूजन करें-

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृता ऽ अमर्त्त्यं व्वैश्वानरं क्षेत्रजित्याय देवाः॥ भूर्भुवः स्वः भूत प्रेत पिशाच डाकिनी शाकिनी सहितं क्षेत्रपाल देवताभ्यो गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेधं दक्षिणां च समर्पयामि। भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपम् बलिदानं समर्पयामि॥ भो क्षेत्रपाल इमं बलिं गृहाण। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य यजमानस्याभ्युदयं कुरु। आयुः कर्त्ता क्षेमकर्त्ता शांतिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता वरदो भव॥

॥ प्रार्थना ॥

नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूत-प्रेतगणैः सह।
पूजांवलिं गृहाणेदं सौम्यो भवतु सर्वदा॥
अनने बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम् न ममः॥

अब बलि ले जाने वाला उस बलि को सपरिवार यजमान के मस्तक के ऊपर घुमाकर चौराहे पर रख दें,

यजमान बलि ले जाने वाले के पीछे द्वार तक जाकर निम्न मंत्र से जल के छीटे देवे।

ॐ हिङ्काराय स्वाहा, हिङ्कृताय स्वाहा, क्रन्दते स्वाहा ऽ वक्क्रन्दाय स्वाहा, प्रोथते स्वाहा प्रपोथाय स्वाहा, गन्धाय स्वाहा, घ्राताय स्वाहा, निविष्ठायस्वाहोपविष्ठाय स्वाहा, सन्दिताय स्वाहा, बल्गते स्वाहा, आसीनाय स्वाहा, शयानाय स्वाहा, स्वपते स्वाहा, जाग्रते स्वाहा, कूजते स्वाहा, प्रबुद्धाय स्वाहा, विजृम्भमाणाय स्वाहा, विचृताय स्वाहा, स ँ हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहाऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा॥ मंत्र पढ़कर जल डालने के बाद यजमान दोनों हाथ पैर को धोकर पुनः अन्य यज्ञ मण्डप के कार्य सम्पन्न करें।

॥ पूर्णाहुतिः ॥

नारियल को लाल वस्त्र में लपेटकर बारह, छह या चार बार स्रुवा से घी निकालकर सूची में रख उसके ऊपर नारियल स्थापित कर पूजन करें।

ॐ पूर्णाहुत्यै नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेध च समर्पयामि॥ संकल्प - **ॐ अद्येत्यादि देशकालौ सङ्कीर्त्य मम मनो ऽ भिलषित धर्मार्थ कामादियथेप्सितायुरारोग्यैश्वर्य पुत्र-पौत्र सुख प्राप्तये ब्राह्मणद्वारा मत्कारिते अमुक दुर्गायाग कर्मणि परिपूर्णता सिद्ध्यै बसोधारासमन्वितं पूर्णाहुति होममहं करिष्ये।**

विनियोग - मूर्द्धानंमितिमंत्रस्य भारद्वाज ऋषिस्त्रिष्टुप छन्दः

पूर्णाहूति हवनेविनियोग।। यजमान सपत्नीक खड़ा होकर मंगल घोष के साथ पूर्णाहुति हवन निम्न मंत्र से करें- **ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृतऽआ जात मग्निम्। कवि ँ सम्राज मतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः।।१।। ॐ पूर्णादर्व्वि परापतः सुपूर्णा पुनरापत। व्वस्नेव व्विकक्रीणावहा ऽइषमूर्ज ँ शतक्क्रतो स्वाहा।।२।।**

दुर्गायाग में - **नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणाताः स्मताम् ।।ॐ स्वाहा।।**

अब श्रुवा के अवशिष्ट घी को प्रोक्षणी प्रात्र में त्याग दें। पुनः स्रुचि द्वारा अविच्छिन्न घृतधारा अग्नि में देवें-

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृतेश्रितोघृतम्बस्य धाम। अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।। ॐ बसोः पवित्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।। स्वाहा।।

इदं अग्नये वैश्वानराय न मम।।

अग्नि प्रार्थना

ॐ स्वस्ति श्रद्धा यशः प्रज्ञांविद्यापुष्टिंश्रियं बलम्।
तेज आयुष्यमारोग्यं देहि मे हव्य वाहन।।१।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञ कियादिषु।
न्यूं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।२।।

।। ॐ यज्ञपुरुषाय नमः।।

।। अथ त्र्यायुषकरणम् ।।

यजमान अग्नि की परिक्रमा कर अग्नि के पश्चिम भाग में बैठ पूर्व मुख हो स्रुवा द्वारा यज्ञ कुण्ड से भस्म निकाले, अनामिका अंगुली से यजमान के ललाट, ग्रीवा वाहु, हृदय पर आचार्य भस्म लगावें।[१]

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपश्य त्र्यायुषम्ः यद्देवेषु त्र्यायुषम् तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम्।।

तत्पश्चात प्रोक्षणी पात्र में स्थित घी को यजमान सूघ लेवे आचमन कर प्रणीता प्रात्र में रखी पवित्री से प्रणीता जल को अपने मस्तक में छिड़कर कुशाओं को अग्नि में त्याग दें।

।। पूर्णपात्र दानम् ।।

अद्य० कृतस्य अस्मिन् यज्ञ कर्मणे इदं पूर्णपात्र सदक्षिणां ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

ब्रह्मः के लिये पूर्णपात्र दान कर ब्रह्मा **'अद्यौ स्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रति गृह्णातु'** यह वाक्य कहे। **अग्ने पश्चात् प्रणीता विमोकः कुर्यात्।।**

अग्नि के पीछे जल युक्त प्रणीतापात्र को उलट देवें। ब्राह्मण गिरे हुए जल से सकुटुम्ब यजमान के मस्तक पर उपयमन कुशाओं से मार्जन करे-

---

भस्म धारण फल :-

ब्रह्म राक्षस भूतानि पिशाच ग्रह राक्षसाः। पीडा तत्र न कुर्वन्ति होमभस्म तु यत्र वै।।१।।
सर्पादि बाधके प्राप्ते गर्भिण्याश्वाविनिर्गमे। भस्म प्रक्षेप मात्रेण सर्वं नश्येद्भयं नृणाम्।।२।।
(अग्नि पुराण)

ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।। मार्जनोपरान्त उपयमन कुशाओ को अग्नि में छोड़ देवे।। **ततः ब्रह्म ग्रन्थि विमोकः।** पश्चात ब्रह्मा कुश निर्मित ब्रह्माकी ग्रन्थि को खोल देवे।

।। बर्हिहोमः ।।

जिस प्रकार यज्ञ कुण्ड के चारों ओर कुशाएं बिछाई थी उन्हें उसी क्रम से उठाकर घी में भिगोकर निम्नमंत्र से होम कर देवें। **ॐ देवागातु विदोगातुं वित्वा गातुमित। मनसस्पत इमं देवयज्ञ ꣳ स्वाहा वातेधाः स्वाहा।।**

।। यज्ञनारायणी की आरती ।।

ॐ आरात्रि पार्थिव ꣳ रजः पितुर प्रायी धामभिः। दिवः सदा ꣳ सि वृहती वितिष्ठस आ त्वेषं वर्त्ततेतमः।।१।। ॐ इद ꣳ हविः प्रजननं मे ऽ अस्तु दशवीर ꣳ सर्वगण ꣳ स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्य भयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयोरतो ऽ अस्मासु धत।।२।।

।।इति वेदोक्त आरती।।



॥ मंत्र पुष्पाञ्जलिः ॥

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यम् कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः॥ ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेश्ठ्यं राज्यं महाराज्य माधि पत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्। सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापराध ात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्याऽवसन् गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासदः इति॥ ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां ध मति संपतत्रैर्द्यावा भूमि जनयन् देवऽएकः॥ ॐ महालक्ष्मिश्च विद्महे सर्वशक्तिश्च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्॥ कात्याय न्यैच्च विद्महे कन्या कुमर्यै धीमहि तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्॥

नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथाकालो भवानि च।
पुष्पाञ्जलि मयादत्तं गृहाणं परमेश्वरी॥

मंत्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। दुर्गा देवी को पुष्प अर्पण कर परिक्रमा करें।

प्रदक्षिणा-

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषंङ्गिणः।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥
यानिकानि च पापानि जन्म जन्म कृतानि च।
तानि तानि विनश्यति प्रदक्षिणा पदे-पदे॥

॥ तर्पण मार्जन ॥

जितने पाठ दुर्गा सप्तशती के किये हों उसका दशांश हवन हुआ है, अब हवन का दशांश तर्पण **" ॐ ऐं ह्रीं क्लीं**

चामुण्डाये विच्चै'' मंत्र से कर तर्पण का दशांश मार्जन'' ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चै'' से कर लेवें।।

।। छाया पात्रदानम् ।।

प्रधान पीठ के पास तिल राशि के ऊपर कांस्य पात्र में घी पिघलाकर दक्षिणा सहित सुवर्ण पात्र में रखें तथा सर्वविघ्नो की शान्ति के लिए यजमान सपरिवार घी में अपना रूप (छाया) देखें।

ॐ रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो वो विश्ववेदा विभजतु। ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणा वि स्वः पश्य व्यन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः।।

संकल्प-

अद्यैत्यादि॰ इदं आज्यपात्रं सदक्षिणाकं अमुक गोत्रोत्पन्नाय अमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

।। ब्राह्मण भोजन संकल्प ।।

अद्यैत्यादि॰ कृतस्य दुर्गार्चन कर्मणः सांगतासिद्धयर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थंच यथासंख्याकान ब्राह्मणान् भोजयिष्ये।।

।। दक्षिणादानसंकल्प ।।

ॐ तत्सत्॰ अद्य कृतस्य दुर्गार्चन कर्मणः सांगता सिद्धयर्थं तत्सम्पूर्णफल प्राप्त्यर्थं च आचार्यादिभ्यो ऋत्विग्भ्यः सूक्तपाठकेभ्यो मंत्र जापकेभ्यो हवन कर्तृभ्योऽन्येभ्यश्च ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।।

॥ स्तोत्र संग्रह ॥

॥ श्री सूक्त ॥

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १॥
तांमऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥
कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामाद्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहो पह्वये श्रियम्॥४॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियंलोके देवजुष्टा
मुदाराम्। तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां
वृणोमि॥५॥ आदित्य वर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव
वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायांतरायाश्च
वाह्यऽअलक्ष्मीः॥६॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेस्मिन् कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे ॥७॥
क्षुत्पिपासामलां जेष्ठामलक्ष्मी नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा निर्णुद मे गृहात् ॥८॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्ठां करीषिणीम।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥९॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥

कर्द्दमेन प्रजाभूतामयि सम्भ्रमकर्द्दम
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवी मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१३॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१४॥
तांमऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चञ्च श्री कामः सततं जपेत् ॥१६॥
सरसिजनलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥१७॥
धनमग्निर्धनं वायुधनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणं धनमश्विनौ ॥१८॥
वैनतेयं सोमं पिव सोमं पिवतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमेनोमह्यं ददातु सोमिन ॥१९॥
न क्रोधो न च मात्सर्य न लोभो नाशुभा मतिः।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत् ॥२०॥
पद्मानने पद्मउरु पद्माक्षि पद्म सम्भवे।
तिन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥२१॥
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।
विष्णुप्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युत वल्लभाम् ॥२२॥

महालक्ष्मीः च विद्महे विष्णुपत्नीच धीमही।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥२३॥
पद्मानने पद्म विपद्म पत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि।
विश्वप्रिये विश्वमनानुकूले त्वत्पादपद्ममयि सन्निधत्स्व ॥२४॥
आनन्दकर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रताः।
ऋषय श्रियपुत्राश्च मयि श्रीर्देवी देवता ॥२५॥
ऋणरोगादिदारिद्र्यं पापञ्च अपमृत्यवः।
भवशोक मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥२६॥
श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते।
धान्यधनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसम्वत्सरं दीर्घमायुः ॥२७॥
॥ इति श्री सूक्तम् ॥

॥ अथ सरस्वती स्तोत्रम् ॥

ॐ रविरुद्रपितामह विष्णुनुतं हरिचन्दनकुंकुमपंकयुतम्।
मुनिवृन्दगणेन्द्रसमानयुतं, तवनौभिसरस्वति पादयुगम् ॥१॥
शशिशुद्धसुधाहिमधामयुतं, शरदम्बरबिम्बसमानकरम्।
बहुरत्न मनोहर कान्तियुतं, तवनौमि सरस्वती पादयुगम् ॥२॥
कनकाब्जविभूषितभीतियुतं, भवभावविभाषित भीतिपदम्।
प्रभुचित समाहित साधुपदं, तवनौमि सरस्वती पादयुगम् ॥३॥
मतिहीनजनाश्रय पादमिदं, सकलागम भाषितभिन्नपदम्।
परिपूरित विश्वमनेकभवं, तवनौमि सरस्वती पादयुगम् ॥४॥
सुरमौलिमणिद्युति शुभ्रकरं, विषयादिमहाभयवर्णहरम्।
निजकान्तिविलेपित चन्द्रशिवं, तवनौमि सरस्वती पादयुगम् ॥५॥
भवसागर मज्जन भीतिनुतं, प्रतिपादित सन्ततिकारमिदम्।

विमलादिक शुद्धविशुद्धपदं, तवनौमि सरस्वती पादयुगम् ।।६।।
परिपूर्ण मनोरथधामनिधि, परमार्थ विचार विवेकविधिम्।
सुरयोषितसेवितपादतलं, तवनौमि सरस्वती पादयुगम् ।।७।।
गुणनैक कुलस्थितिभीतिपदं, गुणगौरवगर्वितसत्यपदम्।
कमलोदरकोमलपादतलं, तवनौमि सरस्वती पादयुगम् ।।८।।
इदं स्तोत्रं महापुण्यं ब्रह्मणा परिकीर्तितम्।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय तस्यकण्ठे सरस्वती ।।९।।
त्रिसन्ध्य यः जपेनित्यं जलेवाऽपि स्थलेस्थितः।
पठन्मात्र भवेत्प्राज्ञो ब्रह्मनिष्ठः पुनः पुनः ।।१०।।

।। इतिसरस्वतीस्तोत्रम् ।।

।। सरस्वतीद्वादशनामस्तोत्रम्।।

विद्या, बुद्धि की प्राप्ति के लिए साधक सरस्वती के बारह नामों का स्मरण सन्ध्या के समय करे, सिद्ध प्राप्त होगी।

सरस्वती मयादृष्टवा वीणापुस्तक धारिणी।
हंसवाहन समायुक्त विद्यादान करोतु मे ।।१।।
प्रथमंभारती नामं द्वितीयं च सरस्वती।
तृतीयं शारदा देवी चतुर्थ हंसवाहिनि ।।२।।
पंचमं जगद्विख्याता षष्ठं वागेश्वरीतथा।
कौमारी सप्तमे प्रोक्त अष्टमे वरदायिनी ।।३।।
नवमं बुद्धिदात्री च दशमं ब्रह्मचारिणी।
एकादशं चन्द्रघण्टेति द्वादशं भवुनेश्वरी ।।४।।
सरस्वती द्वादश नामानि त्रिसन्ध्य यः पठेन्नरः।
जिह्वाग्रे वसते तस्य ब्रह्मरूपा सरस्वती ।।५।।

।। इति सरस्वती द्वादशनामस्तोत्रम्।।

॥ महालक्ष्म्यष्टकम् ॥

महापाप के नाश, धनधान्य की वृद्धि तथा महा शत्रु के नाश के लिए साधक महालक्ष्म्याष्टक पाठ करे।

इन्द्र उवाच

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥१॥
नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयंकरि।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥२॥
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयंकरि।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥३॥
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी।
मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते ॥४॥
आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरी।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥५॥
स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्तिमहोदरे।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥६॥

इन्द्र बोले-श्रीपीठ पर स्थित और देवताओं से पूजित होने वाली हे महामाये! तुम्हें नमस्कार है। हाथ में शङ्ख, चक्र और गदा धारण करने वाली हे महालक्ष्मि! तुम्हें प्रणाम है।।१।। गरुड़ पर आरूढ़ हो कोलासुर को भय देने वाली समस्त पापों को हरने वाली हे भगवति महालक्ष्मी! तुम्हें प्रणाम है।।२।। सब कुछ जानने वाली, सबको वर देने वाली, समस्त दुष्टों को भय देने वाली और सबके दुःखों को दूर करने वाली, हे देवि महालक्ष्मि! तुम्हें नमस्कार है।।३।। सिद्धि, बुद्धि, भोग और मोक्ष देने वाली हे मन्त्रपूत भगवति महालक्ष्मी! तुम्हें सदा प्रणाम है।।४।। हे देवि! हे आदि-अन्त रहित आदिशक्ते!

पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥७॥
श्वेताम्बरधरे देवि नानालंकारभूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥८॥
महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ॥९॥
एककाले पठेन्नित्यं महापापविनाशनम्।
द्विकालं य पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः ॥१०॥
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम्।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ॥११॥

इतीन्द्रकृतं महालक्ष्म्यष्टकं सम्पूर्णम्।

हे महेश्वरि! हे योग से प्रकट हुई भगवति महालक्ष्मी! तुम्हें नमस्कार है।।५।। हे देवि! तुम स्थूल, सूक्ष्म एवं महारौद्ररूपिणी हो, महाशक्ति हो, महोदरा हो और बड़े-बड़े पापों का नाश करने वाली हो। हे देवि महालक्ष्मी! तुम्हें नमस्कार है।।६।। हे कमल के आसन पर विराजमान परब्रह्मस्वरूपिणी देवि! हे परमेश्वरि! हे जगदम्ब! हे महालक्ष्मी! तुम्हें मेरा प्रणाम है।।७।। हे देवि तुम श्वेत वस्त्र धारण करने वाली और नाना प्रकार के आभूषणों से विभूषिता हो। सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त एवं अखिल लोक को जन्म देने वाली हो। हे महालक्ष्मी! तुम्हें मेरा प्रणाम है।।८।। जो मनुष्य भक्ति युक्त होकर इस महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्र का सदा पाठ करता है, वह सारी सिद्धियों और राज्य वैभव को प्राप्त कर सकता है।।९।। जो प्रतिदिन एक समय पाठ करता है, उसके बड़े-बड़े पापों का नाश हो जाता है। जो दो समय पाठ करता है, वह धन-धान्य से सम्पन्न होता है।।१०।। जो प्रतिदिन तीन काल पाठ करता है उसके महान शत्रुओं का नाश हो जाता है और उसके ऊपर कल्याणकारिणी वरदायिनी महालक्ष्मी सदा ही प्रसन्न होती हैं।।११।।

।। दुर्गासप्तशती के सिद्ध सम्पुट मंत्र ।।

श्री मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत देवी-माहात्म्य में सात सौ मंत्र हैं, जो 'सप्तशती' के नाम से प्रसिद्ध है। दुर्गा 'सप्तशती' का पाठ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पुरुषार्थों को प्रदान करने वाला है। जो मनुष्य जिस भाव से जिस कामना से दुर्गा सप्तशती का पाठ करता है तुरन्त उस फल तथा कामना की प्राप्ति हो जाती है, ऐसा अनुभव कई महापुरुषों, विद्वानों भक्तों को प्राप्त हो चुका है। वैसे तो सम्पूर्ण पाठ ही सप्तशती का मंत्रमय तथा प्रत्येक श्लोक कामना पूर्ण करने वाले हैं तथापि यहां कुछ चुने हुए मंत्रों का उल्लेख किया गया है जिसका सम्पुट देकर विधिवत पाठ करने से अवश्य ही सामुहिक रूप से सिद्धि तथा साधक को फलदायी होगा।

१. विश्व के अशुभ तथा भय विनाश के लिए-

यस्याः प्रभाव मतुलं भगवाननन्तो ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तु मलं बलं च।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय नाशायचाशुभभयस्य मतिं करोतु।।

२. विश्व रक्षा के लिए-

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्व लक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदेयषु बुद्धि।
श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताः स्म परिपालय देविविश्वम्।।

३. विश्व के पाप-ताप निवारण के लिए-

देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीते-र्नित्यं यथासुरवधाद धुनैव सद्यः।
पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान्।।

४. विश्वव्यापी विपत्तियों के नाश के लिए-

देवि प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरी पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।

५. विश्व के अभ्युदय के लिए-

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति विश्वाश्रयाये त्वयि भक्तिनम्राः।।

६. समस्त कल्याण के लिए-

देव्या यया ततमिदं गगदात्मशक्त्या निश्शेष देवगणशक्ति समूहमूर्त्या।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः।।

७. दुःख दरिद्र्य निवारण के लिए-

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तौः स्वस्थैःस्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्य-दुःख-भयहारिणी का त्वदन्या सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता।।

८. उपद्रवों की शान्ति के लिए-

रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्यु बलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्।

९. सामुहिककल्यार्थ-

देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या। निश्शेष-देवगण-शक्तिसमूह-मूर्त्या तामम्बिकामखिल-देव महर्षि पूज्यां भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः॥

१०. सर्वाङ्गीण अभ्युथान के लिए-

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्ग :। धन्यास्त एव निभृतात्मज-भृत्य दारा येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना॥

११. विश्व के पालन के लिए-

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो ब्रह्मा हरश्च नहि वक्तुमलं बलं च। सा चण्डिकाऽखिलजगत्-परिपालनाय नाशाय चाऽशुभभयस्यमतिं करोतु॥

१२. सम्पूर्ण फल प्राप्ति के लिए-

धर्म्याणि देवि! सकलानि सदैव कर्मा-ण्यतादृतः प्रतिदिनं सुकृति करोति। स्वर्ग प्रयाति च ततो भवती प्रसादात् लोकत्रयेऽपि फलदाननु देवि! तेन॥

१३. वाणी शक्ति के लिए-

मेधासि देवि! विदिताऽखिलशास्त्रसारा दुर्गाऽसि दुर्ग-भवसागर नौरसङ्गा। श्री कैटभारि-हृदयैक-कृताधिवासा गौरी त्वमेव शशिमौलि-कृत प्रतिष्ठा॥

१४. पापनाश के लिए-

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि! पापेभ्योऽनः सुतानिव॥

१५. भय निवारण के लिए-

सर्व स्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि! दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥

१६. अपने शरीर की रक्षा के लिए-

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाऽम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेन च॥

१७. महामारी निवारण के लिए-

जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥

१८. बाधा निवारण के लिए-

सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याऽखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्य मस्मद्-वैरि विनाशनम्॥

१९. कल्याण के लिए-

सर्वमंगल मंगल्ये! शिते! सर्वार्थ साधिके!।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि! नमोऽस्तु ते॥

२०. सौभाग्य और आरोग्य के लिए-

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशोदेहि द्विषो जहि॥

२१. समस्त विपत्ति नाश के लिए-

शरणागत-दीनार्त- परित्राण- परायणे:।
सर्वस्यार्तिहरे-देवि! नारायणि! नमोऽस्तु ते॥

२२. सुलक्षणा पत्नी प्राप्ति के लिए-

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसार-सागरस्य कुलोद्भवाम्॥

२३. धन पुत्र की वृद्धि तथा बाधाओं के नाश के लिए-

सर्वाबाधा-विनिर्मुक्तो धन-धान्या सुतान्वित:।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशय:॥

२४. भक्ति प्राप्ति के लिये-

न तेभ्य: सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥

२५. राज्य प्राप्ति के लिए-

ततो वव्रे नृपो राज्यमवि भ्रश्यन्यजन्मनि।
अत्रैव च निजं राज्यं हत शत्रुबलंबलात्॥

२६. बालरोग नाश के लिए-

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि! पापेभ्योऽन: सुतानिव॥

२७. सम्मोहन के लिए-

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवि भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति॥

२८. बन्धन से मुक्ति के लिए-

सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये।
सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी॥

२९. बुरे स्वप्नों के नाश के लिए-

उपसर्गा: समं यान्ति ग़हपीड़ाश्च दारुणा:।
दु:स्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते॥

३०. अपमृत्यु नाश के लिए-

शूलेन पाहिनो नो देवि! पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टा स्वनेन न: पाहि चापज्यानि: स्वनेन च॥

३१. सम्पूर्ण रक्षा के लिए-

खड्ग शूल-गदादीनि यानि-चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लव सङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥

३२. विद्या बुद्धियश तथा विश्व विजय प्राप्ति के लिए-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सरस्वत्यै बुध जनन्यै स्वाहा॥

३३. स्थिर लक्ष्मी प्राप्ति के लिए-

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं कमलवासिन्यै स्वाहा।

३४. व्याधि नाश के लिए-

स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनी।
रूपं देहि जयं देहि यशोदेहि द्विषो जहि।

३५. शत्रुनाश व बल प्राप्ति के लिए-

विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः।
रूपं देहि जयं देहि यशोदेहि द्विषो जहि॥

३६. विद्या यश व लक्ष्मी प्राप्ति के लिये-

विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मिवन्तं जनं कुरु।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥

३७. विश्व की पीड़ा दूर करने के लिए-

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलोक्यवासिनामीढ्यै लोकानां वरदा भव।

३८. सर्वकामना पूरक बटुक मंत्र-

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं।

३९. धन प्राप्ति के लिए-

११ पाठ शक्रादि स्तुति के एक मास तक प्रत्येक दिन करें। धन प्राप्ति अवश्य होगी।

उपर्युक्त श्लोकों का जो साधक सप्तशती में सम्पुट देकर पाठ करता है उसके सब उपद्रव, महामारी, स्रत्रुओं आदि का नाश हो जाता है तथा धन, पुत्र, ऐश्वर्य, सुख, सम्पत्ति की प्राप्ति कर सुखमय जीवन यापन कर मोक्ष प्राप्त करता है। यदि सम्पुट पाठ न भी कर सके तो अनाशक्ति में इन श्लोकों का जाप भी शुभ फल को देने वाला तथा सम्पूर्ण अशुभों का नाश करता है।

भगवतीस्तोत्रम्

जय भगवती देवि नमो वरदे जय पापनिवाशिनि बहुफलदे।
जय शुम्भ-निशुम्भ-कपालधरे प्रणमामि तु देवि नरार्तिहारे ॥१॥
जय चन्द्रदिवाकर-नेत्रधरे जय पावकभूषितवक्त्रवरे।
जय भैरवदेहनिलीनपरे जय अन्धकदैत्यविशोषकरे ॥२॥
जय महिषविमर्दिनिशिूलकरे जय लोकसमस्तकपापहरे।
जय देवि पितामहविष्णुनुते जय भास्करशक्रशिराऽवनते ॥३॥
जय षणमुख-सायुध-ईशनुते जय सागरगामिनि शम्भुनेते।
जय दुःख-दरिद्र-विनाशकरे जय पुत्रकलत्रविवृद्धिकरे ॥४॥

श्री दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी। नमो नमो अम्बे दुःख हरनी॥
निरंकार है ज्योति तुम्हारी। तिहूँ लोक फैली उजियारी॥
शशि ललाट मुख महाविशाला। नेत्र लाल भृकुटी विकराला॥
रूप मातु को अधिक सुहावे। दरस करत जन अति सुख पावे॥
तुम संसार शक्ति लय कीना। पालन हेतु अन्न धन दीना॥
अन्नपूर्णा तुम जग पाला। तुम ही आदि सुन्दरी बाला॥
प्रलयकाल सब नाशन हारी। तुम गौरी शिव शंकर प्यारी॥
शिव योगी तुम्हरे गुण गावें। ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें॥
रूप सरस्वती को तुम धारा। दे सुबद्धि ऋषि मुनिन उबारा॥
धरयो रूप नरसिंह को अम्बा। प्रगट भई फार कर खम्बा॥
रक्षा करि प्रहलाद बचायो। हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो॥
लक्ष्मी रूप धरा जग जानी। श्री नारायण अंग समानी॥
क्षीरसिंधु में करत विलासा। दयासिंधु दीजै मन आसा॥
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी। महिमा अमित न जात बखानी॥

मातंगी अरु धूमावति माता। भुवनेश्वरि बगला सुखदाता।।
श्री भैरव तारा जग तारिणी। छिन्न भाल भव दुःख निवारिणी।।
केहरी वाहन सोहे भवानी। लांगुर बीर चलत अगवानी।।
कर में खप्पर खड़ग विराजै। जाको देख काल डर भाजे।।
सौहे अस्त्र विविध त्रिशूला। जाते उठत शत्रु हिय शूला।।
नगरकोटि में तुम्हीं बिराजत। तिहूँ लोक में डंका बाजत।।
शुम्भ निशुम्भ दैत्य तुम मारे। रक्त बीज शंखन संहारे।।
महिषासुर दानव अभिमानी। तेहि अघ भार मही अकुलानी।।
रूप कराल कालिका धारा। सेन सहित तुम तिहि संहारा।।
परी गाढ़ सन्तन पर जब-जब। भई सहाय मातु तुम तब-तब।।
अमरपुरी अरु बासव लोका। तव महिमा सब रहे अशोका।।
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी। तुम्हें सदा पूजें नर-नारी।।
प्रेम भक्ति से जो यश गावे। दुःख दारिद्र निकट नहीं आवे।।
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई। जन्म मरण ताको छुटि जाई।।
जोगी सुर मुनि कहत पुकारी। योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी।।
शंकर आचारज तप कीनो। काम-क्रोध जीति तिन लीनो।।
निशिदिन ध्यान धरो शंकर को। अति श्रद्धा नहिं सुमिरो तुमको।।
शक्ति रूप को मरम न पायो। शक्ति गई तब मन पछिताओ।।
शरणागत ह्वै कीर्ति बखानी। जय जय जय जगदम्ब भवानी।।
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा। दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा।।
मोको मातु कष्ट अति घेरो। तुम बिन कौन हरे दुःख मेरो।।
आशा तृष्णा निपट सतावें। मोह मदादिक सब बिनशावें।।
शत्रु नाश कीजै महारानी। सुमिरों इकचित तुम्हें भवानी।।
करहु कृपा हे मात दयाला। ऋद्धि सिद्धि दै करहु निहाला।।
जब लगि जियों दया फल पावों। तुम्हरौ यश मैं सदा सुनावों।।
दुर्गा चालीसा जो कोई गावे। सब सुख भोग परम पद पावे।।
देवीदास शरण निज जानी। करहु कृपा जगदम्ब भवानी।।

।। श्री दुर्गा चालीसा समाप्त।।

श्री विन्ध्येश्वरी चालीसा

नमो नमो विन्ध्येश्वरी, नमो नमो जगदम्ब।
सन्त जनों के काज में, माँ करती नहीं बिलम्ब॥

जय जय जय विन्ध्याचल रानी। आदिशक्ति जग विदित भवानी॥
सिंहवाहिनी जय जय जगमाता। जय जय जय त्रिभुवन सुखदाता॥
कष्ट निवारिणि जय जग देवी। जय जय संत असुरासुर सेवी॥
महिमा अमित अपार तुम्हारी। शेष सहस मुख वर्णत हारी॥
दीनन के दुःख हरत भवानी। नहिं देख्यो तुम सम कोउ दानी॥
सब कर मनसा पुरवत माता। महिमा अमित जगत बिख्याता॥
जो जन ध्यान तुम्हारो लावै। सो तुरतहिं वांछित फल पावै॥
तुम ही वैष्णवी औ' रुद्रानी। तुम ही शारद औ' ब्रह्मानी॥
रमा राधिका श्यामा काली। तू ही मात सन्तन प्रतिपाली॥
उमा माधवी चण्डी ज्वाला। बेगि मोहि पर होहु दयाला॥
तुम ही हिंगलाज महारानी। तुम ही शीतला अरु बिज्ञानी॥
दुर्गा दुर्ग विनाशिनी माता। तुम ही लक्ष्मी जग सुखदाता॥
तुम ही जाहन्वी अरु उत्रानी। हेमावती अम्बे निर्बानी॥
अष्टभुजी वाराहिनि देवी। ब्रह्मा विष्णु सदा शिव सेवी॥
चौसट्ठी देवी कल्यानी। गौरि मंगला सब गुण खानी॥
पाटन मुम्बा दन्त कुमारी। भद्रकाली सुन विनय हमारी॥
वज्रधारिणी शोक नाशिनी। आयु रक्षिणी विन्ध्यवासिनी॥
जया और विजया बैताली। मातु संकटी अरु विकराली॥
नाम अनन्त तुम्हार भवानी। बरनौ किमि मैं जन अज्ञानी॥
जा पर कृपा मातु तव होई। तो वह करै चहै मन जोई॥
कृपा करहु मो पर महारानी। सिद्ध करिअ अम्बे मम बानी॥
जो नर धरे मात कर ध्याना। ताकर सदा होय कल्याना॥
विपत्ति ताहि सपनेहु नहिं आवै। जो देवी का जाप करावै॥
जो नर पर ऋण होय अपारा। सो नर पाठ करै शतबारा॥
निश्चय ऋण मोचन होई जाई। जो नर पाठ करै मन लाई॥

अस्तुति जो नर पढ़े पढ़ावे। या जग में सो बहु सुख पावे।।
जाको व्याधि सतावै भाई। जाप करत सब दूरि पराई।।
जो नर बन्दी हम होई। बार हजार पाठ कर सोई।।
निश्चय बन्धन ते छुटि जाई। सत्य वचन मम मानहु भाई।।
जा पर जो कुछ संकट होई। सादर देविहिं सुमिरै सोई।।
पुत्र प्राप्ति इच्छा कर जोई। बिधिवत देवहिं सुमरै सोई।।
पांच वर्ष नित पाठ करावै। नौरातर महं विप्र जिमावै।।
निश्चय होय प्रसन्न भवानी। पुत्र देहि ताकहं गुण खानी।।
ध्वजा नारियल आनि चढ़ावै। विधि समेत पूजन करवावै।।
नित प्रति पाठ करै मन लाई। प्रेम सहित नहिं आन उपाई।।
यह श्री विन्ध्याचल चालीसा। रंक पढ़त होवे अवनीसा।।
यह जनि अचरज मानहु भाई। मातु कृपा संभव जोय जाई।।
जय जय जय जय जग मातु भवानी। कृपा करहु मो पर जन जानी।।

।। इति श्री विन्ध्येश्वरी चालीसा समाप्त।।

श्री विन्ध्येश्वरी स्तोत्रम्

निशुम्भ शुम्भ गर्जनी, प्रचण्ड मुण्डखण्डिनी।
बने रणे प्रकाशिनी भजामि विन्ध्यवासिनी।।
त्रिशूल मुण्ड धारिणी धरा विघात हारिणी।
गृहे-गृहे निवासिनीं भजामि विन्ध्यवासिनी।।
दरिद्र दुःख हारिणी, सदा विभूति कारिणी।
वियोग शोक हारिणी, भजामि विन्ध्यवासिनी।।
लसत्सुलोल लोचनं लतासनं वरं प्रदम।
कपाल-शूल धारिणी, भजामि विन्ध्यवासिनी।।
कराब्जदानदाधरां, शिवाशिवां प्रदायिनी।
वरा-वराननां शुभां भजामि विन्ध्यवासिनी।।
कपीन्द्र जामिनीप्रदां, त्रिधा स्वरूप धारिणीं।
जले-स्थले निवासिनीं, भजामि विन्ध्यवासिनी।।
विशिष्ट शिष्ट कारिणीं, विशाल रूप धारिणी।
महोदरे विलासिनीं, भजामि विन्ध्यवासिनी।।
पुरंदरादि सेवितां पुरादिवंशखण्डिताम्।
विशुद्ध बुद्धिकारिणीं भजामि विन्ध्यवासिनी।।

'आरती''

माँ दुर्गा देवी की आरती करते हुए शंख,[1] घण्टी, मृदंग, ढोल-नगारा आदि बजाते हुए स्पष्ट शब्दों में श्रद्धापूर्वक आरती करने से जय की प्राप्ति होती है।

।। श्री देवी जी की आरती ।।

जगजननी जय!जय! माँ जगजननीं जय! जय!!
भयहारिणी भवतारिणि, भवभामिनि जय! जय!! जग०
तू ही सत्‌चित्‌-सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा।
सत्यसनातन सुन्दर पर-शिवसुर-भूपा ।।१।। जग०
आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी।
अमल अनन्त अगोचर, अज आनंदराशी ।।२।। जग०
अविकारी, अघहारी, अकल कलाधारी।
कर्त्ता विधि, भर्ताहरि, हर संहारकारी ।।३।। जग०
तू विधिवधू, रमा, तू उमा महामाया।
मूल प्रकृति विद्या तू, तू जननि, जाया ।।४।। जग०
राम, कृष्ण, तू सीता, ब्रजरानी राधा।
तू वाञ्छाकल्पद्रुम, हारिणी सब बाधा ।।५।। जग०
दश विद्या, नवदुर्गा, नाना शस्त्रकरा।
अष्ट मातृका, योगिनी, नव नव रूपधरा ।।६।। जग०
तू परधाम निवासिनि, महाबिलासिनि तू।
तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डवलासिनि तू ।।७।। जग०
सुर-मुनि-मोहिनी सौम्या तू शोभाऽऽधारा।
विवसन-विकट-सरूपा प्रलयमयी धारा ।।८।। जग०
तू ही स्नेह-सुधामयी, तू अतिगरल मना।
रत्न विभूषित तू ही, तू ही अस्थि तना। ।।९।। जग०
मूलाधार निवासिनी, इह-पर-सिद्धिप्रदे।
कालातीता काली, कमला तू वर दे ।।१०।। जग०
शक्ति शक्तिधर तू ही नित्य अभेदमयी।
भेद प्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी ।।११।। जग०
हम अति दीन दुखी मां! विपत-जाल घेरे।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे ।।१२।। जग०
निज स्वभाववश जननी! दयादृष्टि कीजै।
करुणाकर करुणामयि! चरण शरण दीजै ।।१३।। जग०

।। श्री अम्बाजी की आरती ।।

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री ।।१।। जय अम्बे०।।
मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमद को।
उज्ज्वल से दोउ नैना चन्द्रवदन नी को ।।२।। जय अम्बे०।।
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त-पुष्प गलमाला, कण्ठन पर साजै ।।३।। जय अम्बे०।।
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुख हारी ।।४।। जय अम्बे०।।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति ।।५।। जय अम्बे०।।
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती।
धूम्र विलोचन नैना निशिदिन मदमाती ।।६।। जय अम्बे०।।
चण्डमुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।
मधु कैटभ दोऊ मारे, सुरभयहीन करे। ।।७।। जय अम्बे०।।
ब्रह्माणी, रुद्राणी तुम कमलारानी।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी ।।८।। जय अम्बे०।।
चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरों।
बाजत ताल मृदंगा और बाजे डमरू ।।९।। जय अम्बे०।।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हरता, सुख-सम्पत्ति करता ।।१०।। जय अम्बे०।।
भुजाचार अति शोभित, वर मुद्रा धारी।
मनवाञ्छित फल पावत, सेवत नर-नारी ।।११।। जय अम्बे०।।
कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती।
श्री मालकेतु में राजत कोटिरतन ज्योति ।।१२।। जय अम्बे०।।
श्री अम्बेजी की आरती जो कोई नर गावै।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख सम्पत्ति पावै ।।१३।। जय अम्बे०।।

।। श्री ज्वाला-काली देवी जी की आरती।।

'मंगल' की सेवा, सुन मेरी देवी! हाथ जोड़कर तेरे द्वार खड़े।
पान-सुपारी, ध्वजा नारियल ले, ज्वाला तेरी भेंट धरे।।
सुन जगदम्बे न कर विलंबे, संतन के भंडार भरे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली जै काली कल्याण करे ।।१।।टेक।।
'बुद्ध' विधाता तू जगमाता मेरो कारज सिद्ध करे।
चरण-कमल का लिया आसरा शरण तुम्हारी आन परे।।
जब-जब भीर पड़े भक्तन पर तब तब आय सहाय करे।
संतन प्रतिपाली सदा०।।२।।
'गुरु' के बार सकल जग मोह्यो तरुणीरूप अनूप धरे।
माता होकर पुत्र खिलावै, कहीं भार्या भोग करे।।
'शुक्र' सुखदाई सदा सहाई सन्त खड़े जयकार करे।
संतन प्रतिपाली सदा. ।। ३।।
ब्रह्माविष्णु महेश फललिये भेंट देन द्वार खड़े।
अटल सिंहासन बैठी माता सिर सोने का छत्र फिरे।
वार 'शनिश्चर' कुंकुम वरणी जब लुंकड़पर हुकम करे।
संतन प्रतिपाली सदा० ।। ४।।
खड्ग खप्पर त्रिशूल हाथ लिये रक्तबीज को भस्म करे।
शुंभ निशुंभ क्षण मेहि मारे महिषासुर को पकड़ दले।
'आदित' बारी आदि भवानी अपने जन को कष्ट हरे
संतन प्रतिपाली सदा० ।। ५।।
कुपित होय कर दानव मारे चण्ड मुण्ड सब चूर करे।
जब तुम देखो दया रूप हो, पल में संकट दूर टरे।।
'सोम' स्वभाव धरयो मेरी माता जन की अर्ज कबूल करे।
संतन प्रतिपाली सदा० ।। ६।।
सात बार की महिमा बरनी सब गुण कौन बखान करे।
सिंह पीठ पर चढ़ी भवानी अटल भवन में राज्य करे।
दर्शन पावें मंगल गावें सिद्ध साधक तेरी भेंट धरे।
संतन प्रतिपाली सदा० ।। ७।।
ब्रह्मावेद पढ़े तेरे द्वारे हरि शिवशंकर ध्यान करे।
इन्द्र कृष्ण तेरी करै आरती चंवर कुबेर डुलाय करे।।
जय जननि जय मातु भवानी अचल भुवन में राज्य करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली जयकाली कल्याण करे।
संतन प्रतिपाली सदा० ।। ७।।

नवरात्र

।। दुर्गा अर्चन सामग्री।।

सिन्दूर	१० ग्राम	प्रत्येक दिन	
चन्दन	१ गट्टा	मिश्री	५०० ग्राम
अष्टगन्ध	१ पैकेट	पंचमेवा	१ किलो
केशर	१० पुड़िया	गंगाजल	आवश्यकतानुसार
मौली	५० ग्राम	दूध	१/२ किलो प्रतिदिन
यज्ञोपवीत	११	दही	१/२ किलो प्रतिदिन
धूप	४ पैकेट	घी	१/२ किलो प्रतिदिन
अगरबत्ती	४ पैकेट	शहद	१०० ग्राम
कपूर	५ पैकेट छोटे	शक्कर	१ किलो
रूई	२० ग्राम	नारियल	१०
गुलाल	१० ग्राम	श्रीफल	५
अभ्रक	१० ग्राम	स्वर्ण प्रतिमा	१
चावल	१ किलो	स्वर्ण छत्र	१
लौंग	१० ग्राम	पंचरत्न	१
इलायची	१० ग्राम	(सोना हीरा मोती पुखराज/नीलम)	
पानपत्ता	१०	गोमूत्र, गोबर, दूर्वा, कुशा, पुष्प,	
सुपारी	२५० ग्राम	पुष्पमाला, तुलसी, बिल्वपत्र	
पेड़ा	१ किलो	पंचपल्लव- आम, अनार, गूलर, वट, पीपल,	
फल	१ दर्जन	आक ढाक आदि पांच वृक्षों के पत्ते	

सर्वोषधि- मुरा, जटामासी, वच, कचूर, कूट, शिलाजीत, आमाहल्दी, दारूहल्दी, चम्पा, नागरमोथा।

सप्तमृतिका- हाथी स्थान की, घुड़साल की, दीमक की, नदी संगम की, तालाब, की, गौशाला की, राजद्वार की अभाव में गंगा की बालू।

रंग- प्रत्येक ५ ग्राम

लाल, पीला, हरा, काला।

हल्दी पीसी- १०० ग्राम, मेंहदी पीसी, ५० ग्राम, सरसों पीली, १०० ग्राम,

कलश ताम्बे या स्वर्ण का २, थाली कांसे की, २ दीपक १ बड़ा, दीपक छोटे-आरती के, आरती १ पंचमुखी, शंख १, घण्टा १, भगोना पूर्ण पात्र का बड़ा १

चावल पूर्ण पात्र के लिए। घी पूर्ण पात्र के लिए शक्कर पूर्ण पात्र के लिए।

वरण सामग्री-धोती, कुर्ता, आसन, साफा, खड़ाउ, माला, गोमुखी, पंचपात्र अर्घा, सप्तशती पुस्तक, लोटा।

दुर्गा की फोटो या मूर्ति-१, वस्त्र रेशमी साड़ी १ ओढ़नी १, चुनरी आदि।

श्रृंगार सामग्री-आभूषण, कंघी, बिन्दी, चूडी, रूमाल, काजल, सेन्ट, गुलाबजल, रिबन, सौभाग्य पिटारी।

दुपट्टे कन्या पूजन के ६, वजा १, सफेद कपड़ा वेदी का २ गज, चन्दोया का वस्त्र सवा गज, वेदी के लिए ईट या मिट्टी।

प्रोक्षणी प्रणीता पात्र।

चौकी १, वन्दनवार, केले के स्तम्भ, उड़द दाल ५०० ग्राम, हवन सामग्री, तिल २ किलो, चावल १ किलो, जौ ५०० ग्राम, चीनी १ पाव, घी २, पंचमेवा ५०० ग्राम,

उपरोक्त सामग्री को दुर्गायाग, शतचण्डी, सहस्र चण्डी याग में उत्तरोत्तर वृद्धि करें।

दुर्गायाग के लिए विशेष सामग्री- कमलपुष्प, शंख, जावित्री, मोती, स्वर्ण या चांदी की गदा, जायफल, अनेक प्रकार के पुष्प, साक पत्र, गुग्गलु, बडे नमक रहित, लाल चन्दन, त्रिमधु, अपामार्ग, भोजपत्र कमलगट्टा, नारियल, कपूर, पेड़ा, सरियाली, सुरमा, ईख, केला, गुलाल, चन्दनचूरा, छुवारे, गिलोय, काली मिर्च, माखन, मिश्री, अनार पुष्प, खीर, हलुवा, सरसो, बेलपत्र, गोरोचन, गेंदे के पुष्प, फल, श्रीफल।

नवग्रह समिधा-अर्क, पलास, खदिर, अपामार्ग, पीपल, उदम्बर, शमी, दूर्वा, कुशा प्रत्येक १०८, लकड़ी- आम या देवदारू की लकड़ी

वृहद कवच संग्रह

संग्रहकर्ता: श्री शिवस्वरूप यज्ञिक

इस पुस्तक में सूर्य, नारायण, गोपाल, गायत्री, दिव्य काली, हनुमान, गणेश, श्री शरीरोग्यप्रदं दिव्य सूर्य कवचम्, दुर्गा, सरस्वती, तुलसी, अन्नपूर्णा, महालक्ष्मी, नृसिंह, राधा, ध नदा, बटुक भैरव, सुदर्शन, दत्तात्रेय कवच, मृत संजीवनी, प्रत्यंगिरा, दस महाविद्याओं के अलग-अलग, श्री कुण्डिलनी, यमुना, गंगा, परशुराम आदि कवचों का संग्रह किया गया है।

कवच का अर्थ है जिसके धारण करने से शरीर की रक्षा हो, कवच कोई भी लौकिक या परलौकिक, हमारी नित्य-उपासना पूजा में प्रार्थना आदि मंत्र, ध्यान की पूजा रहती है। एक अति प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थ रुद्रयामल तंत्र के उत्तर तंत्र में शिवजी से भगवती द्वारा कवच महात्म्य के बारे में पूछे जाने पर शिवजी बताते हैं कि-

नाम्नाः शत गुणं स्तोत्र ध्यान तस्माच्छतादिकं।
तास्माच्छाताधि के मन्त्रः कवचं तच्छताधिकम्॥

अर्थात नाम से स्तोत्र सौ गुणा, स्तोत्र से अधिक ध्यान फलदायक हैं, ध्यान से सौ गुणा मंत्र लाभ देते हैं और मंत्र से भी सौ गुणा अधिक कवच पाठ से होता है।

प्रत्येक परिवार में रखने योग्य पुस्तक मूल्य 80/- रु०

पुस्तक मंगाने का पता-

कर्मसिंह अमरसिंह, पुस्तक विक्रेता

बड़ा बाजार, हरिद्वार-249401 फोन-01334-225619

सम्पूर्ण पूजन रहस्य भाषा टीका

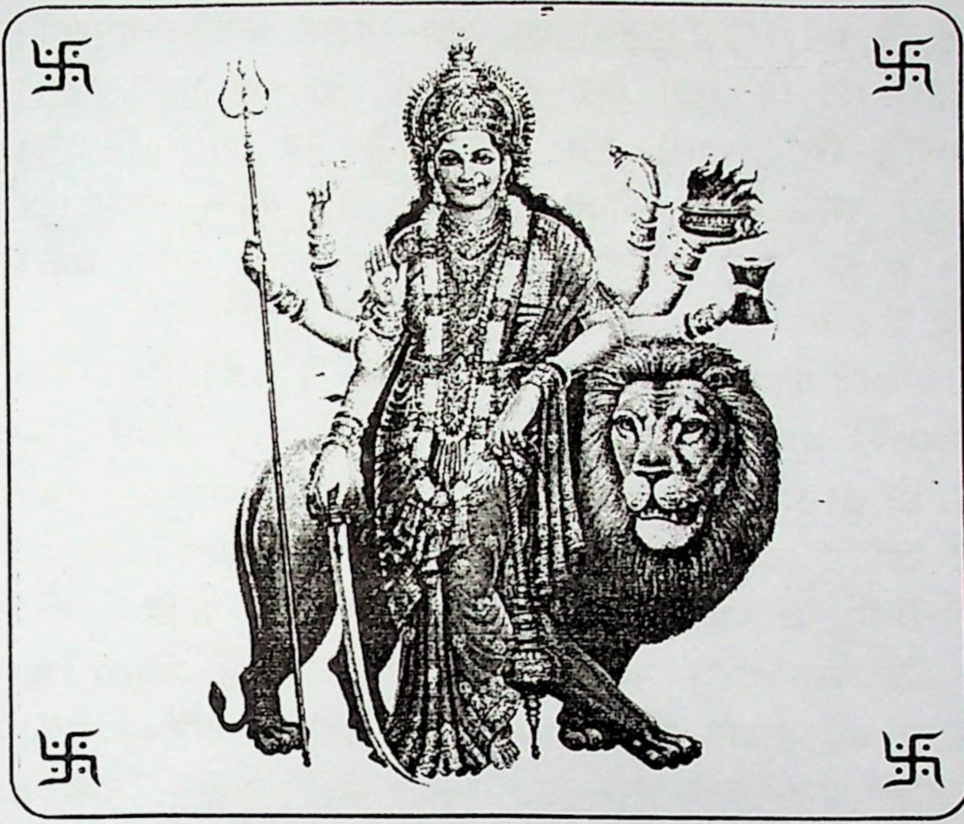
-ले० शिव स्वरूप 'याज्ञिक'

इस पुस्तक में संध्या पाठ सभी देवी-देवताओं के पूजन, शांति पाठ, संकल्प मंत्र, स्वस्तिवाचन, कलश पूजन, नान्दी मुख श्राद्ध, षोडश मातृका पूजन, नवग्रह पूजन, यज्ञ निर्माण पूजन, विष्णु पूजन, शिव पूजन, दुर्गा न्यास विधान पूजन, सर्वतोभद्र देवता स्थापना, अग्नि स्थापना, वारुणी हवन, रुद्र सूक्त, श्री सूक्त, गोदान आशीर्वाद मंत्र, महा मृत्युंजय जप पूजन, संकट नाशक गणेश स्त्रोत, नवनाग स्त्रोत, शनि स्त्रोत, श्रीराम स्तवन बहुत अच्छे ढंग से दी गयी है। प्रत्येक ब्राह्मण प्रत्येक व्यक्ति के घर मे रखने योग्य उपयोगी पुस्तक आज ही खरीदें। 40/-रु०

कर्मकाण्ड षोडश संस्कार रहस्य

लेखक- शिव स्वरूप यज्ञिक

इस पुस्तक में जीवन में होने वाले सोहल संस्कार-गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोनयन, जातकर्म, षष्ठि महोत्सव, नामकरण, निष्क्रमण, अन्न प्रासन, केशाधिवास, चूड़ाकर्म कर्णवेध, विद्यारम्भ, समावर्तन, वाग्दान, षोडश स्तंभ पूजन, विवाह संस्कार आदि को भली प्रकार लिखकर साथ में हिन्दी भाषा का भी प्रयोग कर पुस्तक साधारण विद्वान के लिए भी सरल बन गई है। पुस्तक में गणपत्यादि पंचाग देवताओं के पूजन के साथ संस्कार के मुहूर्तो का भी उल्लेख है। पूजन सामग्री भी हर संस्कार की पुस्तक में लिख दी है जिससे पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई। विद्यार्थियों, साधारण ब्राह्मणों के लिये तो यह पुस्तक बरदान स्वरूप है। अवश्य ही इस पुस्तक को पास रखने से साधारण विद्वान श्रेष्ठ विद्वान बन जाता है। इसलिए इस पुस्तक को अवश्य मंगाये। ल्य 80/-रु०



गुप्त सप्तशती

ॐ ब्रीं–ब्रीं–ब्रीं वेणु–हस्ते, स्तुत–सुर–बटुकैर्हां गणेशस्य माता।
स्वानन्दे नन्द–रूपे, अनहत–निरते, मुक्तिदे मुक्ति–मार्गे।।
हंसः सोहं विशाले, वलय–गति–हसे, सिद्ध–देवी समस्ता।
हीं–हीं–हीं सिद्ध–लोके, कच–रुचि–विपुले, वीर–भद्रे नमस्ते।।१
ॐ हीङ्कारोच्चारयन्ती, मम हरति भयं, चण्ड–मुण्डौ प्रचण्डे।
खां–खां–खां खड्ग–पाणे ध्रक–ध्रक ध्रकिते, उग्र–रूपे स्वरूपे।।
हुँ–हुँ हुङ्कार–नादे, गगन–भुवि–तले, व्यापिनी व्योम–रूपे।
हँ–हँ हङ्कार–नादे, सुर–गण–नमिते, चण्ड–रूपे नमस्ते।।२
ऐं लोके कीर्तयन्ती, मम हरतु भयं, राक्षसान् हन्यमाने।
घ्रां–घ्रां–घ्रां घोर–रूपे, घघ–घघ–घटिते, घर्घरे घोर–रावे।।
निर्मांसे काक–जङ्घे, घसित–नख–नखा, धूम्र–नेत्रे त्रि–नेत्रे।
हस्ताब्जे शूल–मुण्डे, कुल–कुल ककुले, सिद्ध–हस्ते नमस्ते।।३

ॐ क्रीं–क्रीं–क्रीं ऐं कुमारी, कुह–कुह–मखिले, कोकिलेनानुरागे।
मुद्रा–संज्ञ–त्रि–रेखा, कुरु–कुरु सततं, श्री महा–मारि गुह्ये।।
तेजाङ्गे सिद्धि–नाथे, मन–पावन–चले, नैव आज्ञा–निधाने।
ऐङ्कारे रात्रि–मध्ये, स्वपित–पशु–जने, तत्र कान्ते नमस्ते।।४
ॐ व्रां–व्रीं व्रूं व्रै कवित्वे, दहन–पुर–गते रुक्मि–रूपेण चक्रे।
त्रिः शक्त्या, युक्त–वर्णादिक, कर–नमिते, दादिवं पूर्व–वर्णे।।
ह्रीं–स्थाने काम–राजे, ज्वल–ज्वल ज्वलिते, कोशिनि कोश–पत्रे।
स्वच्छन्दे कष्ट–नाशे, सुर–वर–वपुषे, गुह्य–मुण्डे नमस्ते ।।५
ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोर–तुण्डे, घघ–घघ घघघे घर्घरान्याङ्घ्रि–घोषे।
ह्रीं क्रीं द्रूं द्रोञ्च–चक्रे, रर–रर–रमिते, सर्व–ज्ञाने प्रधाने।
द्रीं तीर्थेषु च ज्येष्ठे, जुग–जुग जजुगे म्लीं पदे काल–मुण्डे
सर्वाङ्गे रक्त–धारा–मथन–कर–वरे, वज्र–दण्डे नमस्ते।।६
ॐ क्रां क्रीं क्रूं वाम–नमिते, गगन गड–गडे गुह्य–योनि–स्वरूपे।
वज्राङ्गे, वज्र–हस्ते, सुर–पति–वरदे, मत्त–मातङ्ग – रूढे।।
स्वस्तेजे, शुद्ध–देहे, लल–लल–ललिते, छेदिते पाश–जाले।
कुण्डल्याकार–रूपे, वृष वृषभ–ध्वजे, ऐन्द्रि मातर्नमस्ते।।७
ॐ हुँ–हुँ हुङ्कार–नादे, विषमवश–करे, यक्ष–वैताल–नाथे।
सु–सिद्ध्यर्थे सु–सिद्धेः, ठठ–ठठ–ठठठः, सर्व–भक्षे प्रचण्डे।।
जूं सः सौं शान्ति–कर्मेऽमृत–मृत–हरे, निःसमेसं समुद्रे।
देवि ! त्वं साधकानां, भव–भव वरदे, भद्र–काली नमस्ते।।८
ब्रह्माणी वैष्णवी त्वं, त्वमसि बहुचरा, त्वं वराह–स्वरूपा।
त्वं ऐन्द्री त्वं कुबेरी, त्वमसि च जननी, त्वं कुमारी महेन्द्री।।
ऐं ह्रीं क्लींङ्कार–भूते, वितल–तल–तले, भू–तले स्वर्ग–मार्गे।
पाताले शैल–शृङ्गे, हरि–हर–भुवने, सिद्ध–चण्डी नमस्ते।।६
हं लं क्षं शौण्डि–रूपे, शमित भव–भये, सर्व–विघ्नान्त–विघ्ने।
गां गीं गूं गैं षडङ्गे, गगन–गति–गते, सिद्धिदे सिद्ध–साध्ये।।
वं क्रं मुद्रा हिमांशोर्प्रहसति–वदने, त्र्यक्षरे ह्सैं निनादे।
हां हूं गां गीं गणेशी, गज–मुख–जननी, त्वां महेशीं नमामि।।१०

स्तवन

या देवी खड्ग–हस्ता, सकल–जन–पदा, व्यापिनी विश्व–दुर्गा।
श्यामाङ्गी शुक्ल–पाशाब्दि जगण–गणिता, ब्रह्म–देहार्ध–वासा।।
ज्ञानानां साधयन्ती, तिमिर–विरहिता, ज्ञान–दिव्य–प्रबोधा।
सा देवी, दिव्य–मूर्तिर्प्रदहतु दुरितं, मुण्ड–चण्डे प्रचण्डे।।१
ॐ हां हीं हूं वर्म–युक्ते, शव–गमन–गतिर्भीषणे भीम–वक्त्रे।
क्रां क्रीं क्रूं क्रोध–मूर्तिर्विकृत–स्तन–मुखे, रौद्र–दंष्ट्रा–कराले।।
कं–कं कंकाल–धारी भ्रमसि, जगदिदं भक्षयन्ती ग्रसन्ती–
हुंकारोच्चारयन्ती प्रदहतु दुरितं, मुण्ड–चण्डे प्रचण्डे।।२
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं रुद्र–रूपे, त्रिभुवन–नमिते, पाश–हस्ते त्रि–नेत्रे।
रां रीं रूं रङ्ग–रंगे किले किलित रवा, शूल–हस्ते प्रचण्डे।।
लां लीं लूं लम्ब–जिह्वे हसति, कह–कहा शुद्ध–घोराट्ट–हासैः।
कंकाली काल–रात्रिः प्रदहतु दुरितं, मुण्ड–चण्डे प्रचण्डे।।३
ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोर–रूपे घघ–घघ–घटिते घर्घराराव घोरे।
निर्मांसे शुष्क–जङ्घे पिबति नर–वसा धूम्र–धूम्रायमाने।।
ॐ द्रां द्रीं द्रूं द्रावयन्ती, सकल–भुवि–तले, यक्ष–गन्धर्व–नागान्।
क्षां क्षीं क्षूं क्षोभयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्ड–मुण्डे प्रचण्डे।।४
ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भद्र–काली, हरि–हर–नमिते, रुद्र–मूर्ते विकर्णे।
चन्द्रादित्यौ च कर्णौ, शशि–मुकुट–शिरो वेष्ठितां केतु–मालाम्।।
स्रक्–सर्व–चोरगेन्द्रा शशि–करण–निभा तारकाः हार–कण्ठे।
सा देवी दिव्य–मूर्तिः, प्रदहतु दुरितं चण्ड–मुण्डे प्रचण्डे।।५
ॐ खं–खं–खं खड्ग–हस्ते, वर–कनक–निभे सूर्य–कान्ति–स्वतेजा।
विद्युज्ज्वालावलीनां, भव–निशित महा–कर्त्रिका दक्षिणेन।।
वामे हस्ते कपालं, वर–विमल–सुरा–पूरितं धारयन्ती।
सा देवी दिव्य–मूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्ड–मुण्डे प्रचण्डे।।६
ॐ हुँ–हुँ फट् काल–रात्रीं पुर–सुर–मथनीं धूम्र–मारी कुमारी।

ह्रां ह्रीं ह्रूं हन्ति दुष्टान् कलित किल–किला शब्द अट्टाट्टहासे।।
हा–हा भूत–प्रभूते, किल–किलित–मुखा, कीलयन्ती ग्रसन्ती।
हुंकारोच्चारयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्ड–मुण्डे प्रचण्डे।।७
ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं कपालीं परिजन–सहिता चण्डि चामुंण्ड–नित्ये।
रं–रं रंकार–शब्दे शशि–कर–धवले काल–कूटे दुरन्ते।।
हुँ–हुँ हुंकार–कारि सुर–गण–नमिते, काल–कारी विकारी।
त्रैलोक्यं वश्य–कारी, प्रदहतु दुरितं मुण्ड–चण्डे प्रचण्डे।।८
वन्दे दण्ड–प्रचण्डा डमरु–डिमि–डिमा, घण्ट टंकार–नादे।
नृत्यन्ती ताण्डवैषा शथ–थइ विभवैर्निर्मला मन्त्र–माला।
रूक्षौ कुक्षौ वहन्ती, खर–खरिता रवा चार्चिनि प्रेत–माला।
उच्चैस्तैश्चाट्टहासै, हह हसित रवा, चर्म–मुण्डा प्रचण्डे।।९
ॐ त्वं ब्राह्मी त्वं च रौद्री स च शिखि–गमना त्वं च देवी कुमारी।
त्वं चक्री चक्र–हासा घुर–घुरित रवा, त्वं वराह–स्वरूपा।
रौद्रे त्वं चर्म–मुण्डा सकल–भुवि–तले संस्थिते स्वर्ग–मार्गे।
पाताले शैल–शृङ्गे हरि–हर–नमिते देवि चण्डी नमस्ते।।१०
रक्ष त्वं मुण्ड–धारी गिरि–गुह–विवरे निर्झरे पर्वते वा।
संग्रामे शत्रु–मध्ये विश विषम–विषे संकटे कुत्सिते वा।।
व्याघ्रे चौरे च सर्पेऽप्युदधि–भुवि–तले वह्नि–मध्ये च दुर्गे।
रक्षेत् सा दिव्य–मूर्तिः प्रदहतु दुरितं मुण्ड–चण्डे प्रचण्डे।।११
इत्येवं बीज–मन्त्रैः स्तवनमति–शिवं पातक–व्याधि–नाशम्।
प्रत्यक्षं दिव्य–रूपं ग्रह–गण–मथनं मर्दनं शाकिनीनाम्।।
इत्येवं वेद–वेद्यं सकल–भय–हरं मन्त्र–शक्तिश्च नित्यम्।
मन्त्राणां स्तोत्रकं यः पठति स लभते प्रार्थितां मन्त्र–सिद्धिम्।।१२
चं–चं–चं चन्द्र–हासा चचम चम–चमा चातुरी चित्त–केशी।
यं–यं–यं योग–माया जननि जग–हिता योगिनी योग–रूपा।।
डं–डं–डं डाकिनीनां डमरुक–सहिता दोल हिण्डोल डिम्भा।
रं–रं–रं रक्त–वस्त्रा सरसिज–नयना पातु मां देवि दुर्गा।।१३।।

अथ

बीजमन्त्र (श्रीदुर्गासप्तशती)

प्रारम्भः

।। श्री गणेशाय नमः ।।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै १०८ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि।। तन्नःशक्तिः प्रचोदयात्।। ॐ ऐं श्रींनमः १ॐऐंह्रीं नमः २ॐऐंक्लीं नमः ३ॐऐं श्रींनमः ४ॐऐंप्रींनमः ५ॐऐंह्रांनमः ६ॐऐंह्रींनमः ७ॐऐंस्त्रोंनमः ८ॐऐंप्रेंनमः ९ॐऐंम्रींनमः १०ॐऐंह्ल्रींनमः ११ॐऐंम्लींनमः १२ॐऐंस्त्रींनमः १३ॐऐंक्रां नमः १४ॐऐंह्स्लींनमः १५ॐऐंक्रीं नमः १६ॐऐंचांनमः १७ॐऐंमेंनमः १८ॐऐंक्रींनमः १९ॐऐंवैंनमः २०ॐऐंह्रौंनमः २१ॐऐंयुंनमः २२ॐऐंजुंनमः २३ॐऐंहंनमः २४ॐ ऐंशंनमः २५ॐऐंरोंनमः २६ॐऐंयंनमः २७ॐऐंविंनमः २८ॐऐंवैंनमः २९ॐऐंचेंनमः ३०ॐऐंह्रींनमः ३१ॐऐंक्रूंनमः ३२ॐऐंसंनमः ३३ॐऐंकंनमः ३४ॐऐंश्रांनमः ३५ॐऐंत्रोंनमः ३६ॐऐंस्त्रांनमः ३७ॐऐंज्यंनमः ३८ॐऐंरौंनमः ३९ॐऐंद्रांनमः ४०ॐऐंद्रोंनमः ४१ॐऐंह्रांनमः ४२ॐऐंद्रूंनमः ४३ॐऐंशांनमः ४४ॐऐंमींनमः ४५ॐऐंश्रौंनमः ४६ॐऐंजुंनमः ४७ॐऐंह्ल्रुंनमः ४८ॐऐंश्रूंनमः ४९ॐऐंप्रींनमः ५०ॐऐंरंनमः ५१ॐऐंवंनमः ५२ॐऐंव्रींनमः ५३ॐऐंव्लंनमः ५४ॐऐंस्त्रौंनमः ५५ॐऐंल्वांनमः ५६ॐऐंलूंनमः ५७ॐऐंसांनम ५८ॐऐंरौंनमः ५९ॐऐंस्हौंनमः ६०ॐऐंक्रूंनमः ६१ॐऐंशौंननः ६२ॐऐंश्रौंनमः ६३ॐऐंवंनमः ६४ॐऐंत्रूंनमः ६५ॐऐंक्रौंनमः ६६ॐऐंक्लूंनमः ६७ॐऐंक्लींनमः ६८ॐऐंश्रींनमः ६९ॐऐंव्लूंनमः ७०ॐऐंठांनमः ७१ॐऐंट्रींनमः ७२ॐऐंस्रांनमः ७३ॐऐंस्लूंनमः ७४ॐऐंक्रैंनमः ७५ॐऐंच्रांननः ७६ॐऐंफ्रांनमः ७७ॐऐंजींनमः ७८ॐऐंलूंनमः ७९ॐऐंस्लूंनमः ८०ॐऐंनोंननः ८१ॐऐंस्त्रींनमः ८२ॐऐंप्रूंनमः ८३ॐऐंस्रूंनमः ८४ॐऐंज्रांनमः ८५ॐऐंवांनमः ८६ॐऐंओंनमः ८७ॐऐंश्रौंनमः ८८ॐऐंऋंनमः ८९ॐऐंरूंनमः ९०ॐऐंक्लींनमः ९१ॐऐंदुंनमः ९२ॐऐंह्रींनमः ९३ॐऐंगूंनमः ९४ॐऐंलांनमः ९५ॐऐंह्रांननः ९६ॐऐंगंनमः ९७ॐऐंऐंनमः ९८ॐऐंश्रौंनमः ९९ॐऐंजूंनमः १००ॐऐंडेंनमः १ ॐऐंश्रौंनमः २ ॐऐंघ्रांननः ३ ॐऐंक्लींनमः ४

।। इति प्रथमोऽध्यायः।।१।।

ॐऐंश्रौंनमः १ॐऐंश्रींनमः २ॐऐंह्सूंनमः ३ॐऐंहौंनमः ४ॐऐंह्लींनमः
५ॐऐंअंनमः ६ॐऐंक्लींनमः ७ॐऐंचांनमः ८ॐऐंमुंनमः ९ॐऐंडांनमः
१०ॐऐंयैंनमः ११ॐऐंविंनमः १२ॐऐंच्चेंनमः १३ॐऐंईनमः १४ॐऐंसौंनमः
१५ॐऐंव्रांनमः १६ॐऐंत्रौंनमः १७ॐऐंलंनमः १८ॐऐंवंनमः १९ॐऐंह्लांनमः
२०ॐऐंक्रीनमः २१ॐऐंसौंनमः २२ॐऐंयंनमः २३ॐऐंऐंनमः २४ॐऐंमूंनमः
२५ॐऐंसःनमः २६ॐऐंहंनमः २७ॐ ऐंसंनमः २८ॐऐंसोंनमः २९ॐऐंशंनमः
३०ॐऐंहंनमः ३१ॐऐंह्लौंनमः ३२ॐऐंम्लींनमः ३३ॐऐंयूंनमः ३४ॐऐंत्रूंनमः
३५ॐऐंस्रींनमः ३६ॐऐंआंनमः ३७ॐऐंप्रेंनमः ३८ॐऐंशंनमः ३९ॐऐंह्लांनमः
४०ॐऐंस्मंनमः ४१ॐऐंऊंनमः ४२ॐऐंगूंनमः ४३ॐऐंव्यूंनमः ४४ॐऐंहूंनमः
४५ॐऐंभैंनमः ४६ॐऐंह्लांनमः ४७ॐऐंक्रूंनमः ४८ॐऐंमूंनमः ४९ॐऐंल्रींनमः
५०ॐऐंश्रांनमः ५१ॐऐंद्रूंनमः ५२ॐऐंद्वंनमः ५३ॐऐंह्सौंनमः ५४ॐऐंक्रांनमः
५५ॐऐंस्हौंनमः ५६ॐऐंम्लूंनमः ५७ॐऐंश्रींनमः ५८ॐऐंगैंनमः ५९ॐऐंक्रूंनमः
६०ॐऐंत्रींनमः ६१ॐऐंक्स्रींनमः ६२ॐऐंकंनमः ६३ॐऐंफ्रोंनमः ६४ॐऐंह्लींनमः
६५ॐऐंशांनमः ६६ॐऐंक्ष्म्रींनमः ६७ॐऐंरोंनमः ६८ॐऐंडुंनमः ६९

।। इति द्वितीयोऽध्यायः।।२।।

ॐ ऐंश्रौंनमः १ ॐ ऐंक्लींनमः २ ॐऐंसांनमः ३ ॐऐंत्रोंनमः ४ ॐऐंप्रूंनमः ५ॐऐंग्लौंनमः ६ ॐऐंक्रौंनमः ७ ॐऐंव्रींनमः ८ ॐऐंस्लींनमः ९ ॐऐंह्लींनमः १० ॐऐंहौंनमः ११ ॐऐंश्रांनमः १२ ॐऐंग्रींनमः १३ ॐऐंक्रूंनमः १४ ॐऐंक्रींनमः १५ ॐ ऐंयांनमः १६ ॐऐंद्लूंनमः १७ ॐऐंद्रूंनमः १८ ॐ ऐंक्षंनमः १९ ॐ ऐंअंनमः २० ॐ ऐंक्रौंनमः २१ ॐ ऐंक्ष्म्क्ल्रींनमः २२ ॐ ऐंवांनमः ॐ २३ ॐ ऐंश्रूंनमः २४ ॐ ऐंग्लूंनमः २५ ॐ ऐंल्रींनमः २६ ॐ ऐंप्रेंनमः २७ ॐ ऐंहूंनमः २८ ॐ ऐंह्लौंनमः २९ ॐ ऐंदेंनमः ३० ॐ ऐंनूंनमः ३१ ॐऐंआंनमः ३२ ॐऐंफ्रांनमः ३३ ॐऐंप्रींनमः ३४ ॐऐंदंनमः ३५ ॐऐंफ्रींनमः ३६ ॐऐंह्लींनमः ३७ ॐऐंगूंनमः ३८ॐऐंश्रौंनमः ३९ ॐऐंसांनमः ४० ॐऐंश्रींनमः ४१ ॐऐंजुंनमः ४२ ॐऐंहंनमः ४३ ॐऐंसंनमः४४

।। इति तृतीयोऽध्यायः।।३।।

ॐऐंश्रौंनमः १ ॐऐंसौंनमः २ ॐऐंदींनमः ३ॐऐंप्रींनमः ४ॐऐंयांनमः
५ॐऐंरूंनमः ६ॐऐंभंनमः ७ॐऐंसूंनमः ८ॐऐंश्रांनमः ९ॐऐंओंनमः
१०ॐऐंलूंनमः ११ॐऐंडूंनमः १२ॐऐंजूंनमः १३ॐऐंधूंनमः १४ॐऐंत्रंनमः

१५ॐऐंह्लींनमः १६ॐऐंश्रींनमः १७ॐऐंईनमः १८ॐऐंह्लांनमः १६ॐऐंह्ल्रूंनमः २०ॐऐंक्लूंनमः २१ॐऐंक्रांनमः २२ॐऐंल्लूंनमः २३ॐऐंफ्रंनमः २४ॐऐंक्लींनमः २५ॐऐंम्लूंनमः २६ॐऐंघ्रेंनमः २७ॐऐंश्रौंनमः २८ॐऐंह्लौंनमः २६ॐऐंव्रींनमः ३०ॐऐंह्लींनमः ३१ॐऐंत्रौंनमः ३२ॐऐंह्ल्लौंनमः ३३ॐऐंगींनमः ३४ॐऐंयूंनमः ३५ॐऐंह्लींनमः ३६ॐऐंह्लंनमः ३७ॐऐंश्रौंनमः ३८ॐऐंओंनमः ३६ॐऐंअंनमः ४०ॐऐंम्हौंनमः ४१ॐऐंप्रींनमः ।।४२।।

।। इति चतुर्थोऽध्यायः ।।४।।

ऐंश्रौंनमः १ ॐ ऐंप्रींनमः २ ॐ ऐंओंनमः ३ ॐ ऐंह्लींनमः ४ ॐ ऐंल्रींनमः ५ ॐ ऐंत्रोंनमः ६ ॐ ऐंक्रांनमः ७ ॐ ऐंह्सौंनमः ८ ॐ ऐंह्लींनमः ६ ॐ ऐंश्रौंनमः १० ॐ ऐंह्याहूंनमः ११ ॐ ऐंक्लींनमः १२ ॐ ऐंरौंनमः १३ ॐ ऐंस्त्रींनमः १४ ॐ ऐंम्लीं नमः १५ ॐ ऐंप्लुंनमः १६ ॐ ऐंम्हौंनमः १७ ॐ ऐंस्त्रींनमः १८ ॐ ऐंग्लूंनमः १६ ॐ ऐंव्रींनमः २० ॐ ऐंसौंनमः २१ ॐ ऐंलूंनमः २२ ॐ ऐंल्लूंनमः २३ ॐ ऐंद्रांनमः २४ ॐ ऐंक्सांनमः २५ ॐ ऐंक्ष्रींनमः २६ ॐ एंग्लौंनमः २७ ॐ ऐंस्कंनमः २८ ॐ ऐंत्रूंनमः २६ ॐ ऐंस्व्लूंनमः ३० ॐ ऐंक्रौंनमः ३१ ॐ ऐंघ्रींनमः ३२ ॐ ऐंम्लूंनमः ३३ ॐ ऐंक्लूंनमः ३४ ॐ ऐंशांनमः ३५ ॐ ऐंल्हींनमः ३६ ॐ ऐंस्त्रूंनमः ३७ ॐ ऐंल्लींनमः ३८ ॐ ऐंलींनमः ३६ ॐ ऐंसंनमः ४० ॐ ऐंलूंनमः ४१ ॐ ऐंह्सूंनमः ४२ ॐ ऐंश्रूंनमः ४३ ॐ ऐंजूंनमः ४४ ॐ ऐंह्स्ल्रींनमः ४५ ॐ ऐंस्कींनमः ४६ ॐ ऐंकलांनमः ४७ ॐ ऐंश्रूंनमः ४८ ॐ ऐंहंनमः ४६ ॐ ऐंह्लींनमः ५० ॐ ऐंक्स्रूंनमः ५१ ॐ ऐंद्रौंनमः ५२ ॐ ऐंक्लूंनमः ५३ ॐ ऐंगांनमः ५४ ॐ ऐंसंनमः ५५ ॐ ऐंल्स्रांनमः ५६ ॐ ऐंफ्रींनमः ५७ ॐ ऐंस्लांनमः ५८ ॐ ऐंल्लूंनमः ५६ ॐ ऐंफ्रेंनमः ६० ॐ ऐंओंनमः ६१ ॐ ऐंस्म्लींनमः ६२ ॐ ऐंह्लांनमः ६३ ॐ ऐंऊंनमः ६४ ॐ ऐंह्लंनमः ६५ ॐ ऐंहूंनमः ६६ ॐ ऐंनंनमः ६७ ॐ ऐंस्रांनमः ६८ ॐ ऐंवंनमः ६६ ॐ ऐंमंनमः ७० ॐ ऐंम्कलांनमः ७१ ॐ ऐंशांनमः ७२ ॐ ऐंल्लंनमः ७३ ॐ ऐंभैंनमः ७४ ॐ ऐंल्लूंनमः ७५ ॐ ऐंहौंनमः ७६ ॐ ऐंईनमः ७७ ॐऐंचेंनमः ७८ ॐऐंल्क्रींनमः ७६ ॐऐंह्ल्रींनमः ८० ॐऐंक्ष्म्ल्रींनमः ८१ ॐऐंपूंनमः ८२ ॐऐंश्रौंनमः ८३ ॐऐंह्लौंनमः ८४ ॐऐंभ्रूंनमः ८५ ॐऐंक्स्त्रींनमः ८६ ॐऐंआंनमः ८७ ॐऐंक्रूंनमः ८८ ॐऐंत्रूंनमः ८६ ॐऐंडुंनमः ६०

ॐऐजांनमः ६१ ॐऐह्ल्रूंनमः ६२ ॐऐंफ्रांनमः ६३ ॐऐंक्रांनमः ६४
ॐऐंकिंनमः ६५ ॐऐंग्लूंनमः ६६ ॐऐंछ्कलींनमः ६७ ॐऐंरंनमः ६८
ॐऐंक्सैंनमः ६६ ॐऐंस्हुंनमः १०० ॐऐंश्रौंनमः १०१ ॐऐंश्श्रींनमः १०२
ॐऐंओंनमः १०३ ॐऐंलूंनमः १०४ ॐऐंल्हूंनमः १०५ ॐऐंल्लूंनमः १०६
ॐऐंस्क्रींनमः १०७ ॐऐंस्त्रोंनमः १०८ ॐऐंस्भ्रूंनमः १०६ ॐऐंक्ष्म्कलींनमः
११० ॐऐंव्रींनमः १११ ॐऐंसींनमः ११२ ॐऐंभूंनमः ११३ ॐऐंलांनमः ११४
ॐऐंश्रौंनमः ११५ ॐऐंस्हैंनमः ११६ ॐऐंह्लींनमः ११७ ॐऐंश्रींनमः ११८
ॐऐंफ्रेंनमः ११६ ॐऐंरूंनमः १२० ॐऐंच्छ्रंनमः १२१ ॐऐंल्हूंनमः १२२
ॐऐंकंनमः १२३ ॐऐंद्रंनमः १२४ ॐ ऐंश्रींनमः १२५ ॐ ऐंसांनमः १२६
ॐ ऐंह्लींनमः १२७ ॐऐंऐंनमः १२८ ॐऐंस्कींनमः १२६

।। इति पञ्चमोऽध्यायः।।५।।

ॐ ऐंश्रौंनमः १ ॐऐंओंनमः २ ॐऐंत्रूंनमः ३ ॐ ऐंह्लौंनमः ४ ॐऐंक्रौंनमः
५ ॐऐंश्रौंनमः ६ ॐऐंत्रींनमः ७ ॐऐंक्लींनमः ८ ॐऐंप्रींनमः ६ ॐऐंह्लीनमः
१० ॐऐंहौनमः ११ ॐऐंश्रौंनमः १२ ॐऐंऐंनमः १३ ॐऐंओंनमः १४
ॐऐंश्रींनमः १५ ॐऐंक्रांनमः १६ ॐऐंहूंनमः १७ ॐऐंछ्रांनमः
१८ॐऐंक्ष्म्क्लरींनमः १६ ॐऐंल्लुंनमः २० ॐ ऐंसौंनमः २१ ॐ ऐंह्लौंनमः
२२ ॐ ऐंक्रुंनमः २३ ॐ ऐंसौंनमः २४

।। इति षष्ठोऽध्यायः।।६।।

ॐऐंश्रौंनमः १ ॐऐंकुंनमः २ ॐऐंह्लींनमः ३ ॐ ऐंह्रंनमः ४ ॐऐंमूंनमः ५
ॐऐंत्रौंनमः ६ ॐऐंह्लौंनमः ७ ॐऐंओंनमः ८ ॐऐंह्सूंनमः ६ ॐ ऐंक्लूंनमः
१० ॐऐंक्रंनमः ११ ॐऐंनैंनमः १२ ॐऐंलूंनमः १३ ॐऐंह्स्लीं नमः १४
ॐऐंप्लूंनमः १५ ॐऐंशांनमः १६ ॐऐंस्लूंनमः १७ ॐऐंप्लांनमः १८ ॐऐंप्रेंनमः
१६ ॐऐंअंनमः २० ॐऐंऔंनमः २१ ॐऐंम्लींनमः २२ ॐ ऐंश्रांनमः २३
ॐऐंसौंनमः २४ ॐऐंश्रौंनमः २५ ॐ ऐंप्रींनमः २६ ॐऐंहस्रौंनमः २७

।। इति सप्तमोऽध्यायः ।। ७।।

ॐऐंश्रौंनमः १ ॐऐंम्ल्हरींनमः २ ॐऐंप्रूंनमः ३ ॐऐंएंनमः ४ ॐऐंक्रोंनमः
५ ॐऐंईंनमः ६ ॐऐंएंनमः ७ ॐऐंल्रींनमः ८ ॐऐंफ्रौंनमः ६ ॐऐंम्लूंनमः
१० ॐऐंनोंनमः ११ ॐऐंद्रूंनमः १२ ॐऐंफ्रांनमः १३ ॐऐंग्लौंनमः १४
ॐऐंस्मोंनमः १५ ॐऐंसौंनमः १६ ॐऐंश्रींनमः १७ ॐऐंस्होंनमः १८

ॐऐंख्सेंनमः १६ ॐऐंक्ष्म्लींनमः २० ॐऐंह्लैंनमः २१ ॐऐंवींनमः २२ ॐऐंलंनमः २३ ॐऐंल्सींनमः २४ ॐऐंब्लींनमः २५ ॐऐंत्स्त्रोंनमः २६ ऐंब्रुंनमः २७ ॐऐंश्क्लांनमः २८ ॐऐंश्रूंनमः २६ ॐऐंह्लींनमः ३० ॐऐंशींनमः ३१ ॐऐंक्लींनमः ३२ ॐऐंकलौंनम ३३ ॐऐंफ्रंनमः ३४ ॐऐंह्लंनमः ३५ ॐऐंक्लूंनमः ३६ ॐऐंर्तोनमः ३७ ॐऐंम्लंनमः ३८ ॐऐंहंनमः ३६ ॐऐंस्लूंनमः ४० ॐऐंऔंनमः ४१ ॐऐंल्हौंनमः ४२ ॐऐंल्श्रींनमः ४३ ॐऐंयांनमः ४४ ॐऐंथ्लींनमः ४५ ॐऐंल्हींनमः ४६ ॐऐंग्लौंनमः ४७ ॐऐंह्लौंनमः ४८ ॐऐंप्रांनमः ४६ ॐऐंक्रींनमः ५० ॐऐंक्लींनमः ५१ ॐ ऐंन्स्लुंनमः ५२ ॐ ऐंहींनमः ५३ ॐऐंह्लौंनमः ५४ ॐऐंह्लैंनमः ५५ ॐऐंभ्रंनमः ५६ ॐऐंसौंनमः ५७ ॐऐंश्रींनमः ५८ ॐऐंप्सूंनमः ५६ ॐऐंद्रौंनमः ६० ॐऐंस्स्रांनमः ६१ ॐऐंह्स्लांनमः ६२ ॐऐंस्ल्ल्रींनमः ६३

।। इत्यष्टमोऽध्यायः ।।८।।

ॐऐंरौंनमः १ ॐऐंक्लींनमः २ ॐऐंम्लौंनमः ३ ॐऐंश्रौंनमः ४ ॐऐंग्लींनमः ५ ॐऐंह्लौंनमः ६ ॐऐंह्सौंनमः ७ ॐऐंईंनमः ८ ॐऐंब्रूंनमः ६ ॐऐंश्रांनमः १० ॐऐंलूंनमः ११ ॐऐंआंनमः १२ ॐऐंश्रींनमः १३ ॐऐंक्रौंनमः १४ ॐऐंप्रंनमः १५ ॐऐंक्लींनमः १६ ॐऐंभ्रूंनमः १७ ॐऐंह्लौंनमः १८ ॐऐंत्रींनमः १६ ॐऐंम्लींनमः २० ॐऐंग्लौंनमः २१ ॐऐंह्सूंनमः २२ ॐऐंप्लींनमः २३ ॐऐंह्लौंनमः २४ ॐऐंह्स्रांनमः २५ ॐ ऐंस्हौंनमः २६ ॐऐंल्लूंनमः २७ ॐऐंक्स्लींनमः २८ ॐऐंश्रींनमः २६ ॐऐंस्तूंनमः ३० ॐऐंच्रेंनमः ३१ ॐऐंवींनमः ३२ ॐऐंक्ष्लूंनमः ३३ ॐऐंश्लूंनमः ३४ ॐऐंक्रूंनमः ३५ ॐऐंक्रांनमः ३६ ॐऐंह्लौंनमः ३७ ॐऐंक्रांनमः ३८ ॐऐंस्क्ष्लींनमः ३६ ॐऐंभ्रूंनमः ४० ॐएफूंनमः ४१

।। इति नवमोऽध्यायः ।।६।।

ॐऐंश्रौंनमः १ ॐऐंह्लींनमः २ ॐऐंव्लूंनमः ३ ॐऐंह्लींनमः ४ ॐऐंम्लंनमः ५ ॐऐंश्रौंनमः ६ ॐऐंह्लींनमः ७ ॐऐंग्लींनमः ८ ॐऐंह्लंनमः ६ ॐऐंधूंनमः १० ॐऐंहुंनमः ११ ॐऐंद्रौंनमः १२ ॐऐंश्रींनमः १३ ॐऐंत्रूंनमः १४ ॐऐंब्रूंनमः १५ ॐऐंफ्रेंनमः १६ ॐऐंह्लांनमः १७ ॐऐंजुंनमः १८ ॐऐंसौंनमः १६ ॐऐंस्लूंनमः २० ॐऐंप्रेंनमः २१ ॐऐंहेस्वांनमः २२ ॐऐंप्रींनमः २३ ॐऐंफ्रांनमः २४ ॐऐंक्रींनमः २५ ॐऐंश्रींनमः २६ ॐऐंक्रांनमः २७ ॐऐंसंनमः २८

ॐऐंक्लींनमः २६ ॐऐंव्रेंनमः ३० ॐऐंइंनमः ३१ ॐऐंज्स्हल्रींनमः ।।३२।।

।। इति दशमोऽध्यायः।।१०।।

ॐऐंश्रौंनमः १ ॐऐंक्रंनमः २ ॐऐंश्रौंनमः ३ ॐऐंल्लींनमः ४ ॐऐंप्रेंनमः ५ ॐऐंसौंनमः ६ ॐऐंस्हौंनमः ७ ॐऐंत्रूंनमः ८ ॐ ऐंक्लींनमः ६ ॐ ऐंस्क्लींनमः १० ॐ ऐंप्रींनमः ११ ॐ ऐंग्लौंनमः १२ ॐ ऐंह्स्ह्लींनमः १३ ॐ ऐंस्तौंनमः १४ ॐ ऐंलींनमः १५ ॐ ऐंम्लींनमः १६ ॐ ऐंस्तूंनमः १७ ॐ ऐंज्स्ह्लींनमः १८ ॐ ऐंफ्रंनमः १६ ॐ ऐंक्रंनमः २० ॐ ऐंह्लींनमः २१ ॐ ऐंल्लूंनमः २२ ॐ ऐंक्ष्म्रींनमः २३ ॐ ऐंश्रूंनमः २४ ॐ ऐंइंनमः २५ ॐ ऐंजूंनमः २६ ॐ ऐंत्रैंनमः २७ ॐ ऐंद्रूंनमः २८ ॐ ऐंह्लौंनमः २६ ॐ ऐंक्लींनमः ३० ऐंसूंनमः ३१ ॐ ऐंहौंनमः ३२ ॐ ऐंश्व्रंनमः ३३ ॐ ऐंव्रूंनमः ३४ ॐ ऐंस्फ्रूंनमः ३५ ॐ ऐंह्लींनमः ३६ ॐ ऐंलंनमः ३७ ॐ ऐंह्सौंनमः ३८ ॐ ऐंसेंनमः ३६ ॐ ऐंह्लींनमः ४० ॐ ऐंह्लींनमः ४१ ॐ ऐंविंनमः ४२ ॐ ऐंप्लींनमः ४३ ॐ ऐंक्ष्म्कलींनमः ४४ ॐ ऐंत्स्त्रांनमः ४५ ॐ ऐंप्रंनमः ४६ ॐ ऐंम्लींनमः ४७ ॐ ऐंस्रूंनमः ४८ ॐ ऐंक्ष्मांनमः ४६ ॐ ऐंस्तूंनमः ५० ॐ ऐंस्ह्लींनमः ५१ ॐ ऐंथ्प्रींनमः ५२ ॐ ऐंक्रौंनमः ५३ ॐ ऐंश्रांनमः ५४ ॐ ऐंम्लींनमः ५५

।। इत्येकादशोध्यायः।।११।।

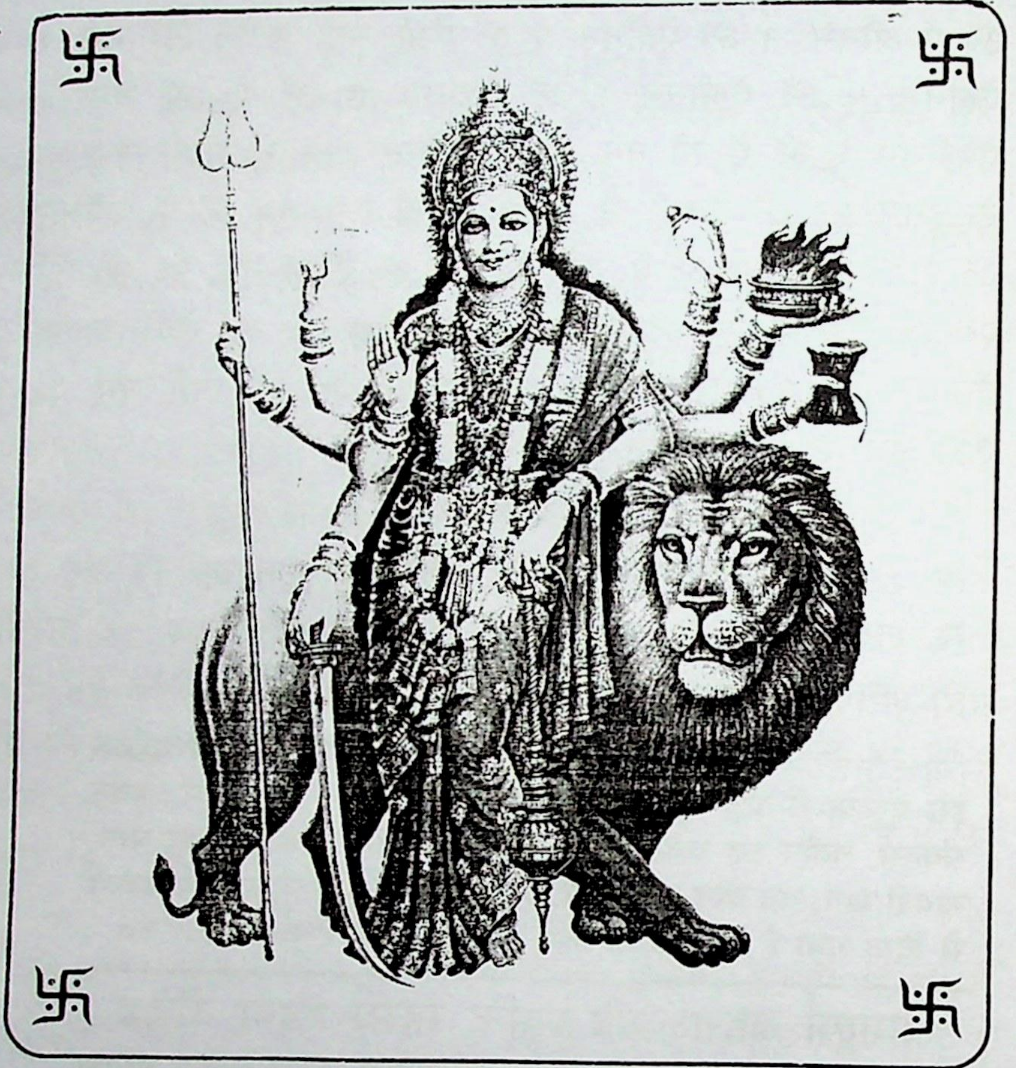
ॐ ऐं ह्लीं नमः १ ॐ ऐं आं नमः २ ॐ ऐं श्रीं नमः ३ ॐ ऐं आं नमः ४ ॐ ऐं क्लीं नमः ५ ॐ ऐं क्रू नमः ६ ॐ ऐं श्रूंनमः ७ ॐ ऐंप्रांनमः ८ ॐ ऐंक्रूं नमः ६ ॐ ऐं दिं नमः १० ॐ ऐं फ्रें नमः ११ ॐ ऐं हं नमः १२ ॐ ऐं सं नमः १३ ॐ ऐं चें नमः १४ ॐ ऐं सूं नमः १५ ॐ ऐं प्रीं नमः १६ ॐ ऐंव्लूं नमः १७ ॐ ऐं आं ननः १८ ॐ ऐं औं ननः १६ ॐ ऐं ह्लीं नमः २० ॐ ऐं क्रीं नमः २१ ॐ ऐंद्रां नमः २२ ॐ ऐं श्रीं नमः २३ ॐ ऐं स्लीं नमः २४ ॐ ऐं क्लीं नमः २५ ॐ ऐंस्लूं नमः २६ ॐ ऐंह्लीं नमः २७ ॐ ऐंव्लीं नमः २८ ॐ ऐं त्रों ननः २६ ॐ ऐं ओं नमः ३० ॐ ऐं श्रौं नमः ३१ ॐ ऐं ऐं नमः ३२ ॐ ऐं प्रं नमः ३३ ॐ ऐं द्रूं नमः ३४ ॐ ऐं क्लूं नमः ३५ ॐ ऐं औं नमः ३६ ॐ ऐं सूं नमः ३७ ॐ ऐं चें नमः ३८ ॐ ऐं ह्रं नमः ३६ ॐ ऐंप्लींनमः ४० ॐ ऐंक्षां नमः ४१

।। इति द्वादशोऽध्यायः।।१२।।

ॐ ऐं श्रौंनमः १ ॐ ऐंव्रींनमः २ ॐ ऐंओं नमः ३ ॐ औं नमः ४ ॐ ऐंह्लांनमः ५ ॐ ऐंश्रींनमः ६ ॐ ऐंश्रांनमः ७ ॐ ऐं ओं नमः ८ ॐ ऐंप्लींनमः ६ ॐ ऐं सों नमः १० ॐ ऐंह्लींनमः ११ ॐ ऐंक्रीं नमः १२ ॐ ऐंल्लूंनमः १३ ॐ ऐंक्लींनमः १४ ॐ ऐं ह्लीं नमः १५ ॐ ऐं प्लींनमः १६ ॐ ऐं श्रीं नमः १७ ॐ ऐं ल्लीं नमः १८ ॐ ऐं श्रूं नमः १६ ॐ ऐंह्लींनमः २० ॐ ऐंत्रूंनमः २१ ॐ ऐंहूंनमः २२ ॐ ऐंह्लांनमः २३ ऐंप्रींनमः २४ ॐ ऐंऊंनमः २५ ॐ ऐंसूंनमः २६ ॐ ऐंह्लौंनमः २७ ॐ ऐंषौं नमः २८ ॐ ऐआं नमः २६ ॐ ऐंओंनमः ३०

।। इति त्रयोदशोऽध्यायः ।। १३ ।।

।। इति सप्तशतीमन्त्राणां बीजमन्त्राः समाप्ताः ।।



देवी पुष्पाञ्जली स्तोत्रम्

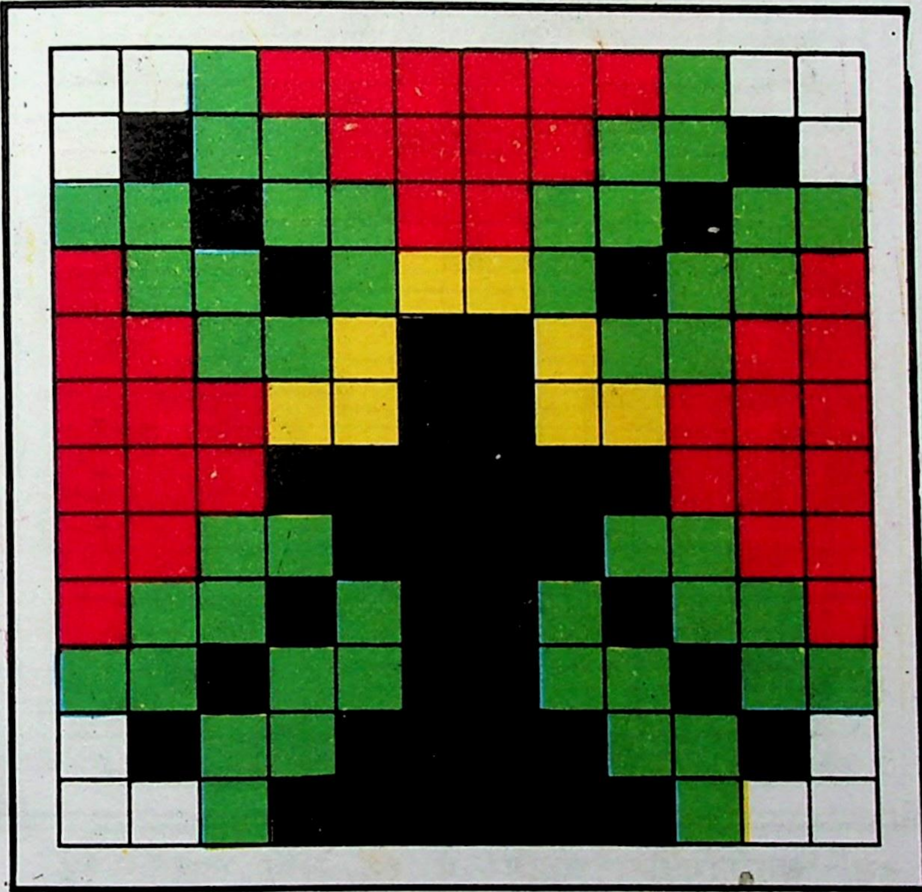
अयि गिरि–नन्दिनि नन्दित–मेदिनि विश्व–विनोदिनि नन्दिनुते;
गिरिवर–विन्ध्य–शिरोधि–निवासिनि विष्णु–विलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठ–कुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूतिकृते:
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि ! शैलसुते! ।।१।।
सुरवरवर्षिणि दुर्धरधार्षिणि दुर्मुखमर्षिणी हर्षरते;

त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि कल्मषमोषिणि घोषरते।
दनुज–निरोषिणि दुर्मदशोषिणी दुर्मुनि रोषिणी सिन्धुसुते।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते!।।२।।
अयिजगदम्ब! कदम्ब–बन–प्रियवासिनितोषिणि हासरते:
शिखरि–शिरोमणि–तुङ्ग हिमालय–श्रृंङ्ग–निजालय–मध्यगते।
मधुमधुरे मधुकैटभ–गंजिनि महिषविदारिणी रासरते;
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते!।।३।।
अयि निजहुँकृति–मात्रनिराकृत–धूम्रविलोचन–धूम्रशते;
समर–विशोषित–रोषित–शोणित–बीजसमुद्भव बीजलते।
शिव–शिव शुम्भ–निशुम्भ–महाहव तर्पित–भूत–पिशाचरते;
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते!।।४।।
अयि शतखण्ड–विखण्डित–रुण्ड–वितुण्डित–शुण्ड–गजाधिपते;
निजभुजदण्ड–निपातितचण्ड–विपाटित–मुण्ड–भटाधिपते;
रिपुगजगण्ड–विदावरण–चण्ड पराक्रम शौण्ड–मृगाधिपते;
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते!।।५।।
धनुरनुषङ्ग–रणक्षणसङ्ग–परिस्फुरदङ्ग–नटत्कटके;
कनक–पिशङ्ग–पृषत्कनिषङ्ग–रसद्भट श्रृङ्ग हता बटुके
हत चतुरङ्ग बल क्षितिरङ्ग–घटद् बहुरङ्ग रटद्वटुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते! ।।६।।
अयि रणदुर्मद–शत्रुवधाद्धुर–दुर्धर–निर्भर–शक्तिभृते:
चतुर–विचार–धुरीण–महाशय–दूतकृत–प्रमथाधिपते।
दुरित–दुरीह–दुराशय–दुर्मति–दानवदूत–दुरन्तगते;
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते! ।।७।।
अयि शरणागत–वैरिवधू–जन–वीरवराभय–दायिकरे;
त्रिभुवन–मस्तक शूलविरोधि–शिरोधि–कृतामल–शूलकरे।
दुमि दुमितामर–दुन्दुभिनाद–मुहुर्मुखरीकृत–दिङ्निकरे;

जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते!।।८।।
सुरललना–ततथेयित–थेयित–थामिनयोत्तर–नृत्यरते।
कृतकुकुथा–कुकुथोदि–डडादिक–तालकुतूहल–गानरते।
धुधुकुट–धूधुट–धिन्धिमितध्वनि–धीर–मृदङ्ग निनादरते;
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते!।।६।।
जय जय जाप्यजये जयशब्द–परस्तुति–तत्पर–विश्वनुते;
झण–झण झिंझिम्–झिंकृत–नूपुर–शिञ्जित–मोहित–भूतपते।
नटित नटार्थ–नटीनटनायक–नाट–ननाटित–नाट्यरते:
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते!।।१०।।
अयि सुमनः–सुमनः–सुमनः सुमनोरम–कान्तियुते;
श्रितरजनी–रजनी–रजनी–रजनी–रजनीकर–वक्त्रभृते;
सुनयन–विभ्रमर–भ्रमर–भ्रमर–भ्रमर–भ्रमराभिदृते;
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते!।।११।।
महित–महाहव–मल्लमतल्लिक–बल्लित–रल्लित–भल्लिरते;
विरचित–बल्लि–कपालिक–पल्लिक–झिल्लिक–भिल्लिक–वर्गवृते।
श्रुतकृतपुल्ल–समुल्लसितारुण–तल्लज–पल्लव–सल्लसिते;
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते!।।१२।।
अयि सुदतीजन–लालस–मानस–मोहन–मन्मथ–राजसुते
अविरल–गण्डगलन्–मदमेदुर–मत्त–मत्तङ्गजराजगते।
त्रिभुवन–भूषण–भूतकलानिधि–रूप–पयोनिधि–राजसुते;
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते!।।१३।।
कमलदयामल–कोमलकान्ति–कलाकलितामल–भालतले;
सकल–विलास–कलानिलय–क्रम–केलि–चलत्कल–हंसकुले।
अलिकुल–संकुल–कुन्तल–मण्डल–मौलिमिलद्–बकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते!।।१४।।
करमुरलीरव–वर्जित–कूजित–लज्जित–कोकिल–मञ्जुमते;

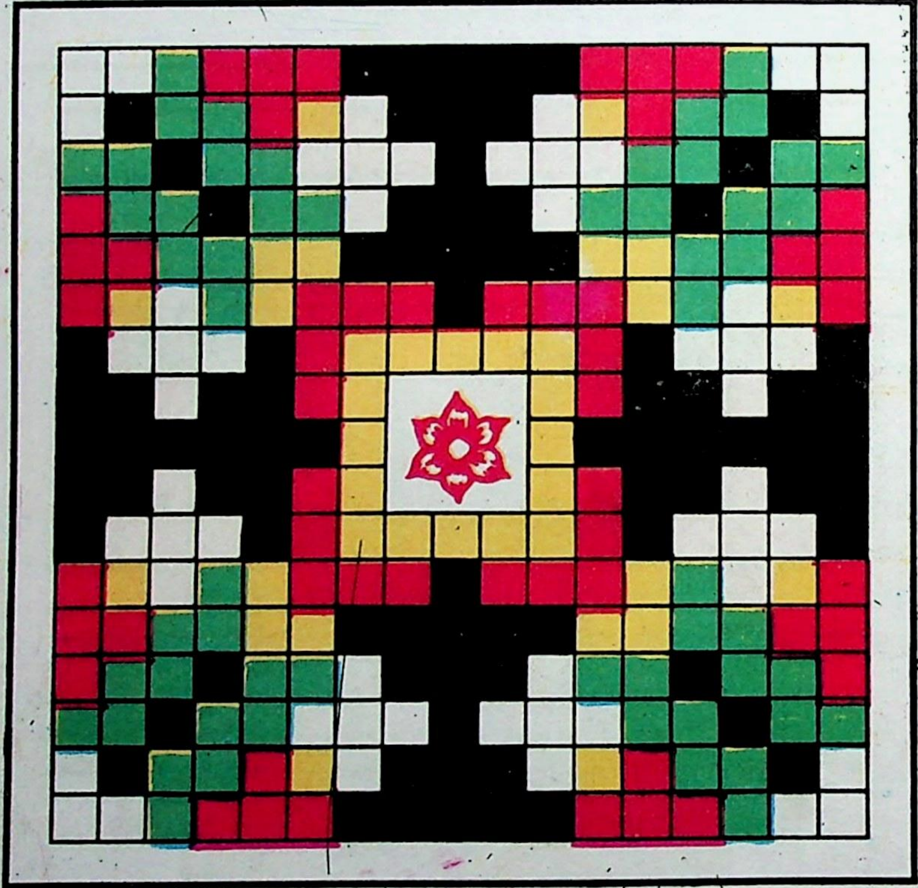
मिलित–मिलिन्द–मनोहर–गुञ्जित–रञ्जित–शैल–निकुञ्जगते।
निजगण–भूत–महाशबरीगण–रङ्गण–सम्भृत–केलिरते;
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते!।।१५।।
कटितट–पीत–दुकूल–विचित्र–मयूख–तिरस्कृत–चण्डरुचे;
जित–कनकाचल–मौलि–मदोर्जित गर्जित–कुञ्जर–कुम्भकुचे।
प्रणत–सुराऽसुर–मौलिमणि–स्फुरदंशु–लसन्नख–चन्द्ररुचे;
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते! ।।१६।।
विजित–सहस्त्र–करैक–सहस्त्र–करैक–सहस्त्र–करैकनुते;
कृत–सुरतारक–सङ्गरतारक–सङ्गरतारक–सूनुनुते।
सुरथ–समाधि–समान–समाधि–समान–समाधिसुजाप्यरते;
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते!।।१७।।
पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे;
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं नभवेत्।
तव पदमेव परं पदमस्त्विति शीलयतो ममकिं न शिवे;
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते!।।१८।।
कनक–लसत्–कलशीकजलै–रनुषिञ्चति तेऽङ्गण–रंगभुवम्;
भजति स किं न शची–कुच–कुम्भ–नटी–परिरम्भ–सुखानुभवम्।
तवचरणं शरणं करवाणि सुवाणि पथं मम देहि शिवम्;
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते!।।१६।।
तव विमलेन्दुकलं वदनेन्दुमलं कलयन्ननुकूलयते;
किमु पुरुहूत–पुरन्दिमुखी–सुमुखीभिरसौ विमुखी क्रियते।
मम तु मतं शिवमानधने भवती कृपया इदमनुक्रियते;
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते!।।२०।।
अयिमयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे;
अयि जगतो जननीति यथाऽसि मयाऽसि तथाऽनुमतासिरमे।
यदुचित्तमत्र भवत्पुरगं कुरुशाम्भवि देवि दयां कुरु मे;
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते!।।२१।।
स्तुतिमिमां स्तिमितः सुसमाधिना नियमतो यमतोऽनुदिनं पठेत्।
परमया रमया स निषेव्यते परिजनोऽरिनोऽपि च तं भजेत्।।२२।।

एकलिंगतोभद्रचक्रम्



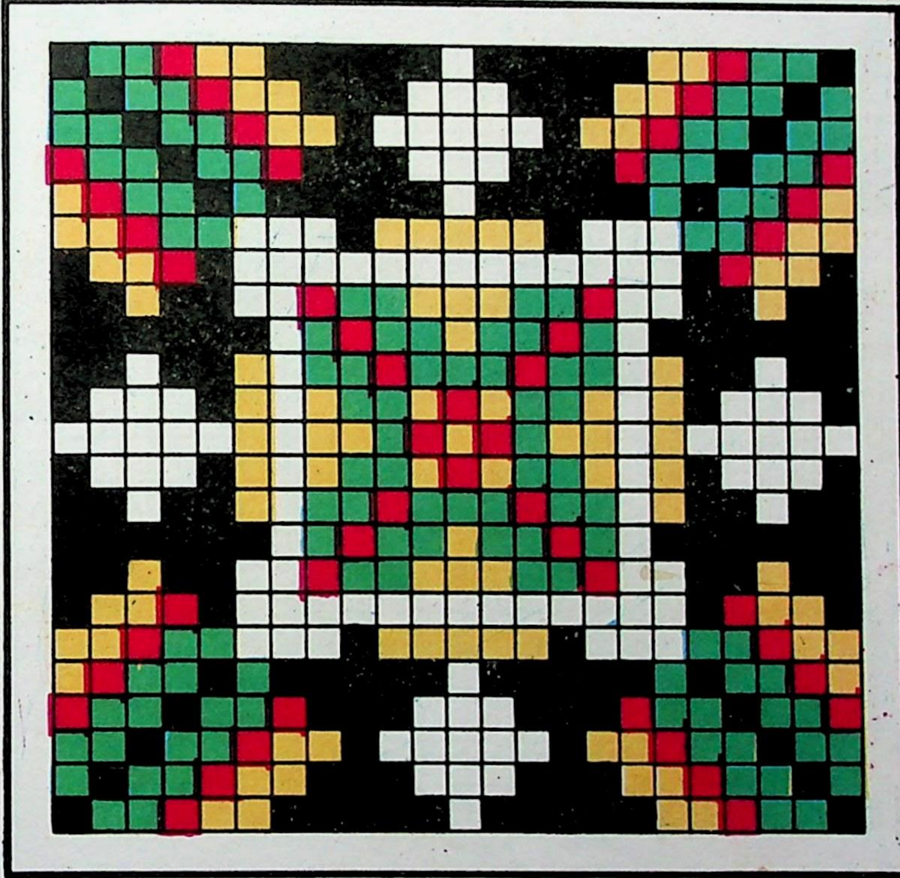
इस 'एकलिंगातोभद्रचक्र' में १३ खड़ी लाइनें, १३ आड़ी लाइनों से कुल १४४ चौकोर बनते हैं। इसमें लाल रंग में मसूर की दाल, हरा रंग में मूंग, पीले रंग में चने की दाल, सफेद रंग में चावल एवं काले रंग में उड़द की दाल भरी जाती है।

चतुर्लिंगतोभद्रचक्रम्



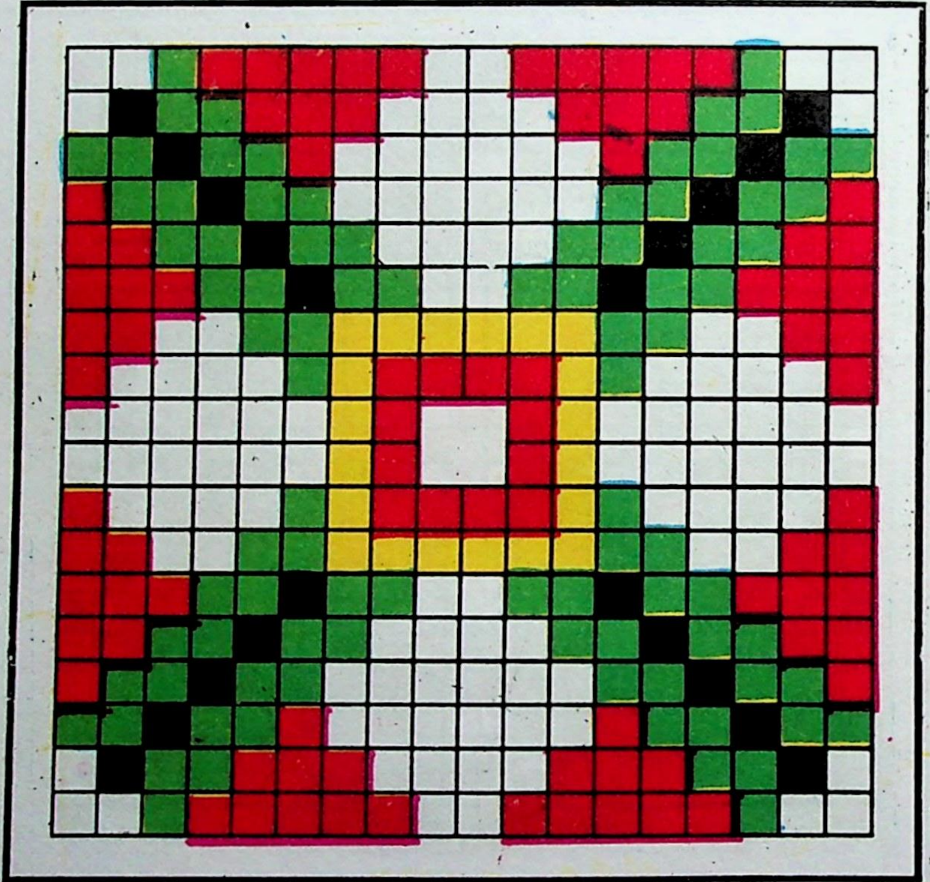
इस 'चतुर्लिंगतोभद्रचक्रम्' में १८ खड़ी लाइनें, १८ आड़ी लाइनों से कुल २८९ चौकोर बनते हैं। इसमें लाल रंग में मसूर की दाल, हरे रंग में मूंग, पीले रंग में चने की दाल, सफेद रंग में चावल एवं काले रंग में उड़द की दाल भरी जाती है।

अष्टलिंगतोभद्रम्



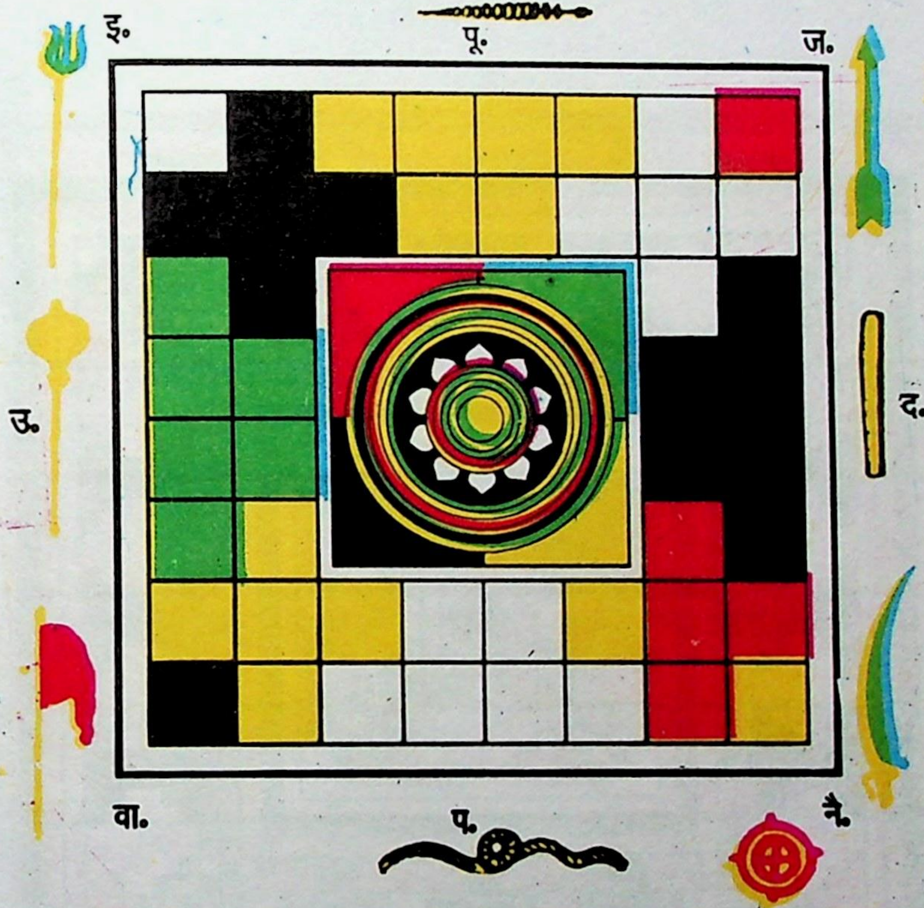
इस **'अष्टलिंगतोभद्रम'** में २४ खड़ी लाइनें, २४ आड़ी लाइनों से कुल ५२९ चौकोर बनते हैं। इसमें लाल रंग में मसूर की दाल, हरे रंग में मूंग, पीले रंग में चने की दाल, सफेद रंग में चावल एवं काले रंग में उड़द की दाल भरी जाती है।

सर्वतोभद्रमण्डलम्



इस **'सर्वतोभद्रमण्डलम्'** में १९ खड़ी लाइनें, १९ आड़ी लाइनों से कुल ३२४ चौकोर बनते हैं। इसमें लाल रंग में मसूर की दाल, हरे रंग में मूंग, पीले रंग में चने की दाल, सफेद रंग में चावल एवं काले रंग में उड़द की दाल भरी जाती है।

वारुण मण्डल चक्रम्

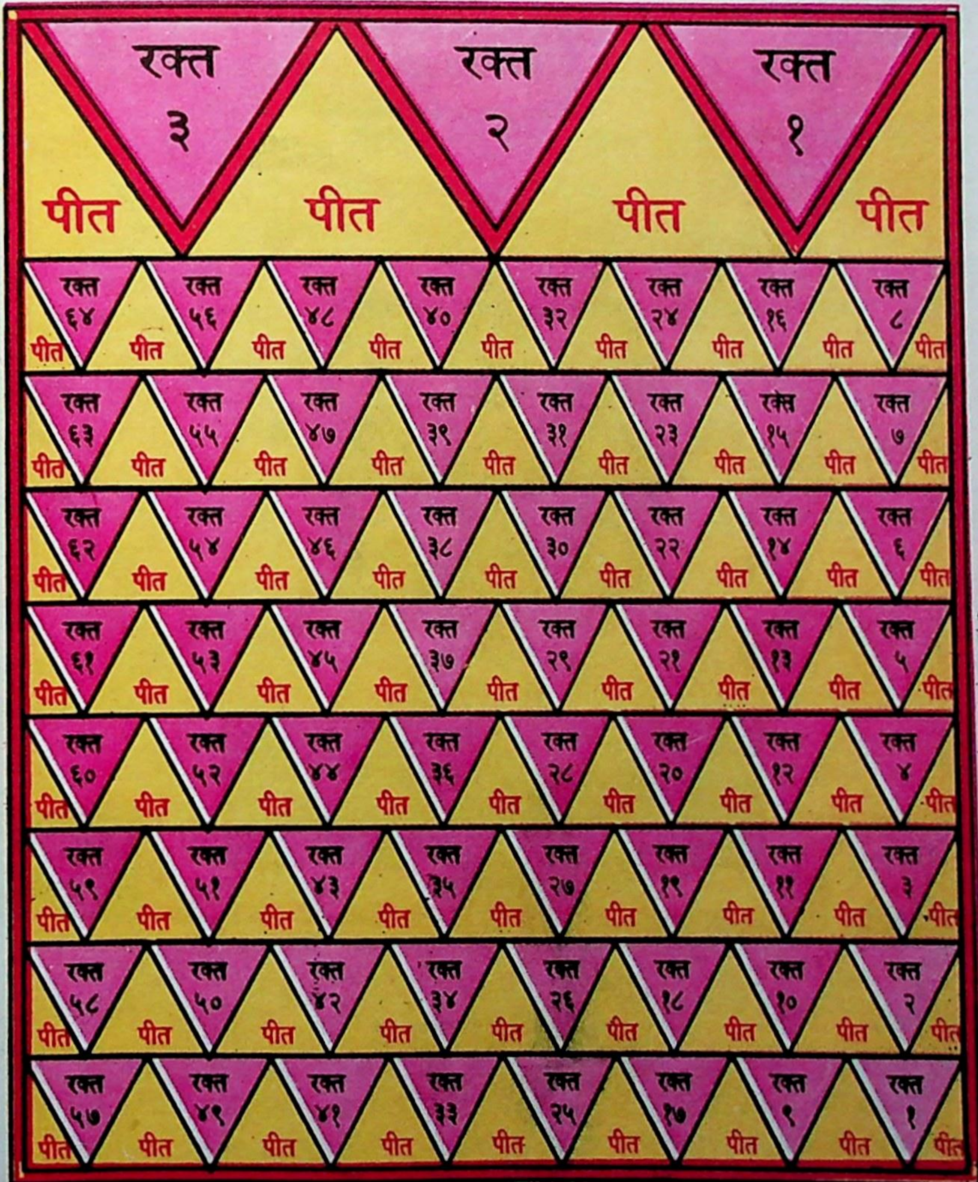


इस **'वारुण मण्डल चक्रम्'** में ९ खड़ी लाइनें, ९ आड़ी लाइनों से कुल ६४ चौकोर बनते है। इसमें लाल रंग में मसूर की दाल, हरे रंग में मूंग, पीले रंग में चने की दाल, सफेद रंग में चावल एवं काले रंग में उड़द की दाल भरी जाती है।

द्वादशलिंगतोभद्रम् हरिहरमंडलं

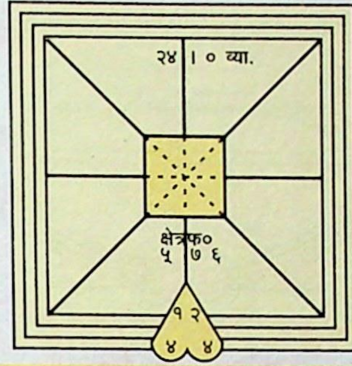


चतुःषष्ठियोगिनीचक्रम्



कुण्डा भावे स्थण्डिल वेदी प्रमाण

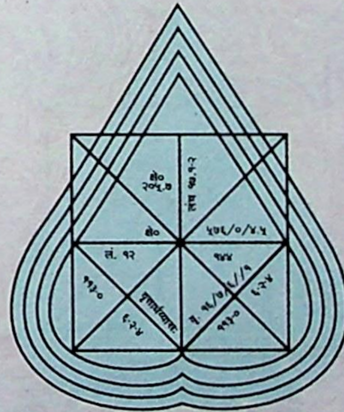
ग्रह-शान्ति-प्रयोग



चतुरष्कोणास्रंकुण्डम्

द्विघ्नव्यासं तुर्यचिंह्न सपाशं सूत्रं शंकौ पश्चिमे पूर्वगेऽपि।
दत्वा कर्षेत्कोणयोः पाशतूर्ये स्यादेवं वा वेदकोणं समानम्।।

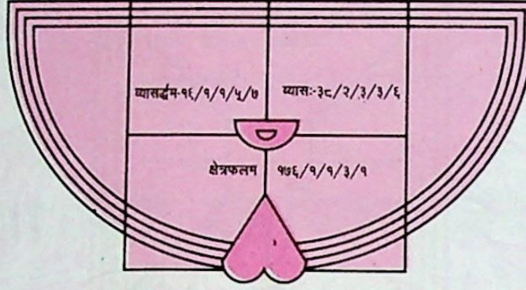
व्यास १ हाथ उसको दुगना करने से २ हाथ होगा। इसी प्रकार से जितना व्यास हो उसका दुगना करे। उसमें सूत्र सहित पाश के ४ चिह्न करें, उसके बाद दोनों पाशों को पूर्व पश्चिम की कील में फंसाकर दोनों की चतुर्थांश गांठ को पकड़ कर अग्नि तथा नैर्ऋत्य कोण की तरफ खीचें और वायव्य तथा ईशान कोण की तरफ खीचें तो चतुरस्र कुण्ड बराबर सिद्ध होता है। इसी प्रकार सब कुण्डों से पहले चतुरस्र क्षेत्र बना ले तब उसके ऊपर दूसरा कुण्ड बनाये।।



योनिकुण्डम्

क्षेत्रे जिनांशे पुरतः सरांशान्संवर्ध्य च स्वीयरदांशयुक्तान्।
कर्णाघ्रिमानेन लिखेन्दुखण्डं प्रत्यंकुरोकांद्गुणतो भगाभम्।।

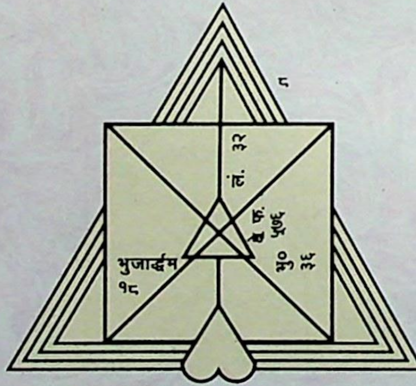
प्रकृति क्षेत्र का २४ भाग करे। उसके ५ भाग लें, वह अपने बत्तीसवां हिस्सा से युक्त (बत्तीसवां हिस्सा से युक्त करने पर ५ अं० १ य० २ यूका बना) इतने को प्रकृतिक्षेत्र के मध्य में आगे बढ़ाने पर पीछे के दोनों भाग चतुरस्र में चारों कोण से रेखा देकर कर्णाघ्रि (दोनों के बीच) में परकार रखकर दो आधावृत्त बनावे और दोनों पार्श्व से आगे के चिन्ह्न से रेखा देने पर शुद्ध योनिकुण्ड होता है।



अर्द्धचन्द्रकुण्डम्

स्वशतांशयुतेषु भागहीनः स्वधरित्रीमितकर्कटेन मध्यात्।
कृतवृत्तदलेऽग्रतशच जीवां विदधात्विन्दुदलस्य साधुसिद्धयै

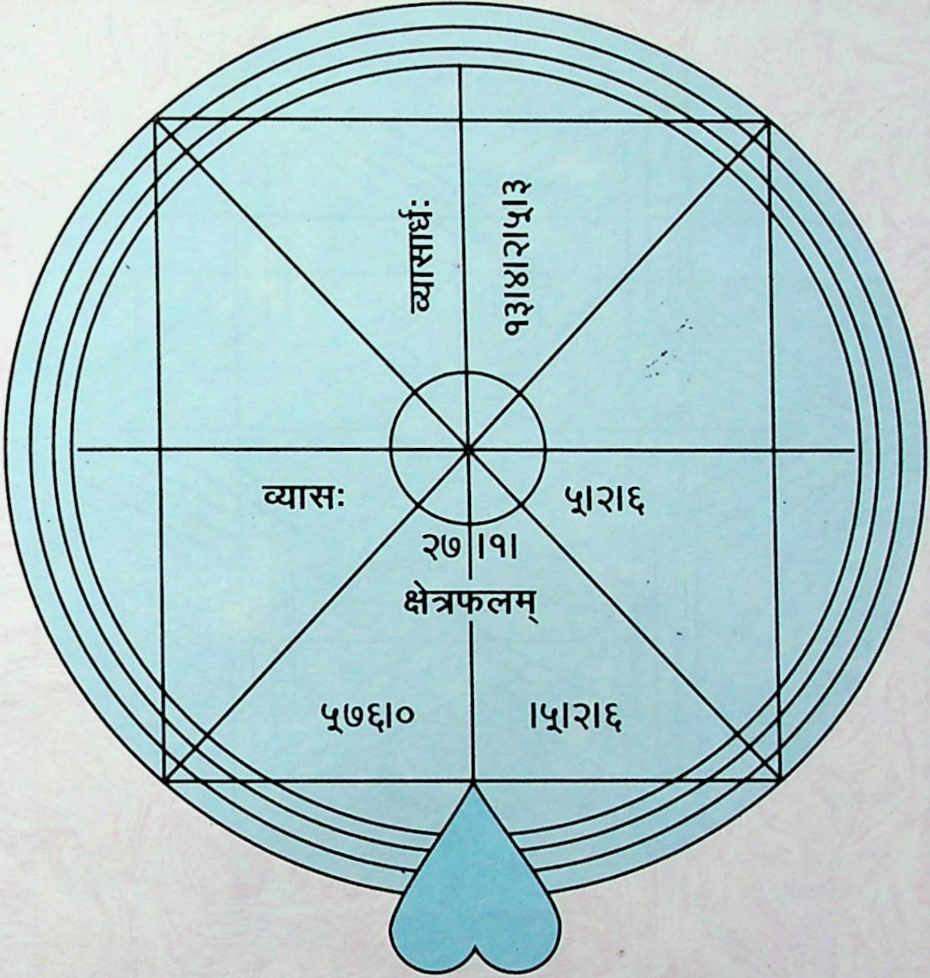
प्रकृति क्षेत्र २४ का पाचवां अंश ले (२।६ ।३ ।३ ।१ ।५) वह कैसा हो कि शतांश (शतांश ० ।० ।३ ।० ।४) इसके युक्त ४ अं. ६ यव ६ यूका २ लिक्षा १ कलाग्र इतना जो इषुभाग सो २४ अं० के क्षेत्र में से घटावे तो १६ अं. १ यव १ यूका ५ लिक्षा ४ बालाग्र इतने से चतुरस्र के बीच में परकार रखकर वृत्त का आधा खीचें। वृत्तार्ध के आगे सूत्र देने पर अर्धचंद्र शुद्ध होता है।



त्रिकोणकुण्डम्

वह्न्यंशं पुरतो निधाय च पुनः श्रोणयोश्चतुर्थांशकं
चिह्नेषु त्रिषु सूत्रदानत इदं स्यात्त्र्यस्रकश्टोज्झितम्।

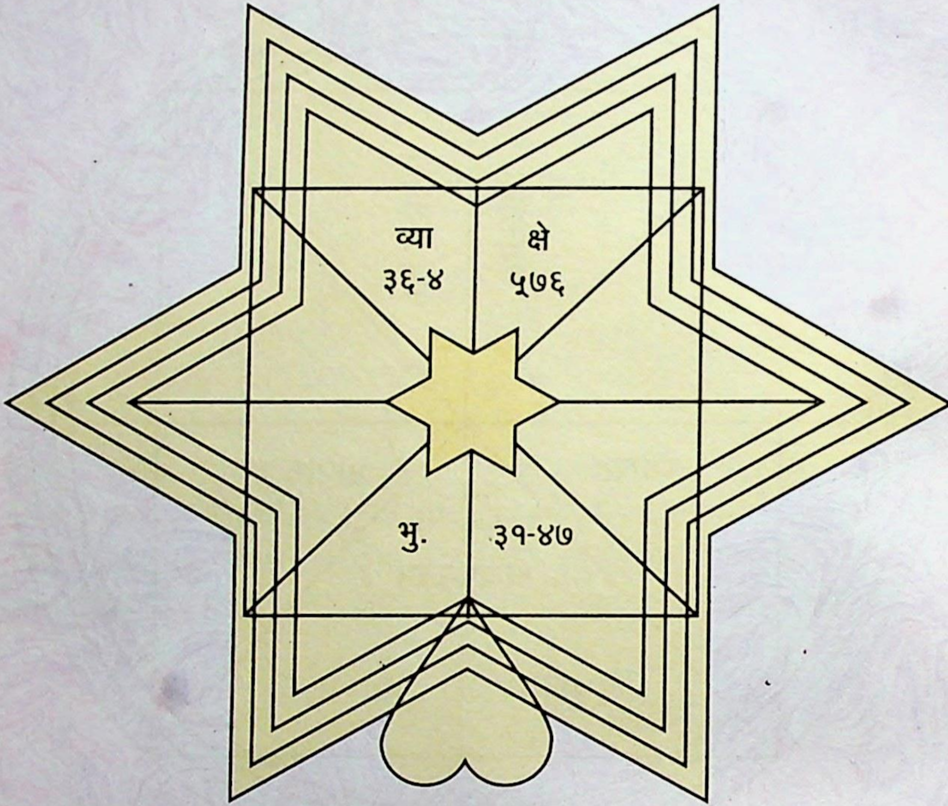
प्रकृति क्षेत्र का २४ हिस्सा करे। उसमें से तृतीयांश (अर्थात् ८ अंगुल) लेकर प्रकृति क्षेत्र जो चतुरस्र उसमें आगे पूर्व की तरफ बढ़ावे और २४ का चौथा हिस्सा ६ अंगुल बनाये सो छ छ अंगुल चतुरस्र की दोनों कोणों के दक्षिण उत्तर की तरफ बढ़ावे। बाद में तीनों चिह्न से मिलाकर सूत्र देने से त्र्यस्र अर्थात् त्रिकोण कुण्ड सिद्ध होता है।



वृत्तकुण्डम्

विश्वां १३ शैः स्वजिनांशकेन सहितैः क्षेत्रे जिनांशे कृते व्यासार्धेन मितेनं मण्डलमिदं स्याद्व्टत्तसंज्ञं शुभम्

प्रकृति क्षेत्र को २४ भाग करे, उस २४ अंगुल से १३ अंगुल लें, वह कैसा १३ अंगुल कि अपने चौबीसवें हिस्से के सहित हो (२४ वाँ हिस्सा ४ अं० २ यू० ५ लि० २ बालाग्र) तब चतुरस्र के बीच में परकार रखकर (१३ ।४ ।२ यूका ५ लिक्षा २ बालाग्र इतने के व्यासार्ध से) वृत्त करे तो शुद्धवृत्त कुण्ड होता है।

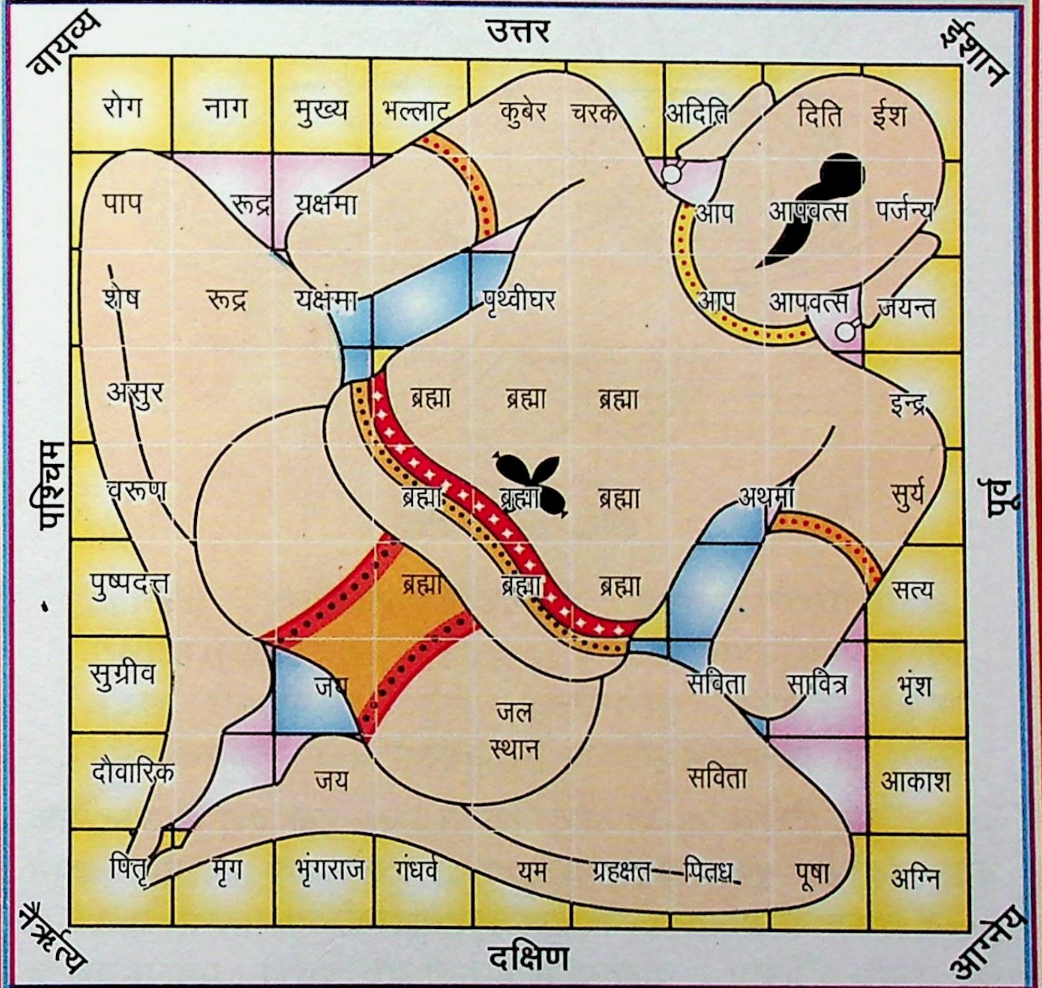


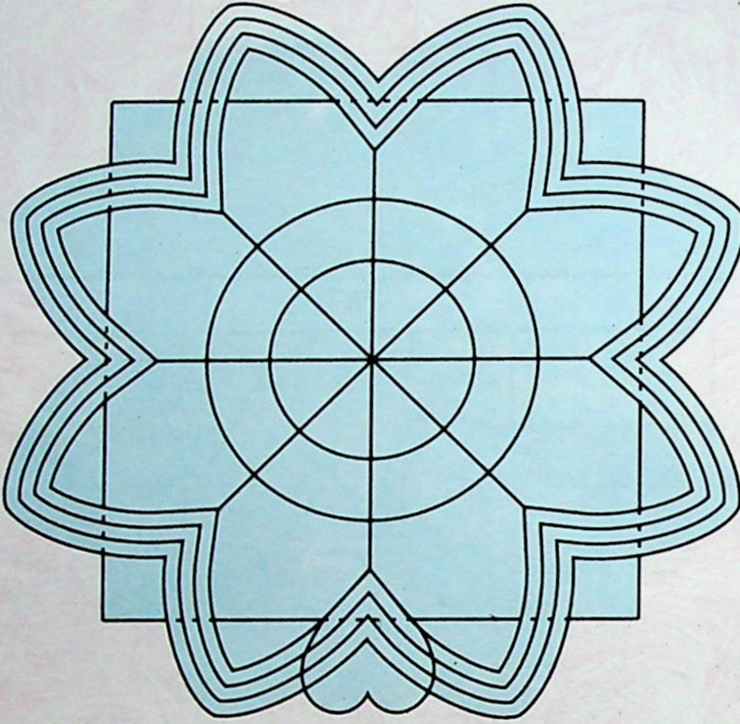
विषमसडकुण्डम्

भक्ते क्षेत्रे जिनांशैर्धृतिमितलवकैः स्वाक्षिशैलांशयुक्ते-
र्व्यासार्द्धान्मण्डले तन्मितधृतगुणके कर्कटे चेन्दुदिक्तः।
षट्चिह्नेषु प्रदद्याद्रसमितगुणकानेकमेकं तु हित्वा
नाशे संध्यर्तुदोषामपि च वृतिकृतेर्नेत्ररम्यं षडस्रम्।।

अब वायव्य कोण में षट्कोण कुण्ड कहते हैं–प्रकृतिक्षेत्र २४ अंगुल उसमें से १८ अंगुल लें, उस अठारह अंगुल का ७२वां हिस्सा युक्त हो तो ७२वां हिस्सा २ यव बने तो १८ अंगुल २यव के परकार से वृत्त करना (गोल) उत्तर तरफ से उसी परकार से वृत्त पर सूत्र देने से और सब संधि की रेखा मिटाने से षट्कोण सिद्ध होता है।

वास्तु पुरूष

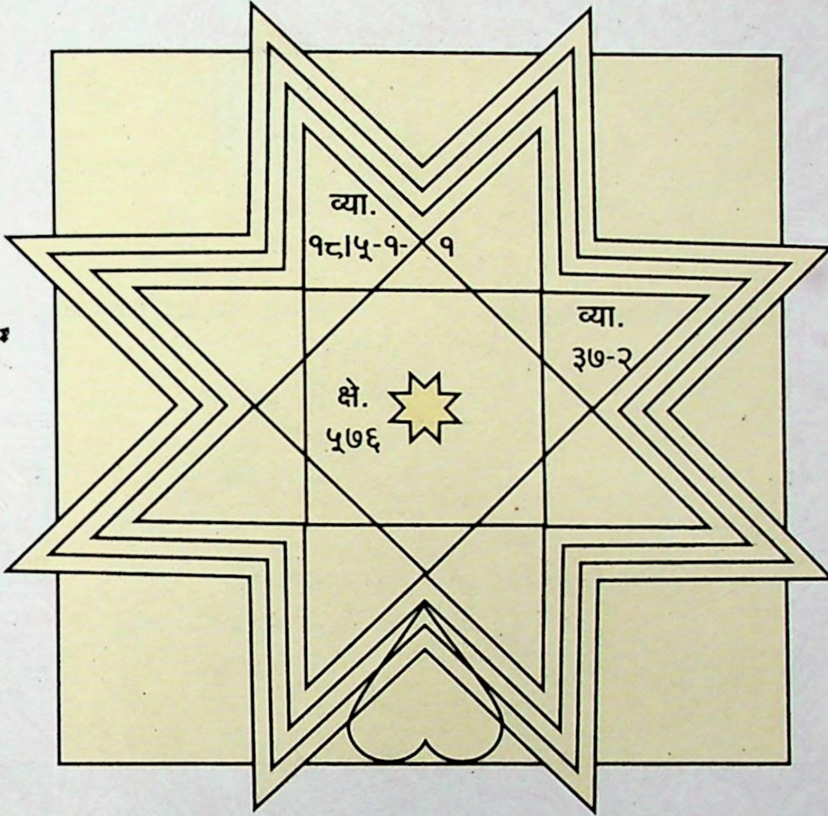

उत्तर
वायव्य
ईशान
पश्चिम
पूर्व
नैर्ऋत्य
दक्षिण
आग्नेय
रोग
नाग
मुख्य
भल्लाट
कुबेर
चरक
अदिति
दिति
ईश
पाप
रूद्र
यक्ष्मा
आप
आपवत्स
पर्जन्य
शेष
रूद्र
यक्ष्मा
पृथ्वीघर
आप
आपवत्स
जयन्त
असुर
ब्रह्मा
ब्रह्मा
ब्रह्मा
इन्द्र
वरूण
ब्रह्मा
ब्रह्मा
ब्रह्मा
अथर्मा
सुर्य
पुष्पदन्त
ब्रह्मा
ब्रह्मा
ब्रह्मा
सत्य
सुग्रीव
जय
जल स्थान
सबिता
सावित्र
भृंश
दौवारिक
जय
सविता
आकाश
पितृ
मृग
भृंगराज
गंधर्व
यम
ग्रहक्षत
पितध्र
पूषा
अग्नि



पद्मकुण्डम

**अष्टांशाच्च यतश्च वृत्तशरके तवादिकं कर्णिका।
युग्मे षोडशकेसराणि चरमे स्वाष्टत्रिभोगोनिते।
भक्ते षोडशधा शरान्तरधृते स्युः कर्कटेऽष्टौ छदाः।
सर्वा तां खनकर्णिकांत्यज निजायामोच्चाकां स्यात्कजम्।।**

प्रकृतिक्षेत्र २४ के अष्टमांश से एक–एक वृत्त में अष्टमांश बढ़ा–बढ़ा कर ५ वृत्त करे। परन्तु पांचवे वृत्त मे वह अष्टमांश अपने ३८ वें हिस्से से अलग करके उस अष्टमांश के व्यासार्ध से २ अं० ७ य० २ यू० १ लिक्षा २ बालाग्र से पांचवा वृत्त बनाये। पहला वृत्त ३ अंगुल, दूसरा वृत्त ६ अं०, तीसरा वृत्त ६ अं०, चौथा वृत्त १२ अं०, पांचवा वृत्त १४ अं०, ७ यव २ यू० १ लि० २ बा० के परकाल से करके अन्तिम वृत्त में १६ चिन्ह करे। दिशा विदिशा या विदिशा दिशा के बीच में पांचवें चिन्ह पर परकार रखकर दिशा विदिशा में ८ पत्र करे और पत्र के मध्य तथा केसर को छोड़कर कर्णिका के मध्य में बनाने पर स्वच्छ पद्मकुण्ड सिद्ध होता है।



विषमअष्टास्रकुण्डम

क्षेत्रे जिनांशे गजचन्द्रभागैः स्वाश्लिष्टभागेन युतैस्तु वृत्ते।
विदिग्दिशोरन्तरतोऽष्टसूत्रैस्तृतीययुक्ते रिदभष्टकोणम्।।

प्रकृति २४ इसमें से १८ हिस्सों को अपने २८ वे हिस्से के सहित लें तो १८ अं० ५ य० १ यू० १ लि० १ बालाग्र बनता है। इतने के व्यासार्द्ध को परकार से वृत्त करे और दिशा विदिशा के बीच में ८ चिन्ह करे। बाद में दो–दो चिन्ह के मध्य में छोड़ छोड़कर तीसरे तीसरे चिन्हों को मिलाकर ८ रेखा बनाये। बाद में वृत्त व संधियों को मिटा दें तो विषम भुज (अर्थात विषम अष्टकोण कुण्डकोण कुण्ड) होता है।

श्री श्री दुर्गा सप्तशती

महायन्त्रम्

(शतचण्डी प्रयोगे)

पूर्वा (देवी पश्चिमा)
वं बटुकाय नमः
८४

वं वज्राय नमः
७२
लं इन्द्राय नमः
६२

त्रिं त्रिशूलाय नमः
७९
हं रुद्राय नमः
६९

शं शक्त्यै नमः
७३
रं अग्नये नमः
६३

आग्नेयी (देवी वायव्या)

ह्रां ब्राह्म्यै नमः
२२

– अन्य धार्मिक प्रकाशन –

